18







हस्त-सामुद्रिक

[सचित्र]

लेखक
सामुद्रक शास्त्री
रामचन्द्र भारद्वाज

प्रकाशक
लक्ष्मी-पुस्तक-कार्यालय
प्रकाशक और विक्रेता
दिल्ली

द्वितीय संस्करण

सजिल्द
मूल्य चार रुपया



प्रकाशक—

लक्ष्मी-पुस्तक-कार्यालय,

दिल्ली ।

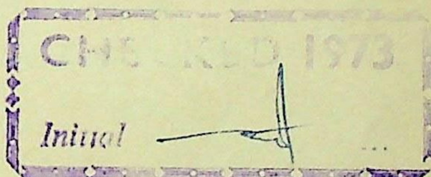
मुद्रक—

जे० बी० प्रिंटिंग प्रेस,

चाँदनी चौक,

दिल्ली ।

प्रेमोपहार



विषय सूची

वक्तव्य

ज्योतिष शास्त्र वेद भगवान् का एक नेत्र है। उसके द्वारा भूत, भविष्यत् और वर्त्तमान काल का ज्ञान बड़ी सरलता से हो जाता है। ज्योतिष शास्त्र सिद्धांत, संहिता, और होरा आदि विभागों में विभक्त है। इसी का एक अङ्ग सामुद्रक शास्त्र है।

सामुद्रक शास्त्र से जहां मनुष्य के प्रत्येक अङ्गों के शुभाशुभ फल का परिज्ञान होता है वहां उसमें हस्तरेखा-विज्ञान प्रधान है। यह सामुद्रक शास्त्र भारत वर्ष की ही पुरानी सम्पत्ति है। अन्यान्य शास्त्रों की भांति इसका आविष्कार भी त्रिकाल दर्शी महर्षि गणों के द्वारा भारतवर्ष में ही हुआ था। समुद्र नाम के ऋषि के द्वारा आविर्भाव होकर इसका प्रचार हुआ इस कारण इसका नाम सामुद्रक शास्त्र है। यह व्यष्टि रूप मानव शरीर का पिण्ड समष्टि रूप ब्रह्माण्ड का ही एक सूक्ष्म रूप है। जो क्रियायें स्थूल रूपसे ब्रह्माण्ड में दृष्टि गोचर होती हैं वे सब सूक्ष्म रूप से इस पिण्ड में भी होती हैं। दोनों की परिस्थिति एक ही है और दोनों का परस्पर में दृढ सम्बन्ध है। ग्रह, नक्षत्र, तारा, आदि की गति स्थिति और उनका प्रभाव स्थूल रूप से दोनों ही में एक समान है-इस बातको पूर्ण रूप से पूर्वाचार्य महर्षि गणों ने अपने योग बल से साक्षात्कार

करके अनेक शास्त्रों के साथ साथ ज्योतिष शास्त्रकी भी रचना की। इस शास्त्र के द्वारा मनुष्यों के शुभा शुभ फल का परिज्ञान हो जाता है। इसी का एक अङ्ग सामुद्रक शास्त्र है और उसमें भी उसका एक प्रधान अङ्ग हस्त-रेखा-विज्ञान है।

मनुष्य के हाथ पर देवता, ग्रह राशि आदि का निवास है। शास्त्रों के अनुसार देव, पित्र्य आदिक तीर्थों के स्थान भी इसमें नियत हैं। मनुष्य जीवन का—मनुष्य के भाग्य चक्र का सब कुछ शुभा-शुभ निर्णय उसकी हथेली परही अङ्कितहै। यह कहना अत्युक्ति नहीं है कि मनुष्य की हथेली उसकी जन्म कुण्डली है। शास्त्रों में नित्य प्रति प्रातः काल उठ कर करदर्शन का महात्म्य लिखा है। उसका यही तात्पर्य है कि हम लोग अपनी हथेली पर लिखी हुई जन्मकुंडली को देख कर उसके द्वारा आने वाले सुख-दुःखादि शुभा-शुभ फलों का ज्ञान प्राप्त कर संसार के कार्यक्षेत्रमें लगें और देव दर्शन और तीर्थ दर्शनसे लाभ उठा कर अपने हृदय को बलवान् बनाये रक्खें। यह शास्त्र भारतवर्ष के ऋषि और मुनियों द्वारा प्रणीत एक बहुत बड़ा विज्ञान है। किसी समय इसका भारतवर्षमें बहुत प्रचार था। प्रत्येक मनुष्य इसको जानता था इस पर विश्वास करता था, इससे लाभ उठाता था। क्रम क्रम से यह विद्या भारतसे चलकर अन्यान्य यूरूप आदि देशोंमें भी फैलगई। अनेक यूरूपियन और अमेरिकन विद्वानोंने इसपर मनोनिवेश पूर्वक विचार किया और कई पुस्तकें लिखी। वहां वर्त्तमान युग में भी इसका प्रचार पर्याप्त है। परन्तु दुःख का विषय है कि जहाँ इस विद्या का उद्गम

था वहां कालचक्र की वक्र गति से इसका प्रचार कम होने लगा और इसके ऊपर से लोगों का विश्वास हटने लगा। इसके पश्चात् सम्भव है कि आधुनिक विद्वानों ने यह समझ कर कि यह विद्या कोई आवश्यक या विश्वस्त विद्या नहीं है इस पर कोई प्रकाश न डाला हो परन्तु जहाँ तक इसका शरीर-विज्ञान और मनोविज्ञान से सम्बन्ध है कोई भी मनुष्य इसके अस्तित्व या अकाट्य प्रमाणों को नहीं काट सकता जब तक कि वह प्राचीन अथवा आधुनिक विज्ञान के सिद्धान्तों की सत्ता उड़ा देने की योग्यता न रखता हो।

आज बड़े हर्ष के साथ हिन्दी के सु-लेखक पण्डित रामचन्द्र भारद्वाज सामुद्रक शास्त्री को विशेष धन्यवाद देता हूँ जो उन्होंने 'हस्त-सामुद्रिक' नामक सर्वाङ्ग पूर्ण उत्तम पुस्तक लिखकर जहाँ पुरानी लुप्त प्रायः हुई विद्या का जीर्णोद्धार किया है वहाँ हिन्दी भाषा में एक नये परन्तु परमोपयोगी विषय को प्रकाशित कर हिन्दी के भण्डार को भी परिवर्धित किया है।

इस पुस्तक की सहायता से एक साधारण योग्यता रखने वाला व्यक्ति भी, हाथ की रेखा और उनके सम्बन्ध में आने वाले विविध चिन्हों को समझ कर भूत, वर्तमान, और भविष्य में उत्पन्न होने वाली घटनाओं का यथार्थ ज्ञान लाभ कर सकेगा। ऐसा करने से वह अपने जीवन मार्ग में आने वाली उन अशुभ घटनाओं की ओर से सावधान रहना सीखेगा जो उसके अस्वाभाविक या दुष्ट स्वभाव और उसकी असावधानता का आधार पाकर अकस्मात उस के जीवन में घटित हो जाया करती हैं—और साथ ही अपने

स्वभाव और उन सुअवसरों का सदुपयोग करके जो मनुष्य जीवन में कभी-कभी ही आया करते हैं वह अपना भविष्य सुखमय बना सकेगा।

शुभ संयोग कभी मनुष्य जीवन में दो बार नहीं आता। इस लिये वह स्त्री या पुरुष जो भविष्यमें आने वाले शुभसंयोग का समय जानता है कभी उसको व्यर्थ नहीं जाने देता। वह उस का सदुपयोग करता है और अनायास ही उसकी वर्तमान अवस्था में एक सुखमय परिवर्तन हो जाने से उस का जीवन सुखी और शान्ति पूर्ण बन जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने हाथ की रेखाओं और चिन्हों का सविस्तार वर्णन अपनी सुन्दर और सरल भाषा में जिस ढङ्ग से किया है उस को पढ़ कर थोड़े ही समय में हस्त-रेखाका पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेना एक साधारणसी बात है। साथ ही लेखक ने भारत के विख्यात व्यक्तियों के हाथों को चित्रों द्वारा रेखाओं की सत्यता का पूरा-पूरा प्रमाण देकर पुस्तक की महत्ता को और भी उच्च स्थान दे दिया है। मैं आशा करता हूं कि हिन्दी संसार पुस्तक का हृदय से स्वागत करेगा और लेखक के परिश्रम को सफल करता हुआ स्वयं भी अपना भविष्य बनाने का साधन प्राप्त करेगा।

महामहोपाध्याय श्री पं० हरनारायण शास्त्री,
विद्यासागर, प्रोफेसर हिन्दू कालेज, देहली।

भूमिका

भारतवर्ष का प्राचीन काल अपनी विद्या, कला कौशल और वैज्ञानिक उन्नति के लिये प्रसिद्ध है। आत्मोन्नति के साथ ही साथ वैज्ञानिक उन्नति पर भी उस का पूरा पूरा अधिकार रहा है। भले ही उस में संसार की अशान्ति के कारण स्वरूप इन उपद्रवकारी यन्त्रों का अविष्कार या विस्फोटक पदार्थों की खोज न की गई हो, विद्या का कोई अङ्ग ऐसा शेष नहीं रह गया जिस पर पूर्ण प्रकाश न डाला गया हो। भूगर्भ विद्या, शरीर-विज्ञान, मनो-विज्ञान, आकृति-विज्ञान, आदि सभी विषयों पर उस समय प्रकाश डाला गया। बड़े-बड़े अन्वेषण उस समय हुए और ग्रन्थों के रूप में हमारे लिये छोड़ दिये गये। सामुद्रक शास्त्र भी उन में से एक है।

आज कल के समय में सामुद्रक विद्या का यह एक दुर्भाग्य है कि अधिकांश मनुष्य उस पर विश्वास नहीं करते। क्यों विश्वास नहीं करते इस के उत्तर में जहां तक मैंने इस विद्या को पढ़ा है मैं कह सकता हूं कि उन्हों ने इस विद्या को समझा ही नहीं है।

कुछ मनुष्य ऐसे हैं–अधिक नहीं–जिनका इस विद्या में विश्वास है। वह भी कुछ इस लिये नहीं कि उन्हों ने इस को समझ लिया है, बल्कि इस लिये कि वह इस को अपनी प्राचीन विद्या समझ कर इस पर श्रद्धा रखते हैं। दूसरी श्रेणी में वह मनुष्य हैं जो उस समय तक इस पर विश्वास करना नहीं चाहते जब तक उनको इस की सत्यता का प्रमाण नहीं दिया जाता।

समय के परिवर्तन ने प्राचीन बहुत सी विद्याओं को अवि-श्वास या अज्ञान के अन्धकार में डाल दिया है। आज कल का विज्ञान जिसको पाश्चात्य सभ्यता बड़े अभिमान की दृष्टि से देखती है एक बालक के समान है–उस बालक के समान है जो अंधेरे में खड़ा हुआ है, वह अन्धेरे में कोई वस्तु पाता है और उस पर आश्चर्य करने लगता है। यहां तक कि प्रकाश आता है और वह पाई हुई वस्तु—जिस को कि अंधेरे में वह कोई साधारण वस्तु या केवल पत्थर समझता था—उसे एक अमूल्य रत्न देख पड़ती है। यही बात हस्त-सामुद्रक विद्या के सम्बन्ध में भी है।

विज्ञान आज चारों ओर से इस विद्या की सत्यता को सिद्ध करने में संलग्न है। उस ने वर्षों के अन्धकार को प्रकाश में लाना आरम्भ कर दिया है, प्रमाण ढूंढ निकाले हैं और इस आश्चर्य के युग में यह फिर एक बार सिद्ध कर दिया है कि पुराना सिद्धान्त जिस के अनुसार "हाथ मनुष्य के अप्रवर्तक शरीर के प्रवर्तक अङ्ग हैं, इस लिये जो परिवर्तन हमारे शरीर में होते हैं वह हाथ में भी अवश्य होने चाहिये," कोई झूठा सिद्धान्त नहीं है।

अनात्मवाद के इस युग में सामुद्रक विद्या की सत्यता का प्रमाण मागने वाले व्यक्तियों को यह बात याद रखनी चाहिये कि आज कल प्रायः कोई विद्या ऐसी नहीं है जो इस प्राचीन ऋषियों द्वारा उद्भूत विद्या के समान अपने गौरव को पुष्टि कर सकती हो।

यह एक नियम है कि जिस समय हम किसी सत्यता का प्रमाण देते हैं तो सब से पहले हम उस सत्य के निकास की खोज करते हैं। इस लिये इस विद्या के विषय में यहां यह आवश्यकता है कि इस पर एक ऐतिहासिक दृष्टि डाली जाय। उस समय में जिस को संस्कृत विद्या का युग कहना चाहिये इस विद्या का प्रचार अपना एक विशेष महत्व रखता था यह आज हम अपने प्राचीन ऋषि प्रणीत ग्रन्थों के आधार पर कह सकते हैं—उन ग्रन्थों के आधार पर जिन में हाथ के चिह्न और उनकी रेखाओं के सम्बन्ध में लिखा गया है कि यह मनुष्य की शारीरिक शक्ति का स्वभाव और उसकी भाषा हैं। हमें यह बात याद रखनी चाहिये कि वह आत्मायें जिन्हों ने इस विज्ञान को एकत्रित और परिपुष्ट किया था अपने समय में मनुष्य ज्ञान के प्रसिद्ध विद्वान समझे जाते थे। उन्हों ने मनुष्य जाति का उतना ही गहरा अध्ययन किया था जितना कि आज पाश्चात्य वैज्ञानिक अपनी प्रयोग शालाओं में बैठे दिन रात विस्फोटक पदार्थ और नये-नये यन्त्रों को आविष्कार करने में लगे रहते हैं।

सबसे पहले भारतवर्ष में—उस भारतवर्ष में जो संसार की सभी विद्याओं का मूल स्थान समझा जाता है—इस विद्या ने

कुछ मनुष्य ऐसे हैं–अधिक नहीं–जिनका इस विद्या में विश्वास है। वह भी कुछ इस लिये नहीं कि उन्हों ने इस को समझ लिया है, बल्कि इस लिये कि वह इस को अपनी प्राचीन विद्या समझ कर इस पर श्रद्धा रखते हैं। दूसरी श्रेणी में वह मनुष्य हैं जो उस समय तक इस पर विश्वास करना नहीं चाहते जब तक उनको इस की सत्यता का प्रमाण नहीं दिया जाता।

समय के परिवर्तन ने प्राचीन बहुत सी विद्याओं को अविश्वास या अज्ञान के अन्धकार में डाल दिया है। आज कल का विज्ञान जिसको पाश्चात्य सभ्यता बड़े अभिमान की दृष्टि से देखती है एक बालक के समान है–उस बालक के समान है जो अंधेरे में खड़ा हुआ है, वह अन्धेरे में कोई वस्तु पाता है और उस पर आश्चर्य्य करने लगता है। यहां तक कि प्रकाश आता है और वह पाई हुई वस्तु—जिस को कि अंधेरे में वह कोई साधारण वस्तु या केवल पत्थर समझता था—उसे एक अमूल्य रत्न देख पड़ती है। यही बात हस्त-सामुद्रक विद्या के सम्बन्ध में भी है।

विज्ञान आज चारों ओर से इस विद्या की सत्यता को सिद्ध करने में संलग्न है। उस ने वर्षों के अन्धकार को प्रकाश में लाना आरम्भ कर दिया है, प्रमाण ढूंढ निकाले हैं और इस आश्चर्य्य के युग में यह फिर एक बार सिद्ध कर दिया है कि पुराना सिद्धान्त जिस के अनुसार "हाथ मनुष्य के अप्रवर्तक शरीर के प्रवर्तक अङ्ग हैं, इस लिये जो परिवर्तन हमारे शरीर में होते हैं वह हाथ में भी अवश्य होने चाहिये," कोई झूठा सिद्धान्त नहीं है।

अनात्मवाद के इस युग में सामुद्रक विद्या की सत्यता का प्रमाण मागने वाले व्यक्तियों को यह बात याद रखनी चाहिये कि आज कल प्रायः कोई विद्या ऐसी नहीं है जो इस प्राचीन ऋषियों द्वारा उद्भ वत विद्या के समान अपने गोरव को पुष्टि कर सकती हो।

यह एक नियम है कि जिस समय हम किसी सत्यता का प्रमाण देते हैं तो सब से पहले हम उस सत्य के निकास की खोज करते हैं। इस लिये इस विद्या के विषय में यहां यह आवश्यकता है कि इस पर एक ऐतिहासिक दृष्टि डाली जाय। उस समय में जिस को संस्कृत विद्या का युग कहना चाहिये इस विद्या का प्रचार अपना एक विशेष महत्व रखता था यह आज हम अपने प्राचीन ऋषि प्रणीत ग्रन्थों के आधार पर कह सकते हैं—उन ग्रन्थों के आधार पर जिन में हाथ के चिह्न और उनको रेखाओं के सम्बन्ध में लिखा गया है कि यह मनुष्य की शारीरिक शक्ति का स्वभाव और उसकी भाषा हैं। हमें यह बात याद रखनी चाहिये कि वह आत्मायें जिन्हों ने इस विज्ञान को एकत्रित और परिपुष्ट किया था अपने समय में मनुष्य ज्ञान के प्रसिद्ध विद्वान समझे जाते थे। उन्हों ने मनुष्य जाति का उतना ही गहरा अध्ययन किया था जितना कि आज पाश्चात्य वैज्ञानिक अपनी प्रयोग शालाओं में बैठे दिन रात विस्फ़ोटक पदार्थ और नये-नये यन्त्रों को आविष्कार करने में लगे रहते हैं।

सबसे पहले भारतवर्ष में—उस भारतवर्ष में जो संसार की सभी विद्याओं का मूल स्थान समझा जाता है—इस विद्या ने

जन्म लिया था और उसी समय से यह भारतवर्ष की आदि विद्या समझी जाने लगी थी। यह उन प्राचीन महर्षियों का आश्चर्य्य जनक आकाश ज्ञान ही था जिसको लेकर उन्होंने "ज्योतिष विद्या और लग्न मण्डल" के विज्ञान की खोज की और "मनुष्य के जीवन पर ग्रहों का कैसा प्रभाव पड़ता है" इसका निश्चय किया।

उनका प्रत्येक व्यक्ति के लक्षणों के सम्बन्ध में अपना निर्णय उसका भाग्य, शारीरिक रोग जैसा कि उसके जन्म के समय "राशि चक्र" से जाना जाता है आज सहस्त्रों वर्ष से चला आरहा है। आज हमारे घर किसी बालक का जन्म होताहै और हम उसके जन्म का समय घड़ी लगाकर देखते हैं। इसके पश्चात् एक ज्योतिष विद्या का विशेषज्ञ बालक के जन्म ग्रहों का फल निकालता है। अब यदि यह घड़ी सूर्य्य की चाल से मिली हुई है तो विद्वान ज्योतिषी द्वारा निश्चित बालक के ग्रह उतने ही अटल होते हैं जितना कि सूर्य्य स्वयं अपनी चाल पर निश्चित हो सकता है। यह ज्योतिष विद्या का ही चमत्कार है जो पृथ्वी की चाल, सूर्य्य-ग्रहण, चन्द्रग्रहण और ग्रहों की चाल हम वर्षों पहले निकाल लेते हैं और जिसका गौरव आज भी एक आर्य्य जाति को छोड़कर किसी दूसरी जाति को प्राप्त नहीं है।

मानव-विज्ञान के सम्बन्ध में भी यह प्राचीन आर्य्य पुरुष ही थे जिन्होंने पहले शरीर के सभी चिन्ह और रेखाओं को पढ़ा और उसको "सामुद्रक विद्या" के नाम से प्रचलित किया। इसी में

से हस्त-सामुद्रक की सृष्टि हुई—उस विद्या की जिसको हस्त-रेखा या सामुद्रक का संक्षिप्त रूप कहना चाहिये।

पुरातन युग का वह समय जब कि आर्य्य महर्षियों ने इन विद्याओं को जन्म दिया वह समय है जिसको हम प्राचीन काल कहते हैं। यह वह समय था जब कि दूसरी सभ्यतायें सुदूर भविष्य के अन्धकारमय गर्भ में निर्जीव पड़ी थीं। यह वह समय था जब ग्रीस, मिश्र या फ़ारिस को कोई जानता तक नहीं था, यहूदियों के पिता इब्राहीम का जन्म भी न हुआ था, मूसा द्वारा भेजी गई परमात्मा की दस आज्ञाओं को किसी ने सुना भी न था।

इसके बाद ज्यों ज्यों समय बीतता गया भारत से चीन, तिब्बत, फ़ारिस, मिश्र और इसके बाद ग्रीस में यह विद्या पहुँची। ग्रीस ने इस विद्या का सम्मान किया और वहां के तत्व-वेत्ताओं ने वहां के निवासियों को इसकी शिक्षा दी।

चीन में इसका प्रचार क्राइस्ट के जन्म से ३००० वर्ष पहले

हस्त-सामुद्रक पर चीन

होचुका था और आज वहां देश के कोने कोने में इसका प्रचार देख पड़ता है। परन्तु ग्रीक साहित्यमें इसका खोज चीनसे भी पहले मिलता है इसका प्रमाण आज उस देश के ग्रन्थ अपनी भाषा में दे रहे हैं।

पौलीमन, अलातूनिया, प्लिनी, हिसपानस आदि विद्वानों

यूनान

की स्मृतियां आज यूनान के हृदय पटल पर स्वर्णाक्षरों में लिखी हुई हैं, पैलम्पस का नाम आज भी अलेग्जैन्डरियां निवासी बड़े हर्ष

साथ लेते हैं। यह सभी विद्वान हस्त-सामुद्रक के पूर्णज्ञाता थे। इतिहास से पता चलता है कि हिसपानस ने हस्त-सामुद्रक कीएक पुस्तक जो स्वर्ण के अक्षरों से लिखी गई थी सम्राट सिकन्दर को भेंट स्वरूप भेजी थी।

इसके बाद सोलहवीं और,सत्रहवीं शताब्दी में ज्यों २ छापने की कलों का आविष्कार होता गया इस विद्या का साहित्य भी उत्तरोत्तर बढ़ता ही चला गया। यहां तक कि सत्रहवीं शताब्दी के अन्त तक अट्ठानवें पुस्तक इस विषय पर लिखी गईं। उस समय जब कि मदान्ध रोम अपनी सारी शक्ति रण-चण्डी के अर्पण कर चुका था रोम राज्य का पराभव होना आरम्भ हुआ। इसके साथ वहां की कला, विज्ञान सभी को एक बुरा समय देखना पड़ा। सामुद्रक विद्या की भी वही दुर्दशा हुई, और केवल गिप्सीज़ और चरवाहों को छोड़ कर कहीं उसका महत्व शेष न रह गया।

सन् १४७५ ई० में जरमनी में सब से पहली पुस्तक जो

जर्मनी

बाइबिल के बाद इस विषय पर छापी गई "Die Kunst Ciromant" थी। इसके बाद सन् १४९० ई० में एक दूसरी पुस्तक "Cyromantia Aristotelis cum Figuris" के नाम से प्रकाशित हुई। यह दोनों पुस्तकें आज भी ब्रिटिश म्यूज़ियम की शोभा बढ़ा रही हैं।

योरुप के महाद्वीप से हस्त-सामुद्रक विद्या ब्रिटेन में पहुँची। वहां इसका अधिक अपमान हुआ। यह समय वह था जब कि

ब्रिटेन

ब्रिटेन पर अविद्या का घोर अन्धकार छाया हुआ था और आजकल का सभ्य ब्रिटेन उस समय असभ्यता की गोदमें खेल रहा था। इस विद्या की उन्नति में बाधा डालने वाला उस समय का "चर्चसमुदाय" ही था। इंगलेण्ड का राजसिंहासन उस समय आठवें हेनरी के अधिकार में था। अतः तत्कालीन पोप समुदाय ने राज्यकी अनुमति लेकर एक आज्ञा प्रकाशित की जिसके अनुसार इस विद्या को वहां जादूगरी, इन्द्रजाल आदि भूत-प्रेत विद्याओं का रूप दे दिया गया और इसका अभ्यास करने वालोंको राज की ओर से कड़ा दंड दिया जाने लगा।

चोथे जार्ज के शासन काल में इसकी और भी कड़ी आलोचना की गई और पार्लियामेंट ने एक "ऐन्टी पामिस्ट्री बिल" पास किया जिसके अनुसार हस्त-रेखा के सभी व्यवहारज्ञों को धूर्त और छली समझा जाकर उनको एक वर्ष की सज़ा का हुक्म हुआ। यह आज्ञा इस प्रकार थी :—

"Any person found practising palmistry is here by deemed a rogue and a vagabond, to be sentenced to one years imprisonment and to stand in the pillory."

परन्तु यह दुर्दशा अधिक समय तक न रही। उन्नीसवीं शताब्दी के साथ ही साथ वैज्ञानिक युग का आरम्भ हुआ और इस विद्या को विज्ञान की कसोटी पर कसा गया। सन् १८५३ ई० में

पाश्चात्य विद्वान मेंसीनर ने इस बात को सिद्ध कर दिखाया कि हाथ में कुछ ऐसे परमाणु होते हैं जो हथेली की लाल रेखाओं के साथ स्पष्ट रूप में चलते हैं। इसके बाद उसने यह भी प्रमाणित कर दिया कि इन परमाणुओं का सम्बन्ध उन शिरा या नाड़ियों से रहता है जो हमारे मस्तिष्क से नीचे की ओर आती हैं और शरीर के जीवन काल में इन परमाणुओं में एक विशेष प्रकार का कम्पन और आन्दोलन उत्पन्न होता रहता है। यह कम्पन "जो कि शरीर भाग में कोई परिवर्तन होंने से स्वयं भी बदल जाता है और जो शरीर की मृत अवस्था में अनायास शान्त होजाता है," प्रत्येक मनुष्य के शरीर में भिन्न प्रकार का होता है।

शरीर विज्ञान कहता है कि हमारे शरीर के मस्तिष्क भाग से जितनी अधिक नाड़ियां हाथ में आती हैं उतनी शरीर के और किसी भाग में नहीं पाई जातीं। यही कारण है हम देखते हैं कि हमारी मस्तिष्क क्रिया का एक गहरा प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ता है। अतः ऐसी दशा में हमारे मस्तिष्क में जो शुभ या अशुभ विचार उठते हैं तत्काल उनका प्रभाव हमारे हाथों पर पड़ता है—यह निर्विवाद सिद्ध होजाता है।

अब हम वैज्ञानिक दृष्टि से यह देखना चाहते हैं कि हाथों की बनावट देखकर किसी स्त्री या पुरुष का स्वभाव जान लेना कहाँ तक सम्भव है और रेखाओं द्वारा हम कहाँ तक मनुष्य जीवन के गम्भीर प्रदेश को टटोल सकते हैं। जहाँ तक हाथ की बनावट से सम्बन्ध है पाठकों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि आज भारत

वर्ष में ऐसे विशेषज्ञों की कमी नहीं है जो किसी पशु विशेष का रंग, रूप या केवल शरीर की बनावट देख कर ही उसकी जाति और उसके शुभाशुभ लक्षणों का ज्ञान कर लेते हैं। उदाहरण के लिये घोड़ों को ही ले लीजिये। घोड़ों का विशेषज्ञ किसी भी घोड़े को केवल एक बार देखकर उसकी नसल और जाति को बता देता है वह यह भी बता देता है कि वह पशु किस काम के योग्य है और उसका भविष्य कैसा रहेगा।

यदि यह सब कुछ हो सकता है कि कोई पशु विशेषज्ञ घोड़ों के शरीर की गठन और उनके जोड़ों को देखकर उनके शुभाशुभ लक्षणोंका निर्णय करले तो यह कितना अधिक सम्भव है कि एक हस्त-सामुद्रिक का अनुभवी विद्वान केवल हाथोंकी बनावट देखकर किसी स्त्री या पुरुषके स्वाभाविकगुणों का निश्चय सफलता पूर्वक कर सके।

यदि किसी घोड़ेके सुम स्थूल और भद्दे होते हैं तो वह स्वयं भी सुस्त और भारी होता है और इतना समझदार नहीं समझा जाता जितना कि एक सुन्दर और सुदृढ़ सुम का घोड़ा होसकता है। यह बात मनुष्य जाति के सम्बन्ध में भी है। मोटे मोटे, भद्दे और असुन्दर हाथ उस व्यक्ति के होंगे जो अपरिणाम दर्शी, असभ्य या चरित्रहीन होगा। इसके विपरीति सुन्दर हाथ मनुष्य के शुभ गुण सम्पन्न होने का प्रारम्भिक लक्षण होते हैं—यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है।

यह तो रहा हाथ के सम्बन्ध में। अब रेखाओं को लीजिये। रेखायें हमारी शारीरिक और मानसिक गुप्त क्रियाओं का आलोक

चित्र हैं यह इतना कह देने ही से सिद्ध हो जाता है कि प्रकृति हमारे मस्तिष्क से, जो आवेशों का स्थान और हमारे मनोविकार, मानसिक क्रिया और भावों का केन्द्र है, अनेक रक्त वाहिनी नाड़ियां शरीर के अन्य भागों को भेजती है। यह नाड़ियां जैसा कि नाड़ी-विज्ञान के प्रसिद्ध पाश्चत्य विद्वान 'सर चार्लस बैल ने,' अपनी पुस्तक में लिखा है, जितनी अधिक हाथ में आती हैं उतनी शरीर के किसी दूसरे भाग में नहीं पाई जातीं। यही कारण है कि रुधिर का जितना अधिक प्रवाह हमारे हाथों की ओर होता है उतना किसी दूसरी ओर नहीं होता।

अब यहाँ देखना है कि हमारे मानसिक विचार हाथ की रेखायें बनाने में कहाँ तक मस्तिष्क की सहायता करते हैं। यह निर्विवाद सिद्ध हो चुका है कि मन में जो कुछ भले या बुरे विचार या भाव उठते हैं उनका ज्ञान सबसे पहले हमारे मस्तिष्क को होता है। अतः मस्तिष्क में उस समय एक विशेष प्रकार का कम्पन उत्पन्न होकर ज्ञान-तन्तुओं में रुधिर का प्रवाह बढ़ता है और साथ ही हमारे विचार और आवेश पूर्ण भावों को भी अपने साथ लेजाकर उन्हें अपनी सीमा पर रेखाओं के रूप में अंकित कर देता है। हमारे यह विचार जितने ही अधिक दृढ़ होते है रेखायें उतनी ही स्पष्ट और प्रभावपूर्ण होती हैं।

विस्तार में जाने के लिये आकृति-विज्ञान (Physionomy) पर जो कि सामुद्रिक विद्या का ही एक अङ्ग है, एक दृष्टि डालिये। भय, चिन्ता, क्रोध, प्रसन्नता आदि जितने भाव हमारे हृदय में

उठते हैं उन सब की प्रत्यक्ष झलक तत्काल हमारे चहरे पर देख पड़ती है। क्रोध आते ही हमारा चहरा तमतमा जाता है, चिन्ता के उत्पन्न होते ही शरीर का सौन्दर्य चला जाता है, प्रसन्नता हमारे चहरे को पुष्प सा खिला देती है—यह हम प्रति दिन अपनी आंखों से देखते हैं। यही बात रेखाओं के सम्बन्ध में भी है। अन्तर केवल इतना ही है कि यह भाव क्षणिक होते हैं और रेखायें उस समय तक अपना कोई रूप नहीं बदलतीं जब तक कि हमारे दृढ़ विचार या निश्चित इच्छा-शक्ति उन में हमारे ज्ञान तन्तुओं द्वारा, जो कि मस्तिष्क से हाथ की ओर जाते हैं, कोई विशेष परिवर्तन नहीं कर डालती या उन रेखाओं के कारण को ही नष्ट नहीं कर देती।

हस्त-सामुद्रिक विद्या के विषय में कुछ मनुष्य जो अज्ञानी हैं कहा करते हैं कि हाथ में रेखायें काम करने अथवा मोड़ने से उत्पन्न हो जाती हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि बालक गर्भ में हाथों की मुट्ठियां बांधे रहता है इसी लिये उनमें रेखायें पड़ जाती हैं। परन्तु यदि विचार कर देखा जाय तो उनके इस निर्जीव पक्ष का कोई मूल्य शेष नहीं रह जाता।

पहली दशा में—डाक्टरी का यह एक सर्व मान्य सिद्धान्त है कि पक्षाघात के कुछ लक्षण ऐसे होते हैं जिन में उक्त रोग का प्रभाव होने से बहुत पहले ही हाथ की सब रेखायें मिट जाती हैं परन्तु हाथों के मुड़ने में कोई आपत्ति नहीं होती। इसके अति-रिक्त यदि रेखायें काम करने से पैदा होतीं तो एक धनवान पुरुष

या स्त्री के हाथ में जो कोई भी काम अपने हाथ से नहीं करते कम और दिन रात अपने हाथों से कठिन परिश्रम करने वाले निर्धन मजदूरों के हाथ में हज़ारों रेखायें होनी चाहिये थीं। परन्तु ऐसा न होकर इसका उल्टा ही होता है—यह प्रति दिन हम अपनी आंखों से देख सकते हैं।

इस सम्बन्ध में विज्ञान ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि मस्तिष्क के प्रत्येक भाग में एक परिवर्तन होता रहता है और उसके इस परिवर्तन का हमारे स्वभाव, आदत और हमारी बुद्धि से जिसका प्रयोग हम नित्य अपने जीवन काल में करते हैं एक गहरा सम्बन्ध होता है। बचपन से लेकर मनुष्य होने तक मस्तिष्क का विस्तार निरन्तर बढ़ता रहता है। इस लिये अपनी पूर्ण शक्ति प्राप्त करने से पहले मस्तिष्क में एक पर्य्याप्त वृद्धि का होना निश्चय है। ऐसी दशा में मस्तिष्क में यदि थोड़ा सा भी परिवर्तन होता है तो उसका प्रभाव शरीर पर पड़ता है। जैसा ऊपर कहा गया है कि शरीर के शेष भाग की अपेक्षा हाथ में आने वाली नाड़ियों की संख्या अधिक होती है, इस लिये पूर्व इसके कि मस्तिष्क का कोई परिवर्तन मनुष्य जीवन में कोई विशेष घटना ला उपस्थित करता है या उस मनुष्य के स्वभाव में कोई विशेष परिवर्तन करता है, यदि हस्त-सामुद्रिक का कोई भी अनुभवी विद्वान उसके (मस्तिष्क के) इस परिवर्तन को जान लेता है तो यह हमारे लिये किसी भी दशा में कोई आश्चर्य की बात है—यह कहना असंगत होगा।

यह सिद्ध हो चुका है कि मुंह पर आंख या नाककी तरह हाथ में रेखायें भी अपना एक स्वाभाविक या प्राकृतिक स्थान रखती हैं। रेखाओं का अपने स्वाभाविक स्थान से इधर-उधर हो जाना ही हमारे स्वभाव में अस्वाभाविकता का कारण होता है। उदाहरण के लिये हृदय-रेखा को काटने वाली मस्तक-रेखा के प्रभाव से यदि मनुष्य किसी दूसरे की हत्या करता है तो मणिबन्ध की ओर जाने वाली मस्तक-रेखा उसे स्वयं अपनी हत्या करने को उद्यत कर देती है। इसी तरह हाथ को अन्य रेखायें और उन के सम्बन्ध में आने वाले चिन्ह रोग, दुर्घटना, उन्नति, अवनति और विवाह आदि जीवन सम्बन्धी शुभ या अशुभ घटनाओं का ज्ञान हम को वर्षों पहले करा देते हैं।

मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है। परमात्मा ने उसको ऐसा करने का अवसर दिया है। तुमको चाहिये कि उसकी दया का स्वागत करो और अपने ज्ञान का विस्तार बढ़ाओ। याद रखो यदि तुम जलती अग्नि में अपना हाथ बढ़ाओगे तो वह जल जायगा और तुम्हें अपनी मूर्खता पर रोना पड़ेगा। परमात्मा न तुम्हें ऐसा करने से रोकेगा और न नियम के विपरीत अग्नि को ही ठंडा बनायेगा—यह केवल तुम्हारी ज्ञान शक्ति है जो आपत्ति के समय तुम्हारी सहायता कर सकती है।

हस्त-सामुद्रक का ज्ञान हो जाने से 'भविष्य में आपकी कैसी प्रकृति रहेगी'—इसका अनुमान आप वर्षों पहले कर सकते हैं। मनुष्य जीवन में तुम्हारे मार्ग में कौन-कौन सी बाधायें हैं यह तुम

पहले ही देख सकते हो। यदि कोई है तो तुम उसके लिये पहले ही से सावधान हो जाते हो, तुम अपनी उन प्रवृत्तियों को जो तुम्हारे दुर्भाग्य का कारण है बदल देते हो या उनके मार्ग को छोड़कर अपना एक नया ही मार्ग तलाश कर लेते हो और अपने जीवन के संग्राम में विजयी कहलाते हो।

ऐसी दशा में यह विद्या छोटे-छोटे बच्चों के माता पिता, हकीम, और डाक्टरों और उन युवक और युवतियों के लिये जिनको अपने जीवन-क्षेत्र का विस्तृत मार्ग सुख और शान्ति पूर्वक तय करना शेष है कितनी उपयोगी है—यह वह स्वयं समझ सकते हैं।

"ग्रन्थकार"

पहला भाग

हस्त–परिचय



पहला अध्याय

हस्त-परिचय

सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार हस्त-सामुद्रिक विद्या दो विभागों में विभक्त की गई है—हस्त-परिचय और रेखा-ज्ञान। उक्त पहले विभाग में हाथ और अँगुलियों की बनावट और दूसरे में हाथ की रेखायें और उनके विभिन्न चिन्हों का वर्णन है।

उदाहरण के लिये आज भी भारतवर्ष में अनेक ऐसे विशेषज्ञ मिलते हैं जो घोड़ों की गर्दन, पांव आदि शारीरिक अवयवों की केवल बनावट देख कर ही उनकी जाति, उनके शुभाशुभ लक्षण, और अन्य विशेष बातें जो उनके सम्बन्ध में कही जाती हैं—बता देते हैं। ठीक यही बात मनुष्य जाति के सम्बन्ध में भी है।

जिस तरह पशुओं की शारीरिक बनावट से उनके भले बुरे का ज्ञान होता है, उसी तरह मनुष्यों के हाथ और उनकी अँगुलियों की बनावट को देख कर हम उनके मानवी-मनोविकार, शारीरिक क्रिया और उसी के अनुसार उनकी प्रारब्ध का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

यदि देखा जाय तो हमारे मनुष्य-जीवन का एक गहरा सम्बन्ध हमारे हाथों से है। जिस प्रकार किसी विशालकाय घोड़े के जोड़ पतले और कमज़ोर देख कर हम उसे भागने-दौड़ने के अयोग्य समझ लेते हैं, उसी तरह संसार के कार्य्य-क्षेत्र में हमारे लम्बे और सकड़े हाथों का एक विशेष स्थान होता है जो मोटे और छोटे हाथों से सर्वथा भिन्न होना चाहिये। दूसरे शब्दों में हमको उन्नति के शिखर से नीचे अवनति की ओर धकेलने या अवनति के गढ़े से निकाल कर ऊपर उन्नति की ओर उठाने का सारा श्रेय हमारे इन्हीं हाथों को है। हमको अपने सभी विचारों को क्रियात्मक रूप देने के लिए अपने हाथों से सहायता लेनी पड़ती है। यदि हम कोई बुरा या भला कार्य करने की चेष्टा करते हैं तो तत्काल हमारे हाथ हमारी सहायता के लिये आगे बढ़ते हैं और हम उसमें सफल या विफल होकर अपने कर्मों के अनुसार पतन या विकास की ओर बढ़ने लग जाते हैं। ऐसी दशा में जब कि बहुत से स्त्री-पुरुष परीक्षा के लिये अपने हाथ दिखाना पसन्द नहीं करते हस्त-परीक्षा का विषय—उन हाथों की परीक्षा का विषय जिनकी केवल बनावट देख कर ही मनुष्यों

के स्वाभाविक गुण और उनकी मनोवृत्ति का ठीक-ठीक ज्ञान हो सकता हो—कितने महत्व का विषय है।

भारतवासी हो या जरमन, अँग्रेज़ हो या जापानी, मनुष्य कोई भी हो स्वभाव सबका उनके हाथ की बनावट देख कर बताया जा सकता है। यहां यह बात याद रखनी चाहिये कि किसी विशेष परिश्राम या व्यायाम करने से हाथ लम्बा या चौड़ा हो सकता है, परन्तु उसकी स्वाभाविक बनावट में कोई अन्तर नहीं पड़ता। हस्त-सामुद्रिक में अंगुलियों की बनावट के अनुसार हाथ के निम्न-लिखित सात* भेद कहे गये हैं।

(१) समकोण (Square) या उपयोगी हाथ।
(२) निकृष्ट (Elementary)
(३) दार्शिनिक (Philosophic)
(४) चमसाकार (Spatulate)
(५) व्यवसायिक (Artistic) या सूच्याकार।
(६) विषम (Idealistic) या अनुपयोगी।
(७) मिश्रित (Mixed)

---

* मनुष्य जाति भी मुख्य सात हैं।

हाथ के सात भेद

हम हाथ के सात भेदों में से सबसे पहिले समकोण (Square) हाथ के विषय में कुछ कहेंगे। समकोण हाथ सबसे श्रेष्ठ और उपयोगी हाथ है और मनुष्य के शुभ-गुण-सम्पन्न होने का एक प्रारम्भिक लक्षण है। इसको समकोण इस लिये कहते हैं कि इसमें कलाई और अँगुलियों के बीच में हथेली और अँगुलियाँ अलग-अलग नाप में समकोण (Square) की तरह होती हैं। परन्तु अगुलियों के लिये यह आवश्यक नहीं है कि वह सिरे पर समकोण हों। प्रायः देखा गया है कि बहुत से हाथों में अँगुलियाँ वैसी नहीं होतीं। यह अँगुलियाँ सपाट मुलायम और नीचे हथेली के पास सुडौल होकर जुड़ी होती हैं। इनमें मध्यमा अँगुली (Second Finger) की बीच की गांठ (Knot of Philosophy) आकार में कुछ बड़ी होती है।

वह मनुष्य जिनकी अँगुलियाँ ऊपर लिखे अनुसार होती हैं, स्वभाव के कोमल, मिलनसार और उत्साही होते हैं। सब के साथ नम्रता का वर्ताव करते हैं—परन्तु यदि उनके सामने कोई असभ्यता का व्यवहार करे तो वह उसे सहन नहीं कर

[पृष्ठ २७—२८]



समकोण या वर्गाकार हाथ

सकते और उससे घृणा करने लगते हैं। बिना अधिकार वह किसी को बीच में बोलता देख कर चिढ़ जाते हैं और न स्वयं किसी के बीच में बोलते हैं। वह उच्च पद पाने की इच्छा करते हैं—परन्तु साथ ही अपने बड़ों की आज्ञा का पालन करना अपना मुख्य कर्त्तव्य समझते हैं। उन्हें अभिमान नहीं होता और उन मनुष्यों को जो असभ्य और अभिमानी होते हैं तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं। एक बात और भी है जिसे यहां कह देना आवश्यक है। इस श्रेणी में बहुत से ऐसे मनुष्य भी मिलते हैं जिनका स्वभाव दूसरी तरह का होता है। इनके हाथ और अँगुलियों की बनावट ठीक वैसी ही होती है जैसी ऊपर कही जा चुकी है-परन्तु स्वभाव वैसा नहीं होता। इसका कारण मनुष्य के वह × ग्रहस्थान (Mounts) हैं जो अपने किसी समीपवर्ती ग्रह-स्थान के पास पड़ कर उसके स्वभाव में एक विशेष परिवर्तन कर देते हैं—(देखो ग्रहस्थान)।

यदि अँगुलियाँ गठीली और समकोण (Square) के आकार की हों तो मनुष्य सत्यवादी और शान्त-स्वभाव वाला होता है। नियम पालन की श्रेष्ठता वह ख़ूब समझता है, इसलिए भले ही वह अपने अफ़सरों को न चाहता हो—उनकी आज्ञा का पालन करना अपना पहला काम समझता है। वह क़ानून को मानता है—किसी आदमी को नहीं। अन्धविश्वासी न होने से वह किसी बात को बिना

× ग्रह-स्थानों का वर्णन अगले पृष्ठों में किय गया है।

तुलनात्मक रूप से सिद्ध किये कभी उस पर विश्वास नहीं करता।

स्वतन्त्र रूप से विचार करने की शक्ति ऐसे मनुष्यों में कम होती है, परन्तु अपने लक्ष्य-साधन में एकाग्र और उत्साही होने के कारण प्रायः अपने सभी कामों में सफल हो जाते हैं।

उपरोक्त सभी गुण समकोण अँगुलियों में मिलते हैं। विशेषतः जिनकी अँगुलियाँ चिकनी और मस्तक रेखा (Line of Head) झुकी हुई हो तो वह सभ्य पुरुषों की तरह सुन्दर वस्त्र पहनने वाले होते हैं। भले ही वह पुराने कपड़े पहने हों सभ्यता की मात्रा उनमें अवश्य पाई जायेगी। मलीन वस्त्र गन्दे जूते, इत्यादि किसी भी मैली वस्तु को साफ़ कराने के लिये वह सदां तैयार रहते हैं।

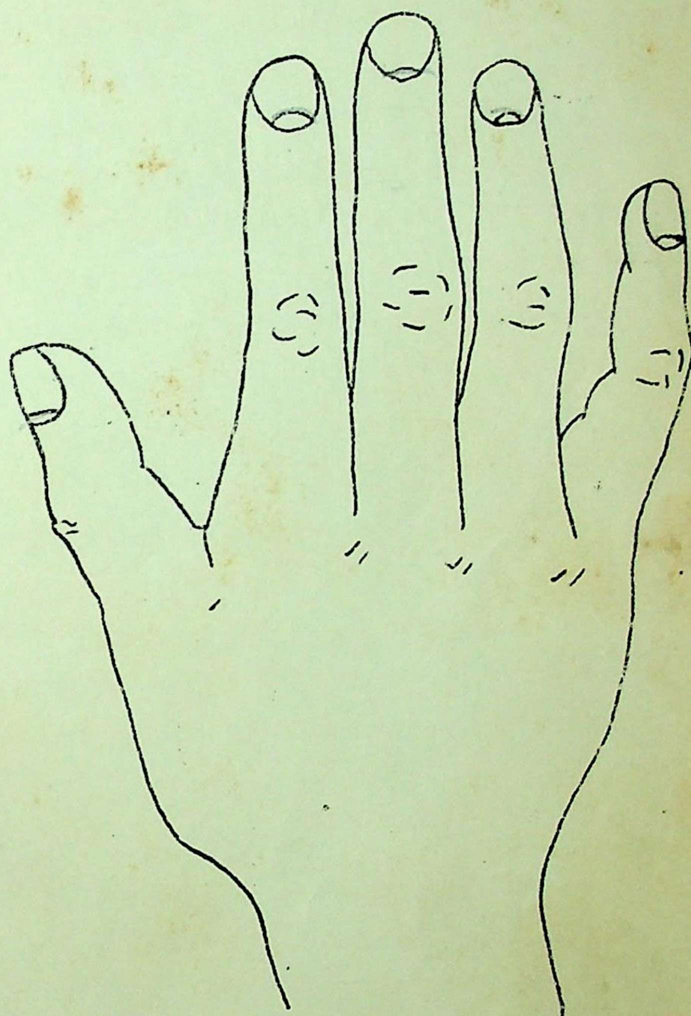
यह मनुष्य वायदे के सच्चे, मित्रों में विश्वासी, परन्तु प्रेम के सम्बन्ध में अधिकांश अस्थिर पाये जाते हैं।

प्रायः इस श्रेणी के मनुष्य योग्य डाक्टर, कुशल वैज्ञानिक, अनुभवी वकील, और व्यापारी देखे गये हैं। तर्कना-शक्ति उनमें अधिक होती है और अपना वहुतसा समय किसी बात को सिद्ध करने में व्यय कर देते हैं—यही एक दोष है।

निकृष्ट हाथ

निकृष्ट (Elementary) हाथ आवश्यकता से अधिक छोटा, मोटा, और भद्दे आकार वाला होता है। इसमें अँगूठा छोटा और कठिनता से अँगुलियों के नीचे (Base) तक पहुँचता है। रेखाएँ भी इसमें कम होती हैं। प्रायः हृदय रेखा, मस्तक

[पृष्ठ ३१—३२]



निकृष्ट हाथ

रेखा और जीवन रेखा को छोड़कर दूसरी रेखाएँ इस हाथ में नहीं मिलतीं।

यह हाथ सब से असभ्य और निकृष्ट श्रेणी का समझा जाता है। इस हाथ के मनुष्य निरे असभ्य और पशुओं के समान मंद-बुद्धि और दुष्ट प्रकृति के देखे गये हैं। मंद-बुद्धि होने से वह सदा ऐसे कार्य करते हैं जिनमें बुद्धि से अधिक काम लेने की आवश्यकता न पड़ती हो। यह स्वभाव के क्रोधी परन्तु कम हिम्मत वाले होते हैं। क्रोध आने पर यह पागल के समान जो मुँह पर आता है कह डालते हैं। अपने ऊपर इन्हें कुछ भी अधिकार नहीं होता और सदा अपनी इच्छाओं के दास बने रहते हैं। यह धूर्त होते हैं और अपनी इच्छाओं और वासनाओं को तृप्त करते समय पशुओं जैसा आचरण करते हैं।

साधारण निकृष्ट (Elementary) हाथ में मस्तक रेखा (Line of Head) हल्की, अस्पष्ट और छोटी होती है। अँगूठा छोटा और सिरे पर मोटा होता है। यह सभी लक्षण प्रायः वेतन लेकर सेना में भरती होने वाले सिपाहियों में पाये जाते हैं। यह तनुख़्वाह पाने के लिए लड़ते हैं—देशहित के लिये नहीं।

दार्शनिक हाथ

दार्शनिक (Philosophic) हाथ लम्बा, गठीला और बीच से झुका होता है–इसलिये आसानी से पहचाना जा सकता है। इसमें अँगुलियाँ हड़ीली और जोड़ उभरे हुए होते हैं—(चित्र नं० ३)।

यह मनुष्य स्वभाव के विलक्षण होते हैं। इनका स्वभाव, इनके विचार, और प्रायः सभी काम दूसरे मनुष्यों से भिन्न पाये जाते हैं। स्वाभिमानी होने के कारण यह गम्भीर अधिक रहते हैं। भले ही यह सबसे प्रेम के साथ मिलते हों, परन्तु उनके घनिष्ट मित्रों की संख्या अधिक नहीं होती। यह मनुष्य धनवान् कम देखे गये हैं। यदि धनवान् भी हुवे तो अपना धन परोपकार में लगाने वाले होते हैं। मनुष्य-जाति से प्रेम करना उनका स्वाभाविक गुण होता है। इसलिये अनाथों के लिये अनाथालय, ग़रीबों के लिये स्कूल और दूसरी धार्मिक संस्थाएं कायम करने की अभिलाषा प्रायः उन्हें सदां ही बनी रहती है। यह सभी मनुष्य अपने काम साव-धान और सतर्क रह कर करते हैं। अपने को बड़ा समझते हैं और विचारों के इतने स्वतन्त्र और स्पष्टहोते हैं कि जब तक पूरा प्रमाण न मिले अपने धर्म-ग्रन्थों में भी शंका करने लग जाते हैं। इस श्रेणी के मनुष्य प्रायः कवि, लेखक या उपदेशक होते देखे गये हैं।

उपरोक्त गुण उन मनुष्यों में मिलते हैं जिनकी अँगुलियों के जोड़ उभरे हुए मोटे होते हैं। यदि अँगुलियाँ चिकनी हों तो स्वभाव में भी अन्तर पड़ जाता है। पहले कहा जा चुका है कि अँगुलियाँ यदि गाँठदार हों तो मनुष्य के स्वभाव में गम्भीरता पाई जाती है। इतना ही नहीं वह रहस्यवादी भी हो सकता है—परन्तु उसका यह रहस्यवाद उसके हाथ की मस्तक रेखा (Head Line) को देखकर ही बताया जा सकता है।

दार्शनिक हाथ में अँगुलियों का ऊपरी भाग समकोण

[पृष्ठ ३५—३६]



दार्शनिक हाथ

(Square) के आकार का भी हो सकता है और उसी के अनुसार मनुष्य का स्वभाव भी समझना चाहिये।

चमसाकार हाथ

चमसाकार (Spatulate) हाथ की अङ्गुलियाँ जैसी कि चित्र में दिखाई गई हैं मुड़ी हुई टेढ़ी-सीधी होती हैं। हथेली किसी हाथ में कलाई के पास अधिक और अंगुलियों के पास कम चौड़ी तो किसी में अंगुलियों के पास अधिक और कलाई के पास कम चौड़ी हो जाती है।

यदि किसी हाथ में हथेली अँगुलियों के पास अधिक चौड़ी हो और वह मनुष्य कोई अविष्कार-कर्त्ता हो तो उसके द्वारा किये गये अविष्कार (Inventions) मनुष्यों के बड़े काम के होते हैं। इसके विपरीत यदि हथेली कलाई के पास ज़्यादा चौड़ी होकर अंगुलियों के पास कम होगई हो तो उस मनुष्य के अविष्कार (Inventions) आदर्श के रूप में अवश्य ऊँचे समझे जाते हैं—परन्तु क्रियात्मक रूप में वह हमारे लिये उतने उपयोगी सिद्ध नहीं होते।

यह हाथ मज़बूत और सख़्त या कोमल और मुलायम दोनों तरह का हो सकता है। मज़बूत और सख़्त हाथ में अंगुलियों का गांठदार होना मनुष्य के परिश्रमी और उद्यम-शील होनेका लक्षण है। यह कभी सुस्त नहीं बैठते कुछ न कुछ करते ही रहते हैं। यदि स्त्री हुई तो सदां घर के काम-धन्धों में मग्न रहने वाली

होती है। पढ़ने-लिखने या दस्तकारी से उस को उतना प्रेम नहीं होता।

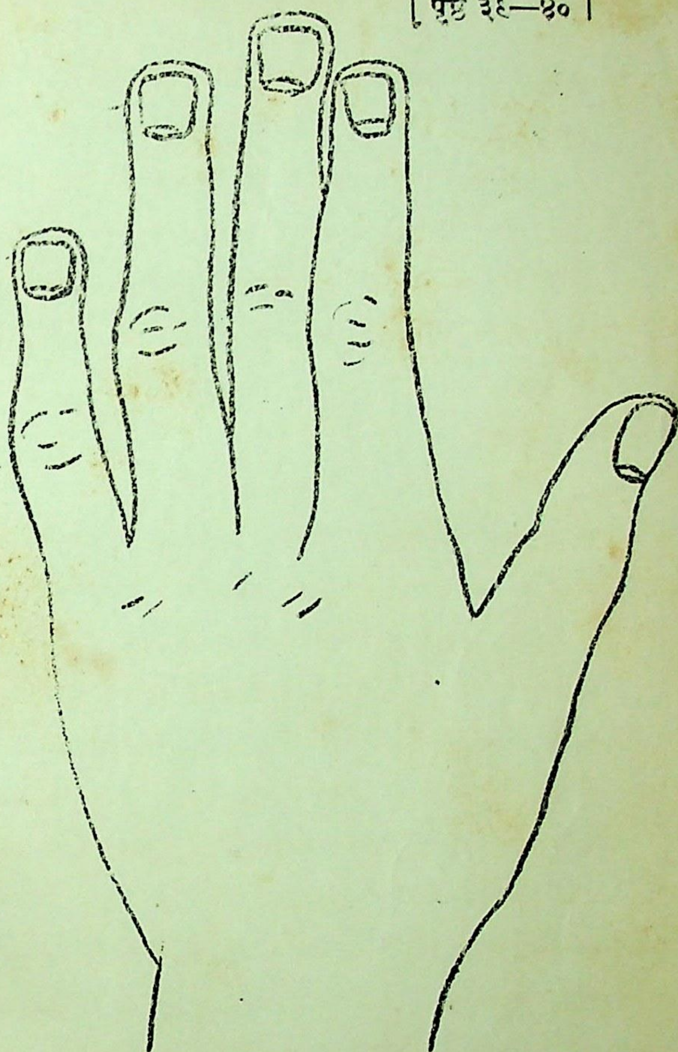
प्रायः देखा गया है कि ऐसे हाथ इन्जीनियर, अविष्कार-कर्त्ता और साहसी मल्लाहों के होते हैं। इससे यह भी न समझना चाहिये कि इस श्रेणी के सभी मनुष्य इन्जीनियर, अविष्कारकर्त्ता या मल्लाह ही होते हैं। वह चाहे कोई भी हों अपने उद्देश्यों को लक्ष्य में रख कर काम करने वाले, साहसी और प्रयत्न-शील होते हैं।

यदि हाथ में अँगुलियाँ गाँठदार न होकर चिकनी हों तो वह दस्तकारी को अच्छा समझते हैं—परन्तु स्वयं वह कोई कुशल कलाकार नही होते। फिर भी अपने रहने के स्थान को सजाने और सुविधानुसार अपने आराम का प्रबन्ध करने में ऐसे मनुष्य सदां तत्पर देखे गये हैं। यदि अँगुलियाँ चिकनी होने के साथ ही लम्बी भी हों तो पेड़-पौधे या खेती-वाड़ी के काम में उनकी रुचि अधिक पाई जाती है। शरीर फ़ुर्तीला होता है—इसलिये घोड़े की सवारी, शिकार खेलना, निशाना मारना आदि दौड़ने-कूदने के काम वह अधिक पसन्द करते हैं।

चमसाकार (Spatulate) हाथ में अंगुलियाँ गाँठदार हों तो मनुष्य परिश्रमी और स्वभाव के सरल होते हैं। उन्हें क्रोध भी कम आता है और बोल चाल के वह नम्र होते हैं।

छोटे अँगूठे की अपेक्षा बड़े अँगूठे में कुछ विशेष गुण पाये जाते हैं। सख़्त हाथ के मनुष्य शासन करने के इच्छुक होते

[पृष्ठ ३९—४०]



चमसाकार हाथ

हैं। वह किसी के दबाव में रहना पसन्द नहीं करते और लड़ाई-झगड़ा करने वाले, साहसी योधा और विप्लवकारी (Revolutionists) होते हैं।

यदि हाथ मुलायम और कोमल हुआ तो मनुष्य स्वभाव का चञ्चल और चिड़-चिड़ा होगा। ऐसा मनुष्य सहज ही क्रोध में भर जाता है। बुद्धि उसकी कभी स्थिर नहीं रहती। वह घड़ी-घड़ी अपने विचार बदलता है और सदां असन्तुष्ट और अशान्त बना रहता है।

अँगुलियों के विषय में यहबात ध्यान में रखनी चाहिये कि वह यदि गठीली होंगी तो मनुष्य क्रिया-शील होगा और यदि चिकनी हुईं तो वह उतनाही निकम्मा (Unpractical) होगा।

व्यवसायिक हाथ

व्यवसायिक (Artistic) हाथ की अँगुलियां जैसी कि चित्र में दिखाई गई हैं ऊपर सिरे पर पतली होती हैं—यही इसकी पहिचान है। इस हाथ का नाम व्यवसायिक (Artistic) होने से प्रायः बहुत से मनुष्यों का ख़्याल होता है कि इस हाथ के मनुष्य चित्रकार, गवैये, या दूसरे कलाकार ही होते हैं। बात ऐसी नहीं है। यह मनुष्य चित्रकारी, या गानविद्या से प्रेम अवश्य रखते हैं—सीखना भी चाहते हैं—परन्तु अपने विचारों में निर्बल और कार्य्यपटु न होने से कठिनता से वह अपने किसी कार्य्य में सफल हो पाते हैं। किसी काम के करने में शीघ्रता करना और फिर उसे बिना समाप्त किये ही छोड़ बैठना उनका

साधारण गुण होता है। ऐसे मनुष्य किसी काम का परिणाम नहीं सोचते—मन में विचार आते ही हर काम करने को उद्यत हो जाते हैं।

यह मनुष्य किसी काम के आरम्भ में चाहे कितने ही उत्साही और उतावले क्यों न देख पड़ते हों—उनका वह उत्साह क्षणिक और शीघ्र ही ठण्डा पड़ जाने वाला होता है जिससे वह अपने कार्य्य में प्रायः असफल ही रह जाते हैं।

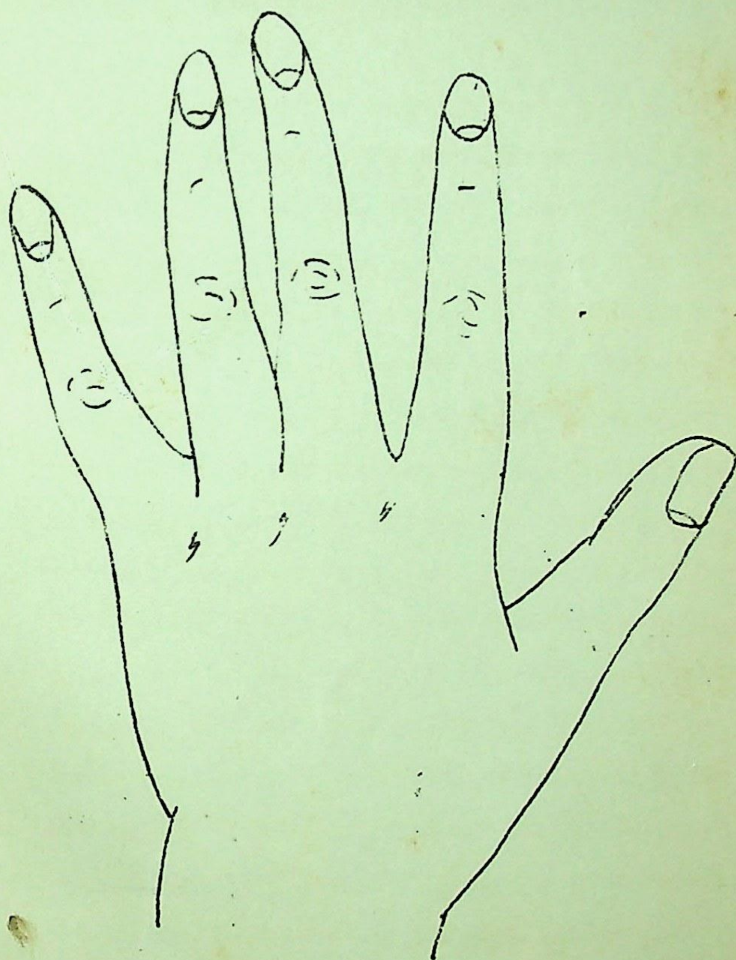
यह बहुत बोलने वाले होते हैं। किसी विषय को समझने में इन्हें अधिक समय नहीं लगता। इनकी बुद्धि तीव्र होती है—परन्तु विचार-शक्ति निर्बल होने से वह योग्य विद्यार्थी नहीं हो सकते।

इन मनुष्यों पर दूसरों का प्रभाव बहुत जल्द पड़ता है और छोटी-छोटी बातों पर यह नाराज़ हो जाते हैं। तनिक बात को बढ़ा देने का गुण इनमें अधिक होता है। इनका स्वभाव चञ्चल और विचार अस्थिर होते हैं।

यदि स्त्रियों का हाथ व्यवसायिक (Artistic) हुआ तो वह ख़ुशामद पसन्द होती हैं और बिना प्रेम किये नहीं रह सकतीं। प्रेम के सम्बन्ध में वह इतनी अज्ञान और उतावली होती हैं कि चाहे किसी को उनके प्रेम की स्थिरता पर विश्वास न भी हो तो भी वह उसे प्रेम करने लग जाती हैं।

इस श्रेणी के मनुष्य क्रोध आने पर अपने से बाहर हो जाते हैं। क्रोधावेश में भले-बुरे का इन्हें कुछ भी ज्ञान नहीं रहता और जो मुँह पर आता है—कह डालते हैं। यह दूसरों के साथ सहानु-

[पृष्ठ ४३—४४]



व्यवसायिक हाथ

भूति रखने वाले उदार भी हो सकते हैं—परन्तु जहाँ अपने लाभ और स्वार्थ का प्रश्न सामने हो वहाँ रूखे और स्वार्थी बन जाते हैं। प्रेम के सम्बन्ध में यह इतने दृढ़ होते हैं कि यदि इनका किसी से प्रेम हो जाय तो अन्त तक उसके साथ उदारता और प्रेम का व्यवहार रखते हैं।

अवस्था-भेद से मनुष्य के स्वभाव में बहुत कुछ अन्तर पड़ जाता है। धोखा देना, आपस में द्वेष रखना, झूठ बोलना, मक्कारी धूर्त्तता आदि बुरे लक्षण मुलायम, लम्बे और भारी व्यवसायिक (Artistic) हाथ में पाये जाते हैं। विवाह या दूसरे सम्बन्ध भी किसी धार्मिक या कर्तव्य पालन की इच्छा से नहीं बल्कि सुन्दरता का उपभोग करने या अपनी वासनाओं को मिटाने के लिये ही वह किसी व्यक्ति-विशेष के सम्बन्ध में आते हैं। उनके चेहरे पर प्रायः कामुकता का भाव झलकता है और स्वभाव के वह धूर्त्त होते हैं। गृहस्थ से उन्हें प्रेम कम होता है और अपना बहुत सा समय मित्रों के साथ चुहल करने में ही व्यतीत करते रहना वह अधिक पसन्द करते हैं। क़र्ज़ लेकर उन्हें देना नहीं आता। बातों का जमा ख़र्च अच्छा कर जानते हैं। शुक्र (Venus) और चन्द्रमा (Moon) का उनके हाथ पर राज्य होता है।

यदि हाथ गाँठदार हों तो लक्षण शुभ होते हैं। यह मनुष्य सुन्दरताको प्रेम करते हैं। किसी दुष्ट भाव से नहीं—बल्कि इसलिये कि सुन्दर होना अच्छा है।

यदि हाथ देखने में सुन्दर आकार वाला, मोटा, और छोटा

हो तो धनवान होने की लालसा उस मनुष्य को लगी रहती है। व्यवसायिक (Artistic) हाथ का सख़्त होना किसी मनुष्य के योधा होने का लक्षण है। एक अफ़सर जो अपनी योग्यता से प्रशंसा का पात्र बन गया हो युद्ध के मैदान में सेना का सञ्चालन योग्यता से कर सक्ता है—यदि उसकी हथेली सख़्त और अँगूठा लम्बा हो।

प्रायः देखा गया है कि मज़बूत और मुलायम हाथ भारी और ढीले हाथ से अच्छा होता है। यदि हाथ भारी और उतना ही ढीला हो तो मनुष्य स्वार्थी, अपने ही आनन्द में मग्न रहने वाला, विलासप्रिय और निरुद्योगी होता है।

विषम हाथ

विषम (Idealistic) हाथ देखने में सुन्दर परन्तु जहाँतक मनुष्य की उन्नति का सम्बन्ध है सबसे अधिक निकृष्ट समझा जाता है। इस हाथ की अँगुलियाँ जैसी कि चित्र में दिखाई गई हैं सिरे पर अधिक पतली और उतनी ही नोकदार होती हैं–(चित्र नं० ६)। यह आकार में छोटा, मुलायम, चिकना, और कोमल होता है और इसमें अँगुलियां ऊपर से पतली और लम्बी होकर नीचे की ओर क्रम से मोटी होती जाती हैं।

इस श्रेणी के मनुष्य मनःसृष्टि में विचरने वाले काल्पनिक (Visionary) होते हैं। अपने जीवन का अधिकांश भाग तरह-तरह के मन्सूबे बांधने और शेष समय की परिस्थित को अपने अनुकूल बनाने में लगादेते हैं—कुछ कर नहीं पाते।



विषम हाथ

प्रबन्ध करने की योग्यता का अभाव और समय का उपयोग न कर सकने के कारण इस श्रेणी के मनुष्य अच्छे व्यापारी और उद्यमी नहीं बन सकते। आलसी होने से वह किसी परिश्रमी मनुष्य के साथ काम करने का साहस भी नहीं करते। सुन्दर-सुन्दर रंगों से उन्हें प्रेम होता है और यदि हाथ में मस्तक रेखा (Head Line) अच्छी पड़ी हो तो उनकी प्रवृत्ति प्रायः चित्रकारी या रंगसाज़ी की ओर देखी गई है।

प्रायः ऐसे मनुष्य कट्टर धार्मिक और अपने इष्टदेव को प्रत्यक्ष रूप में देखने के सदा अभिलाषी रहते हैं। अपने देवताओं में श्रद्धा रखते हैं और प्रत्येक अवस्था में उनकी भक्ति और आराधना में तत्पर रहते हैं।

मिश्रित हाथ

मिश्रित हाथ (Mixed Hand)—सातवाँ हाथ है जिसके विषय में हमें कुछ कहना है। इस हाथ की बनावट जैसी कि इसके नाम से प्रगट है वर्गाकार, निकृष्ट, चमसाकार या दार्शनिक हाथ की तरह कोई विशेष नहीं—भिन्न प्रकार की होती है। किसी न किसी रूप में प्रायः सभी हाथों के लक्षण इस सातवें हाथ में मिलते हैं।

उदाहरण के लिये पहली अँगुली नोकदार, दूसरी झुकी हुई टेढ़ी, तीसरी समकोण (Square) या किसी अन्य आकार की हो सकती । ऐसी दशा में मनुष्य हवा में उड़ते हुए कणों के समान अस्थिर रहता है। किसी काम को हाथ में लेकर उसे

पूरा किये बिना ही छोड़ देना और फिर दूसरे काम लग जाना उसका स्वाभाविक गुण हो जाता है। सफलता उससे दूर रहती है।

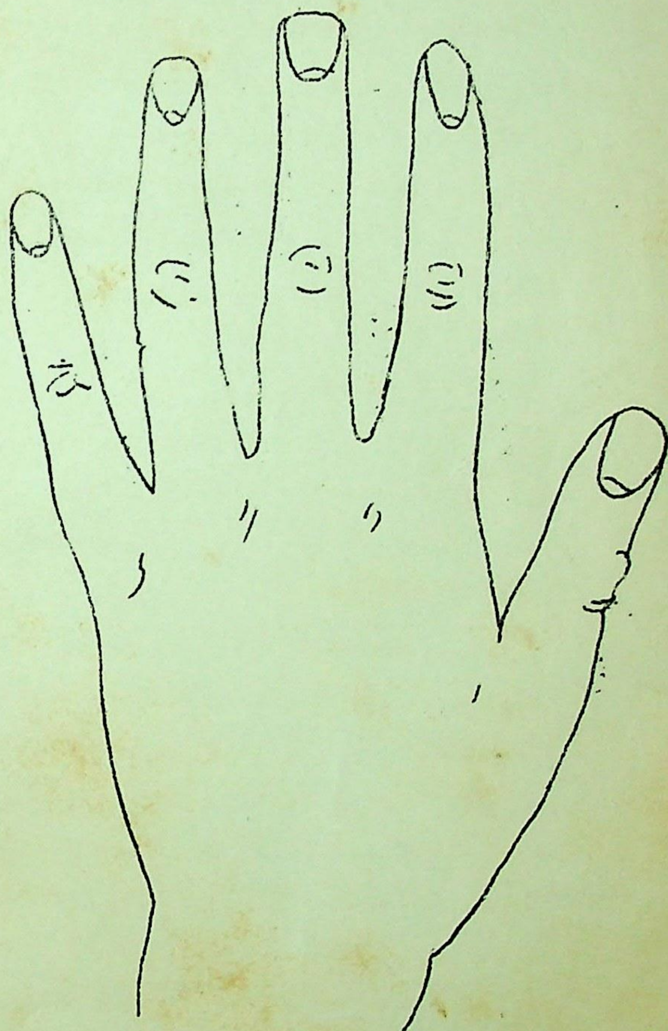
साधारण रूप में वह चित्रकार हो सकता है, दस्तकार भी हो सकता है, गाने-बजाने वाला भी हो सकता है, और इसी तरह के कुछ दूसरे कार्य भी कर सकता है—परन्तु वह उपरोक्त किसी कला में पूर्णरूप से कुशल हो यह बात बहुत कम देखने में आई है। यदि हाथ में मस्तक रेखा (Head Line) अधिक स्पष्ट रूप में पड़ी हो तो सम्भव है ऐसा मनुष्य अपने किसी कार्य में कुछ सफलता प्राप्त कर सका हो।

यदि हाथ में अँगुलियाँ समकोण (Square) के आकार की होकर ऊपर से नोकदार हों तो वह मनुष्य धोकेबाज़ और दूसरों की आँख धूल डालकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने वाला होता है।

निकृष्ट और व्यवसायिक हाथ के लक्षण मिलजाने से मनुष्य बे-परवाह और दूसरों के सहारे पर काम करने वाला होता है। किसी हाथ में समकोण और चमसाकार हाथ के लक्षण मिलने से मनुष्य के गुणों में कुछ विशेषता आ जाती है और वह महनती होकर नियम पालन की श्रेष्ठता समझने लगता है। इसी प्रकार और भी गुण समझने चाहियें।

सूचना

विद्यार्थियों को यहाँ यह बात याद रखनी चाहिए कि अनेक जातियों के विवाह आदिक सम्बन्ध आपस में मिल जाने से



मिश्रित हाथ

उनके हाथों की बनावट में बहुत कुछ अन्तर पड़ जाता है। ऐसी दशा में कोई हाथ अपने वास्तविक रूप में नहीं मिलता। प्रायः बहुत से हाथों में बनावट दो या तीन तरह की होती देखी गयी है। किसी हाथ की हथेली समकोण, अँगुलियाँ सूच्याकार या दार्शनिक होती हैं तो किसी में तीन बातें एक साथ देखने को मिलती हैं। उदाहरण के लिये हथेली समकोण और अँगुलियाँ—हथेली और दूसरे जोड़ के पास—दार्शनिक और ऊपर सिरे पर चमसाकार या नोकदार होती हैं। हाथ के विषय में यदि उपरोक्त बातें ध्यान में रक्खी जाँय तो किसी मनुष्य के स्वभाव को ठीक-ठीक समझ लेने में बहुत कुछ सहायता मिल जाती है। इसके अतिरिक्त बहुत सी ऐसी बातें जो हाथ की रेखायें देखकर हम नहीं बता सकते—जान सकते हैं और उसीके अनुसार मनुष्य के भविष्य जीवन पर भी बहुत कुछ प्रकाश डाला जा सकता है❀।

❀मनुष्य का भविष्य जीवन उसके स्वभाव से सम्बन्ध रखता है।

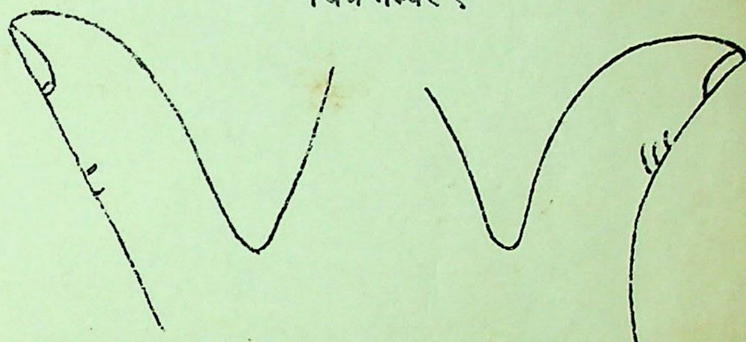
अँगूठा

मनुष्य का स्वभाव और उसकी अन्य मानसिक क्रियाओं के समझने में अँगूठा उतना ही उपयोगी है जितनी कि मुँह के लिये नाक है। इसके द्वारा मनुष्य की मानसिक शक्तियाँ और उनके निर्बलता का पता हमको विशेषरूप से मिलता है। हस्त-सामुद्रिक के आधार पर मनुष्य की मनोवृत्ति और उसके स्वभाव के विषय में बहुत कुछ हम उसका अँगूठा देख कर समझ सकते हैं।

वैज्ञानिक रूप से भी यदि देखा जाय तो बहुत से विद्वानों का मत है कि एक विशेष नाड़ी द्वारा हमारे अँगूठे और मस्तिष्क का आपस में एक गहरा सम्बन्ध है। नाड़ी-विशेषज्ञ इस बात



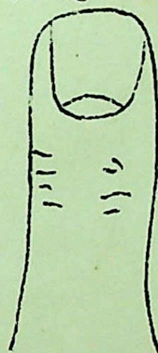
चित्र नम्बर १



सीधा और सुदृढ़ अंगुठा   कोमल या लचीला अंगूठा



चित्र नम्बर ४



चित्र नम्बर ५



चित्र नम्बर ६

चित्रपट ८

को अच्छी तरह जानते हैं कि हमारे दिमाग़ में एक ऐसा स्थान है जिसको अँगुष्ठ-भाग (Thumb Brain) कहते हैं। मस्तिष्क के इस अँगुष्ठ-भाग पर यदि किसी कारण से अधिक या अनावश्यक दबाव पड़ता है तो एक विशेष प्रकार का कम्पन (Paralysis) पैदा होता है और नाख़ून से सम्बन्ध रखने वाला अँगूठे का ऊपर का भाग बढ़ने लगता है। यह एक उत्पन्न होने वाले रोग की सूचना होती है जो सबसे पहले अँगूठे द्वारा हमको मिलती है।

अँगूठे के दो मुख्य भेद

अवस्था-भेद से अँगूठा दो तरह का होता है—सीधा सुदृढ़, कोमल और झुका हुआ। किसी मनुष्य के स्वभाव के विषय में अपना मत प्रगट करते समय उसके हाथ में पड़ी हुई मस्तक-रेखा पर अवश्य निगाह डाल लेनी चाहिये—क्योंकि उसका प्रभाव भी मनुष्य के स्वभाव पर बहुत कुछ पड़ता है।

अँगूठे के विषय में निम्न लिखित नियम विचारणीय है।

सीधा और सुदृढ़ अँगूठा जैसा कि चित्रपट (नं० १) में दिखाया गया है जिस मनुष्य का होता है वह कोमल और झुके हुए अँगूठे वाले मनुष्य की अपेक्षा अधिक स्वेच्छाचारी और हठी होता है।

कोमल और झुका हुआ अँगूठा मनुष्य के स्वभाव में अस्थिरता का भाव प्रदर्शित करता है। यदि हाथ में मस्तक-रेखा बिल्कुल सीधी न हो तो उसके विचार और भी अधिक कमज़ोर

होते हैं और वह सहज ही दूसरों के कहने में आकर अपने निश्चित विचारों को बदल देता है।

प्रत्येक हाथ में अँगूठा दो जगह से मुड़ा होता है—अँगूठे के नाखून से सम्बन्ध रखने वाले पहले जोड़ पर या उसके नीचे दूसरे जोड़ पर। पहली दशा में यदि किसी मनुष्य का अँगूठा ऊपर जोड़ पर मुड़ा हो तो वह दूसरे मनुष्यों के कहने में आ जाता है। परन्तु यदि अँगूठा पहले के नीचे दूसरे जोड़ पर झुक रहा हो तो मनुष्य समय और परिस्थिति को अपने अनुकूल या प्रतिकूल देखकर ही अपने विचार बदलता है—किसी के कहने से नहीं।

जिन मनुष्यों का अँगूठा पहले जोड़ पर मुड़ा होता है वह उन मनुष्यों की अपेक्षा जिनका अँगूठा सुदृढ़ और सीधा होता है उतने दृढ़ विश्वासी और मज़बूत विचारों के नहीं होते—बल्कि दूसरों के फ़ायदे के लिये स्वयं नुक़सान उठाने वाले, फ़जूल ख़र्च और प्रायः धन को व्यर्थ के कामों में बर्बाद करने वाले होते हैं।

यह बात याद रखनी चाहिये कि यदि ऐसे मनुष्य किसी का उपकार भी करते हैं तो कुछ परोपकार की दृष्टि से नहीं—बल्कि दूसरों के कहने में आकर करते हैं। वह बड़ी आसानी से धोखे में डाले जा सकते हैं और ठग लिये जाते हैं या दूसरे व्यर्थ कामों में अपना धन ख़र्च कर डालते हैं। इसके विपरीत जिस मनुष्य का अँगूठा दूसरे जोड़ पर से झुका हुआ धनुषाकार होता है वह आसानी से किसी के धोखे में नहीं आता

और जहाँ रुपये पैसे का सवाल सामने हो वहां वह सावधानी और प्रायः रूखेपन से काम लेता है।

दूसरी बात जो यहाँ कह देनी आवश्यक है उन कोण के विषय में है जो अँगूठा हथेली के साथ मिलकर बनाता है।

कोण दो तरह के होते हैं—विषम कोण (Acute Angle) और अधिक चौड़े (Obtuse) कोण समझने चाहियें।

कोण जितना अधिक चौड़ा होगा मनुष्य उतना ही अधिक अपने ऊपर विश्वास रखने वाला स्वतन्त्र विचार का होगा और पहले की अपेक्षा उसमें परोपकार के भाव भी कुछ अधिक मिलेंगे उपरोक्त सभी गुण उसमें असाधारण रूप से मिलते हों यह बात अभी तक अनुभव में नहीं आई। यदि अँगूठा हाथ से बाहर पड़ता हो या हथेली के साथ समकोण (Rt. Angle) बनाता हो तो जहाँ तक अपने लाभ से सम्बन्ध है मनुष्य हठी और स्वेच्छाचारी होता है। ऐसे मनुष्य किसी के दबाव में रहना पसन्द नहीं करते। किसी नियम या क़ानून को भी वह अधिक नहीं मानते और सदाँ किसी न किसी मुसीबत में घिरे रहते हैं।

यदि अँगूठा हाथ के साथ विषम अर्थात् कम चौड़ा कोण बनाता हो तो मनुष्य निर्बल आत्माओं वाला, निःचेष्ट और कायर होता है। वह सतर्क रहता है परन्तु उसके स्वभाव में स्वतन्त्रता नहीं पाई जाती।

अँगूठे के विषय में यह बात याद रखनी चाहिये कि वह जितना सीधा और मज़बूत होगा मनुष्य के विचार भी उतने ही

दृढ़ और स्वतन्त्र होंगे। ऐसे मनुष्य जब कोई भला या बुरा काम करने या किसी पद तक पहुँचने का विचार अपने मनमें कर लेते हैं तो उसे पूरा करने की धुन में सदाँ तत्पर और प्रयत्नशील रहते हैं।

अँगूठे के तीन भाग

अँगुलियों की तरह अँगूठे के भी तीन भाग हैं❀—पहला मस्तक या ऊर्ध्व-भाग (First Phalange) दूसरा मध्य-भाग (Second Phalange) और तीसरा अधोःभाग (Third Phalange) है।

उपरोक्त तीनों भागों में से प्रत्येक भाग मनुष्य की निम्न-लिखित मुख्य तीन मानसिक शक्तियों का एक केन्द्र-स्थान है।

१	ऊर्ध्व-भाग	इच्छाशक्ति (Will)
२	मध्य-भाग	विचार शक्ति (Logic)
३	अधोःभाग	प्रेम (Love)

ऊर्ध्व-भाग

ऊर्ध्व-भाग जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है इच्छा-शक्ति का स्थान है। यह भाग मध्य-भाग से अधिक बड़ा न होना चाहिये क्यों कि ऐसी दशा में मनुष्य में स्वेच्छाचारी होने की शक्ति उसकी

❀ ऊपर से नीचे की ओर।

विचार-शक्ति से अधिक प्रबल होती है और वह व्यर्थ बकवादी और दूसरे के विरुद्ध झगड़ा करने वाला होता है। मनुष्य का स्वभाव उसके अंगूठे के ऊर्ध्व-भाग की लम्बाई पर निर्भर है। यह भाग विस्तार में जितना फैला हुआ और लम्बा होगा मनुष्य उतना ही अधिक स्वेच्छाचारी, दूसरों के साथ झगड़ा करने वाला हठी और निर्दयी होना चाहिये।

ऊर्ध्व-भाग के छोटे होने से मनुष्य का स्वभाव भी दूसरी तरह का हो जाता है। ऐसे मनुष्य की आत्मायें निर्बल होती हैं और अपनी शक्ति पर उसको विश्वास नहीं होता। उसका स्वभाव चञ्चल और विचार कमज़ोर होते हैं। अँगूठा जितना अधिक छोटा और संकुचित होगा मनुष्य उतना ही अधिक अस्थिर स्वभाव वाला, चञ्चल और इरादे का कच्चा होगा।

सामान्य रूप में अँगूठे के ऊर्ध्व-भाग की बनावट सुन्दर हो तो श्रेष्ठ है। अँगूठे का ऊपर से नोकदार या वर्गाकार होना अच्छा नहीं समझा जाता। इसकी लम्बाई न ज़्यादा और न उतनी कम बीच की होनी चाहिये। क्यों कि यह लक्षण मनुष्य के लिये शुभ हैं।

मध्य-भाग

मध्य-भाग और ऊर्ध्व-भाग का आपस में बराबर होना अधिक उपयोगी समझा जाता है। क्योंकि यदि यह दोनों भाग आपस में बराबर हों तो मनुष्य स्वेच्छाचारी होने के साथ ही

साथ विचारशील भी होता है और अपना हरएक काम खूब सोचविचार कर करता है। इच्छाशक्ति प्रबल होने से वह प्रायः अपने सभी कामों में सफल हो जाता है—यदि प्रेम उसके मार्ग में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न न करे।

यदि मध्य-भाग ऊर्ध्व-भाग से अधिक बड़ा हो तो मनुष्य की विचार-शक्ति उसकी इच्छा शक्ति से अधिक प्रबल होती है। फल यह होता है कि जिस समय उसकी इच्छा-शक्ति उसे कोई काम करने के लिये आगे बढ़ाती है तो उसकी विचार-शक्ति अधिक प्रबल होने से उसे किसी निश्चय पर नहीं पहुँचने देती। ऐसी दशा में न वह कुछ निश्चय ही कर सकता है और न दृढ़-विश्वास होकर अपने किसी काम को पूरा ही कर पाता है।

उदाहरण के लिये एक मनुष्य जो कि उत्साही है एक ऐसी बात सोचता है जो कि उसके फ़ायदे की है। वह एक व्यापार करता है और उसी समय अपने एक मित्र को भी ऐसा करने को उत्साहित करता है। दोनों अलग-अलग अपना काम शुरू कर देते हैं। परन्तु यह क्या बात है कि उसका मित्र तो उस व्यापार में बहुत कुछ उन्नति कर जाता है और वह स्वयं अपने विचारों में कोई परिवर्तन हो जाने से उस व्यापार को बीच ही में छोड़ बैठता है और भारी नुक़सान उठाता है। बात वही पहली है। उसकी तर्कना शक्ति उसे अपने काम में सफल होने से रोकती है। इस श्रेणी के मनुष्य प्रायः वहमी और कुतर्की देखे गये हैं।

अधोःभाग

अधोःभाग अँगूठे का वह तीसरा भाग है जिसका स्वामी शुक्र है। यह प्रेम का स्थान है और शुक्र-स्थान (Mount of Venus) कहलाता है।

मनुष्य के स्वभाव पर शुक्र (Venus) का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है—साधारण नहीं। यह मनुष्य गाने-बजाने और नाच-रंग में मग्न रहने वाला होता है। "मुझको सब प्रेम करें!" ऐसी अभिलाषा उसे सदा बनी रहती है और प्रेम के सम्बन्ध में वह व्याकुल और असन्तुष्ट रहता है। शुक्र-स्थान के छोटे या बड़े होने पर ही मनुष्य के स्वभाव में समता या विषमता का होना निर्भर है।

यदि अँगूठे का ऊपर का भाग छोटा और कमज़ोर हो तो मनुष्य प्रेम करने वाला अवश्य होता है—परन्तु इच्छा शक्ति उसकी उतनी प्रबल नहीं होती। खेल-तमाशे और नाच-गान वह अधिक पसन्द करता है और आवश्यकता पड़ने पर अपने पक्ष को उपयोगी सिद्ध करने के लिये वाद-विवाद और तर्कना शक्ति से काम लेता है। यदि अँगूठा छोटा और साथ ही चौड़ा भी हो तो मनुष्य हठी होने के कारण प्रायः अपने कामों में धोका खाता है। वह पक्षपाती भी होता है और चाहे उसका पक्ष स्वयं उसकी समझ में ग़लत हो तो भी उसके सिद्ध करने के लिये बहस करता है और हठी होने के कारण अपने विरोधियों से जो उसके पक्ष को ग़लत साबित करने की चेष्टा करते हैं—लड़

बैठता है। कभी-कभी अपनी ग़लती को मान भी लेता है-परन्तु अधिकांश में नहीं।

यदि किसी हाथ में अँगूठा बीच में पतला हो तो मनुष्य जल्दबाज़ होता है—परन्तु बहस करने की आदत उसमें कम पाई जाती है। वह समझदार भी हो सकता है—यदि अँगूठे का मध्य-भाग (The Phalange of Logic) पतला होने के साथ-ही-साथ लम्बा भी हो गया हो। ऐसा मनुष्य साधारण स्वभाव का होने से अपना काम अच्छी तरह देख-भाल और सोच-विचार कर करता है। परन्तु यदि उसके हाथ में शुक्र-स्थान जो कि प्रेम और अनुराग का केन्द्रस्थान है, बड़ा हो तो वह अपने किसी भी विचार को जो कि पहले निश्चय कर चुका है अपने बड़ों के कहने से जिनको कि अपना पूज्य मानता हो—बदल देता है। ऐसी दशा में भी वह उन साधारण मनुष्यों की बात जिनके साथ उसे कुछ भी प्रेम नहीं होता—नहीं मानता और अपने विरोधियों के आगे हठी बना रहता है। यदि वह किसी विपक्षी के आगे किसी कारण से अपना पक्ष सिद्ध नहीं कर पाता तो क्रोध में आ जाता है और गालियाँ या दूसरे अपमान सूचक शब्दों का प्रयोग करने लगता है—क्योंकि वह हार जाता है और दूसरों के सम्मुख निर्बल सिद्ध होता है।

यदि किसी मनुष्य का अँगूठा ऊपर सिरे पर बड़ा और चौड़ा हुआ तो वह हठी, असभ्य, क्रोधी और प्रायः निर्दयता का व्यवहार करने वाला होता है। परन्तु यदि उसके हाथ में कोई ग्रह-स्थान अच्छा पड़ा हो तो उसका वह पहला स्वभाव उतना उग्र न रह कर

कुछ धीमा पड़ जाता है। यदि शुक्र-स्थान हाथ में ऊँचा पड़ा हो तो मनुष्य की वासनायें अधिक प्रबल होती हैं और यदि हाथ का स्वामी चन्द्रमा हो तो पहले की अपेक्षा उसके स्वभाव में कुछ समता अधिक आ जाती है।

मनुष्य के स्वभाव पर शुक्र-स्थान के उन्नत❀ और विस्तृत होने का जो प्रभाव पड़ता हैं उसका फल हम ऊपर कह आये हैं। यहां शुक्र-स्थान के छोटे होने से किसी मनुष्य के स्वभाव पर उसका क्या प्रभाव होता है—इसका वर्णन हमको करना है।

गृह-स्थान (Mount) का अपने सामान्य आकार में होना सबसे अच्छा है। उसका न अधिक बड़ा और न अधिक छोटा होना प्रत्येक दशा में श्रेष्ठ समझा गया है। यदि ग्रह-स्थान बीच के आकार का हो तो ऐसी दशा में प्रेम उत्कृष्ट होता है—उग्र (Boiling) नहीं। यदि ग्रह-स्थान बहुत छोटा या किसी हाथ में बिल्कुल न हो तो मनुष्य प्रेम-भाव से शून्य, हृदय-हीन और स्वार्थी होता है। वह प्रायः गम्भीर रहता है—यहां तक कि अपने सगे सम्बन्धी और इष्टमित्रों के साथ भी उसका प्रेम-व्यवहार और सहानुभूति नहीं होती।

प्रत्येक विद्यार्थी को अँगूठे के विषय में नीचे लिखे हुए नियम ध्यान में रखने चाहियें।

❀ ऊपर को उठा हुआ।

	अँगुष्ठ-भेद	गुण
१	लम्बा और समान आकार वाला	बुद्धिमान, चतुर
२	छोटा, मोटा, और कुरूप (चित्र नं ४)	मूर्ख, क्रोधी
३	अधिक नोकदार (चित्र नं० ६)	अस्थिर, डाँवांडोल, तीक्ष्ण स्वभाव ।
४	वर्गाकर सिरे पर मोटा (चित्र नं० ५)	हठी, स्वेच्छाचारी
५	बीच में पतला (चित्र नं० ६)	विचारशक्ति निर्बल दूरदर्शी ।
६	मध्य भाग मोटा, जोड़ भद्दा (चित्र नं० ६)	अदूरदर्शी अविवेकी मोटे विचार ।
७	ऊर्ध्व-भाग अधिक पतला	निर्बल, इच्छाशक्ति कमज़ोर विचार ।
८	ऊर्ध्व-भाग अधिक मोटा (चित्र नं० २)	धूर्त, हठी, निर्दयी, झगड़ालू ।
९	ऊर्ध्व-भाग बहुत मोटा सिरे पर गोल और चौड़ा (चित्र नं०१)	अत्यन्त क्रोधी, निर्दयी, झगड़ालु।

जिन मनुष्यों के अँगूठे का ऊर्ध्व-भाग जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है। बहुत मोटा, सिरे पर गोल और चौड़ा होता है उनका अपने ऊपर तनिक भी अधिकार नहीं होता। स्वभाव के इतने उग्र होते हैं कि तनिक बात पर आवेश में आ जाते हैं। ऐसा अँगूठा प्रायः उन्हीं मनुष्यों का हाथ है जो क्रोध में पागल

होकर किसी को क़त्ल करने तक को तैयार रहते हैं। ऐसे मनुष्यों से बचे रहना चाहिये। यह तनिक बात पर सभ्यता से बाहर होकर क्रोध के आवेश में पिशाच जैसा आचरण करने लगते । यह मनुष्य केवल दूसरों के लिये ही ख़तरनाक नहीं होते—बल्कि स्वयं भी अपना क्रोध न दबा सकने के कारण प्रायः आत्म-हत्या कर लेते हैं। यदि कोई ग्रह-स्थान या रेखा अपना प्रभाव शुभ डाल रही हो तो सम्भव है कि मनुष्य के स्वभाव में कुछ परिवर्तन हो जाय।

अन्त में यहां इतना लिख देना आवश्यक है कि अँगूठे के गुणों पर विचार करते समय हाथ और अँगुलियों की बनावट और ग्रह-स्थानों पर भी विचार अवश्य कर लेना चाहिये। क्योंकि इनमें अन्तर आने से मनुष्य के स्वभाव में बहुत कुछ परिवर्तन हो जाता है।

आवश्यक सूचना

समकोण (Square) अँगुलियों से तात्पर्य उन वर्गाकार अँगुलियों से है जो हथेली के साथ सीधी होकर जुड़ी होती हैं। यह अँगुलियाँ नाप में ऊपर से नीचे और चौड़ाई में लगभग बराबर होती हैं। यही बात हथेली के विषय में भी समझनी चाहिये।

हाथ की अँगुलियां और उनके लक्षण

हाथ दो तरह का होता है—कठोर और सख़्त या कोमल और मुलायम। कठोर और सख़्त हाथ मनुष्य के परिश्रमी और आपत्ति के समय धैर्य्यवान होने का लक्षणहै। ऐसा मनुष्य कोमल और मुलायम हाथ वाले मनुष्य की अपेक्षा मुसीबत के समय अधिक साहसी और .फुर्तीला होता है। यदि यह हाथ आवश्यकता से अधिक सख़्त और कठोर हो तो मनुष्य उतना ही अधिक ना-समझ और स्वार्थी होता है। हाथ मुलायम है या सख़्त यह उसके दबाने से मालूम होता है—त्वचा से नहीं।

यदि कोमल और मुलायम हाथ में अँगुलियाँ भी चिकनी और वर्ग (Square) के आकार की न हों तो मनुष्य और भी अधिक आराम,पसन्द, आलसी और तनिक मुसीबत में घबरा जाने वाला होता है।

ऋषि-प्रणीत ग्रन्थों से पता चलता है कि हमारे पूर्व ऋषियों ने हमारे शरीर में देवताओं के कुछ विशेष स्थान माने हैं। अँगुलियों के विषय में भी वही बात प्रसिद्ध चली आती है। बात उस समय की है जब हमारी सभ्यता और हमारे ज्ञान की वृद्धि अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी और समस्त दिग्मण्डल हमारी उन्नति के सूर्य की प्रखर प्रभा से जगमगा रहा था। बड़े-बड़े अन्वेषण उस समय हुए। शरीर, विज्ञान, लौकिक या पारलौकिक सभी विषयों पर उस समय पूर्ण प्रकाश डाला गया और ग्रन्थों के रूप में छोड़ दिया गया। सामुद्रिक-शास्त्र भी उन में से एक है। वह आज भी किसी न किसी रूप में हमें मिलता है। किसी न किसी रूप में—जैसा कि हम कह सकते हैं—इसलिये कि वह वास्तविक रूप में हमारे सामने नहीं है। वास्तविक रूप में न सही उसकी सत्ता से आज भी हम अनभिज्ञ नहीं हैं। प्रायः देखा होगा कि हमारे यहाँ स्त्रियाँ भी अपने बच्चों के हाथ देखकर "विवाह कितने होंगे, उम्र कितनी है"—आदि उनका भविष्य-फल कहा करती हैं। अपने सम्बन्ध में आई हुई मैं एक ऐसी स्त्री को जानता हूँ जिसने एक दूसरी स्त्री के हाथ की रेखा देख कर—"तेरी सुहाग रेखा इस साल में टूट रही है—" यह शब्द कहे थे। बात शंका उत्पन्न करने वाली थी इसलिए सबको बुरी लगी। परन्तु फल वही हुआ और उसी साल में उस स्त्री का पति मर गया। अन्तर इतना ही था कि उसने भाग्य-रेखा (Fate Line) को—सुहाग रेखा कहा।

यह हमने रेखाओं के विषय में कहा। अब अँगुलियों को लीजिये। हम पहिले कह आये हैं कि उनमें देवताओं का वास होता है। उदाहरण के लिए यहां इतना कह देना पर्य्याप्त होगा कि हम देवताओं के पूजनादिक शुभ कर्म करते समय अनामिका (Third Finger) या अँगूठे का ही प्रयोग करते हैं।

वैज्ञानिक रूप से यदि देखा जाय तो हमारे हाथ और पाँव × की अँगुलियों के पोरुए (Tips) मस्तिष्क से आने वाली नाड़ियों की सीमा (Termini) होते हैं। मस्तिष्क का हमारी अँगुलियों के साथ एक गहरा सम्बन्ध होता है जिसके द्वारा उनका प्रभाव हमारे मस्तिष्क पर अच्छा या बुरा पड़ता है। किसी मनुष्य के विषय में हम कहते हैं—"वह सूर्य॰ के समान यशस्वी है, बृहस्पति॰ के समान बुद्धिमान् है, या स्वभाव का बिल्कुल शनिश्चर॰ है—भाग्यशाली नहीं होगा" इत्यादि। कारण क्या है? मनुष्य का मस्तिष्क उसके शरीर का ही एक अङ्ग है—उससे अलग नहीं। शरीर के साथ उसका प्रत्येक सम्बन्ध है; क्योंकि शरीर के साथ ही उसकी रचना की गई है।

मनुष्य की मस्तिष्क क्रिया का उसके भविष्य जीवन से कितना सम्बन्ध है इसको बताने की आवश्यकता नहीं। मनुष्य का भविष्य उसके अच्छे या बुरे कर्मों का फल है। कर्म मनुष्य वही

× पैरों के विषय में हमारी दूसरी पुस्तक पढ़िये।

॰ यह सब देवता माने गए हैं।

करता है जैसे उसके विचार होते हैं, और विचार वैसे ही होते हैं जैसा उसका मस्तिष्क होता है। मस्तिष्क का सम्बन्ध अँगुलियों से है। इसलिए यदि अँगुलियों पर कोई अधिक दबाव पड़ता है तो उसका प्रभाव मनुष्य की मस्तिष्क क्रिया पर जाकर बुरा पड़ता है।

किसी मनुष्य की शारीरिक क्रिया का फल उसके भाग्य में कितना उलट फेर कर सकता है इसका अनुभव मुझे उसी समय हो चुका था जिस समय में केवल एक विद्यार्थी के रूप में था।

बात बहुत पुरानी है। कोई बीस बरस की होगी। मेरे साथ स्कूल में एक विद्यार्थी पढ़ता था। जहां तक मुझे याद है वह प्रायः मेहनती होने के कारण अपनी क्लास में उच्च श्रेणी में पास हुआ करता था। थोड़े दिन बाद उसे पञ्जा लड़ाने की बुरी आदत पड़ गई। धीरे-धीरे यह व्यसन इतना बढ़ा कि उसकी अँगुलियाँ बेकार होकर लिखने के योग्य भी न रह गईं। सम्भवतः वह एक दिन पढ़ा लिखा एक विद्वान होकर अपना भविष्य जीवन सुखमय बना सकता था। परन्तु अँगुलियों पर अनावश्यक दबाव पड़ने से उसकी आँखें कमज़ोर हो गईं और दिमाग़ (Brain) पढ़ने-लिखने योग्य न रह गया। लाचार उसे स्कूल छोड़ना पड़ा और आज मैं देखता हूँ कि वह बड़ी कठिनता से मेहनत मज़दूरी करके अपना पेट पालता है। यह प्रभाव था जो अँगुलियों द्वारा उसके भविष्य जीवन पर पड़ा।

यदि हाथ को सीधा फैला कर देखा जाय तो मालूम होगा कि उस में प्रत्येक अँगुली अपनी-अपनी जगह पर हथेली के साथ जुड़ी हुई है। इन अँगुलियों में से हरएक का निम्न लिखित एक देवता होता है जिसके नाम से वह प्रसिद्ध है।

१	तर्जनी	का	स्वामी	बृहस्पति (Jupiter) है।
२	मध्यमा	,,	,,	शनि (Saturn) है।
३	अनामिका	,,	,,	सूर्य्य (Sun) है।
४	कनिष्टका	,,	,,	बुध (Mercury) है।

अँगुलियाँ

अँगुलियाँ दो तरह की होती हैं—गठीली और चिकनी। पहले हम गाँठदार अँगुलियों के विषय में कुछ कह देना चाहते हैं। गठीली अँगुलियाँ वह होती हैं जिनमें जोड़ पर गाँठ बड़ी और उभरी होती हैं। ऐसी अँगुलियाँ जिस मनुष्य की होती हैं वह बुद्धिमान, चतुर और दूरदर्शी होता है। यह बात याद रखनी चाहिये कि हर एक अँगुली में गाँठ दो होती हैं और उनमें से हर-एक गाँठ के लक्षण भिन्न होते हैं।

ऊपर की गाँठ बुद्धि-सम्बन्धी (Mental) होती है और मनुष्य के बुद्धिमान होने का लक्षण है। नीचे की गाँठ भौतिक (Material) होने से मनुष्य के स्वभाव में प्राकृतिक प्रेम

उत्पन्न करती है—सुन्दर-सुन्दर वस्त्र पहनना, इत्यादि । यदि गाँठ दोनों बड़ी हों तो उसी के अनुसार मनुष्य के गुण समझने चाहियें।

यदि केवल पहली गाँठ बड़ी हो तो मनुष्य विचार-शील दूरदर्शी, गुणवान और एक कुशल कलाकार होता है । यदि गाँठ दोनो ही बड़ी हों तो वह केवल दस्तकार हो सकता है उपरोक्त सभी गुण उसमें नहीं पाये जाते ।

अँगुलियाँ हथेली के अनुसार ही छोटी या बड़ी होनी चाहियें। प्रायः देखा गया है कि जिन मनुष्यों की हथेली बड़ी और अँगुलियाँ छोटी होती हैं वह आदर्शवाद को न मानने वाले नास्तिक होते हैं। इसके विरुद्ध लम्बी अँगुलियों के मनुष्य ईश्वर पर विश्वास करने वाले आस्तिक होते हैं । जिनके हाथ और अँगुलियाँ दोनों ही अधिक लम्बाई में हों तो वह अपने ही ध्यान में मस्त रहने वाले और प्रायः वहमी होते हैं ।

जिन मनुष्यों की अँगुलियाँ लम्बी होती हैं वह किसी विषय में जब तक ख़ूब विचार नहीं कर लेते—विश्वास नहीं करते और न कोई ऐसा काम ही करते हैं जिसको वह ठीक न समझते हों। तनिक बात में घबरा जाना और व्याकुल होना उनका एक साधारण गुण होता है ।

छोटी अँगुलियों के गुण बड़ी अँगुलियों से भिन्न होते हैं। छोटी अँगुलियों का मनुष्य बहुत जल्द किसी बात को सोच लेता है और आसानी से उकसाया जा सकता है । किसी काम को

तत्काल कर बैठने की आदत उसमें होती है और यदि उसका हाथ वर्गाकार (Square) हो तो वह बहस करना ख़ूब जानता है—यही कारण है कि वर्गाकार हाथ और छोटी अँगुलियों वाले मनुष्य प्रायः वकील, मुख़्तार या बैरिस्टर होते हैं।

लम्बी और मोटी अँगुलियों वाला मनुष्य स्वभाव का कठोर और निर्दयी होता है। परन्तु छोटी और गाँठदार अँगुलियाँ उसके स्वभाव में परिवर्तन कर देती हैं—इसलिये शुभ होती हैं।

तर्जनी अँगुली

यदि यह पहली अँगुली तर्जनी लम्बी हो तो अभिमान और भोग-विलास की मात्रा मनुष्य के स्वभाव में पाई जाती है। यदि यह अँगुली छोटी हो तो मनुष्य दूसरों के सम्बन्ध में आने वाला, मिलनसार और फ़ुर्तीला होता है। अँगुली के विषय में अपना मत प्रगट करते समय उसके पोरुए (Tip) पर भी अवश्य ध्यान रखना चाहिए। यदि अँगुली का सिरा वर्गाकार होगा तो मनुष्य अनुभवी और दूरदर्शी होगा। इसके विरुद्ध यदि सिरा नोकदार होगा तो वह मनुष्य अदूरदर्शी, बिना विचारे काम करने वाला और स्वभाव का चञ्चल होगा। दूरदर्शी और मितव्ययी अर्थात् कम ख़र्च करने वाले मनुष्यों की पहली अँगुली बड़ी होनी चाहिए। इसका स्वामी बृहस्पति है।

मध्यमा अँगुली

दूसरी अँगुली मध्यमा है। इसका स्वामी शनि (Saturn) है। यह बहुत बड़ी न होनी चाहिए क्योंकि वह मनुष्य को उदास और चितातुर बनाये रखती है। ऐसा मनुष्य प्रायः रोगी रहता है और सदा अपने काम अपने भाग्य पर छोड़कर निःचेष्ट बैठ जाता है। इच्छाशक्ति निर्बल होने से वह उत्साही भी नहीं होता।

लम्बी और वर्गाकार अँगुली का मनुष्य जानवरों से और विशेषकर घोड़ों से प्रेम रखने वाला होता है। यदि किसी हाथ में तीसरी अँगुली भी दूसरी अँगुली के बराबर या लगभग लम्बी हो तो वह मनुष्य शर्त रखने वाला, जुआरी और सट्टे-बाज़ होता है। यदि इन अँगुलियों में ऊपर के जोड़ अधिक लम्बे हुए तो उपरोक्त अवगुणों का अभाव होकर मनुष्य आदर्श की ओर खिचने लगता है।

अनामिका अँगुली

अनामिका तीसरी अँगुली है। इसका स्वामी सूर्य है और दस्तकारी और धन का स्थान है। यदि यह अँगुली नाख़ून के पास पतली और नोकदार हो गई हो तो मनुष्य दस्तकार होता है और यदि यह लम्बाई में तर्जनी अँगुली से छोटी हो तो वह विवाह आदिक सम्बन्ध और व्यापारिक कामों में पूर्णरूप से सफल और उन्नति-शील नहीं हो सकता। अनामिका और तर्जनी दोनों अँगुलियों के आपस में बराबर होने से मनुष्य

दस्तकार होता है और अपने काम में नाम पाने की अभिलाषा उसे सदां लगी रहती है। यदि यह तीसरी अँगुली पहली से लम्बी हो तो मनुष्य की उन्नति में बाधा डालती है।

कनिष्टका अँगुली

कनिष्टका चौथी अँगुली है। इसका स्वामी बुध (Mercury) है और व्यापार में उन्नति कराता है। धोका देना, चोर, उचक्के या अपने किसी शत्रु को बातों में लाकर फँसा देना या किसी को पकड़वा देने का इसमें गुण होता है।

यदि किसी सुन्दर हाथ में कनिष्टका अँगुली लम्बी हो तो मनुष्य दूरदर्शी और विद्वान बनने की इच्छा करने वाला होता है। परन्तु यदि हाथ सुन्दर न होकर बे-ढंग हो और उसमें चौथी अँगुली लम्बी हो तो इसका प्रभाव उल्टा पड़ता है और मनुष्य व्यापार के विषय में चालाक और धूर्त होता है। हाथ में छोटी अँगुली मनुष्य के अदूरदर्शी होने का लक्षण है।

नीचे लिखे अनुसार हम क्रम से अँगुली के भेद और उनके गुणों के विषय में बहुत कुछ समझ सकते हैं।

तर्जनी या वृहस्पति की अँगुली

लम्बी	अधिक लम्बी
शासन-शक्ति, उच्च पद पाने की इच्छा, भोग विलास और अभिमान।	निष्ठुर स्वभाव उपद्रवी स्वयं प्रशंसा

छोटी	टेढ़ी
शान्त स्वभाव अपने ऊपर ज़िम्मेवारी न लेने वाला।	शासन के अयोग्य अनिश्चित विचार उद्देश्य-विहीन।

मध्यमा या शनि की अँगुली

लम्बी	अधिक लम्बी
एकान्त-वास सावधान।	भाग्याधीन, निर्बल इच्छाशक्ति, उदास।

छोटी	टेढ़ी
ओछापन विशेषतः जब अँगुली नोकदार हो	गन्दे विचार (कभी-कभी हत्या)।

अनामिका या सूर्य की अँगुली

छोटी	अधिक लम्बी
यश प्राप्त करने की इच्छा, दस्तकारी, कला कौशल।	यश प्राप्त करने की सम्भावना।

लम्बी	छोटी
कला-कौशल की ओर उदासीनता।	यश पाने की इच्छा परन्तु कारण का अभाव।

कनिष्टका या बुध की अँगुली

लम्बी

ज्ञानवान, जनता पर प्रभाव, व्याख्यान देने की शक्ति, प्रतिभा।

अधिक लम्बी

सूक्ष्म बिचार, चतुर, भ्रम में डाल देना, छली, मायावी।

छोटी

मन्द-बुद्धि, किसी बात को देर से समझना अपने कामों में असफल।

टेढ़ी

चुप रहना, दूसरों के कहने में आने वाला निर्बल विचार।

अँगुलियों के विषय में हम जितना ऊपर कह चुके हैं उतना पर्य्याप्त नही। यह स्पष्ट है कि प्रत्येक अँगुली हथेली के एक साथ एक विशेष स्थान पर जुड़ती है और उसीके अनुसार मनुष्य के स्वभाव पर उसका प्रभाव पड़ता है।

हथेली के साथ यदि चारों अँगुलियाँ एक ही सीधी लाइन में या कुछ अन्तर से मिलती हों तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यवान, समृद्धशाली या विद्वान् होगा। उसकी प्रकृति साधारण और स्वभाव सरल होना चाहिये।

यदि पहली अँगुली जिसको हम तर्जनी कहते हैं हथेली के साथ कुछ नीची जाकर मिलती है तो मनुष्यों में दूसरों पर शासन करने की शक्ति कम पाई जाती है। यह मनुष्य स्वभाव के कुछ भद्दे होते हैं। सभा, सोसाइटी

में जाना वह अधिक पसन्द नहीं करते और किसी अपरिचित मनुष्य से मिलने या और किसी प्रकार उसके सम्बन्ध में आने से घबराते हैं। तर्जनी का स्थान कुछ ऊँचा होने से मनुष्य का स्वभाव भी कुछ दूसरी तरह का हो जाता है।

मध्यमा अँगुली प्रायः अपने स्थान पर रहती है। तीसरी अँगुली अनामिका यदि हथेली के साथ कुछ नीची आकर मिलती हो तो मनुष्य कठिनता से कोई प्रशंसा पाने योग्य कार्य कर पाता है। किसी दस्तकारी की ओर उसकी प्रवृत्ति अधिक नहीं पाई जाती।

चौथी अँगुली कनिष्टका (Mercury) है। यदि यह नीची हो तो व्यापार और रुपये-पैसे के सम्बन्ध में इसका फल उतना अच्छा नहीं होता। लेन-देन के मामले में प्रायः ऐसे मनुष्य दूसरों के कहने में आ जाते हैं।

अँगूठे की तरह हर एक अगुँली के तीन भाग होते हैं—ऊर्ध्व-भाग, मध्य-भाग और अधो-भाग। इन तीनों भागों में से निम्नलिखित प्रत्येक भाग क्रमानुसार मनुष्य की तीन मानसिक क्रियओं का एक केन्द्र स्थान है।

१	ऊर्ध्व-भाग (आदर्श)	ज्ञान, कला कौशल धर्मिक विचार।
२	मध्य-भाग (ज्ञान)	निर्णय, विचार शक्ति दूरदर्शिता।
३	अधोःभाग (प्रकृति)	लौकिक व्यवहार कार्य-कुशल।

ऊर्ध्व-भाग यदि बड़ा हो तो मनुष्य में आदर्श (Ideal) गुणों की बृद्धि होती है। प्रत्येक कार्य में निपुणता प्राप्त करने की अभिलषा उसमें पाई जाती है और वह प्रायः अपने सभी कामों में सफल हो जाता है।

मध्यभाग के बड़े होने से मनुष्य विचारशील और अनुभवी होता है। अँगुली का यह बीच का भाग बुद्धि से सम्बन्ध रखता है। यह जितना अधिक बड़ा होगा मनुष्य उतना ही अधिक तीव्र बुद्धि और विचारवान् होना चाहिये।

अधोःभाग के गुण भौतिक अर्थात् प्राकृतिक (Material) होते हैं इसके प्रभाव से मनुष्य व्यवहारिक बातों में दक्ष और कार्य-कुशल होता है।

यदि अधो-भाग लम्बा और मोटा हो तो मनुष्य अच्छे-अच्छे भोजन करने की इच्छा करने वाला, विलास प्रिय और आराम पसन्द होता है। इसके विपरीत यदि यह भाग छोटा और नीचे (Base) की ओर पतला हो तो उसमें ऊपर कहे गये गुणों का अभाव होता है। ऐसे मनुष्य का खान-पान और रहन-सहन भी मामूली ढंग का होता है।

अँगुलियों का झुकाव

प्रायः देखा गया है कि बहुत से हाथों में अँगुलियाँ आपस में एक दूसरी की ओर झुकी होती हैं। यदि हाथमें चौथी अँगुली कनिष्ठका, तीसरी अनामिका और दूसरी मध्यमा तीनों एक ही

अँगुली तर्जनी की ओर झुक रही हों तो मनुष्य स्वतन्त्र विचार रखने वाला उत्साही होता है। वह बड़े-बड़े मन्सूबे बांधता है और उसको पूरा करने में सदाँ तत्पर और प्रयत्न-शील रहता है।

यदि पहली अँगुली दूसरी अँगुली की ओर झुकी हो तो ऊपर लिखे गुणों का अभाव होता है। ऐसी दशा में मनुष्य उत्साही नहीं होता और प्रायः निःचेष्ट और उदास रहता है।

यदि सभी अँगुलियों का झुकाव एक मध्यमा अँगुली की ओर हो तो मनुष्य अत्यन्त चिन्तातुर और उदास रहता है उसके स्वभाव पर शनि का प्रभाव होने से वह सदा एकान्त में रहना अधिक पसन्द करता है।

यदि दूसरी अँगुली मध्यमा जिसका कि स्वामी शनि (Saturn) है पहली अँगुली की ओर झुकी हो तो प्रायः बुरे-बुरे विचार मन में उठा करते हैं।

मध्यमा अँगुली यदि सूर्य की अँगुली अनामिका की ओर झुक रही हो तो स्वभाव में गहरा अन्तर पड़ जाता है। ऐसा मनुष्य घड़ी-घड़ी अपने बिचार बदलता रहता है। वह कभी उदास तो कभी प्रसन्न रहता है तो कभी निराश और कभी उत्साही देख पड़ता है।

यदि अनामिका अर्थात् तीसरी अँगुली बीच की अँगुली की ओर झुक रही हो तो मनुष्य अस्वाभाविक रूप से विख्यात होता है—चोरी, चालाकी कभी-कभी हत्या।

यदि अनामिका तीसरी अँगुली कनिष्टका बुध की अँगुली की ओर झुक रही हो तो मनुष्य व्यापार से दस्तकारी की ओर बढ़ता है। परन्तु जिस हाथ में चारों अँगुलियाँ सीधी और सुडोल हों वह सबसे अच्छा और भाग्यवान हाथ समझना चाहिये।

अँगुलियों के बीच का अन्तर

यदि किसी हाथ में पहली अँगुली और अँगूठे के बीच में फ़ासला हो तो मनुष्य अनुभवी, दयावान और इच्छानुसार आचरण करने वाला होता है।

पहली अँगुली और मध्यमा के बीच का अन्तर विचारों में स्वतन्त्रता का लक्षण है।

मध्यमा और अनामिका के अन्तर से मनुष्य के स्वभाव में स्थिरता और विचारों में दृढ़ता पाई जाती है।

अनामिका और कनिष्टका के अन्तर से मनुष्य अपने सभी काम स्वतन्त्रता पूर्वक करने वाला होता है।

यदि अँगुलियाँ ढीली मुलायम और अलग-अलग हों तो मनुष्य स्वेच्छाचारी होता है। किसी की आज्ञा या जातीय बन्धन का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और न अपनी इच्छा के विरुद्ध अपने ऊपर किसी का दबाव ही चाहता है। वह जो उचित समझता है—करता है। इसकी अपेक्षा यदि अँगुलियाँ एक दूसरी से मिली हुई हों तो वह कोई ऐसा काम नहीं करना चाहता जिसमें उसकी अपकीर्ति या किसी प्रकार से निन्दा हो।

यही कारण है कि वह किसी काम को करते समय "मैं क्या कर रहा हूं ? दुनियां क्या कहेगी ? मेरा काम धर्म के विरुद्ध तो नहीं है—" इत्यादि प्रश्न अपने सम्मुख रखता है।

ऊपर कहा गया है कि यदि अँगुलियाँ भीतर की ओर झुक रही हों तो मनुष्य की बुद्धि उतनी तीव्र नहीं होगी। इसके विपरीत यदि अँगुलियाँ बाहर की ओर झुक रही हों तो मनुष्य चालाक, दूसरों को धोके में डालने वाला और स्वयं मृग-तृष्णा में इधर-उधर भटकने वाला होता है। यदि अँगूठा पीछे की ओर झुका हुआ हो तो मनुष्य रुपये-पैसे के सम्बन्ध में चाहे कितना ही कृपण और सतर्क रहता हो उदारता उसके हृदय में अवश्य किसी न किसी रूप में पाई जायगी।

मुलायम और पीछे की ओर झुकी हुई अँगुलियों वाले मनुष्यों की बुद्धि तीव्र होती है। किसी बात को समझने में उन्हें ज़्यादा देर नहीं लगती। इसलिए अनुभवी और सुयोग्य वकील हो सकते हैं। इनका स्वभाव सरल परन्तु बदलता रहता है।

यदि अँगुलियाँ भीतर की ओर झुकी हुई हों तो मनुष्य की बुद्धि मन्द होती है। ऐसे मनुष्य किसी बात को मुश्किल से समझ सकते हैं। वह साहसहीन, भीरु और डरपोक होते हैं और चुप रहना अधिक पसन्द करते हैं। हर समय अपने विचारों में डूबे रहना इनका गुण होता है और प्रायः प्रत्येक सम्बन्ध में काग-चेष्टा रखने वाले और सतर्क होते हैं।

हाथ के विषय में हम यहां एक बात और कह कर इस विषय को समाप्त करते हैं।

गोरा हाथ मनुष्य के स्वभाव में स्वाभिमानता और रूखेपन का लक्षण है। ऐसे मनुष्य प्रायः दूसरों के सम्पर्क में कम आते हैं। यदि हाथ सख़्त हो तो मनुष्य फुर्तीला, सब के साथ नम्रता का व्यवहार करने वाला—परन्तु आराम-पसन्द होता है।

जिस हाथ पर बाल होते हैं वह मनुष्य रजोगुणी होता है और सुन्दर-सुन्दर वस्त्र और उत्तम-उत्तम भोजन पाने की इच्छा उसको बनी रहती है।

अँगुलियों पर बाल होने से मनुष्य उग्र-स्वभाव का और क्रोधावेश में प्रायः निर्दयता का व्यवहार करने वाला होता है। जिन हाथों पर बाल बिल्कुल नहीं होते वह भीरु, पुरुषार्थ-विहीन और कभी-कभी नपुंसक देखे गये हैं।

पाँचवाँ अध्याय

नाख़ून और उनके लक्षण

हस्त-सामुद्रिक के आधार पर किसी मनुष्य की शारीरिक और मानसिक क्रियाओं को समझने के लिये जितनी सहायता हमको उसके नाखूनों से मिलती है उतनी हाथ के किसी और भाग से नहीं। यदि इस विषय पर पूर्ण प्रकाश डाला जाय तो एक बड़ी पुस्तक लिखी जा सकती है। नाखून से मनुष्य का स्वभाव ही नहीं शरीर सम्बन्धी उन सभी कमज़ोरियों का पता चलता है जो जन्म से वह अपये साथ लाता है और समय पाकर वही उसके किसी न किसी रोग का कारण बन जाया करती हैं

पाश्चात्य डाक्टर और दूसरे अनुभवी विद्वानों ने इस विषय को बहुत कुछ स्पष्ट कर दिया है। स्थानाभाव से हम नाखूनों के कुछ लक्षण और उन रोगों का वर्णन जो उन लक्षणों द्वारा जाने जा सकते हैं—करेंगे।

अवस्था-भेद से नाखून चार तरह के होते हैं—लम्बे, छोटे, चौड़े और तंग।

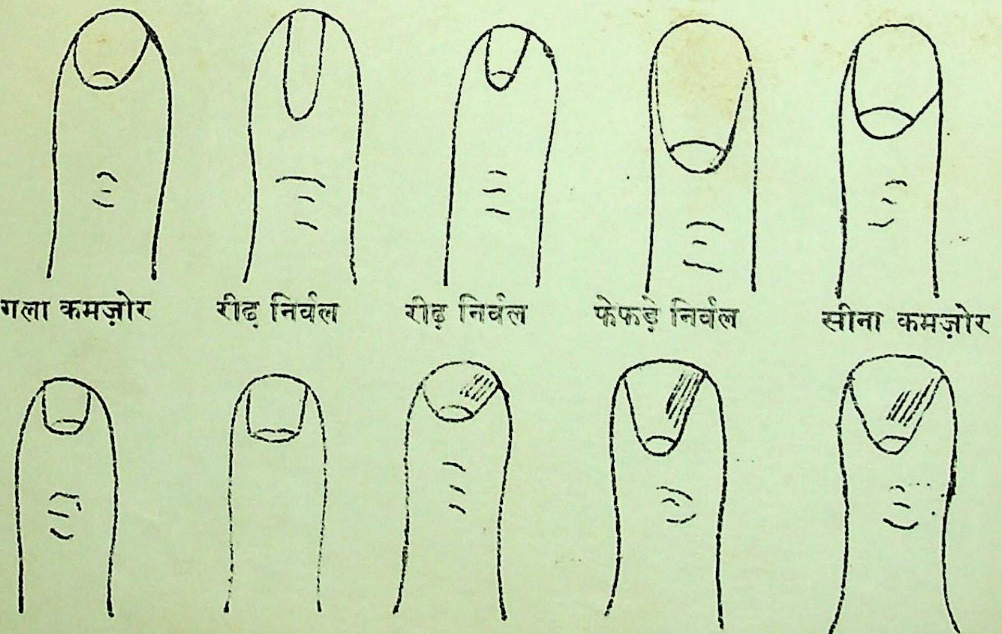
प्रायः जिन मनुष्यों के नाखून* लम्बे होते हैं उनका सीना और फेंफड़े कमज़ोर होते हैं। शारीरिक शक्ति उनकी उतनी बढ़ी-चढ़ी नहीं होती। यदि नाखून सिरे के नीचे अँगुली की तरफ और एक कोर से दूसरी कोर तक अधिक मुड़ा हुआ हो तो कमज़ोरी भी उतनी ही अधिक समझनी चाहिये।

यदि नाखून अधिक लम्बे हों और उनके बीच में रेखायें पड़ी हों तो शरीर उससे भी अधिक कमज़ोर और नाज़ुक होता है। भले ही ऐसा मनुष्य छाती या फेफड़ों का रोगी न हो—परन्तु यदि परीक्षा करके देखा जाय तो यह रोग किसी न किसी रूप में उसके ख़ान्दान में अवश्य पाया जायेगा। ऐसी दशा में मनुष्य को न्यूमोनियाँ (Pneumonia) आदि रोगों से सदा बचते रहना चाहिये।

यदि नाखून कुछ अधिक छोटे और चौड़े हों तो गले का सूज आना, दमा, शीत और दूसरे गले से सम्बन्ध रखने वाले रोग उत्पन्न हो जाया करते हैं।

---

* देखो चित्र नं० ६।



छोटे चन्द्र सहित वर्गाकार नाखून—सीप के आकार के नाखून—पक्षाघात, शुन वहरी
हृदय का कार्य मन्द, रुधिर प्रवाह आदि का भय। कम इत्यादि। [चित्रपट ६]

लम्बे, सिरे पर चौड़े और नीचे की ओर अधिक नीले नाखून शरीर में रुधिर का प्रवाह और हृदय की गति ठीक न होने के लक्षण हैं। नाखून चाहे लम्बे हों या छोटे यदि उनमें चन्द्र (⌒ = Moon) न हों तो हृदय कमज़ोर होता है—सम्भव है हृदय की गति अनायास मन्द हो जाने से मृत्यु हो जाय। यदि चन्द्र आकार में बहुत बड़े हों तो हृदय की चाल उतनी ही अधिक तीव्र और शरीर में रुधिर-प्रवाह अधिक शीघ्रता से होता है। ऐसे मनुष्य को कोई ऐसा काम न करना चाहिये जिससे शरीर में उत्तेजना पैदा हो और रुधिर चक्कर खाने लगे। यदि ऐसा हुआ और रुधिर का प्रवाह बढ़ गया तो नीचे लिखे दो उपद्रव हो सकते हैं।

पहला—रुधिर का मस्तिष्क की ओर प्रवाह अधिक बढ़ जाना। ऐसी दशा में मूर्छा, मृगी, अर्द्धाङ्ग, पक्षाघात आदि वायु (Ap-o-plec-tic) रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

दूसरा—धमनियों पर अधिक दबाव पड़ने से हृदय की चपनी का फट जाना। ऐसे मनुष्यों को भांग, चरस, शराब आदि नशीली वस्तुओं का सेवन भूलकर भी न करना चाहिये।

उपरोक्त दोनों उपद्रवों में से कौन सा उपद्रव होना सम्भव है इसका ज्ञान लेना अधिक आसान है। यदि स्वास्थ्य-रेखा (Health Line) अधिक स्पष्ट होकर हृदय-रेखा से जीवन-रेखा में जाकर मिलतीहो (स-स = चित्र नं० १०) तो इस का प्रभाव हृदय पर पड़ता है। ऐसी दशा में यदि सावधान न रहा जाय तो हृदय-रोग हो जाने की अधिक सम्भावना होती है।

यदि मस्तक रेखा भोम अर्थात् मङ्गल-ग्रह के स्थान (Mount-of Mars) की ओर दौड़ती हो तो इसका मस्तक पर बुरा प्रभाव पड़ता है। (अ-अ—चित्र नं० १०) यदि इस मस्तक रेखा पर कोई द्वीप का चिह्न पड़ा हो तो यह अपना बुरा फल दिखाये बिना नहीं रहता। (अ-अ—चित्र नं० ११)

लम्बे नाख़ून

जिन मनुष्यों की अँगुलियों के नाख़ून लम्बे होते हैं उन्हें प्रायः ऐसे रोग सताते हैं जिनका प्रभाव शरीर के ऊपर आधे भाग पर होता है—गले का सूज आना, खाँसी, ज़ुक़ाम, न्यूमोनियां, और यदि अधिक सावधान न रहा जाय तो फेफड़ों का गल जाना (Tuber-cu-lo-sis) क्षय रोग इत्यादि।

यदि अँगुलियों के नाखून किसी हाथ में छोटे हों तो उन मनुष्यों के लिये जिनके कि ऐसे नाखून होते हैं, हृदय-रोग एक साधारण व्याधि हो जाता है और प्रायः ऐसे रोग जिनका प्रभाव शरीर के नीचे आधे भाग पर होता हो उनके लिये सदा तैयार रहते हैं।

प्रायः ऐसे बहुत से मनुष्य होते हैं जिनके हाथों की अँगुलियों के नाखूनों में चन्द्र(⌒=चन्द्राकार)⊛ होता ही नहीं। बिना चन्द्र के छोटे नाख़ून उस ख़ान्दान में प्रायः सभी मनुष्यों के होते हैं जिसमें मनुष्यों की हृदय और रुधिर की चाल

⊛ नाखून के नीचे का सफ़ेद भाग।

ठीक न रहने का रोग होता है। सब से बुरे नाखून वह होते हैं जिनमें चन्द्र नहीं होते और जो पतले और नीचे की ओर चपटे होते हैं। यदि छोटे नाखून अधिक चपटे और मांस में गढ़े हों तो शुनवहरी, लकवा आदि (Par-a-lyt-ic) रोगों की शंका बनी रहती है। सीपी या कौड़ी के आकार के छोटे, सिरे पर उठे हुए या मुड़े हुए नाखून ऊपर कहे गये रोगों के अचूक लक्षण समझने चाहियें। यदि इन नाखूनों का रंग नीचे से नीला हो तो इनका प्रभाव और भी चिन्ताजनक और भयंकर पड़ता है।

ऊपर जो कुछ कहा जा चुका है उससे यह न समझ लेना चाहिये कि जिनके नाखून लम्बे या छोटे होते हैं उन्हें वह रोग अवश्य होने चाहियें जो उनके लिये लिखे गये हैं या उनके सिवाय कोई दूसरा रोग उन्हें होता ही नहीं। बल्कि यह नाखून उन रोगों के प्रारम्भिक लक्षण हैं—जिनका कारण पहले ही से मनुष्य के शरीर में है या वंश-परम्परा से उसके खान्दान में होता आया है। लम्बे और तंग नाखून, कमज़ोर कमर के लक्षण हैं और यदि अधिक लम्बे, ऊँचे और ज़्यादा मुड़े हुए हों तो रीढ़ सम्बन्धी (Spinal) रोग होता है। पतले और बहुत छोटे नाखून निर्बल स्वास्थ्य और कमज़ोरी के स्वाभाविक चिन्ह कहे जाते हैं।

यदि नाखूनों के ऊपर सफ़ेद दाग हों तो मनुष्य का स्नायु-भाग कमज़ोर होता है यदि हाथ पतला और रेखायें अस्पष्ठ हों तो इसे स्नायविक दुर्बलता (Nervous Debility) का पूर्व रूप समझना चाहिये।

प्राकृतिक स्वभाव

लम्बे नाखून

जहाँ तक स्वभाव से सम्बन्ध है लम्बे नाखून के मनुष्यों में कोई विशेष विलक्षणता नहीं पाई जाती। उनका स्वभाव कोमल और सभ्य मनुष्यों जैसा होता है। प्रायः हर बात को वह आसानी से समझ लेते हैं। परन्तु यह मनुष्य विशेषतः उन बातों में जो उनके स्वभाव के विरुद्ध पड़ती हैं—वहमी होते हैं।

पीले नाखून अच्छे नहीं होते। यदि लम्बे और मुड़े हुए हों तो मनुष्य स्वभाव से निर्दयी और कठोर होता है। देखने में भले ही वह हँसमुख हो परन्तु दया या सहानुभूति उसको छू-तक नहीं जाती। इस श्रेणी में स्त्री या पुरुष कोई भी हों, प्रायः सभी बे-रहम होते हैं—सम्भव है चिड़ीमार, मछली पकड़ने वाले या दूसरे शिकारी हों।

छोटे नाख़ून

इसके विपरीत वह मनुष्य जिनके नाखून छोटे होते हैं—स्वभाव के विलक्षण होते हैं। बिना अनुसन्धान किये वह किसी बात पर विश्वास नहीं करते। स्वभाव चञ्चल होता है परन्तु तर्क-वितर्क करने की शक्ति उनमें अधिक होती है। नाखून लम्बे होने की अपेक्षा यदि चौड़े अधिक हों तो दूसरों की हँसी उड़ाना या चिढ़ाना उन्हें ख़ूब आता है और यदि कोई रेखा या ग्रह-स्थान (Mount) अपना वैसा ही योग दे रहा हो

तो ऐसे मनुष्य प्रायः झगड़ालू और अपने इष्ट-मित्रों को असह्य होते हैं।

प्रायः देखा गया है कि कठिन परिश्रम या किसी रोग के हो जाने के बाद कुछ सफ़ेद दाग नाखूनों पर आ जाते हैं जो कि कमज़ोर और थकावट के लक्षण हैं। साधारणतः यह उस समय होता है जब कोई चिन्ता हो, या कोई दूसरा ऐसा काम करना पड़े जिससे मस्तिष्क और स्नायविक शरीर पर आवश्यकता से अधिक दवाव पड़े। यदि तमाम नाखूनों पर सफेद दाग हो जाँय तो समझना चाहिये कि स्नायविक जाल (Nervous System) विशेष परिश्रम या अधिक चिन्ता करने से कमज़ोर हो गया है।

कुछ विद्वानों का मत है कि सफेद और काले दाग क्रम से किसी अच्छे भविष्य और आने वाली आपत्ति की सूचना देते हैं। यह बात अभी अनुभव में नहीं आई। विद्यार्थियों को यहाँ यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि सफ़ेद दाग दो तरह के होते हैं। हम ऊपर कह आये हैं कि किसी विशेष रोग द्वारा मनुष्य का शरीर कमज़ोर हो जाय या किसी तरह मस्तिष्क पर कोई अधिक दबाव पड़े तो प्रायः नाखूनों पर सफ़ेद दाग आ जाया करते हैं। यह दाग शरीर की स्नायविक शक्ति घट जाने से उत्पन्न होते हैं और धीरे-धीरे नाखूनों के साथ आगे को बढ़ते जाते हैं—एक स्थान पर स्थिर नहीं रहते। स्वाभाविक रूप से इन दागों का कोई अर्थ नहीं होता।

हाँ, यदि किसी स्वस्थ मनुष्यों के नाखून पर ऐसा कोई सफ़ेद दाग हो और अपने स्थान पर स्थिर होतो परस्पर प्रेम और मित्रो में सम्मान पाने का लक्षण है। कुछ विद्वानों का मत है कि नाखून पर काला दाग बुरा है और भविष्य में अपना बुरा फल दिखाता है।

तुलनात्मक रूप में नाखून के सफेद और काले दागों के लक्षण इस प्रकार समझने चाहियें।

नाखून	सफेद दाग	काला दाग
अँगूठा	स्नेह, प्रेम	त्रुटि; दोषपूर्ण कार्य।
पहिली अँगुली	लाभ	हानि।
दूसरी अँगुली	सफर, देशाटन	मृत्यु या मृत्यु-भय।
तीसरी अँगुली	सम्मान, प्राप्ति	अपमान, पराजय।
चौथी अँगुली	विश्वास, आशा	अविश्वास, निराशा।
	व्यापार में लाभ	व्यापार में हानि।

छठा अध्याय

हथेली

अनुभव से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि वह मनुष्य जिनके हाथ लम्बे होते हैं प्रायः अपना काम नियमित रूप से करने वाले और क्रिया-शील होते हैं। इसके विपरीत जिनका हाथ छोटा होता है वह अपना बहुतसा समय सोच-विचार करने और तरह-तरह के मन्सूबे बाँधने में ही व्यतीत किया करते हैं। सब से बड़ा अवगुण जो छोटे हाथ वाले मनुष्यों में पाया जाता है यह होता है कि वह जितना मुँह से कहते हैं करते नहीं हैं। इस श्रेणी के मनुष्य ऐसी बातें बहुत सोचते हैं जिनका पूरा करना भी उनकी शक्ति से बाहर होता है और प्रायः यह लिखते समय भी बड़-बड़े अक्षर बनाया करते हैं।

हाथ की कोमलता और सख़्ती के विषय में हम पहिले बहुत-कुछ कह आये हैं इसलिये दोबारा उस पर प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं मालूम होती। यहाँ हम हथेली के विषय में कुछ कह देना चाहते हैं।

हथेली की लम्बाई अँगुलियों की लम्बाई के बराबर या कुछ न्यूनाधिक हो तो वह लक्षण शुभ समझना चाहिये। हथेली और अँगुलियों की लम्बाई आपस में जितनी ही बराबर होगी मनुष्य उतना ही अधिक भाग्यशाली और आनन्दपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने वाला होगा—परन्तु हाथ लम्बा और परिमाण के अनुकूल होना चाहिये।

यदि हथेली चौड़ी होतो वह मनुष्य अनुभवी, उदार, और परिश्रमी होता है। वह उत्साही हो या आलसी, उन्नतिशील हो या अवनति की ओर जा रहा हो उदारता उसमें अवश्य पाई जायगी।

अधिक पतली, शुष्क और सख़्त हथेली निरुत्साही और डरपोक मनुष्यों की होती है। वह निर्बल होते हैं और तनिक परिश्रम से थक जाते हैं। लम्बी और मुलायम हथेली के मनुष्य आलसी और आराम-पसन्द होते हैं।

यदि हथेली अधिक भारी, मोटी, मुलायम और साथ ही बे-ढङ्ग जैसे आकार में हो तो ऐसा मनुष्य इन्द्रिय-लोलुप, विषय-भोग में मग्न रहने वाला और व्यसनी होता है।

गहरी हथेली मनुष्य के दुर्भाग्य का सबसे बुरा लक्षण है। यदि यह गहराई आयु की रेखा (Line of Life) की ओर

ढुलकती हो तो गृह-सम्बन्धी कामों में निराशा होती है। यदि हाथ की रेखायें कोई रोग बता रही हों तो इसका फल उतना ही बुरा होता है—भयानक रोग इत्यादि।

यदि गहराई हृदय रेखा (Line of Heart) के नीचे हो तो अपने इष्ट-मित्रों की ओर से निराशा मिलती है।

यदि यह गहराई भाग्य-रेखा (Fate Line) के नीचे पड़ती हो तो सांसारिक व्यवहार, व्यापार और रुपये पैसे के सम्बन्ध में बुरा फल देती है।

मुलायम और मज़बूत हथेली साहस और प्रबल इच्छा-शक्ति की सूचक है। इसके विरुद्ध कोमल और ढीले हाथ वाला मनुष्य निरुत्साही, आलसी और आराम-पसन्द होता है। विद्यार्थियों को याद रखना चाहिये कि अँगुली और अँगूठों का प्रभाव हथेली के फल को रोक नहीं देता—हाँ, मध्यम कर देता है।

सातवाँ अध्याय

ग्रह स्थान और उनका विवरण

सामुद्रिक शास्त्र के आधार पर पाश्चात्य देश के प्रसिद्ध अनुभवी विद्वानों ने जैसा कि आगे चित्र में दिखाया गया है। हाथ में ग्रहों के आठ स्थान माने हैं।

हम पहले कह आये हैं कि प्राचीन ग्रन्थों में हमारे हाथ में देवताओं के कुछ स्थान माने गये हैं। देवता अर्थात् ग्रह सात हैं—शुक्र, वृहस्पति, शनि, सूर्य, बुध, मंगल और चन्द्रमा। उक्त ग्रहों में एक मंगल के ग्रह को छोड़ कर शेष छः ग्रहों में से प्रत्येक का हाथ में एक निश्चित स्थान माना गया है। सातवाँ ग्रह मंगल है और इसके स्थान जैसे कि चित्र में दिखाया गया है—दो होते हैं।

उपरोक्त सात ग्रहों में से प्रत्येक ग्रह अर्थात् देवता का स्वभाव भिन्न होता है और उसी के अनुसार मनुष्य के स्वभाव पर उसका प्रभाव पड़ता है—यह बात ध्यान में रखनी चाहिये।

प्रायः ज्योतिष-शास्त्र को जानने वाले किसी मनुष्य के लिये कहा करते हैं कि—"अमुक मनुष्य के ग्रह बड़े बलवान पड़े हैं।" इससे तात्पर्य उन ग्रह-स्थानों से है जो किसी हाथ में कम और किसी में अधिक उभरे हुए पाये जाते हैं।

प्रत्येक हाथ में ग्रह-स्थान एक से नहीं होते—बल्कि किसी में कम और किसी में अधिक उभरे हुए होते हैं।

ग्रह-स्थान हमको मनुष्य की वंश-परम्परापरा-गत (Hereditary) और शारीरिक (Constitutional) दशा का अनुभव कराते हैं।

यहाँ इतना कह देना आवश्यक है कि हाथ की महनत से सम्भव है ऊपर का चमड़ा कुछ अधिक सख़्त हो जाय परन्तु ग्रहों-स्थानों की बनावट में कोई अन्तर नहीं पड़ता और वह सदाँ अपनी पहली जगह पर बने रहते हैं।

हाथ में ग्रह-स्थान जितना उभरा हुआ ऊँचा होगा मनुष्य का स्वभाव भी उसी ग्रह-देवता के स्वभाव के अनुसार अच्छा या बुरा समझना चाहिये।

शुक्र का स्थान

शुक्र का स्थान (Mount of Venus) अँगूठे के नीचे होता है। याद रखना चाहिये कि यह स्थान हथेली के उस

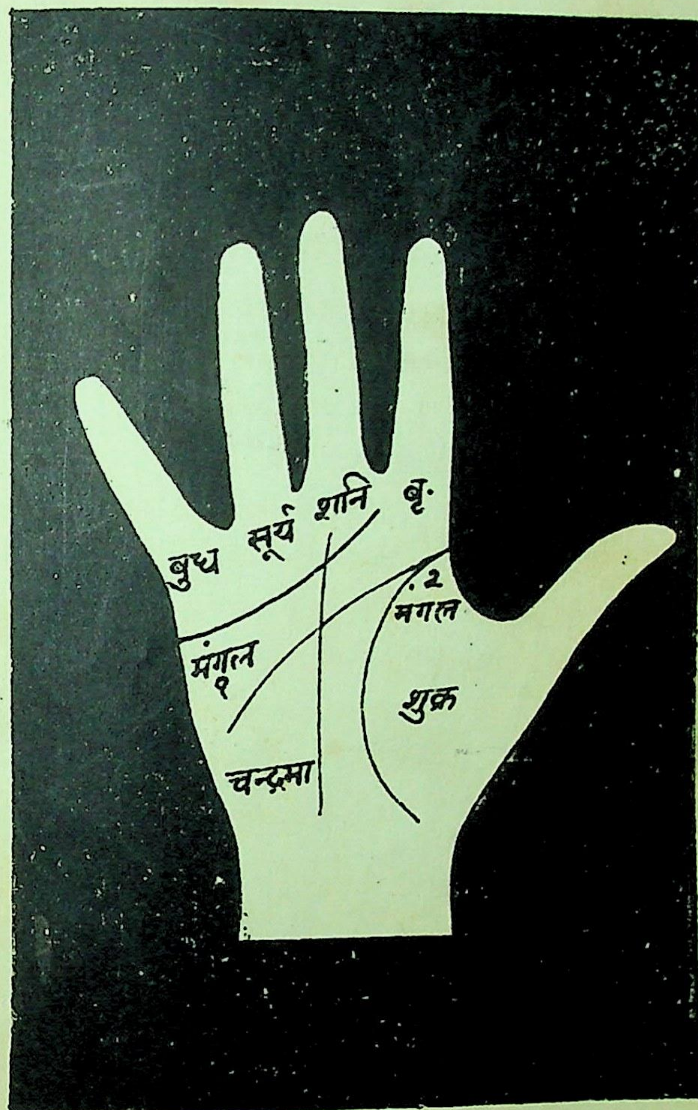
गुम्मट को घेरता है जिसके नीचे रुधिर की एक थैली है और जहाँ से समस्त हाथ में रुधिर का प्रवाह होता है। यह स्थान जितना अधिक ऊँचा होगा रुधिर का प्रवाह उतना ही अधिक और मनुष्य भी तन्दुरुस्त होगा और प्रायः शुक्र देवता के उसमें सभी गुण होंगे। इच्छायें प्रबल और प्रेम-लालसा भी उसमें अधिक पाई जायेगी-क्योंकि शुक्र का ग्रह सुन्दरता और प्रेम का स्वामी है। यदि ग्रह का यह स्थान अधिक उभरा हुआ न हो तो यह श्रेष्ठता का लक्षण है। ऐसे मनुष्य की लालसायें उतनी प्रबल नहीं होतीं। वह दूसरों का सत्कार करने वाला, नम्र, उदार, और सब के साथ प्रेम का व्यवहार करने वाला होता है। "मुझ से सब प्रेम करें, मैं सदा सबको प्रसन्न बनाये रखूं, मेरा हर जगह सम्मान हो—" प्रायः यह इच्छायें सदा उसके साथ रहा करती हैं। यदि शुक्र-स्थान के साथ कुछ अच्छे चिन्ह पड़े हों तो मनुष्य आनन्द-मय जीवन व्यतीत करने की इच्छा करने वाला और गाने-बजाने से प्रेम रखने वाला होता है।

"अति सर्वत्र वर्जयेत।" चिन्ह कोई भी हो—अच्छा या बुरा—यदि उसमें असाधारणता (Abnormality) होगी तो उसका फल अन्त में बुरा ही होगा।

बृहस्पति का स्थान

हाथ की पहली अँगुली के नीचे बृहस्पति (Jupiter) का स्थान है। उच्च पद पाने की, इच्छा, स्वाभिमान, उत्साह,

[पृष्ठ ९७—९८]



ग्रह-स्थान

अधिकार पाने की अभिलाषा, जनता पर शासन, सम्मान, और न्याय-प्रिय होना इसके साधारण लक्षण हैं ।

यदि अधिक बढ़ा हुआ हो तो ऐसा मनुष्य अपनी प्रशंसा स्वयं करने वाला होता है । वह अधिकार पाने कीइच्छा करता है । परन्तु अन्याय के लिये—न्याय के लिये नहीं । वह बड़ा बनना चाहता है और उसकी अभिलाषायें आवश्यकता से अधिक बढ़ी हुई होती हैं ।

शनि का स्थान

शनि का ग्रह स्थान (The Mount of Saturn) दूसरी अँगुली मध्यमा के नीचे है । इसमें खामोशी एकान्त, वास, चतुराई और प्रायः ऊँचे दर्जे की गान विद्या से प्रेम अधिक होता है । किसी एक बात पर घन्टों तक विचार करते रहने की ऐसे मनुष्यों की आदत होती है और प्रायः तत्वज्ञान और आध्यात्मिकवाद की ओर उनकी रुचि अधिक पायी जाती है ।

इसके विपरीत यदि शनि का स्थान अस्वाभाविक रूप से ऊँचा हो तो मनुष्य प्रायः उदास रहता है । निराशा घेरे रहती है । मन में बुरे-बुरे विचार उठते हैं और किसी से बात करने तक को चित्त नहीं चाहता ।

सूर्य्य का स्थान

सूर्य्य तीसरी अँगुली अनामिका के नीचे रहता है । यदि यह सामान्य रूप में बड़ा हो तो सुन्दर वस्तुओं से प्रेम उत्पन्न

करता है। ऐसे मनुष्य साहित्य कविता, चित्रकारी, संगतराशी आदि कलाओं की प्रशंसा करने वाले होते हैं—चाहे स्वयं वह कोई कुशल कलाकार न हों।

सूर्य्य-स्थान (Mount of Sun) यदि अधिक ऊँचा हो तो अपने को प्रसिद्ध करने की लालसा जनता में यश कमाने की अभिलाषा और दुनियां में नाम पाने की उत्कण्ठा मनुष्य में बनी रहती है।

बुध का स्थान

बुध का स्थान (The Mount of Mercury) चौथी अँगुली कनिष्टका के नीचे रहता है। यहाँ यह बात याद रखनी चाहिये कि इसका प्रभाव सदा एक-सा नहीं होता। शुभ हाथ में इसका फल जितना अच्छा होता है, बुरे हाथ में उतना ही बुरा होता है। बुध-ग्रह (Mercury) स्वयं चञ्चल है—इसलिये इसका प्रभाय मनुष्य को भी चञ्चल बना देता है। देशाटन से प्रेम, विचारों में चञ्चलता, दूसरों के कहने से भड़कना, अधिक बोलना इत्यादि इसके साधारण लक्षण समझने चाहियें। यदि हाथ में मस्तक-रेखा (Line of Head) सीधी पड़ी हो तो विज्ञान और व्यापार में उन्नति चाहती है।

सूचना

यदि किसी हाथ में ग्रह की अँगुली अधिक लम्बी हो और उसका स्थान स्वयं साधारण हो तो उससे ग्रह के फल में कोई अन्तर नहीं आता।

उदाहरण के लिये यदि बृहस्पति की अँगुली लम्बी हो तो उच्चपद पाने की इच्छा और शासन करने की अभिलाषा होगी। परन्तु यदि अँगुली छोटी हो तो मनुष्य कोई ज़िम्मेवरी अपने ऊपर लेना पसन्द नहीं करेगा—यहाँ अँगुली का प्रभाव विशेष समझना चाहिये।

मङ्गल का पहला स्थान

मङ्गल के स्थान दो हैं—पहला बृहस्पति और शुक्र के बीच में परन्तु जीवन-रेखा के भीतर होता है (देखो ग्रह-स्थान)—इसके प्रभाव से मनुष्य मुसीबत के समय बुद्धि से काम लेने वाला होता है। वह साहसी होता है और प्रायः सैनिक-जीवन अधिक पसन्द करता है। यदि ग्रह-स्थान अधिक ऊँचा पड़ा हो तो झगड़ालू और उपद्रवी होगा।

मङ्गल का दूसरा स्थान

मङ्गल का दूसरा स्थान बुध और चन्द्रमा के बीच में है। सहन-शीलता, सत्याग्रह, अपने ऊपर अधिकार, सन्तोष इस ग्रह के स्वाभाविक लक्षण समझने चाहियें।

चन्द्रमा का स्थान

चन्द्रमा का स्थान (The Mount of Moon) जैसा कि चित्र में दिखाया गया है शुक्र के स्थान के सामने—और मंगल के दूसरे स्थान के नीचे रहता है। इसमें मनुष्य के विचार शुद्ध रहते हैं और वह प्राकृतिक सुन्दरता का

उपासक होता है। सुन्दर-सुन्दर दृश्य देखना चाहता है और साहित्य और कविता से उसको अधिक प्रेम होता है।

यदि चन्द्रमा का स्थान ऊँचा अधिक हो तो मनुष्य वहमी और हर समय किसी न किसी गहरे विचार में डूबा रहता है। यदि मस्तक रेखा बहुत अच्छी न हो तो इसका प्रभाव और भी अधिक भयंकर होने की सम्भावना रहती है। चन्द्रमा और शुक्र दोनों के स्थान यदि हाथ में ऊँचे पड़े हों और दोनों एक दूसरे के पास हों तो ऐसी दशा में मनुष्य की विषय-वासना अधिक प्रबल हो जाने से वह प्रायः व्यसनी होता देखा गया है। उसकी इच्छायें बढ़ जाती हैं और वह अपना समय आमोद-प्रमोद में अधिक व्यतीत करने लगता है।

सूचना

किसी मनुष्य के ग्रहों का फल कहते समय उसके हाथ में पड़े हुए दूसरे शुभ चिन्हों पर भी एक निगाह अवश्य डाल लेनी चाहिये। क्योंकि यदि हाथ में अशुभ चिन्हों का विरोध करने वाले शुभ चिन्ह पड़े हों तो ऐसी दशा में अशुभ चिन्हों का प्रभाव मध्यम हो जाया करता है—ऐसा समझना चाहिये।

आठवाँ अध्याय

ग्रह-स्थान और उनका प्रभाव

पिछले अध्याय में जो ग्रह-सम्बन्धी नियम बतायेगये हैं उसीके अनुसार उनके शुभा-शुभ लक्षण जानने चाहियें। पहले यह कहा जाचुका है कि हमारे हाथ में ग्रहों की सृष्टि किसी विशेष सिद्धान्त को लेकर ही की गई है। अतः एक बार ग्रहों का वास्तविक रूप समझ लेने के बाद हस्त-सामुद्रिक का अभ्यास करने वाले विद्यार्थी को हाथ में पड़े हुऐ ग्रह-स्थान (Mounts) की उपस्थित या अनुपस्थित और उनका आपस में एक दूसरे की ओर झुकाव देख कर ही किसी मनुष्य का स्वभाव समझना चाहिये। याद रखना होगा कि किसी ग्रह-स्थान का आवश्यकता से अधिक ऊँचा होना या किसी हाथ में उसका बिल्कुल ही

अभाव हो जाना अच्छा नहीं समझा जाता। इसके अतिरिक्त यदि किसी हाथ में एक ग्रह-स्थान दूसरे ग्रह-स्थान के पास पड़ा हो तो उन दोनों के गुण आपस में मिल जाने के कारण मनुष्य के स्वभाव में कुछ विलक्षणता अवश्य आ जाती है।

उदाहरण के लिये यदि बृहस्पति का स्थान शनि के स्थान की ओर झुक रहा हो तो जनता पर शासन करने की अभिलाषा आदि बृहस्पति के लक्षण शनि के लक्षणों में और शनि के लक्षण बृहस्पति में पाये जायेंगे—उदासी, चिन्ता इत्यादि।

इसी प्रकार मनुष्य को चिन्तातुर और उदास बनाये रखने वाला शनि का बुरा प्रभाव भी नष्ट हो जाता है—यदि उसके विरोध में प्रसन्नता प्रदान करने वाला बुध, साहस और संतोष देने वाला मङ्गल, या प्रेम भाव बढ़ाने वाला शुक्र अपना प्रभाव शुभ डाल रहा हो। यदि शुक्र और बृहस्पति का समागम हो तो यह अच्छा फल देने वाले होते हैं। चन्द्रमा और शुक्र के प्रभाव से स्वभाव में नवीनता और शरीर में सुन्दरता का समावेश होता है। मङ्गल और शुक्र स्पर्द्धा, सन्देह और प्रेम उत्पन्न करते हैं। सूर्य्य और शुक्र यदि ऊँचे पड़े हों तो मनुष्य सुन्दर, प्रतिभा-शाली और दूसरों को अपने वश में करने वाला होता है—सम्भव है वह कोई तान्त्रिक भी हो।

ज्योतिष-शास्त्र में भी यह बात स्वीकार की गई है कि यदि ग्रह-स्थान आवश्यकता से अधिक ऊँचे या अस्वाभाविक रूप में पड़े हों तो शरीर के उस भाग पर जिसके कि वह स्वामी

होते हैं—बुरा प्रभाव पड़ता है। शुक्र और चन्द्रमा शरीर के अधो-भाग अर्थात् नीचे के भाग के स्वामी हैं और बृहस्पति मस्तक, और फेंफड़ों पर शासन करता है। मङ्गल सिर और गले पर, सूर्य हृदय, आँख और भुजाओं पर, बुध कलेजा और शरीर के नीचे के भाग का अधिकारी है। इस लिये उस मनुष्य को जिसका कि स्वामी मङ्गल हो प्रायः ऐसे रोगों का अधिक भय लगा रहता है जो मस्तक और गले से सम्बन्ध रखते हैं— सिर का दर्द, आधा-सीसी, स्नायविक पीड़ा (Neuralgia), डिपथिरिया (Diph-theria) रक्तज्वर या लाल बुख़ार (Scarlet Fever) इत्यादि ॥

यदि मङ्गल के साथ बुध का ग्रह पड़ा हो तो ऐसी दशा में बद-हज़मी, वात-सम्बन्धी, (Rheu-ma-tism) गठिया आदि श्लेष्मा युक्त रोगों का अधिक भय लगा रहता है— यहाँ हाथ की स्वास्थ्य-रेखा और स्वास्थ्य से सम्बन्ध रखने वाले दूसरे चिन्हों पर एक दृष्टि अवश्य डाल लेनी चाहिये। इसमें सन्देह नहीं कि मङ्गल और बुध के प्रभाव से मनुष्य को रोग घेरे रहें—परन्तु यदि हाथ में बृहस्पति उच्च का पड़ा हो और अपना शुभ प्रभाव डाल रहा हो तो ऐसी दशा में सम्भव है कि वह मनुष्य अल्पायु होने से बच जाय।

अनुभव से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि यदि मङ्गल और बुध के साथ शुक्र का ग्रह हाथ में अधिक प्रबल होकर पड़ा हो तो वह उपरोक्त दोनों ग्रहों के प्रभाव को मध्यम कर देता है।

ऐसी दशा में प्रसन्नता और साहस का अभाव होकर मनुष्य अपनी इच्छाओं को तृप्त करने के लिये व्याकुल रहने लगता है। मङ्गल और बुध उसको प्रसन्न मुख और साहसी बनाना चाहते हैं—परन्तु प्रेम उन्हें ऐसा करने से रोकता है। यदि चन्द्रमा का स्थान भी आवश्यकता से अधिक ऊंचा हो तो यह बाधायें और भी अधिक उग्र रूप धारण कर लेती हैं। ऐसी दशा में अपना भेद खुल जाने से दण्ड का भय, पश्चात्ताप, उदासी, हताश रहना आदि मानसिक रोग मनुष्य के पीछे लग जाते हैं। शनि के प्रभाव से मनुष्य क्रोधी और चिन्ता-ग्रस्त रहने लगता है। ऐसी दशा में उस बेचारे ग़रीब मनुष्य की क्या दशा हो सकती है जिसके हाथ में शुक्र, चन्द्रमा, और बुध तीनों बलवान पड़े हों और जहाँ मङ्गल और बृहस्पति जैसे शुभ ग्रहों का बिल्कुल ही अभाव हो गया हो—यह विज्ञ पाठक स्वयं समझ सकते हैं। वह इन्द्रिय-लालुप और विलास-प्रिय होगा और अपने मन को अपने वश में न रख सकने और निरुत्साही होने के कारण सदा दुखी और चिन्ता-ग्रस्त रहेगा।

वह विलास-प्रिय होगा। इच्छायें भी उसकी प्रबल होंगी। परन्तु वह अपनी उन इच्छाओं को पूर्ण कर सके—यह असम्भव है। हाँ, यदि उसके हाथ में मङ्गल का स्थान ऊँचा पड़ा हो तो उसकी सहायता से वह मनुष्य कार्य-कुशल और साहसी होगा और अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने में सफल हो सकेगा। ऐसा मनुष्य अपना प्रयोजन सिद्ध करने या अपनी वासनाओं को मिटाते समय

भले ही उचित-अनुचित का कोई विचार न करे; परन्तु अन्त में अवश्य अपनी की हुई मूर्खता पर पछतायेगा—विशेषतः जब कि हाथ में चन्द्रमा का स्थान ऊंचा पड़ा हो और उस पर मस्तक रेखा दो-शाख (V=Fork) होकर झुक रही हो। परन्तु ऐसी दशा में भी शुक्र-स्थान मस्तक-रेखा से अधिक ऊंचा होने के कारण मनुष्य के स्वभाव में निर्भीकता अवश्य पाई जायगी और वह उदास और चिन्ता-ग्रस्त रहने लगेगा।

नवाँ अध्याय

हथेली के विषय में कुछ विशेष बातें

हथेली के सम्बन्ध में हम यहाँ कुछ विशेष बातें कहकर इस विषय को समाप्त करते हैं। मङ्गल-ग्रह का क्षेत्र जिसको मङ्गल का मैदान (Plain of Mars) भी कहते हैं हथेली के उस मध्य-भाग को घेरता है, जो गहरा है। यदि यह गहराई किसी हाथ में अधिक हो तो ऐसा मनुष्य अपने जीवन में कोई उन्नति नहीं कर पाता—यह बात अनुभव में आ चुकी है। सम्भव है वह भाग्यशाली हो और अपनी योग्यता और दूरदर्शिता से कभी उन्नति की ओर बढ़ने लगे; परन्तु उसकी उन्नति के मार्ग में कुछ ऐसी आकस्मिक बाधायें आ उत्पन्न होंगी जिनको पार करके उसे अपने अभीष्ट पर

पहुँचना असम्भव हो जायगा। यदि यह गहराई केवल बाँये हाथ में हो तो ऐसी दशा में वह मनुष्य कुछ उन्नति कर सकेगा—यह आशा की जा सकती है।

मङ्गल का मैदान मङ्गल-ग्रह के स्थान के पास ही हथेली की गहराई में पड़ता है। इसलिये यदि मङ्गल का ग्रह-स्थान (Mount of Mars) अधिक ऊँचा हो तो उसके गुण मङ्गल के गुणों में मिल जाते हैं। ऐसी दशा में मनुष्य साहसी और उन्नतिशील होता है—परन्तु साथ ही ऊधमी और उत्पात मचाने वाला भी होता है। यदि ग्रह-स्थान मध्यम हो तो मनुष्य शान्त और लड़ाई झगड़ों से दूर रहने वाला होता है और यदि अधिक ऊँचा हो तो वह स्वभाव का उग्र और क्रोध आने पर लड़ने-झगड़ने को तैयार रहता है।

हथेली का असाधारण रूप से गहरा होना मनुष्य-जीवन के निष्फल होने की सूचना है। यह मनुष्य अपने जीवन में न कोई उच्च पद ही प्राप्त कर सकते हैं और न किसी व्यवसाय में ही कुछ उन्नति कर पाते हैं।

अँगुलियों की तरह हथेली के भी तीन भाग किये गये हैं, जिनको हम अपने शब्दों में हथेली के तीन क्षेत्र (Three Zones of the Palm) के नाम से लिखेंगे। पहला क्षेत्र हृदय-रेखा और अँगुलियों के बीच का भाग है। शेष दो भाग विस्तार में प्रत्येक हाथ में एक-से नहीं होते।

देखने से पता लगता है कि हाथ में रेखायें अपने बीच में

साथ कुछ स्थान घेरे हुए हैं जिनको चतुष्कोण (Quadrangle) और त्रिभुज (Triangle) कहना चाहिये। चतुष्कोण हृदय-रेखा और मस्तक-रेखाके बीच में और त्रिभुज मङ्गल के मैदान में होता है।

पाश्चात्य विद्वानों ने अपनी कुछ पुस्तकों में हाथ को दो भागों में बाँटते हुए ऊपर के आधे भाग को मज़बूत होने से पुरुष-वाची (Male) और नीचे के भाग को स्त्री-वाची (Female) कह कर लिखा है। उनका यह मत हमारी समझ में ठीक नहीं जान पड़ता—जबकि हम प्रतिदिन स्त्रियों को संसार के कार्य-क्षेत्र में पुरुषों के समान ही पूर्ण उत्साह के साथ आगे बढ़ते देख रहे हैं और सदा से देखते चले आये हैं।

हाथ की रेखायें और उनके चिन्हों का वर्णन हम अगले पृष्ठों में करेंगे जो कि एक बड़े ही महत्व का विषय है।

दूसरा भाग

रेखा-ज्ञान

पहला अध्याय

रेखा-ज्ञान

हाथ की रेखाओं के विषय में यहाँ इतना कह देना आवश्यक है कि कोई भी विद्यार्थी रेखा-सम्बन्धी दो-चार नियम या केवल एक बार पुस्तक पढ़कर ही इस विषय का पूर्ण-ज्ञाता नहीं बन जाता। हम जानते हैं कि किसी विषय में पूर्ण-ज्ञान प्राप्त करना कितना कठिन है और उस पर अधिकार पाने के लिये हमको कितने समय की आवश्यकता होती है। यदि विचार करके देखा जाय तो मनुष्य के जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली उन रेखाओं का विषय—जिनके द्वारा शारीरिक, मानसिक और अन्य मानवी-शक्तियों का वकाश और तदनुसार मनुष्य की प्रारब्ध का ज्ञान होता हो—किसी भी गम्भीर विषय से अधिक गम्भीर और उतना ही अधिक महत्वपूर्ण है।

अतः विद्यार्थियों को इस विषय का अभ्यास करते समय विचार-शील, दृढ़ और गम्भीर बनना चाहिये। इस विषय में पूर्ण अभ्यास प्राप्त करने के लिये जितने अधिक समय की आवश्य-होगी उसका फल उतना ही अधिक सरस और सुन्दर होगा। हाथ की रेखाओं को पढ़ना प्रकृति (Nature) की पुस्तक को पढ़ना है—उस पुस्तक को जिसका एक-एक पत्र जीवधारी मनुष्य, जिसके पृष्ट जीवन और मृत्यु और जिसके शब्द मनुष्य की वह चमकती हुई आशाएँ हैं जिनको लेकर वह अपने जीवन के कार्य-क्षेत्र में उतरता है।

यदि यह बात ध्यान में रहे तो कोई भी विद्यार्थी धीरे-धीरे इस विषय का पूर्ण ज्ञाता बन सकता है। याद रखना चाहिये कि किसी भी दो मनुष्यों का स्वभाव आपस में एक-सा न होने के कारण उनके स्वभाव में परस्पर एक विलक्षणता पाई जाती है। इसलिये बिना गम्भीर विचार किये केवल पुस्तक के सहारे चलकर ही वह कोई सफल विद्वान नही हो सकता।

उदाहरण के लिये हम जीवन-रेखा (Line of Life) को लेते हैं। जीवन-रेखा का सम्बन्ध—जिसको हम पीछे आयु-रेखा भी कह आये हैं—हाथ की उन सभी रेखाओं से होता है जो समयानुसार अपनी छाया से हमारी जीवन-घटनाओं में कोई विशेष परिवर्तन करके सहसा हमें उन्नति और पतन की ओर धकेल देती है।

मस्तक-रेखा का सम्बन्ध उन सभी रेखाओं से होता है

जिसका प्रभाव हमारे मन और बुद्धि पर पड़ता है—इसी तरह और भी रेखाओं के विषय में समझना चाहिये। प्रस्तुत पुस्तक में उपरोक्त नियम इतना सरल और उपयोगी है जिसके द्वारा कोई भी विद्यार्थी उन सभी नई रेखाओं और चिन्हों का अर्थ समझ सकता है जिनका वर्णन प्रायः किसी भी पुस्तक में देखने को नहीं मिलेगा।

एक बात और भी है जिसका उल्लेख यहाँ कर देना आवश्यक है। प्रायः बहुत-से मनुष्य हस्त-सामुद्रिक-विद्या में विश्वास नहीं रखते। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है—जब कि हम ऐसे बहुत-से मनुष्य रोज़ देखते हैं जो नास्तिक हैं और ईश्वर को भी केवल एक कपोल-कल्पना की सृष्टि का रूप देते हैं।

दूसरा अध्याय

हाथ की रेखायें

रेखाओं के सम्बन्ध में प्रायः बहुत से मनुष्य कहा करते हैं कि वह केवल झुर्रियाँ हैं और इनको पढ़कर किसी की प्रारब्ध के विषय में कुछ कहना केवल एक मूर्खता को छोड़कर और कुछ नहीं है। बात ऐसी नहीं है। प्रमाण के लिये इतना कह देना काफ़ी होगा कि प्रकृति (Nature) का कोई भी कार्य व्यर्थ नहीं होता। यह दूसरी बात है कि हम उसके बहुत से गुप्त भेदों को नहीं समझ सकते—परन्तु यह कहना कि उनमें कोई सार नहीं है हमारी अज्ञानता है। दूसरी श्रेणी में वह मनुष्य हैं जिनका विश्वास है कि हाथ को आसानी से मोड़ने के लिए ही

हथेली में रेखायें होती हैं। यहाँ यह देखना है कि यदि हाथों को मोड़ने या मुट्ठी बाँधने ही से उनमें रेखायें पड़ जाती हैं तो यह रेखायें प्रत्येक हाथ में एक-सी होनी चाहियें। परन्तु ऐसा नहीं होता। किसी हाथ में एक रेखा होती है तो दूसरे हाथ में नहीं होती या दोनों में परस्पर बड़ा अन्तर होता है। कोई झुकी होती है तो कोई सीधी होती है। मुझे याद है—कोई सात बरस हुए होंगे कि मैं कानपुर जा रहा था। मेरे मित्र जो कि स्टेशन पर रेलवे के ही एक उच्च कर्मचारी थे, पास ही बैठे एक पुलिस इन्सपेक्टर से उस मनुष्य के विषय में कुछ पूंछ रहे थे जिसको कि उन्होंने हाल ही में गिरफ़्तार किया था और अपने साथ आगरे ले जा रहे थे। उसकी छोटी-छोटी सुर्ख़ परन्तु चमकीली आँखें, बल खाया हुआ सकड़ा माथा, काला रंग, और सारे शरीर पर बाल देखकर कोई भी मनुष्य यह कहे बग़ैर नहीं रहता कि वह एक बड़ा ही विलक्षण मनुष्य था। ख़ैर, कुछ भी हो। मैं उसके हाथ की ओर टकटकी बाँधे बैठा देख रहा था। मैंने देखा कि उसके हाथ में हृदय-रेखा (Heart Line) थी ही नहीं। यद्यपि मैं उसके हाथ की दूसरी रेखाओं को ठीक-ठीक नहीं देख सका था; परन्तु फिर भी मुझे यह समझने में देर न लगी कि वह बड़ा ही बे-रहम और हृदय-हीन मनुष्य है और बहुत से ख़ून कर चुका है। बात भी ठीक निकली। [illegible] सात
मालूम हुआ कि वह एक डाकू है और पिछले [illegible] रेखा होती

जब कि उस पर कई ख़ून करने का मुक़दमा चलाया जा रहा था—जेल से निकल भागा है।

कहने का अर्थ क्या है? ऊपर यह कहा जा चुका है कि उस डाकू के हाथ में हृदय-रेखा थी ही नहीं। फिर भी उसे हाथ को मोड़ने या मुट्ठी बाँधने में किसी प्रकार की असुविधा नहीं हो रही थी। अतः यहाँ यह बात सिद्ध हो जाती है कि मुट्ठी बाँधने या हाथ को मोड़ने के लिये हथेली में रेखाओं का होना कुछ आवश्यक नहीं है। दूसरी बात—हाथ की रेखायें सदा एकसी नहीं रहतीं। यदि ध्यान से देखा जाय तो प्रत्येक हाथ में केवल दो या तीन बड़ी रेखाओं को छोड़ कर शेष सभी छोटी रेखायें बदलती रहती हैं। दो या तीन रेखाओं को छोड़ कर इसलिये कि आयु-रेखा मस्तक-रेखा, और हृदय-रेखा, में कभी कोई विशेष परिवर्तन नही होता। छोटी रेखायें ही क्यों बदलती हैं? इसका एक कारण है। मानसिक चिन्ता, शारीरिक रोग, व्यथा, रोना हँसना, या प्रसन्नता आदि मानसिक उत्तेजनाओं की झलक मनुष्य के चेहरे और मस्तक पर अवश्य पड़ती है—यह हम प्रतिदिन अपनी आँखों से देखते हैं। इन सभी स्वाभाविक उत्तेजनाओं का प्रभाव देखने में क्षणिक भले ही हो परन्तु शरीर के स्नायविक भाग (Nerve System) में एक ...ा कम्पन पैदा हो जाता है। वह फैलता है और सिकु- ... हमारे चेहरे और हाथ में रेखायें पड़ जाती

हैं। अब यहाँ देखना है कि हम इन रेखाओं को पढ़कर किसी मनुष्य की शारीरिक और मानसिक क्रिया या उसको प्रारब्ध के सम्बन्ध में भी कुछ समझ सकते हैं या नहीं।

एक ओर मुख-सामुद्रिक (Physiognomy) की सत्यता पर विश्वास करना और दूसरी ओर हस्त-सामुद्रिक पर अविश्वास करना पक्षपात और हठधर्मी है। हम किसी मनुष्य की केवल मुख-आकृति और दूसरे चिन्हों को देखकर—"उस मनुष्य का मस्तक ऊँचा है; वह भाग्यशाली होगा, इसके मस्तक पर रेखायें अधिक हैं; यह गम्भीर विचार करने वाला है"—आदि इसी तरह की बहुत-सी बातें कहा करते हैं। यह सत्य होती हैं और हम किसी मनुष्य का स्वभाव और उसके अन्य लक्षणों को जानकर अपनी योग्यता पर अभिमान करते हैं। परन्तु यही बातें जब हाथ की रेखायें पढ़कर कही जाती हैं तो अज्ञानी और पक्षपाती मनुष्य इसको कर्म-फल बतलाना कहते हैं।

यदि स्पष्ट रूप से यह समझ लिया जाय कि स्नायविक उत्तेजना (Nerve Force) हाथ में ठीक उसी तरह रेखायें डाल देती है जिस तरह चेहरे और मस्तक पर पड़ती हैं तो हस्त-सामुद्रिक पर बहुत कुछ विश्वास किया जा सकता है।

विषय बहुत बढ़ गया। हम इसको यहीं समाप्त करते हैं और रेखाओं के विषय को लेते हैं। हाथ में सात रेखायें मुख्य और सात छोटी या साधारण रेखा होती

हैं। (देखो—मुख-पृष्ठ)। मुख्य सात रेखायें निम्न लिखित हैं:—

१—जीवन-रेखा (Line of Life) जिसको कहीं-कहीं आयु-रेखा भी कहा गया है—तर्जनी अंगुली और अंगूठे के बीच से चल कर नीचे शुक्र-स्थान को घेरती है।

२—मस्तक-रेखा (Line of Head) हथेली के बीचमें होकर चलती है।

३—हृदय-रेखा (Line of Heart) वह रेखा है जो मस्तक-रेखा के ऊपर उसी के समानान्तर चलती है।

४—शुक्र-मुद्रिका (The Girdle of Venus) यह-रेखा हृदय-रेखा से ऊपर शनि और सूर्य्य के स्थान को घेरती है।

५—स्वास्थ्य-रेखा (The Line of Health) बुध के स्थान से चल कर नीचे हाथ की ओर जाती है।

६—सूर्य्य-रेखा (The Line of Sun) नीचे से चल कर ऊपर तीसरी अंगुली अनामिका की ओर चलती है।

७—भाग्य-रेखा (Line of Fate)—यह रेखा हाथ के मध्य भाग से चलती है और मस्तक-रेखा को पार करती हुई शनि के स्थान को स्पर्श करती है।

मस्तक-रेखा के सम्बन्ध में यह बात याद रखनी चाहिये कि यह रेखा हाथ को दो भागों में बाँटती है।

ऊपर का भाग जिसमें अंगुलियाँ, और बृहस्पति, शनि, सूर्य्य, बुध, और मङ्गल ग्रह के स्थान हैं मस्तिष्क से सम्बन्ध

रखता है जब कि नीचे का भाग तत्विक (Material) होता है। यद्यपि हाथ के इस अधो-भाग के सम्बन्ध में अब तक कुछ नहीं कहा गया फिर भी यहाँ इतना कह देना आवश्यक है कि यदि मनुष्य की प्रवृत्ति पाप-कर्म की ओर होगी तो ऐसी दशा में सीधे हाथ में मस्तक-रेखा ऊपर उठ कर हृदय-रेखा को दबा देगी और हथेली के नीचे का भाग ऊपर के भाग की अपेक्षा अधिक बढ़ जायगा।

सात छोटी रेखायें

मङ्गल-रेखा—यह रेखा जीवन-रेखा के भीतर मङ्गल के ग्रह-स्थान की ओर बढ़ती है।

चन्द्र-रेखा (Line of Moon) वह रेखा है जो धनुषाकार मङ्गल के स्थान से चलकर चन्द्रमा के स्थान की ओर जाती है।

विवाह-रेखा (The Line of Marriage) बुध की अंगुली के नीचे हृदय-रेखा के समानान्तर होती है

निकृष्ट-रेखा—जैसा कि इसके नाम से प्रगट है—दुष्ट-फल के देने वाली है। यह स्वास्थ्य-रेखा के समानान्तर, शुक्र-स्थान में प्रवेश करती है।

मणिबन्ध-रेखायें तीन होती हैं। इनका स्थान जैसा कि चित्र में दिखाया गया है, हाथ की कलाई है।

उपरोक्त सभी रेखाओं में से प्रत्येक रेखा का अपना एक गुण होता है और जब वह किसी दूसरी रेखा से जाकर मिलती है तो उन दोनों के गुण आपस में मिल जाने से उनमें

एक नया ही गुण आ जाता है—ऐसा समझना चाहिये। अतःफल कहते समय रेखाओं का आपस में सम्बन्ध देखकर ही घटा-बढ़ा कर कोई बात निश्चय करनी चाहिये। किसी मनुष्य के हाथ की रेखायें देख कर कहना कि उसका जीवन संकट-मय है दूरदर्शिता नहीं है। हमको चाहिये कि उसके दोनों हाथ की रेखायें मिलाकर यह निश्चय करें कि कौनसी घटना किस समय उत्पन्न होगी और उसके उत्पन्न होने का कारण क्या होगा। ऐसा करने से हम उसे आगामी घटनाओं से बचने के लिये सावधान कर सकते हैं और यदि उसकी इच्छा-शक्ति प्रवल हुई तो वह अपने को ख़तरे से बचा सकता है। ऐसी दशा में मनुष्य की प्रवल इच्छा-शक्ति उसके अशुभ चिन्हों का दुष्ट फल नष्ट करने में सहायक होती है।

तीसरा अध्याय

रेखा-सम्बन्धी नियम

रेखायें चमकीली और साफ़ होनी चाहियें। वह न अधिक चोड़ी हों और न रंग में पीली या धुंधली। उनमें न कोई द्वीप हो, न टूट रही हों, और न टेढ़ी-तिरछी ही हों—ऐसी रेखायें शुभ होती हैं।

पीले रंग की रेखायें मनुष्य के क्रोधी और चिड़-चिढ़ा होने का लक्षण हैं। ऐसा मनुष्य अभिमानी, गम्भीर रहने वाला और उग्र स्वाभाव का होता है। यदि रेखायें लाल रंग की होंगी तो वह फ़ुर्तीला परन्तु शीघ्र ही आवेश में आ जाने वाला होगा।

शुष्क रेखायें स्वास्थ्य अच्छा न होने की सूचना देती हैं। ऐसे मनुष्य में साहस कम और शक्ति निर्बल होती है।

यदि रेखाओं का रंग अधिक गहरा हो तो चिन्ता, उदासी और बुरे-बुरे विचार मन में उठा करते हैं। यह मनुष्य किसी को क्षमा करना नहीं जानते और हर किसी से बदला लेंने के लिये सदाँ तैयार रहते हैं। वह प्रायः गम्भीर होते हैं और दूसरों के सम्बन्ध में अधिक नहीं आते।

हाथ में रेखाये उत्पन्न होती हैं, धुंधली होजाती हैं, या मिट जाती हैं—यह हम पहले भी कह आये हैं। मेरा अपना विश्वास है कि हम अपने भाग्य को स्वयं जैसा चाहें बना सकते है। जैसा हमारा स्वाभव होता है उसी के अनुसार हमारे बिचार होते हैं। जैसे हमारे विचार होते हैं वैसे ही हम कर्म करते है। जैसा कर्म करते हैं फल भी हमें उसी के अनुसार मिलता है—यही हमारी प्रारब्ध है। हाँ, हम स्वयं अपने को बना नहीं सकते हैं। यही कारण है कि वंश-परम्परा से हमारे हाथ में कुछ ऐसे विशेष चिन्ह भी होते हैं जिनका प्रतिवाद हम नहीं कर सक्ते या जिनके प्रभाव से बचना यदि असम्भव नहीं तो कठिन तो अवश्य ही होता है। यहाँ इतना अवश्य कहा जा सकता है कि यदि हम वंश-परम्परा-गत चिन्हों को बिल्कुल नष्ट नहीं कर सकते तो उनके फल को मध्यम अवश्य कर सकते हैं।

मुख्य रेखायें बहुत कम बदलती हैं और कभी-कभी किसी

हाथ में बिल्कुल ही नहीं बदलतीं। यदि दोनों हाथ एक से हों तो भविष्य में उन में कोई परिवर्त्तन हो, इसकी सम्भावना कम रह जाती है—विशेषतः ऐसी दशा में जब कि आयु पच्चीस वर्ष को पार कर गई हो।

यदि किसी हाथ में केवल एक ही अशुभ चिन्ह या रेखा हो तो उसे ही निर्णयात्मक नहीं समझ लेंना चाहिये। यदि कोई अशुभ अधिक आपत्ति-जनक है तो उसका प्रभाव प्रायः सभी मुख्य रेखाओं पर देख पड़ेगा। अतः किसी रेखा के सम्बन्ध में कोई निर्णय कर लेंने से पहले दोनों हाथ देखने चाहियें—क्योंकि बांये हाथ में रेखाओं की प्रवृति और सीधे हाथ में उनका पूरा होना देखा जाता है।

यदि हाथ में किसी मुख्य रेखा के पीछे कोई सहायक रेखा हो तो वह उस रेखा को जिसके बराबर में वह होती है पुष्ट करती है और उसको आपत्ति से बचाती है। उदाहरण के लिये यदि जीवन-रेखा बीच से टूटी हो और उसके पीछे सहायक-रेखा उसको जोड़ रही हो तो अकाल मृत्यु होने का भय जाता रहता है।

किसी रेखा की बनावट यदि जन्जीर की तरह हो तो इस का फल अशुभ होता है! यदि यह हृदय रेखा हो तो मनुष्य प्रेम के सम्बन्ध में अस्थिर और यदि मस्तक-रेखा होगी तो उसकी मस्तिष्क अर्थात् ज्ञान-शक्ति निर्बल होने के कारण वह कमज़ोर विचार और मन्द बुद्धि वाला होगा।

बलखाती हुई लहरदार बनावट उस रेखा के प्रभाव को कम कर देती है।

टूटी हुई रेखा व्यर्थ समझी जाती है।

यदि कोई बड़ी रेखा सिरे पर सर्प की जिव्हा के समान दो-शाखी (Fork = V) हो गई हो तो उस रेखा से सम्बन्ध रखने वाले गुणों में वृद्धि होजाया करती है।

यदि किसी हाथ में बहुत-सी छोटी-छोटी रेखायें इधर-उधर दोड़ रही हों तो यह मनुष्य की शारीरिक शक्ति निर्बल होने का लक्षण है।

चौथा अध्याय

जीवन-रेखा

शरीर-विज्ञान के प्रसिद्ध अनुभवी विद्वानों ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि प्रत्येक मनुष्य के शरीर में जन्म से ही कुछ ऐसे कीटाणु पाये जाते हैं जो समय पाकर मनुष्य के किसी-न-किसी रोग का कारण बन जाया करते हैं। यहाँ यह बात कह देनी होगी कि शरीर में उत्पन्न होने वाले किसी भी साध्य या असाध्य रोग की सूचना—जिसके कीटाणु पहले ही से हमारे शरीर में प्रविष्ट हो चुके हों—सब से पहले हमारे मस्तिष्क को पहुँचती है। क्यों ? कारण स्पष्ट है। हमारे शरीर के स्नायु-भाग का एक गहरा सम्बन्ध हमारे मस्तिष्क से है। यही

कारण है कि शरीर के स्नायु-भाग पर यदि कोई अधिक दबाव पड़ता है तो हमारी मस्तिष्क-क्रिया में बहुत-कुछ उलट-फेर हो जाया करता है। हाथों के विषय में पहले कहा जा चुका है कि यह मास्तष्क से आने वाली नाड़ियों की सीमा हैं और मस्तिष्क की अच्छी या बुरी क्रिया का पूरा-पूरा प्रभाव इन पर पड़ता है। दूसरे शब्दों में मस्तिष्क शरीर का वह यन्त्र है जिसके द्वारा प्रकृति (Nature) शरीर के गुप्त भेदों का अक्स रेखाओं के रूप में हमारे हाथों में डालती रहती है। अब प्रश्न उठता है कि हम रेखाओं द्वारा क्यों कर प्रकृति के गुप्त संकेतों को समझ सकते हैं ? प्रश्न साधारण नहीं बड़े महत्व का है। यहाँ हम इसी प्रश्न को लेकर क्रम से हाथ की रेखाओं और उनके विभिन्न चिन्हों का वर्णन करेंगे।

जीवन-रेखा (Line of Life) जैसा कि चित्र में दिखाया गया है पहली अँगुली तर्जनी और अँगूठे के बीच से चल कर नीचे की ओर अँगूठे के उस गुम्मट को घेरती है जिसको शुक्र का स्थान कहा गया है। कहना नहीं होगा कि यह रेखा जहाँ तक मनुष्य के जीवन और स्वास्थ्य से सम्बन्ध है—बड़े महत्व की रेखा है। महत्व की रेखा इस लिये कहा कि इसका सम्बन्ध केवल मनुष्य की शारीरिक दशा, रोग या मृत्यु से ही नहीं है बल्कि प्रायः दूसरी रेखाओं की घटनायें भी इसी रेखा को प्रमाण मान कर सत्य समझी जाती हैं। इस रेखा की लम्बाई, गहराई और बनावट देख कर हम किसी

मनुष्य का स्वास्थ्य और उसकी आयु बता सकते हैं। प्रायः ऐसे चिन्ह जो मृत्यु की सूचना देते हैं इस रेखा पर नहीं देख पड़ते—जब तक कि मनुष्य की मृत्यु दैनिक (Natural) कारणों से न हो। यदि मृत्यु अकस्मात सिर में चोट आ जाने से होगी तो उसको अकाल-मृत्यु समझना चाहिये। ऐसी दशा में उसका चिन्ह जीवन-रेखा पर न होकर मस्तक-रेखा पर होगा—यहाँ मृत्यु-फल कहते समय जीवन से सम्बन्ध रखने वाली अन्य रेखाओं पर अवश्य ध्यान कर लेना चाहिये।

जीवन-रेखा का वास्तविक अर्थ समझाने में सब से बड़ी आपत्ति यह है कि अधिकाँश मनुष्यों का विश्वास होता है कि यह रेखा लम्बाई में जितनी अधिक लम्बी होगी मनुष्य का आयु भी उतनी ही बड़ी होगी। किसी अँश में यह बात ठीक भी है। यदि रेखा लम्बी, बिना किसी टूट-फूट के सुन्दर हो तो ऐसी आयु स्वास्थ्य पूर्ण और दीर्घ होती है। परन्तु ऐसा बहुत कम देखने में आता है—क्योंकि मनुष्य का शरीर रोगों का घर है जिनके निशान हमारी रेखाओं पर होते हैं।

"मेरी उम्र कितनी है"—यह एक साधारण सा प्रश्न है जो प्रायः बहुत से मनुष्य किया करते हैं। मैं समझता हुँ कि किसी मनुष्य की आयु ठीक-ठीक बताना कितना कठिन है। समझने के लिये यह एक मोटी सी बात है कि मनुष्य जितना स्वस्थ होगा उसकी आयु भी उतनी ही अधिक बड़ी होगी। इस लिये यह आवश्यक है कि किसी मनुष्य की आयु

का परिमाण जानने के लिये उसकी स्वास्थ्य-रेखा पर अवश्य ध्यान रखना चाहिये। स्वास्थ्य-रेखा के सम्बन्ध में हम आगे चल कर कुछ कहेंगे। परन्तु जहाँ तक इसका जीवन-रेखा से सम्बन्ध है यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि यदि यह दोनों रेखायें आपस में एक दूसरी से मिलेंगी, और एक रेखा दूसरी रेखा के बराबर होगी, तो वह निशान जहाँ वह दोनों रेखायें मिलेंगी मनुष्य की आयु का समय होगा।

यदि किसी मनुष्य की स्वास्थ्य-रेखा किसी स्थान पर बहुत ज्यादा गहरी हो और उसके साथ जीवन-रेखा हलकी या कमज़ोर हो या उसमें गहरी स्वास्थ्य-रेखा के ठीक सामने कोई द्वीप (○ =द्वीप) आ गया हो तो ऐसी दशा में जीवन-रेखा पर आया हुवा वह द्वीप का चिन्ह ही उस की आयु की अन्तिम सीमा होगा। यदि यह चिन्ह जीवन-रेखा के बीच में होगा तो चाहे यह रेखा विस्तार में कितनी ही अधिक लम्बो क्यों न हो मनुष्य की आयु आधी ही रह जायगी। यहाँ मनुष्य को आयु सौ बरस की मानी गई है और इसमें सन्देह नहो कि यदि जीवन-रेखा अधिक स्पष्ट और लम्बी होकर पूर्ण रूप से शुक्र-स्थान को घेर रही हो ता ऐसा मनुष्य दिर्घायु होगा।

यदि किसी हाथ में शनि के स्थान (Mount of Saturn) से कोई गहरी रेखा चल कर जीवन-रेखा को छूती हो


अ- साहस, क्रियाशीलता
य- काल्पनिक, आदर्शवादी
ठ- यात्री-जीवन इत्यादि
अ- अन्तरगत प्रकृति दुर्बलता
स- स्वास्थ्य रेखा
त- परदेश से लौटने की पूर्ण रेखा
पृष्ठ १४०
र- उच्च विचार

चित्र १०

या उसको पार कर जाती हो तो उसका स्वास्थय पर बुरा प्रभाव पड़ता है-सम्भव है आयु के सम्बन्ध में भी अपना भयंकर फल दिखाये (ग—ग—चित्र नं० १०)। जहाँ तक अनुभव हुआ है यह रेखा अपना अशुभ फल दिखाये वग़ैर नहीं रहती। किसी भी शुभ हाथ में यह रेखा अनिष्ट कारक होती है और मनुष्य को रोग और कभी-कभी मृत्यु के मुख में डाल देती है—(समय जानने के लिये देखो सप्त-वर्षीय नियम)। इसमें सन्देह नहीं कि उपरोक्त रेखा अपना बुरा फल दिखाती है इस लिये चिन्ता-जनक है, परन्तु फिर भी यदि इसकी ओर से सावधान रहा जाय तो सम्भव है कि इसका अशुभ-फल यदि नष्ट नहीं तो किसी अंश में मध्यम हो जाय। पहले कहा जा चुका है कि मनुष्य के शरीर में जन्म से ही कुछ ऐसे कीटाणु (Germs) होते हैं जो आगे चल कर उसके किसी न किसी रोग का कारण बन जाया करते हैं। ऐसी दशा में यदि कोई अनुभवी विद्वान हाथ की रेखाओं को पढ़ कर उन कीटाणु द्वारा उत्पन्न होने वाले रोग की सूचना पहले ही से हमको दे देता है तो हम किसी वैद्य या डाक्टर की सहायता से उसे रोकने का उपाय कर सकते हैं और यदि वह रोग वंश-परम्परा से चला आने वाला (Inherited) नहीं है तो अधिक सम्भव है कि हम उसे रोकने में सफल हो सकें।

जीवन-रेखा यदि किसी हाथ में छोटे-छोटे टुकड़ों से मिल कर जञ्जीर की तरह बनी हो (क—क—चित्र नं० ११) या छोटी

छोटी बारीक रेखाओं में बदल गई हो, जैसी कि चित्र में दिखाई गई है, तो यह ख़राब स्वास्थ्य का निश्चित चिन्ह है—विशेषतः जब कि हाथ मुलायम हो। यदि यही रेखा आगे चल कर ठीक हो जाय तो वहीं से जीवन-शक्ति और स्वास्थ्य सुधर जायगा—यह बात अनुभव में आ चुकी है।

मृत्यु या किसी रोग के चिन्ह का निर्णय करते समय दोनों हाथ की रेखायें देखनी चाहियें। यदि बाँये हाथ में जीवन-रेखा टूट रही हो और सीधे में जुड़ रही हो तो जिस स्थान पर वह टूट रही होगी उसी अवस्था पर जाकर कोई भयंकर रोग होगा—यह निश्चय है। परन्तु यदि रेखा दोनों हाथों में टूट रही हो तो ऐसी दशा में मृत्यु अवश्य होगी। मृत्यु का होना और भी अधिक निश्चय है यदि टूटी हुई रेखा घूम कर शुक्र-स्थान (Mount of Venus) की ओर जा रही हो (अ—अ—चित्र नं० १३)।

यदि रेखा अपने स्थान को छोड़ कर—जहाँ से वह शुरू होती है—पहली अंगुली के नीचे वृहस्पति के स्थान से प्रारम्भ होकर नीचे की ओर जा रही हो तो मनुष्य के जीवन में प्रारम्भ ही से उच्च पद पाने की अभिलाषा, यश प्राप्त करने की कामना, उन्नति करने की लालसा पाई जाती है—सम्भव है ऐसा मनुष्य कोई उच्च पदाधिकारी या कोई बड़ा विद्वान हो।

यद्यपि यह बहुत कम देखने में आता है कि जीवन-रेखा, मस्तक-रेखा और हृदय-रेखा तीनों—उस स्थान पर जहाँ से

वह प्रारम्भ होती हैं—एक दूसरी से मिल रही हों। फिर भी यदि मनुष्य के दुर्भाग्य से यह तीनों रेखायें आपस में मिल गई हों तो उस मनुष्य की मृत्यु अस्वाभाविक रूप से होगी—आवेश में आकर जल में डूब मरना, अग्नि में जल जाना, आत्म हत्या, इत्यादि।

साधारण रूप में जीवन-रेखा और मस्तक रेखा एक दूसरी से मिली होती हैं। यदि इन दोनों रेखाओं का मेल हथेली में अधिक दूर तक न जाकर छूट गया हो और वह दोनों पहले ही अलग-अलग हो गई हों तो शुभ हैं। ऐसा मनुष्य अपने संकल्प पर दृढ़ रहने वाला, सावधान और हर समय सतर्क रहता है। वह शीघ्र-ग्राही होता है, परन्तु आत्म-विश्वासी नहीं होता—ऐसा देखने में आया है।

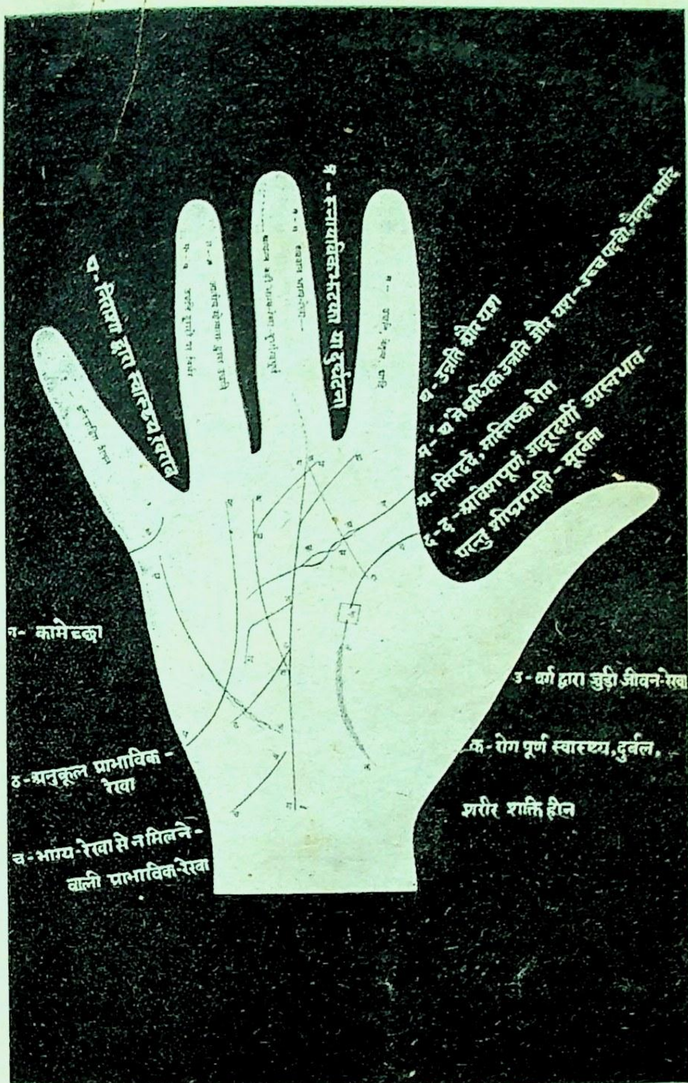
यदि यह दोनों रेखायें शुरू से ही एक दूसरी से अलग हों तो ऐसा मनुष्य बे-परवाह होता है। पढ़ने-लिखने से भी उसे उतना प्रेम नहीं होता—जब तक कि उसमें वह कोई विशेष आनंद का अनुभव न करता हो।

यदि इन दोनों रेखाओं के बीच का फ़ासला न अधिक चौड़ा और न उतना कम—बीच का हो तो समझना चाहिये कि वह मनुष्य बड़ी-बड़ी इच्छायें रखने वाला, साहसी, आत्म-विश्वासी, और उत्साही होगा।

जीवन-रेखा के सम्बन्ध में हमारा यह एक जातीय अनुभव है कि यदि इस में से कोई एक शाख़ दृढ़ और मज़बूत हाथ में

(ठ—ठ—चित्र नं० १०) हथेली के मध्य-भाग से शुरू होकर चन्द्र-स्थान के नीचे की ओर जा रही हो तो मनुष्य परिवर्तनशील और देशाटन से प्रेम रखने वाला होगा और यदि हाथ ढीला और कोमल हो तो ऐसा मनुष्य शीघ्र ही आवेश में आ जाने वाला उग्र स्वभाव होता है। परन्तु यदि हाथ में मस्तक-रेखा झुकी हुई होगी तो उत्तेजना बढ़ाने वाले पदार्थ अर्थात् शराब, भंग, आदि नशीली वस्तुओं का सेवन करने वाला होगा। यहाँ यह बात याद रखनी चाहिये कि मुलायम और ढीला हाथ मनुष्य के आलसी होने का लक्षण है। भले ही उसके हाथ की रेखा देशाटन की ओर जा रही हो—वह परिश्रम-हीन और आलसी बना रहेगा।

वह सभी रेखायें जो जीवन-रेखा से चल कर बृहस्पति के स्थान (Mount of Jupiter) की ओर जाती हैं अधिकारों में अधिक वृद्धि का होना, लाभ और उन्नति की सूचक हैं। यदि उन में से कोइ एक रेखा हाथ में अधिक ऊपर तक जाकर पहली अँगुली के मूल-भाग पर या उसके पास ही समाप्त होती हो—(ड—ड—चित्र नं० १०) तो अधिकारों में अधिक वृद्धि होगी—यह निश्चय है। सम्भव है कोई उच्च पद प्राप्त हो—क्योंकि बृहस्पति एक स्वाधीन शासक और उसकी अँगुली तर्जनी स्वत्व सम्बन्धी है। बृहस्पति की इस अँगुली की ओर जाने वाली रेखाओं के सिवाय और भी कुछ ऐसी रेखायें होती हैं जो जीवन-रेखा से आरम्भ होकर


ध- उन्नति और यश
प- ध से अधिक उन्नति और यश-उच्च पदवी, नेतृत्व आदि
म- सिरदर्द, मस्तिष्क रोग
ढ-द- आवेशपूर्ण, अदूरदर्शी आत्मभाव-
परन्तु शीघ्रग्राही - मूर्खता
न- कामेच्छा।
उ- वर्ग द्वारा जुड़ी जीवन-रेखा
क- रोग पूर्ण स्वास्थ्य, दुर्बल,
शरीर शक्ति हीन
ठ- अनुकूल प्राभाविक -
रेखा
च- भाग्य-रेखा से न मिलने-
वाली प्राभाविक-रेखा

चित्र ११

बृहस्पति या शेष दूसरे ग्रह-स्थानों की ओर जाती हैं। इनमें से प्रत्येक रेखा के सम्बन्ध में यह नियम ध्यान में रखना चाहिये कि वह जिस ग्रह-स्थान को छुएँगी क्रम से उसी देवता के गुण उस में आ जायेंगे*।

उदाहरण के लिये वह रेखा जो कि जीवन-रेखा से आरम्भ होकर शनि देवता के ग्रह-स्थान (Mount of Saturn) पर समाप्त होगी, जैसा कि बहुत से हाथों में देखा गया है, भाग्य-रेखा ही समझी जायगी। यदि किसी हाथ में भाग्य-रेखा का बिलकुल ही अभाव हो तो यह जीवन-रेखा से शनि की ओर आने वाली रेखा, जहाँ से वह शुरू होती है, भाग्य-रेखा या भावी-रेखा होगी। इसके अतिरिक्त यदि हाथ में भाग्य-रेखा भी हो तो ऐसी दशा में यह रेखा (त्र—त्र—चित्र नं० १०) सूचित करती है कि वह मनुष्य कोई ऐसा काम करेगा जो उसके जीवन के वास्तविक ढंग के विरुद्ध होते हुए भी उसका एक मुख्य अंग बन जायगा।

जीवन-रेखा से शनि और शनि से जीवन-रेखा की ओर जाने वाली रेखाओं का अन्तर जानने के लिये यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि प्रत्येक रेखा उस स्थान पर जहाँ से वह शुरू होती है अधिक स्पष्ट और आगे जाकर कमज़ोर हो जाती है। अतः जीवन-रेखा से शनि की ओर जाने वाली रेखा

---

* देवताओं के गुण जानने के लिये देखो अध्याय सातवां—पृष्ठ संख्या ६४।

जीवन-रेखा के पास अधिक गहरी और शनि के स्थान पर हलकी होगी—यह नियम है।

यदि रेखा जीवन से सूर्य्य के स्थान (Mount of Sun) की ओर जा रही हो तो वह मनुष्य अपने जीवन में कोई विशेष उन्नति करके यश प्राप्त करेगा—ऐसी सम्भावना है।

बुध की ओर जाने वाली रेखा (स्वास्थ्य रेखा को छोड़ कर) विज्ञान या व्यापार में विशेष सफलता चाहती है—परन्तु फिर यदि वह बृहस्पति, शनि, या सूर्य्य की ओर जा रही हो तो मनुष्य की वह उन्नति या सफलता व्यक्तिगत और जातीय परिश्रम द्वारा होगी।

यदि जीवन-रेखा नीचे की ओर जाकर दो शाखों में बट गई हो और उनमें एक बाहर की ओर जाने वाली शाख़ अधिक लम्बी और स्पष्ट हो तो वह मनुष्य सुदूर देशों में भ्रमण करने वाला देशाटन-प्रेमी होगा और अपना शेष जीवन अपनी जन्म-भूमि से अलग रह कर व्यतीत करेगा। इसके विरुद्ध यदि भीतर की ओर जाने वाली रेखा—(त—त—चित्र नं० १०) बाहर जाने वाली रेखा की अपेक्षा अधिक बलवान, लम्बी, और स्पष्ट हो तो, यह मनुष्य चाहे कितना ही देशाटन करने वाला हो या किसी अन्य देश में ही क्यों न रह रहा हो, यदि अपने जन्म-स्थान पर नहीं तो अपने देश को अवश्य लौट आयगा—यह निश्चय है।

प्रायः बहुत से हाथों में रेखाओं के ऊपर द्वीप (Island)

का चिन्ह देखा जाता है। सामान्य रूप से जीवन-रेखा पर द्वीप (○ = द्वीप) का होना रोग अथवा स्वास्थ्य ख़राब होने का अशुभ चिन्ह है।

यह द्वीप जब तक रेखा पर अङ्कित रहेगा मनुष्य निर्बल बना रहेगा। इसके अतिरिक्त एक बात और भी है जो द्वीप के सम्बन्ध में कही जा सकती है। यदि किसी हाथ में द्वीप का चिन्ह जीवन-रेखा के आरम्भ में, ठीक उस स्थान पर जहाँ से वह शुरू होती है, अधिक स्पष्ट और विस्तृत रूप में पड़ा हो तो उस मनुष्य के जन्म के विषय में सन्देह उत्पन्न करता है—ऐसा अनेक विद्वानों का मत है। केवल विद्वानों का मत ही नहीं अनुभव से इसका प्रमाण भी मिल चुका है।

ठीक याद नहीं, लगभग तीन बरस की बात होगी जब कि मैंने एक पाँच बरस के बालक की जीवन-रेखा के आरम्भ में ठीक वैसा ही द्वीप का चिन्ह देखकर उसके जन्म के सम्बन्ध में सन्देह प्रगट किया था। सन्देह सत्य था जिसका प्रमाण मुझे उसी समय मिल चुका था। यह केवल एक ही नहीं और भी कई ऐसे उदाहरण मिले हैं जिनका उल्लेख यहाँ किया जा सकता है और जो आधे सत्य थे। "आधे सत्य थे"—इसलिये कहा कि लोक-निन्दा और समाज का भय यह दो एक ऐसे मुख्य कारण हैं जिनको हटा कर किसी के जन्म के सम्बन्ध में कोई सन्देह करना और उसकी पुष्टि के लिये कोई प्रमाण पा लेना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। ऐसी दशा में द्वीप के

इस चिन्ह के सम्बन्ध में कोई नियम स्थिर करना कितना सन्देह पूर्ण हो सकता है—यह पाठक स्वयं जान सकते हैं।

द्वीप के साथ शासक-रेखाओं का भी उल्लेख यहां कर दिया जाय तो अधिक उपयोगी होगा। शासक-रेखा वह सुन्दर और स्पष्ट रेखा या रेखायें हैं जो जीवन-रेखा के भीतर की ओर (मङ्गल-रेखा को छोडकर) चलती हैं*। यह रेखा लम्बाई में जितनी अधिक लम्बी होंगी सम्बन्ध भी उतने ही अधिक समय तक स्थिर रहेगा—यह अपना अनुभव है। दूसरी बात—गिनती में रेखायें जितनी हों उनके अनुसार ही एक या एक से अधिक सम्बन्ध समझने चाहियें। अधिकारी वर्ग स्त्री हो या पुरुष यदि उसके हाथ में शुक्र-स्थान (Mount of Venus) जो कि प्रेम देवता का स्थान है+ अधिक ऊँचा पड़ा हो तो यह रेखायें भी उतनी ही अधिक स्पष्ट और प्रभावोंत्पादक होंगी।

मङ्गल-रेखा—इसको मङ्गल-रेखा इसलिये कहा जाता है कि यह मङ्गल-ग्रह के स्थान से आरम्भ होती है। यह रेखा किसी हाथ में जीवन-रेखा के साथ अन्त तक जाती है और किसी में आधी दूर जाकर ही समाप्त हो जाती है या हलकी पड़ जाती है। इसको दूसरी जीवन-रेखा भी कह सकते हैं

---

*यह रेखायें परस्पर मित्रभाव और विशेषतः अपने से दूसरे वर्ग के साथ प्रेम सम्बन्ध प्रगट करती हैं।

+देखो शुक्र-स्थान—पृष्ठ संख्या ६५—६६।

क्योंकि यह जीवन-रेखा की सहायक रेखा है—(चित्र नं० १)। इस रेखा के सम्बन्ध में यहाँ इतना कहा जा सकता है कि यह स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त हितकर और मनुष्य की जीवन-शक्ति को बढ़ा देने वाली है। यदि यह रेखा किसी टूटी हुई जीवन-रेखा के पीछे जा रही हो तो रोग चाहे कितना ही असाध्य या दुर्घटना कितनी ही भयंकर क्यों न देख पड़ती हो प्राण रक्षा अवश्य होगी और मनुष्य अकाल मृत्यु के मुख में जाने से बच जायगा—यह इसी मङ्गल-रेखा का प्रभाव है जो टूटी हुई जीवन-रेखा जुड़ जाती है।

एक दोष भी है जो इस मङ्गल-रेखा में पाया जाता है। यह मनुष्य के स्वभाव को चिड़चिड़ा बना देती है, जिससे



चित्र नम्बर १

वह शीघ्र ही क्रोध से भड़क जाने वाला और प्रायः पड़ोसियों के साथ झगड़ालू होता है—यहाँ मङ्गल देवता का विशेष प्रभाव समझना चाहिये॥।

यदि इस मङ्गल-रेखा में से कोई एक शाख (देखो बिन्दु-

॥देखो मङ्गल का पहला स्थान—पृष्ठ संख्या १०१।

रेखा) जीवन-रेखा को काटती हुई बाहर की ओर जा रही हो तो ऐसी दशा में मनुष्य तत्क्षण बुद्धि और जल्दबाज़ होता है। ख़तरे के समय वह दूरदर्शी न रहने के कारण अनायास ही विपत्ति में पड़ जाता है और कभी-कभी मूर्खता-वश स्वयं अपनी मृत्यु का कारण बनता है—यहाँ विन्दु-रेखा जिस स्थान पर जीवन-रेखा को काटती है वही उसकी मृत्यु का समय होगा—(चित्र नं० १)। प्रत्येक हस्त-सामुद्रिक के जानने-वाले का कर्त्तव्य है कि वह उस मनुष्य को आगामी आपत्ति की ओर से सावधान करदे जिस से वह अनायास कोई ऐसा कार्य न कर बैठे जो उसकी मृत्यु का कारण बन जाय।

वह रेखायें जो जीवन-रेखा को खड़ी काटती हैं अवरोध, चिन्ता या बाधायें होती हैं जो दूसरों के द्वारा समय-समय पर हमारे जीवन मार्ग में आ उपस्थित होती हैं (थ—थ—चित्र नं० १०)। यदि यह रेखा या रेखायें जीवन-रेखा के ऊपर के आधे भाग को काट कर जा रही हों तो उन बाधाओं के कारण जिनकी कि यह रेखायें सूचना देती हैं अपने ही सम्बन्धी रिश्तेदार होते हैं। यदि नीचे के भाग को काट रही हों तो अन्य साधारण मनुष्य या स्त्री उन अवरोध या चिन्ताओं के कारण समझने चाहियें। सब से अच्छा नियम जो इन रेखाओं के सम्बन्ध में काम में लाना चाहिये यह है कि जीवन-रेखा को काटने वाली रेखायें अपने सहकारी वर्ग*और उसके समानान्तर

* स्त्री का सहकारी वर्ग स्त्री और पुरुष का पुरुष होता है।

आने वाली विरोधी वर्ग* के द्वारा डाली गई बाधा या चिन्तायें होती हैं।

यहाँ इतना और भी कह देना होगा कि "अवरोध-रेखायें", जैसा कि हम इनको कह सकते हैं, हाथ में जिस रेखा या चिन्ह को काटेंगी या छुएंगी, उसी का विरोध करेंगी। उदाहरण के लिये यदि कोई अवरोध-रेखा हृदय-रेखा को काटती है तो प्रेम के सम्बन्ध में बाधा डालती है।

मस्तक-रेखा को काट कर मस्तक सम्बन्धी रोग, परिश्रम या चिन्ता लगाती है। सूर्य्य-रेखा को काट कर श्रेष्ठ पदवी, प्रतिष्ठा और यश को कम करती है।

भाग्य-रेखा का अवरोध करके यह रेखा जिस स्थान पर उस रेखा को काटती है वहीं से मनुष्य के भाग्य में परिवर्तन कर देती है—व्यापार में घाटा, नोकरी छुटना इत्यादि।

विवाह-रेखा का अवरोध करके विवाह सम्बन्धी कामों में अड़चन डालती है।

स्वास्थ्य-रेखा के अवरोध में स्वास्थ्य पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार और भी रेखायें जाननी चाहियें।

शुक्र-स्थान पर जीवन-रेखा के समानान्तर चलने वाली रेखायें सूचित करती हैं कि वह व्यक्ति चाहे पुरुष हो या स्त्री प्रेम के आश्रय रहने वाले होते हैं और बिना प्रेम किये एक बड़ी

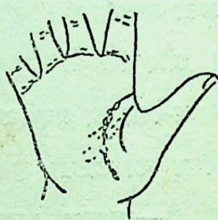
---

* स्त्री का विरोधी वर्ग पुरुष और पुरुष का स्त्री होताहै।

नहीं रहना चाहते। जीवन में बहुत से व्यक्तियों के साथ उनका प्रेम व्यवहार होता है और जब तक वह स्वयं इस बात का अनुभव नहीं कर लेते कि उन्हें सब प्रेम करते हैं, प्रायः असन्तुष्ट ही बने रहते हैं। इसके विपरीत यदि शुक्र-स्थान पर इन रेखाओं का अभाव हो तो चाहे कोई प्रेम करे या न करे उन्हें इसकी तनिक भी चिन्ता नहीं होती। अतः यहाँ यह स्पष्ट है कि यह रेखायें हाथ में जितनी कम होंगी मनुष्य उतना ही गम्भीर, दूसरों के प्रेम-जाल से बचने वाली, शान्त-



चित्र नम्बर २


चित्र नम्बर ३

चित्त, और निश्चिन्त रहेगा। प्रेम के मार्ग में आने वाली अड़चन और बाधाएँ उसे अधिक व्यथित न कर सकेंगी।

संक्षिप्त रूप से जीवन-रेखा के सम्बन्ध में निम्न-लिखित नियम ध्यान में रखने चाहियें।

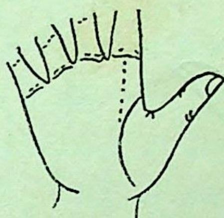
द्वीप रहित, स्पष्ट, निर्दोष और लम्बी जीवन-रेखा आरोग्य और दीर्घायु होने के लक्षण हैं— (ज—ज—चित्र नं० २)।

लहरदार, द्वीपयुक्त, निर्बल और रस्सदार रेखा रोग-पूर्ण होती है (चित्र नं० ३)।

टूटी हुई जीवन-रेखा जहाँ वह टूट रही हो मृत्यु सूचक है (चित्र नं० १) ।

यदि रेखा बाँये हाथ में टूट रही हो और सीधे में जुड़ रही हो तो रोग या मृत्यु से रक्षा हो सकती है, परन्तु यदि दोनों हाथ में टूट रही हो तो मृत्यु होगी—यह निश्चय है ।

जञ्जीर के समान, लहरदार, निर्बल और रन्सदार रेखा यदि आगे जाकर सुधर गई हो तो वहीं से स्वास्थ्य भी सुधर जायगा और यदि अन्त तक वैसी ही दोष-पूर्ण चली गई हो तो शरीर आयु पर्य्यन्त रोगी और निर्बल बना रहेगा (चित्र नंम्बर ३) ।



चित्र नम्बर ४

शुक्र-स्थान से आकर जीवन-रेखा को काटने वाली अवरोध-रेखायें प्रेम के सम्बन्ध में निराशा से उत्पन्न हुए हृदय-रोग, सिर-दर्द और गृह सम्बन्धी चिन्ताओं की छाया रूप होती हैं । (प—प—चित्र नं० १२) ।

यदि जीवन-रेखा शुक्र-स्थान को अधिक घेर कर छोटा बना रही हो तो शरीर अधिक पुष्ट और जीवन-शक्ति उतनी

प्रबल नहीं होगी । ऐसे मनुष्य प्रेम-व्यवहार में उदासीन होते हैं और यदि विवाहित हुए तो प्रायः शक्ति हीन और निःसन्तान होते देखे गये हैं (चित्र नं० ४)।

इसके विपरीत यदि रेखा अँगूठे के गुम्मट का विस्तार बढ़ाती हुई जा रही हो तो इसका गुण पहले की अपेक्षा उलटा समझना चाहिये।

जीवन-रेखा से ऊपर बृहस्पति की ओर जाने वाली रेखा मनुष्य-जीवन की अनेक अभिलाषायें पूर्ण होने का चिन्ह है—(देखो बिन्दुदार रेखा चित्र नं० ४)।



चित्र नम्बर ५



चित्र नम्बर ६

जीवन-रेखा से बाहर की ओर जाने वाली रेखायें समुद्र की यात्रा और परदेश भ्रमण करने का लक्षण हैं (चित्र नं० ५) ऐसी दशा में यदि जीवन-रेखा बाहर की ओर जाने वाली रेखाओं की अपेक्षा अधिक गहरी और लम्बी होगी तो वह व्यक्ति कुशल पूर्वक अपने देश को लौट आयगा—यह निश्चय है।

यदि जीवन-रेखा और मस्तक-रेखा दोनों आपस में मिली हुई हथेली के मध्य-भाग तक जा रही हों तो यह मनुष्य की

स्नायविक शक्ति निर्बल और स्वास्थ्य-हीन होने का लक्षण है। ऐसे मनुष्यों में साहस कम होता है। यहाँ तक कि अपने जीवन-मार्ग में आने वाली कठिनाइयों का सामना करने के भी अयोग्य होते हैं—(चित्र नं० ६)।

जीवन-रेखा का आरम्भ और अन्त में सर्प-जिव्हाकार होना अशुभ है—(स—स—चित्र नं० १२)।

रेखा के आरम्भ में यह चिन्ह यदि टूटी फूटी दशा में हो तो स्वभाव में ओछापन, अभिमान, दिखावट और स्वयं प्रशंसा का भाव उत्पन्न करता है और यदि नीचे के सिरे पर हो तो जीवन के अन्त समय में धन का अभाव होना निश्चित है। परन्तु इसमें उस बेचारे ग़रीब मनुष्य का कुछ भी दोष नहीं होता—सम्भव है व्यापार में घाटा हो जाय, नौकरी छुट जाय, बड़े गृहस्थ का पालन करना हो या स्वास्थ्य बिगड़ जाने से वह धन उपार्जन करने के अयोग्य रहे। उक्त सभी आकस्मिक घटनाओं के चिन्ह जीवन-रेखा, हृदय-रेखा, और मस्तक-रेखा पर देख पड़ते हैं। टूटी हुई निर्बल मस्तक-रेखा व्यापार के सम्बन्ध में अशुभ-फल के देने वाली होती है खैर कुछ भी हो, जीवन-रेखा का सर्प-जिव्हाकार होना प्रत्येक अवस्था में आगामी आपत्ति की सूचना है। ऐसा जीवन बड़े परिश्रम से व्यतीत होता देखा गया है।

यदि जीवन-रेखा और मस्तक-रेखा के बीच का फ़ासला जहाँ से वह दोनों शुरू होती हैं, अधिक चौड़ा हो तो यह

मनुष्य के आत्म-विश्वासी और आशावादी होने का लक्षण है।

जीवन-रेखा का मस्तक-रेखा के अधिक समीप होने से मनुष्य दूरदर्शी, सोच विचार कर अपना काम करने वाला, बुद्धिमान और प्रामाणिक होता है।

यदि यह तीनों रेखायें, जीवन-रेखा, मस्तक-रेखा और हृदय-रेखा एक दूसरो से मिल रही हों तो यह मनुष्य के दुर्भाग्य का लक्षण है। वह शीघ्र ही आवेश में आजाने वाला, अविवेकी और ख़तरे की ओर से असावधान रहने वाला होता है और कभी-कभी स्वयं मूर्खतावश अपनी मृत्यु का कारण बन जाता है। अपरिणामदर्शी होने के कारण वह आशावादी भी नही हो सकता। ऐसे मनुष्य की मृत्यु अस्वाभाविक रूप से होती देखी गई है—आवेश में आकर आत्म-हत्या करना, जल में डूब कर प्राणों का विसर्जन करना, आग में जल कर मर जाना, इत्यादि।

यहाँ इतना कह देना आवश्यक है कि मृत्यु या रोग के सम्बन्ध में किसी निश्चय पर पहुँचने से पहले बायें हाथ में पड़ी हुई रेखायें और दूसरे चिन्हों पर एक निगाह अवश्य डाल लेनी चाहिए—बांया हाथ वंश-परम्परा से चली आने वाली पैतृक (He-red-i-ta-ry) और सीधा मनुष्य की सामयिक जीवन घटनाओं के अनुसार उपार्जित की हुई (Ac-quired) प्रवृति का परिचय देता है। हमारे बांये हाथ में किसी रेखा या चिन्ह का वास्तविक झुकाव

चित्र १२

और सीधे में उसका पूरा होना देखा जाता है। अतः दोनों हाथ के लक्षणों का परस्पर विनमय और परिवर्तन करके हम जीवन में घटने वाली घटनाओं का ज्ञान यथार्थ रूप में प्राप्त कर सकते हैं।

मस्तक-रेखा का नीचे की ओर अधिक झुका रहना उन्मत्तता और पागलपन का लक्षण है।

जीवन-रेखा के अन्त में बहुत सी छोटी-छोटी रेखायें स्वास्थ्य में ख़राबी डालती हैं।

सभी रेखायें जो जीवन-रेखा से उठ कर ऊपर पहली अँगुली तर्जनी की ओर जाती हैं लाभ और सफलता के देने वाली होती हैं।

कोई सीधी रेखा जो दूसरी अँगुली मध्यमा की ओर जा रही हो, उस स्थान पर जहाँ कि वह जीवन-रेखा को छोड़ती है मनुष्य के भाग्य में किसी विशेष परिवर्तन का होना बताती है। यह परिवर्तन सहसा कोई साहसी काम करने या और किसी उद्यम से होता है।

यदि रेखा सूर्य्य की अँगुलीकी ओर जा रही हो तो उस स्थान पर जहाँ वह जीवन-रेखा से अलग होती है सफलता और यश की प्राप्ति होगी (र—र—चित्र नं० ७)। यहाँ यह बात याद रखनी चाहिये कि यदि बुध के स्थान से आने वाली कोई विरोधी-रेखा सूर्य की ओर आने वाली इस रेखा को काट रही हो तो यह उन्नति में रुकावट डालती हैं।

यदि जीवन-रेखा नीचे सर्प-जिव्हाकार हो गई हो और उसकी एक शाख़ भाग्य-रेखा में मिल गई हो, जैसा कि नीचे चित्र में दिखाया गया है, तो इसका फल अच्छा नहीं होता (चित्र नं० ७)। ऐसा जीवन आलस्य पूर्ण, निस्तेज तथा उत्साह रहित होता है। यदि भाग्य-रेखा कोण बनाती हुई फिर जीवन-रेखा से जा मिली हो तो जिस स्थान पर यह दोनों रेखायें मिलेंगी वहीं से मनुष्य के जीवन में सुधार होने



चित्र नम्बर ७

लगेगा और वह मनुष्य स्वयं परिश्रम शील और उत्साही बन जायगा।

यदि ऊपर कही गई जीवन-रेखा और भाग्य-रेखा केवल सीधे हाथ में ही जुड़ रही हों और बांये हाथ में अलग-अलग अपनी स्वाभाविक चाल में हों तो समझना चाहिये कि मनुष्य की इच्छाशक्ति और उसकी एकाग्रता ही उसके भावी सुधार का कारण हुई है और वह आलस्य को दूर कर स्वयं उत्साही और परिश्रमी बन गया है—यही उसकी उन्नति का

कारण है। परन्तु यह उन्नति देर से होगी, क्योंकि सूर्य्य-रेखा (र—र—चित्र नं० ७)जीवन-रेखा से दूर जाकर अलग होती है।

जीवन-रेखा को ऊपर की ओर काटने वाली अवरोध-रेखायें वह रुकावट और बाधायें होती हैं जो अपने सम्बन्धी रिश्तेदारों के द्वारा डाली जाती हैं।

शुक्र-स्थान से आकर जीवन-रेखा को काटने वाली रेखायें अपने ही वर्ग के अन्य साधारण मनुष्यों की डाली हुई अड़चन और बाधायें होती हैं।

यदि हाथ में रेखा या और किसी दूसरे स्थान पर वर्ग (Square) का चिन्ह हो तो श्रेष्ठ होता है। यह वर्ग हाथ में जहाँ पड़ता है वहीं अपना शुभ फल दिखाता है और मनुष्य की आपत्ति के समय रक्षा करता है।

उत्पन्न होने वाली घटनाओं का समय जानने के लिये आगे दिये हुए "सप्त-वर्षीय नियम" का प्रयोग करना चाहिये। यह पहले कहा जा चुका है कि रेखाओं को देखकर किसी भी उत्पन्न होने वाली शुभ या अशुभ घटना का ठीक-ठीक समय बताना कोई साधारण बात नहीं है। सबसे साधारण नियम यह है कि जीवन-रेखा को सात-सात वर्ष के भागों में विभक्त कर लिया जाय, और उसी के अनुसार किसी घटना का समय निकाला जाय।

जीवन-रेखा के सम्बन्ध में हम एक बात कह कर इस विषय को समाप्त करते हैं। प्रायः देखा गया है कि नाखूनों की

तरह इस रेखा पर भी धुँधले और सफ़ेद दाग पड़ जाया करते हैं। यहाँ यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि यह दाग रेखाओं पर उत्पन्न होते हैं और कुछ समय के बाद स्वयं मिट जाते हैं। धुँधले दाग स्नायविक दुर्बलता और सफ़ेद, आँख और मस्तक-सम्बन्धी रोग की सूचना देते हैं। जीवन-रेखा का अनायास ही आगे बढ़ने से रुक जाना अकस्मात मृत्यु होने का लक्षण है—सम्भव है ऐसी मृत्यु सिर में गहरी चोट लगने या हृदय की गति रुक जाने से हो। मृत्यु का कारण जानने के लिये उसके चिन्ह हृदय और मस्तक-रेखा पर देखने चाहियें।

पाँचवाँ अध्याय

मस्तक-रेखा

मस्तक-रेखा जिसको बुद्धि-सम्बन्धी रेखा भी कह सकते हैं हाथ के मध्य-भाग में होकर जाती है। वास्तव में यह रेखा जहाँ तक मनुष्य की विचार-शक्ति और उसके ज्ञान से सम्बन्ध रखती है बड़े महत्व की रेखा है। इसके द्वारा हम मनुष्य की मानसिक शक्तियों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। केवल इतना ही नहीं उन रोगों के सम्बन्ध में भी, जिनका प्रभाव हमारे मस्तक पर होता है, हम इसी रेखा को प्रमाण के रूप में लेते हैं।

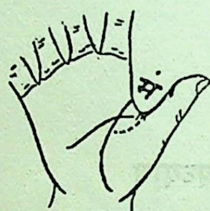
मस्तक-रेखा हाथ में निम्न लिखित तीन स्थानों से आरम्भ होती है:—

१—जीवन-रेखा के भीतर मङ्गल ग्रह के स्थान से शुरू होती है।

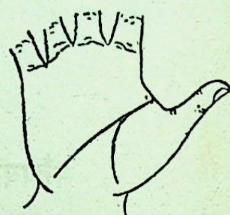
२—जीवन-रेखा को स्पर्श करती हुई जाती है।

३—जीवन-रेखा से अलग ऊपर बृहस्पति से चलती है।

उपरोक्त तीनों रेखाओं में से प्रत्येक रेखा के गुण भी भिन्न प्रकार के होते हैं जो नीचे लिखे अनुसार हैं:—



चित्र नम्बर १



चित्र नम्बर २

यदि मस्तक-रेखा जीवन-रेखा के भीतर मङ्गल के स्थान से शुरू होती हो तो अशुभ है। ऐसे मनुष्य का स्वभाव चिड़चिड़ा होता है। क्रोधी और उग्र-स्वभाव होने के कारण उसे आवेश में आते तनिक भी देर नहीं लगती। मानसिक शक्ति दुर्बल होने से वह सदा दूसरों से लड़ता झगड़ता रहता है और अनायास ही अपने मित्रों का भी शत्रु बन बैठता है। ऐसा मनुष्य स्वभाव का कोमल न होने के कारण अच्छा व्यवहारी नहीं बन सकता (चित्र नं० १)।

जीवन-रेखा को स्पर्श करके जाने वाली रेखा अच्छी होती है—यदि वह सुन्दर, लम्बी और स्पष्ठ हो (चित्र नं० २)। ऐसे मनुष्य जहाँ तक अपने लाभ से सम्बन्ध होता है सतर्क और सावधान रहते हैं । वह शीघ्र ग्राही होते हैं परन्तु अपनी शक्ति पर उन्हें अधिक विश्वास नहीं होता। यदि हाथ में दोनों रेखा, मस्तक-रेखा और जीवन-रेखा, पूर्णरूप से मिली हुई नीचे हथेली में अधिक दूर तक चली गई हों तो ऐसा मनुष्य अत्यन्त शीघ्र ग्राही होने के कारण अपने जीवन में कोई विशेष उन्नति नहीं कर पाता। वह कभी कुछ सोचता है, कभी कुछ सोचता है—किसी निश्चय पर नहीं पहुँचता।

केवल इतना ही नहीं—मस्तक-रेखा और जीवन-रेखा के आपस में मिल जाने से मनुष्य या स्त्री के स्वभाव में कुछ लज्जा का भाव भी अधिक पाया जाता है। युवा अवस्था में उनका यह लज्जाभाव अथवा सङ्कोचता और भी बढ़ जाती है। भले ही वह अपने भावों को छिपाने की चेष्टा में लगे रहते हों, परन्तु उनके कामों से उनका यह लज्जायुक्त भाव अवश्य प्रगट हो जाता है। हाँ एक बात अवश्य है—यह मनुष्य जब कभी दूसरों के सम्बन्ध में आते हैं तो अपना चलन गुप्त रखते हैं। यही कारण है कि जब तक उनके साथ विशेष परिचय न हो उनके व्यवहार को देखकर कोई यह नहीं जान सकता कि बाहर से निःसङ्कोच रहकर भी उनके हृदय में लज्जा का भाव छिप रहा है।

यदि रेखा बृहस्पति के स्थान से चल कर जीवन-रेखा को छूती हुई जा रही हो और लम्बी हो तो यह ऊपर की दोनों रेखाओं से अधिक बलवान समझी जाती है (अ—अ—चित्र नं० १०—पृष्ठ १३१)। ऐसी दशा में मनुष्य की मस्तिष्क शक्ति अधिक प्रबल होने के कारण वह बुद्धिमान और दूरदर्शी होता है और अपना प्रत्येक कार्य खूब अच्छी तरह सोच-विचार कर करता है। उसमें शासन करने की योग्यता होती है इस लिए एक योग्य अधिकारी हो सकता है। वह अधिकार पाने की इच्छा करता है परन्तु अपने अधिकारों का दुरुपयोग कभी नहीं करता—अतः वह न्याय प्रिय होगा।

यदि मस्तक-रेखा जीवन-रेखा से बिल्कुल ही अलग जा रही हो तो मनुष्य पहले की अपेक्षा बेपरवाह अधिक होता है। उसकी यह बे-परवाही अपने लिये ही होती है और यदि मस्तक-रेखा अधिक स्पष्ट और मङ्गल का स्थान (Mount of Mars) उभरा हुआ हो तो वह उत्साही होता है, परन्तु साथ में अपरिणामदर्शी भी होता है और प्रायः अपनी शक्ति से बाहर साहस कर बैठता है। यदि मस्तक-रेखा छोटी, अस्पष्ट अर्थात् निर्बल होकर जीवन-रेखा से अलग जा रही हो, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, तो बे-परवाह होने के साथ ही साथ ईर्षा-भाव, स्पर्द्धा, और कुछ-कुछ चालाकी मनुष्य के स्वभाव में पाई जायगी। सबसे बड़ा दोष

जो इस श्रेणी के मनुष्यों में पाया जाता है यह है कि यह इरादे के कच्चे, जल्दबाज़ और क्रोधी होते हैं। किसी के दबाव में रहना वह कभी पसन्द नहीं करते और शीघ्र ही आवेश में आ जाते हैं (क—क—चित्र नं० १२—पृष्ठ १८३)

यदि इन दोनों रेखाओं के बीच का अन्तर और भी अधिक चौड़ा हो तो यह मनुष्य उतना ही अधिक जल्दबाज़, अपरिणामदर्शी, मूर्ख और असावधान होगा। स्त्रियों के हाथ में रेखाओं का यह अन्तर और भी अधिक हानिकारक सिद्ध हुआ है। यह बिना सोचे विचारे हर काम करने के लिये तैयार हो जाती हैं और अन्त में नुक़सान उठाती हैं।

सामान्यरूप से स्पष्ट, एकसार और सीधी रेखा अच्छी समझी जाती है। ऐसी दशा में प्राकृतिक वस्तुओं से अधिक प्रेम होता है। यदि यह रेखा आधी दूर तक सीधी जाकर कुछ थोड़ी नीचे की ओर झुकी हो तो ऐसा मनुष्य विचारशील और दूरदर्शी होगा।

यदि समस्त रेखा आरम्भ से अन्त तक झुक रही हो तो गान-विद्या, साहित्य, कविता आदि दूसरी विद्याओं से प्रेम होता है—यहाँ रेखा अधिक नहीं साधारण रूप में झुकी होनी चाहिए।

प्रायः बहुत से हाथों में मस्तक-रेखा असामान्य रूप से झुकी होकर नीचे चन्द्र-स्थान तक चली जाती है (घ—घ—चित्र नं० १०—पृष्ठ १३१)। रेखा की यह चाल स्मरण रखने

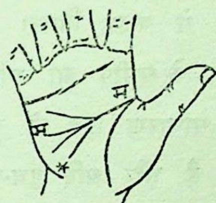
योग्य है। ऐसा मनुष्य सदा अपने कल्पित मनोरथों के सु-साम्राज्य में विचरने वाला काल्पनिक होता है। वह तरह-तरह के मन्सूबे बाँधता है, परन्तु क्रिया-शील न होने के कारण अपने किसी काम में सफलता पा लेना उसकी शक्ति से बाहर होता है। यदि यह रेखा दार्शनिक विषम, या सूच्याकार हाथ में मणिबन्ध या चन्द्र-स्थान तक जा रही हो तो इसका प्रभाव और भी अधिक बुरा होता है। ऐसी दशा में मनुष्य असाधारण रूप से काल्पनिक होते देखे गये हैं। कभी-कभी वह ऐसी बात सोचते हैं जिसका पूरा करना स्वयं उनकी शक्ति से बाहर होता है और जब उसमें सफलता नहीं प्राप्त कर पाते तो निराश होकर आत्म-हत्या तक करने को तैयार हो जाते हैं।

संकुचित विषम अर्थात् अनुपयोगी हाथ में यह रेखा मनुष्य को उदास बनाये रखती है, मन में बुरे-बुरे विचार उठते हैं और यदि इसके साथ कुछ और भी अशुभ चिन्ह हाथ में पड़े हों तो यह आत्म-हत्या करने के अचूक लक्षण हैं। इसके विपरीत यदि यह रेखा किसी समकोण हाथ में पड़ी हो तो इसका फल दार्शनिक, सूच्याकार या विषम हाथ की तरह उतना भयंकर नहीं होता—क्योंकि समकोण हाथ वाला मनुष्य बुद्धिमान और शान्त स्वभाव होता है×। अतः इस

× देखो समकोण (Square) हाथ—पृष्ठ सं० २६।

रेखा का फल कहते समय हाथ की बनावट पर अवश्य दृष्टि डाल लेनी चाहिये।

ऊपर कहा जा चुका है कि बहुत से हाथों में मस्तक-रेखा नीचे चन्द्र-स्थान पर जाकर सर्प-जिव्हाकार हो जाती है। सामान्य रूप में मस्तक-रेखा का सर्प-जिव्हाकार होना लाभदायक है। अनुभव से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि मस्तक-रेखा पर सफ़ेद दाग अथवा तिल का होना विद्या सम्बन्धी उन्नति का चिन्ह है और यदि साथ ही बुध की अँगुली कनिष्ठका ऊपर सिरे



चित्र नम्बर ३

पर कुछ मोटी होगई हो तो मनुष्य की लेखन शक्ति को बढ़ाती है। वह लेखक प्रतिभाशाली होगा यदि मस्तक-रेखा सर्प-जिव्हाकार हो और चन्द्र-स्थान से छोटी-छोटी रेखायें, जिनको यहाँ चन्द्रमा की किरण कहना चाहिये, मस्तक-रेखा पर अपना प्रभाव डाल रही हों। यदि वह कोई कवि हुआ तो प्राकृतिक सुन्दरता, का पुजारी होगा और कविता सरस और श्रृङ्गार रस से परिपूर्ण होगी—क्योंकि चन्द्रमा प्राकृतिक सुन्दरता, साहित्य और काव्य कला का प्रेमी है*। दूसरी बात—रेखा

* देखो चन्द्रमा का स्थान—पृष्ठ संख्या १०१।

के सर्प-जिव्हाकार होने से मनुष्य में व्याख्या करने की शक्ति भी बढ़ जाती है और लेखक या कवि होने के साथ ही साथ वह एक व्याख्यान देने वाला भी हो सकता है।

अतः मस्तक-रेखा के अन्त में द्विजिव्ह (Fork) का चिन्ह यदि वह बराबर का हो (देखो बीच की दो शाख़ चित्र नं० ३) तो शुभ होता है। परन्तु यदि उसकी एक शाख़ ऊपर उठकर बुध के ग्रह-स्थान और दूसरी नीचे चन्द्रमा की ओर चली गई हो तो उसकी विचार धारा सीमा से बाहर निकल जाती है। और यदि हृदय रेखा मस्तक-रेखा के समीप आ रही हो तो धोखा देना उस मनुष्य का एक साधारण गुण हो जाता है। वह दम्भी और पाखण्डी होता है और यदि बुध-स्थान पर छोटी-छोटी रेखायें एक दूसरे को काट रही हों तो कपट और बे-ईमानी उसके साथ जाती है।

असामान्य रूप से झुकी हुई रेखा नीचे जाकर यदि चन्द्र-स्थान के नीचे, जैसा कि चित्र में दिखाया गया है किसी क्रूश (Star) को छू रही हो तो इसका मस्तक पर बुरा प्रभाव पड़ता है। यह दशा और भी चिन्ता जनक हो जाती है यदि हृदय-रेखा लहरदार या जन्जीर की तरह आई हो। ऐसे मनुष्य की ओर से अधिक सावधान रहना चाहिये— सम्भव है वायु का प्रकोप अधिक बढ़ जानेसे उसके शरीर में एक वशेष प्रकार का कम्पन (Pa-ral-ysis) पैदा होकर शरीर में

शिथिलता, अर्द्धाङ्ग, शुन बहरी, पक्षाघात और यदि मस्तक-रेखा स्वयं टूटी हो तो मस्तक पर बुरा प्रभाव पड़े और मनुष्य को स्मरण शक्ति जाती रहे।

यहाँ यह बात याद रखनी चाहियें कि शरीर में कम्पन, जिसको कम्प-वायु रोग भी कहते हैं, उत्पन्न होने से शरीर का कोई एक भाग शिथिल हो जाया करता है। एक दिन की बात है कि एक स्त्री जो कि मेरे पड़ोस ही में रहा करती थी मेरे पास आई और सामने एक आसन पर बैठ गई। मैंने देखा वह घबराई हुई थी। वह एक अच्छे व्यापारी की स्त्री थी। इतनी क्यों घबरा रही थी यह मैं उस समय तक नहीं समझ सका जब तक कि वह स्वयं चुपचाप बैठी रही।

"क्यों, आज कैसी घबराहट में पड़ी हो"?—उसके मन का भाव जानने के लिये मैंने पूछा।

"आज कल मैं बहुत परेशान हूँ"। उसने कहा।

"क्यों?"

"यह देखो, यह तुम्हारा सतीश है। कल डाक्टर कहता था कि इसको शीघ्र ही अर्द्धाङ्ग (Pa-ral-ysis) होने वाला है। क्या तुम इसका हाथ देख कर बताओगे कि डाक्टर कहाँ तक ठीक कहता है"?—यह कहते न कहते उसने पास ही बैठे हुए उस युवक का हाथ मेरे आगे कर दिया।

"नहीं ऐसी कोई बात नही है"—थोड़ी देर उसकी रेखायें देख कर मैंने कहा । "यह हो सकता है कि कुछ दिन के बाद इसके दिमाग़ पर कोई बुरा प्रभाव पड़े । परन्तु पक्षाघात या अर्द्धाङ्ग का इसकी रेखओं में कोई लक्षण नहीं दीख पड़ता" ।

"तुम जो कुछ कहते हो वह ठीक है । डाक्टर ने भी कहा था कि अगर यह बराबर काम करता रहेगा तो इसे ऐसा रोग हो जायगा । परन्तु यह दिन रात, मैं देखती हूँ, गहरी चिन्ताओं में डूबा रहता है"।

"चिन्ता करना बहुत बुरा है । दिमाग़ पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है।.........सतीश ! तुम दिमाग़ पर अधिक ज़ोर न दिया करो । तुम कमज़ोर हो, अगर ऐसा करोगे तो मुझे डर है कि कहीं तुम्हारी स्मरण-शक्ति कम न हो जाय" ।—इतना कहकर मैंने उसे भविष्य में अधिक सावधान रहने को कहा ।

सतीश एक अच्छे व्यापारी का अकेला लड़का था । अभी पाँच महीने पहिले उसका बाप मर चुका था और उस दिन से घर बाहर का सारा काम उसी एक बेचारे को देखना पड़ रहा था यही उसकी दिन रात की चिन्ता थी । ख़ैर, मेरे सावधान करने के ठीक एक साल बाद उसने अपना सारा काम बन्द कर दिया । समय बहुत बीत चुका था इसलिये मस्तक सम्बन्धी रोग उसे सताने लग गये । इसी समय से उसके स्वभाव में कुछ विलक्षणता

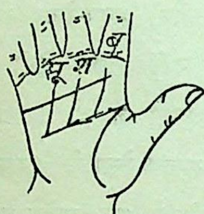
पाई जाने लगी। मेरे देखते देखते वह बच्चों जैसा आचरण करने लगा। मैं देखता वह घण्टों मन्दिर में जाकर जल ला-लाकर मूर्तियों को स्नान कराता—बड़ा वहमी था। उसकी स्मरण-शक्ति क्षीण हो गयी और यद्यपि शरीर उसका वैसा ही निरोग रहा फिर भी उसकी मस्तिष्क-शक्ति जाती रही, पक्षाघात अन्त-तक उसे नहीं हुआ। वह पागल नहीं था, परन्तु सदा शांत और चुपचाप बैठा रहता था।

यह तो कहा नीचे की ओर जाने वाली मस्तक-रेखा के सम्बन्ध में। अब दूसरी ओर चलिये। यदि मस्तक-रेखा ऊपर की तरफ़ जा रही हो, और हृदय-रेखा को दबाती हो, तो इसका फल अच्छा नहीं होता—ऐसी दशा में जब कि हाथ में भाग्य-रेखा अच्छी न हो।

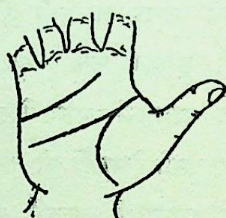
शेष सभी रेखाओं की तरह मस्तक-रेखा के सम्बन्ध में भी यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि यह प्रत्येक अवस्था में नियमानुकूल, लम्बी, झुकी हुई, ऊँची या नीची होनी चाहिये। नियम विरुद्ध रेखा अधिक लम्बी होकर नीचे की ओर चली जायगी या ऊपर जाकर मस्तक-रेखा को दबायेगी। दशा दोनों की चिन्ताजनक होगी—"अति सर्वत्र वर्जयेत।" नीचे की ओर जाने वाली रेखा मनुष्य को विचारशील परन्तु वहमी बनाती है और यदि ऊपर बुध की अंगुली कनिष्टका की ओर जा रही हो (अ—अ—चित्र नं० १०-पृष्ठ १३१) तो इसका प्रभाव पहले की अपेक्षा उलटा होगा—ढीठ, उग्रस्वभाव, लोभी, इत्यादि।

यदि मस्तक-रेखा में से कुछ शाखायें ऊपर की ओर या बृहस्पति की ओर जा रही हों तो ऐसा मनुष्य ऐश्वर्य-भोग और यश प्राप्त करने की इच्छा करने वाला होगा और यदि हाथ में मस्तक-रेखा शुभ फल के देने वाली हो तो वह उन्नतिशील होकर इच्छानुसार ऐश्वर्य्य लाभ कर सकेगा—ऐसा समझना चाहिये (ग—ग—चित्र नं० १३-पृष्ठ १८३)।

मस्तक-रेखा में छोटे-छोटे द्वीप का होना निर्बल स्मरण-शक्ति और भारी सिर दर्द होने की सूचना है (अ—अ—चित्र नं० ११-पृष्ठ १३७)



चित्र नम्बर ४



चित्र नम्बर ५

यदि मस्तक-रेखा टूटी हुई हो तो विचार अस्थिर होंगे और यदि इसमें से कोई एक शाखा ऊपर बृहस्पति की ओर जा रही हो तो ऐसा व्यक्ति दूसरों के कहने में आकर अपने विचार बदल देने वाला होना चाहिये। यदि रेखायें शनि की ओर जा रही हों तो धन प्राप्त होने की सम्भावना रहती है—सम्भव है वह धन दानपत्र या संकल्प द्वारा प्राप्त हो। बुध की ओर जाने वाली शाखायें व्यापार में उन्नति करती हैं,

और सूर्य्य की ओर जाने वाली दस्तकारी के लिये लाभदायक है—(चित्र नं० ४)।

मस्तक-रेखा के सम्बन्ध में कुछ विशेष अनुभव संक्षिप्त रूप से नीचे दिये जाते हैं।

यदि यह रेखा एक सीधी रेखा की तरह हथेली के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जा रही हो तो ऐसा व्यक्ति असाधारण बुद्धि वाला और क्रिया-शील होगा, परन्तु उसके हर एक काम में असाधारणता पाई जायगी—यही दोष है (चित्र नं० ५)।

यदि चौथी अँगुली कनिष्ठका की ओर झुक रही हो तो ऐसा मनुष्य स्वेच्छाचारी, हठी और उग्र-स्वभाव होने के कारण



चित्र नम्बर ६



चित्र नम्बर ७

शीघ्र ही आवेश में आ जाता है। वह लोभी भी होता है और अपने लाभ के लिये किसी की हत्या तक कर डालने को तैयार रहता है (चित्र नं० ६)।

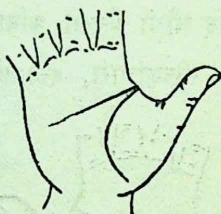
मणि बन्ध या हथेली के दूसरी ओर चन्द्र-स्थान को जाने वाली मस्तक-रेखा, काल्पनिक अद्भुत प्रिय, और दस्तकार होती है। इसके प्रभाव से मनुष्य मनःसृष्टि में रहने वाला होता है।

वह दस्तकार भी हो सकता है। और यदि उसका हाथ चमसाकार (Spatulate) हुआ तो सम्भव है वह कोई अविष्कार करने वाला हो (चित्र नं० ७)।

असामान्य रूप में यदि मस्तक-रेखा चन्द्र-स्थान के नीचे तक चली गई हो तो मनुष्य असाधारण काल्पनिक और शीघ्र ग्राही होगा। वह उदास रहेगा, मन में बुरे-बुरे बिचार उठते रहेंगे, और आत्म-हत्या करने की और उसकी प्रवृति अधिक पाई जायगी। (चित्र नं० ८)।



चित्र नम्बर ८

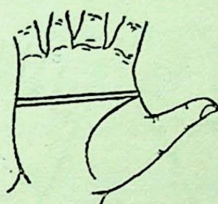


चित्र नम्बर ९

मस्तक-रेखा साधारण रूप में सीधी होनी चाहिये। (देखो चित्र नं० ९)। इससे विचार नियमित रहते हैं और व्यापार में उन्नति होती है। ऐसा मनुष्य क्रिया शील और दूरदर्शी होने के कारण प्रायः अपने सभी कामों में सफल होता देखा गया है—विशेषतः जब कि भाग्य रेखा बलवान हो।

यदि किसी हाथ में मस्तक-रेखा और हृदय-रेखा दोनों पास ही पास एक दूसरी के समानान्तर हथेली के एक सिरे से, जहाँ से वह शुरू होती है, दूसरे सिरे तक जा रही हों

तो ऐसे मनुष्य प्रेम के सम्बन्ध बड़े ही दृढ़-प्रतिज्ञ और स्थिर होते हैं। जब वह किसी स्त्री या पुरुष से प्रेम करते हैं तो उसे अन्त तक वैसा ही निभाते हैं। केवल प्रेम के सम्बन्ध में ही नहीं शत्रुता निभाने में भी वह उतने ही हठी और दृढ़ देखे गये हैं और जब किसी से उनकी शत्रुता हो जाती है तो चाणक्य के समान दिन रात अपने शत्रु से बदला लेने ही की चिंता में लगे रहते हैं (चित्र नं० १०)। यहाँ यह बात याद रखनी चाहिये। कि हाथ स्त्री या पुरुष किसी का भी हो रेखाओं का प्रभाव दोनों पर सदा एक सा ही पड़ता है।



चित्र नम्बर १०

उपरोक्त मस्तक और हृदय-रेखा का पास ही पास एक दूसरी के समानान्तर जाना एक असाधारण चिन्ह है और हज़ारों में से किसी एक के हाथ में पाया जाता है। यही कारण है कि जिस स्त्री या पुरुष के हाथ में यह रेखायें होती हैं वह सीमा से बाहर गम्भीर और चुप चाप रहने के कारण बहुत कम दूसरों के सम्बन्ध में आते हैं और उनके मित्रों की संख्या अधिक नहीं होती या केवल एक दो को छोड़ कर उनका कोई मित्र होता ही नहीं। यदि हाथ में भाग्य-

रेखा या सूर्य्य-रेखा अपना अच्छा प्रभाव दिखा रही हों तो सम्भव है कि उक्त असाधारण स्त्री या पुरुष के स्वभाव में कुछ सुधार हो जाय।

मस्तक-रेखा और हृदय-रेखा के ऊपर कहे गये गुण उनके उन लक्षणों में न मिला देने चाहियें जिनमें मस्तक-रेखा ऊपर की ओर झुक कर हृदय-रेखा को दबाती है या उसको पार कर जाती है। ऐसी दशा में मस्तक-रेखा ऊपर हृदय-रेखा का विरोध करके मनुष्य को कठोर हृदय और निर्दयी बना देती है—इसको "घातक-चिन्ह" कहते हैं (चित्र नं० ११)। यह



चित्र नम्बर ११ चित्र नम्बर १२

"घातक-चिन्ह" छोटे-छोटे मोटे और गठीले हाथों में अधिक देखा गया है जिसमें मस्तक-रेखा ऊपर हृदय-रेखा को (अर्थात् मानुषिक प्रेम को) दबा कर किसी भी स्त्री या पुरुष को नरपशु बना देती है। ऐसे व्यक्ति यदि किसी से मिल कर या उसको धोके में डाल कर हत्या भी कर डालें तो यह कोई आश्चर्य्य की बात नहीं है। अन्त में इतना कह देना है कि यह "घातक चिन्ह" किसी भी हाथ में

अच्छा नहीं है; क्योंकि यह अवसर पाते ही अनायास उस स्त्री या पुरुष को किसी की हत्या करने को उद्यत कर सकता है।

यदि रेखा जीवन-रेखा के साथ पूर्ण रूप से जुड़ रही हो तो ऐसा व्यक्ति शीघ्र ग्राही और वहमी होता है। उसे अपनी शक्ति पर तनिक भी विश्वास नहीं होता और जहाँ अपने लाभ का प्रश्न उपस्थित हो सदा सावधान और सतर्क रहता है (चित्र नं० २)।

यदि मस्तक-रेखा जीवन-रेखा के साथ आरम्भ होकर शीघ्र ही उससे अलग हो गई हो (चित्र नम्बर १२) तो यह उस रेखा की अपेक्षा जो दूर तक जीवन-रेखा के साथ मिली चली गई हो, शुभ है। इसमें विचार-धारा नियमित रहती है (चित्र नं० १२)।

मस्तक-रेखा यदि जीवन-रेखा से अलग जा रही हो तो ऐसा व्यक्ति आत्म-विश्वासी होने के साथ ही साथ अनिश्चित विचारों वाला होता है और दूसरों के कहने में आकर अपने निश्चित विचारों को बदल डालता है। वह जल्दबाज़ और बे-परवाह भी होता है और यदि इन दोनों रेखाओं के बीच का अन्तर और भी अधिक चौड़ा हो तो वह उतना ही अधिक जल्दबाज, विचारों का कच्चा, अपरिणामदर्शी और उग्रस्वभाव होगा (चित्र नं० १३)।

यदि मस्तक-रेखा, जीवन-रेखा और हृदय-रेखा तीनों आरम्भ काल में आपस में मिल रही हों तो यह अस्वा-

भाविक रूप से मृत्यु होने की सूचना देती है। ऐसे मनुष्य की मानसिक शक्ति निर्बल होती है और यदि उसे आगामी आपत्ति की सूचना भी मिल जाती है तो भी अपने को ख़तरे से नहीं बचा सकता। इस श्रेणी के मनुष्य अपरिणामदर्शी होते हैं और ख़तरे के समय भी असावधान रहने के कारण प्रायः स्वयं अपनी मृत्यु का कारण बन बैठते हैं (चित्र नं० १४)।

जीवन-रेखा के भीतर मङ्गल के स्थान से शुरू होने वाली रेखा अशुभ होती है। ऐसे मनुष्य शीघ्र ही आवेश में आने



चित्र नम्बर १३



चित्र नम्बर १४

वाले क्रोधी और उग्र स्वभाव के होते हैं। मानसिक शक्ति क्षीण होने से वह दूसरों से सदा लड़ते झगड़ते रहते हैं और अनायास अपने मित्रों में भी शत्रु का भाव उत्पन्न कर देते हैं (चित्र नं० १)।

प्रायः बहुत से हाथों में मस्तक-रेखा पर द्वीप का चिन्ह देखा जाता है और मस्तक से सम्बन्ध रखने वाले रोग उत्पन्न होने की सूचना है—सिर दर्द, आधा सीसी, स्नायविक पीड़ा

(Neuralgia) इत्यादि । यदि द्वीप के आगे मस्तक-रेखा टूट रही हो तो मृत्यु होगी ।

यदि रेखा टूट कर दो भाग हो गई हो तो यह निश्चय है कि किसी दुर्घटना के कारण सिर में भारी चोट आयेगी । ऐसी दशा में प्रायः मृत्यु तक हो जाती है । इसके अतिरिक्त यदि रेखा पर छोटे-छोटे कई द्वीप हों तो सदा मस्तक सम्बन्धी रोग सताते रहेंगे और मनुष्य की ज्ञानेन्द्रिय निर्बल हो जाने का भय बना रहेगा ।

यदि मस्तक-रेखा में से कोई एक शाख़ या रेखा स्वयं पहली अँगुली के नीचे किसी क्रूश (× =Star) के नीचे जा रही हो तो यह बुद्धि से सम्बन्ध रखने वाली योजनाओं में पूर्ण सफलता देती है ।

मस्तक-रेखा का ऊपर उठ कर हृदय-रेखा के समीप चला जाना अच्छा नहीं समझा जाता । ऐसी दशा में हृदय प्रबल होकर मस्तक को दबा लेगा और मनुष्य प्रेम के सम्बन्ध में बुद्धि से काम न लेने वाला अविवेकी होगा और नुकसान उठायगा ।

दूसरी दशा में यदि मस्तक-रेखा में से कोई एक शाख़ हृदय-रेखा में जाकर मिल गई हो तो मनुष्य प्रेम के विवश अन्धा होकर अपने मार्ग में आने वाली आपत्तियों की परवा न करके स्वयं ख़तरे में जाकर गिरेगा—यह निश्चय है, सावधान रहना चाहिये ।

यदि छोटी-छोटी बहुत सी रेखायें मस्तक-रेखा की शाख़ा के रूप में हृदय-रेखा की ओर जा रही हों तो प्रेम के साथ मोह अधिक प्रबल होगा। ऐसे दो प्रेमी सदा एक दूसरे के सामने बने रहना चाहते हैं। यदि स्त्री हो तो प्रेम के सम्बन्ध में और भी उतावली और व्याकुल होगी, और प्रेम उत्कृष्ट होगा।

जीवन-रेखा के साथ जुड़ी हुई मस्तक-रेखा, झुकी होकर सिरे पर द्विजिव्ह (V=Fork) हो गई हो तो साहित्य और कविता से प्रेम होता है, विचार सूक्ष्म होते हैं, और यदि हाथ चमसाकार हुवा तो दस्तकारी की तरफ़ अधिक ध्यान होता है।

मणिबन्ध की ओर जाने वाली रेखा कल्पनाशक्ति को सीमा से बाहर ले जाती है, इसलिये अशुभ है। इसके अतिरिक्त यदि यह किसी क्रूश या तारे पर समाप्त हो रही हो तो मृत्यु अस्वाभाविक होगी। ऐसी दशा में मनुष्य आवेश में आकर प्रायः स्वयं अपनी मृत्यु का कारण बनता है।

मस्तक-रेखा, यदि साधारण झुकी हुई पतली और लम्बी हो और हाथ में दूसरी और तीसरी अंगुली लगभग आपस में बराबर हों तो मनुष्य आशा पर रुपया लगाने वाला सट्टे का व्यापारी होगा। ऐसे मनुष्य धन की ओर से सदा ख़तरे में पड़ते हैं और नुकसान उठाते हैं—विशेषकर ऐसी दशा में जब कि भाग्य-रेखा भी उनका साथ न दे रही हो।

विस्तार में छोटी मस्तक-रेखा अशुभ होती है यदि शनि की अंगुली के ठीक नीचे जाकर रुकती हो तो ऐसे मनुष्य की

आयु पूरी होगी—इस में सन्देह है। इसमें अकस्मात मृत्यु होना सम्भव है, परन्तु यह मृत्यु मस्तिष्क सम्बन्धी रोग द्वारा होगी (चित्र नं० १२)। जीवन-रेखा और भाग्य-रेखा की तुलना करो, यदि मस्तक-रेखा मङ्गल के क्षेत्र※ में भाग्य-रेखा पर समाप्त होती हो तो मनुष्य अल्पबुद्धि और अविवेकी होने के कारण दुर्भाग्य के चक्कर में फँसा रहेगा।

दो मस्तक-रेखायें एक ही हाथ में बहुत कम देखने में आती हैं, परन्तु यदि किसी में हों ती ऐसे मनुष्य की बुद्धि असाधारण होगी। वह चतुर होगा, उसकी योजनायें सफल होंगी, उसकी दी हुई शिक्षा लाभदायक होगी, परन्तु यदि उसका अंगूठा कोमल और झुका हुआ होगा× तो उसके विचारों में अस्थिरता पाई जायेगी।

जहाँ तक अपना जातीय अनुभव है मस्तक-रेखा बुद्धि-सम्बन्धी होने के कारण शेष सभी रेखाओं से अधिक उपयोगी और महत्वपूर्ण रेखा है। केवल महत्वपूर्ण ही नहीं यदि इसको मनुष्य जीवन की तालिका भी कहा जावे तो अत्युक्ति न होगी। ऐसी मस्तक-रेखा के सम्बन्ध में बिना पूरा ज्ञान प्राप्त किये मनुष्य की जीवन-सम्बन्धी घटनाओं के विषय में कुछ कहना यदि अदूरदर्शिता नहीं तो और क्या है ?

प्रायः बहुत से विद्यार्थियों को देखा है क वह हाथ की

※देखो मङ्गल का क्षेत्र—पृष्ठ संख्या १०८।
×कोमल और झुका हुआ अँगूठा—देखो पृष्ठ संख्या ५३।

भाग्य-रेखा को देखकर "भाग्य-रेखा अच्छी है, तुम्हारी अमुक साल में बड़ी उन्नति होगी या भाग्य-रेखा ख़राब है अपना अशुभ फल देगी,—ऐसा कहा करते हैं। बात झूठी होती है और हम हस्त-सामुद्रिक में अविश्वास करने लग जाते हैं। दोष दोनों ओर बराबर है। विद्यार्थी को चाहिये कि वह भाग्य-रेखा के सम्बन्ध में अपना कोई विचार निश्चित करने से पहले मस्तक-रेखा को अपना लक्ष्य बनाये। मनुष्य की उन्नति या अवनति का होना उसकी बुद्धि पर निर्भर है। यदि वह बुद्धिमान, चतुर और दूरदर्शी है तो यह निश्चय है कि अपनी बुद्धि के बल से उन्नति की ओर बढ़ने लगेगा इसके विपरीत यदि यह पहले की अपेक्षा मंद बुद्धि, और अदूरदर्शी होगा तो केवल एक भाग्य-रेखा के सहारे ही वह कोई उन्नति नही कर सकेगा—यह मानी हुई बात है।

अब भविष्य फल को लीजिये। मनुष्य का मस्तिष्क कभी अपनी एक सी दशा में नही रहता। उसमें दिन-रात कुछ-न कुछ उलट फेर होता ही रहता है। कभी घटता है, कभी बढ़ता है, कभी फैलता है तो कभी सिकुड़ता है— यही उसका दिन-रात का स्वभाव है। मस्तक में यह परिवर्तन बरसों पहले हो जाते हैं, जब कि उनका प्रभाव हमारे मन और मानसिक विचारों पर बाद में पड़ता है। एक पाँच बरस के बच्चे के मस्तिष्क में जो उन्नति आज से पन्द्रह या बीस बरस पहले हुई थी आज पच्चीस साल की उम्र में आकर

उसका विकाश होता है और अचानक उसके जीवन में एक बड़ा परिवर्तन कर देता है । माना कि हमारे मस्तिष्क में पन्द्रह साल की उम्र में कोई परिवर्तन होता है तो उसी समय शरीर के किसी स्नायविक भाग (NerveS ystem) में एक तरह का कम्पन पैदा होता है और उसका प्रभाव मस्तिष्क से सम्बन्ध रखने वाली हाथ की मस्तक-रेखा पर पड़ता है । अतः भविष्यफल कहते समय हाथ की अच्छी तरह परीक्षा कर लेनी चाहिये । उस हाथ की परीक्षा जिसके सम्बन्ध में प्रसिद्ध सामुद्रिक शास्त्री अलातूनिया (Aristotle) ने कहा है कि—"यह शरीर के अप्रवर्तक (Passive) स्नायु भाग का प्रवर्तक प्रतिनिधि है ।"

रेखाओं का निकास, अन्त और उनकी चाल अवश्य ध्यान में रखनी चाहिये क्यों कि रेखाओं की यह तीनों दशा क्रम से मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकाश उन्नति का मार्ग और उसकी सीमा होती हैं । उदाहरण के लिये यदि मस्तक-रेखा बायें हाथ में नीचे की ओर झुक रही हो और दायें हाथ में सीधी जा रही हो तो हम कह सकते हैं कि वह मनुष्य रेखा की उस स्वाभाविक चाल पर नहीं जा सकेगा जब तक कोई ऐसी घटना उसके जीवन में आकर न उपस्थित हो जो उसे उसकी उस स्वाभाविक वृत्ति की ओर, जो कि उसकी मस्तक-रेखा बता रही है, ले जाय : ऐसी दशा में भी उसे अपनी उस पैतृक प्रवृत्ति को जगाने के लिये कठिन परिश्रम

और असाधारण बुद्धि की अधिक आवश्यकता पड़ती है।

अन्त में इतना कह देना है कि मस्तक या दूसरी रेखाओं का फल कहते समय हाथ की बनावट कैसी है, इसका ध्यान रखना आवश्यक है, जैसे—समकोण हाथ में सीधी मस्तक-रेखा का होना स्वाभाविक है और यदि यही रेखा सूच्याकार हाथ में होगी तो मनुष्य की बुद्धि कुछ दूसरी ही तरह की होगी। इसलिये विद्यार्थियों को चाहिये कि मस्तक-रेखा पर विचार करते समय हाथ के भेद और उनके स्वाभाविक गुण अवश्य ध्यान में रक्खें।

छटा अध्याय

हृदय-रेखा

"हृदय प्रेम का एक आधार भू है।
हृदय में अगर प्रेम है तो प्रभू है ॥"

(स्वामी रामतीर्थ)

यह रेखा जिस को हम हृदय-रेखा कहते हैं हाथ में वह तीसरी मुख्य रेखा है जिसमें हमारे जीवन से सम्बन्ध रखने वाले बहुत से रहस्य छिपे होते हैं और जिनका किसी न किसी रूप में जीवन-रेखा और मस्तक-रेखा से पूरा पूरा सम्बन्ध होता है । यह रेखा हाथ के ऊपर के भाग में मस्तक-रेखा के अर्ध समानान्तर चौथी अँगुली कनिष्टका की ओर जाती है ।

यह रेखा जैसा कि आगे चल कर मालूम होगा बड़े महत्व की रेखा है। इसके द्वारा हम अपने बहुत से गुप्त भेदों को जान सकते हैं जो सत्य होते हैं। हमारी मनोगति, मानसिक क्रिया और उसी के अनुसार शारीरिक अवनति का सारा हाल इस पर लिखा होता है जिसको कि हम पढ़ सकते हैं। हृदय-रेखा के सम्बन्ध में कही गई बहुत सी बातों पर बहुत से लोग विश्वास नहीं करते—कुछ इस लिये नहीं कि वह बातें झूठ हैं, बल्कि इस लिये कि उन्हें सत्य मानने में उन्हें लज्जा आती है।

"आज से सात बरस पहले तुम किसी स्त्री को प्रेम करने लगे थे"—एक युवक की हृदय-रेखा देख कर मैंने कहा। पास ही बैठी हुई उसकी स्त्री मेरी ओर देखने लगी।

"नहीं मैंने आज तक किसी को प्रेम नहीं किया"—कुछ गम्भीर होकर युवक ने मेरा प्रतिवाद किया।

"याद करो"—मैंने फिर कहा।

"मुझे याद नहीं आता"—यह कहकर उस युवक ने अपनी निगाह नीची करली। मैं समझ गया और बातों का सिलसिला तोड़ कर पुस्तक पढ़ने लगा।

"तुम ने कैसे जाना कि मैं किसी स्त्री को प्रेम करता था"—सब के चले जाने पर उस युवक ने मुझ से पूछा।

"तुम्हारी हृदय-रेखा देख कर।"

"ठीक है।......उन दिनों मैं कालिज में पढ़ रहा था,

रहस्य जीवन अशान्त
धन के सम्बन्ध में अशान्त, दुखी, चिन्तित
ब- जीवन में परिवर्तन पृष्ठ २३१
ल- शुभ प्राभाविक-रेखा
द- छोटी यात्रा सूचक रेखा
ट- अधिक महत्व पूर्ण यात्रा-रेखा
क- क्रियाशील
ज- टूटी जीवन-रेखा, प्रायः मृत्यु पृष्ठ
घ- टूटी प्रभाविक-रेखा
र- जीवन रेखा से छूटी हुई - प्राभाविक-रेखा
स- विवाह होने की सम्भावना

चित्र १३

जब कि मेरा प्रेम सम्बन्ध एक क्रश्चियन लड़की से हुआ। वह मेरे पड़ोस में ही रह रही थी और रोज मेरे साथ टेनिस खेलने जाया करती थी।"

"परन्तु तुमने उस समय नहीं माना!"

"बात ऐसी ही थी, इस लिये ऐसा करना पड़ा"—यह कह कर वह युवक मुस्करा दिया और पास में पड़ी पुस्तक के पन्ने उलटने लगा।

यह एक नहीं और भी कई ऐसे अवसर हुए हैं जिन में वास्तविक बात को छिपाना पड़ा है। मैंने स्त्रियों के हाथ में कुछ ऐसी रेखायें देखी हैं जिनका फल कहना मैंने उचित नहीं समझा। बात भले ही छिपाली गई हो परन्तु रेखा पर वह अवश्य लिख रही थी। मेरा सन्देह उनके उत्तर से जो कि उस समय मेरे प्रश्न करने पर मुझे मिले, मिट गया था और उनकी सत्यता मुझे मालूम हो गई थी।

हृदय-रेखा से मनुष्य जीवन से सम्बन्ध रखने वाली बहुत सी अद्भुत बातों का पता मिलता है। हृदय की स्थूल और मानसिक दशा का ज्ञान होता है। प्रेम सम्बन्ध, प्रेम के मार्ग में निराशा, और उनका प्रभाव जाना जाता है। मित्र व्यवहार और प्रेम सम्बन्ध, यदि सफल और सुखदायक होगा, तो हृदय-रेखा में से ऊपर की ओर रेखायें उठेंगी और बतलायेंगी कि उस मनुष्य को सब प्रेम करते हैं—वह सबका प्यारा

है। यह लक्षण प्रायः स्त्रियों के हाथ में नहीं मिलते—विशेषतः सीधे हाथ में, क्योंकि सीधा हाथ प्रवर्तक (Active) होने के कारण हमारी क्रिया और बायाँ क्रिया करने की प्रवृत्ति बतलाता है।

मस्तक-रेखा की तरह यह रेखा भी मुख्य तीन जगह से शुरू होती है जो नीचे लिखे अनुसार है:—

१—शनि के स्थान से शुरू होती है।

२—पहली अँगुली तर्जनी और दूसरी अँगुली मध्यमा के बीच से आरम्भ होती है।

३—बृहस्पति के स्थान (Mount of Jupiter) के बीच से चलती है।

पहली दशा में जब हृदय-रेखा शनि के स्थान से शुरू होती है तो यह प्रेम के सम्बन्ध में इन्द्रिय लोलुप होने का पहला लक्षण है। ऐसा व्यक्ति, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, प्रेम करता है—परन्तु उसके प्रेम में विषय लालसा की गहरी पुट लगी रहती है। प्रायः देखा गया है कि इस रेखा में कोई शाख, ऊपर या नीचे, नहीं होती। यह केवल लाल रङ्ग की एक गहरी रेखा होती है जो सीधी अपनी जगह से शुरू होकर हथेली से बाहर निकल जाती है। ऐसे मनुष्य प्रेम के सम्बन्ध में स्वार्थी होते हैं। उनका प्रेम आदर्श प्रेम नहीं होता और वह अपनी वासनाओं को तृप्त करने वाले विषयासक्त होते हैं। हृदय-रेखा जितनी ही मध्यमा अँगुली के

समीप होगी मनुष्य उतना ही अधिक कामी होगा। इस श्रेणी के मनुष्य सदाचारी नहीं हो सकते। अपनी पराई इज़्ज़त का भी इन्हें कुछ ध्यान नहीं रहता और सदा दूसरों की दृष्टि में अपमानित होते देखे गये हैं। यदि साथ ही शनि का स्थान (Mount of Saturn) अधिक ऊँचा हुआ तो एकान्त प्रेमी होते है। निराशा घेरे रहती है और मन में बुरे-बुरे विचार उठते रहते हैं।

यदि हृदय-रेखा पहली अँगुली तर्जनी और दूसरी अँगुली मध्यमा के बीच से शुरू हो तो स्त्री और पुरुष दोनों के लिये अच्छी है। वह प्रेम के सम्बन्ध में सदा गम्भीर होते हैं। उनका प्रेम दिखावटी नहीं होता, बल्कि दृढ़ और सच्चा होता है। वह आदर्श प्रेमी होते हैं और जिसे प्रेम करते हैं उसकी बुराइयों पर दृष्टिपात न करते हुए प्रेम सम्बन्ध में आये हुए सभी कष्टों को भूल जाते हैं। उनके मार्ग में अनेक बाधाएँ आती हैं—वह उन्हें पार कर जाते हैं। वह मुसीबतों का सामना करते हैं परन्तु अपने आदर्श को नहीं गिरने देते। शनि के स्थान से शुरू होने वाली हृदय-रेखा के समान वह कामान्ध नहीं होते। यदि परस्पर कोई भेद भाव भी उत्पन्न हो जाय तो वह शीघ्र ही उसे दूर कर देते हैं। उनका प्रेम सरस और कोमल होता है। यह रेखा पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के हाथ में अधिक पाई जाती है।

हृदय-रेखा के शुरू होने का तीसरा मुख्य स्थान बृहस्पति

के स्थान का मध्य भाग है—(र—र—चित्र नं० १०)। ऐसी दशा में प्रेम प्रबल होता है। वह स्त्री हो या पुरुष जिसके हाथ में हृदय-रेखा तर्जनी अँगुली के नीचे बृहस्पति के स्थान से आरम्भ होगी प्रेम के सम्बन्ध में अत्यन्त व्यग्र और उत्सुक होगा। वह जिस किसी को प्रेम करते हैं। उस में तन्मय हो जाते हैं और दिन रात उसी के लिये व्याकुल रहते हैं। उनका प्रेम उत्कृष्ट होता है। "मेरा प्रेमी या प्रेमिका भी मुझे मेरी ही तरह प्रेम करे"—ऐसी अभिलाषा उस मनुष्य या स्त्री को सदा बनी रहती है। प्रायः देखा गया है कि ऐसे दो प्रेमी कभी एक दूसरे को सन्तुष्ट करने में सफल नहीं हुए, या यों कहिये कि कभी आपस में मिल कर नहीं रहे।

यदि वह स्त्री हुई तो प्रेम के सम्बन्ध में पुरुष की अपेक्षा शीघ्र ही आहत हो जाती है। प्रेम के व्यवहार में तनिक असावधानी हुई कि उसके कोमल हृदय पर एक गहरी चोट पहुँचती है। बस, जहाँ एक बार उसका आदर्श गिरा वह, जहाँ तक उस पुरुष से सम्बन्ध है, सदा के लिये गिर जाता है।

बात केवल यहीं तक समाप्त नहीं हो जाती। इससे आगे हृदय-रेखा बृहस्पति के ग्रह-स्थान से ऊपर तर्जनी पर अँगुली के मूल भाग (Base) से शुरू होती है। ऐसी दशा में प्रेम और स्पर्द्धा का भाव साथ साथ जाता है। ऐसे

दो प्रेमी आपस में एक दूसरे पर अपना पूरा अधिकार चाहते हैं। उनमें से हर एक अपनी इच्छा के अनुसार अपने प्रेमी या प्रेमिका की ओर से प्रेम व्यवहार की आशा करता है और सदा इस सम्बन्ध में असन्तुष्ट रहता है। अनुभव से यह देखा गया है कि कोई भी ऐसे दो उत्कृष्ट प्रेमी परस्पर कभी सन्तुष्ट नहीं रहे और यदि व्यवहार में नहीं तो हृदय से सदा एक दूसरे से अलग रहते हैं। हृदय-रेखा जितनी ही अधिक लम्बी होगी मनुष्य उतना ही अधिक उग्र।और उसके प्रेम में स्पर्द्धा का भाव पाया जायगा। यह रेखा प्रेम के सम्बन्ध में अशान्ति की देने वाली है और कभी-कभी महा अनिष्ट कर डालती है।

हृदय-रेखा नीचे की ओर मस्तक-रेखा के पास कभी ज़्यादा न उतर जानी चाहिये और न मस्तक-रेखा ही ऊपर उठकर हृदय-रेखा के पास पहुँचनी चाहिये। परन्तु प्रायः बहुत से मनुष्यों के दोनों हाथ में यह रेखायें, हृदय-रेखा और मस्तक-रेखा, पास-पास होती देखी जाती हैं। कौन सी रेखा किस ओर झुक रही है यह जानने के लिये किसी रेखा का कौनसा स्थान है यह याद रखना चाहिये।

यदि हृदय-रेखा बाँये हाथ में मस्तक-रेखा की ओर झुक रही हो तो स्वभाव में स्वार्थ की मात्रा पाई जायगी। हृदय के भाव आकर्षित होंगे सही, परन्तु आसानी से नहीं। हृदय कुछ कठोर रहता है जब तक कि उसमें प्रेम का

कोई विशेष प्रवाह न हो। यह रही मन की बात—अब व्यवहार की बात लीजिये। व्यवहारिक गुण जानने के लिये सीधे हाथ की हृदय-रेखा देखिये। यदि इसमें भी बाँये हाथ की तरह हृदय-रेखा मस्तक-रेखा पर झुक रही हो तो हृदय मस्तक का विरोध करेगा। ऐसी दशा में प्रेम प्रबल होकर कर्तव्य-पालन में बाधा डालता है। वह स्त्री हो या पुरुष, प्रेम के आगे अपने हानि या लाभ की कुछ भी परवाह न करेगा। वह अपने कर्तव्य की ओर बढ़ेगा परन्तु प्रेम उसे अपनी तरफ खींच लेगा और वह उसके साथ खिंच जायगा। एक ओर कर्तव्य का पालन दूसरी तरफ़ प्रेम का आकर्षण होगा—विजय प्रेम की होगी। परन्तु यदि रेखा शुरू से आख़िर तक मस्तक-रेखा को दबाती हुई जा रही हो तो यह लक्षण अच्छा नहीं होता। क्योंकि ऐसी हालत में हृदय में धड़कन, कपट, बनावटी प्रेम और कभी-कभी कृपणता साथ जाती है। इसके अतिरिक्त यदि हृदय-रेखा थोड़ी दूर तक मस्तक-रेखा के पास जाकर फिर अपनी उसी जगह पर आ रही हो तो प्रेम के सम्बन्ध में ऊपर कही गई बुराइयाँ दूर हो जाती हैं—यह देखा गया है।

दूसरी दशा में यदि हृदय-रेखा अधिक ऊँची हो और उसके नीचे मस्तक-रेखा अधिक पास पड़ रही हो तो जहाँ तक प्रेम से सम्बन्ध रहेगा हृदय-रेखा की अपेक्षा मस्तक-रेखा अधिक बलवान समझी जायेगी। ऐसा मनुष्य प्रेम

करता है परन्तु साथ ही अपनी हानि, लाभ और अपने कर्तव्य की ओर भी ध्यान रखता है।

बृहस्पति से चलने वाली हृदय-रेखा प्रेम के सम्बन्ध में प्रसन्नता देने वाली है (र—र—चित्र नं० १०)। नीचे की ओर गिरी हुई रेखा दुखदायी होती है और प्रेम के मार्ग में अनेक निराशायें उत्पन्न करती है। ऐसा मनुष्य यदि किसी को प्रेम भी करता है तो उसमें अनेक ऐसी बाधायें आ उपस्थित होती हैं जो उसको चिन्तित और निराश बनाये रखती हैं।

सब से अधिक दुर्भाग्यपूर्ण हृदय-रेखा वह होती है जो नीचे की ओर आकर मस्तक-रेखा से मिल जाती है। (ठ—ठ—चित्र नं० १३)। ऐसे व्यक्ति चाहे पुरुष हों या स्त्री, प्रेम के सम्बन्ध में कभी सफल होते नहीं देखे गये। निराशा उन्हें सदा ही घेरे रहती है और यदि हृदय-रेखा दोनों हाथों में मस्तक-रेखा से मिल रही हो तो इसका और भी बुरा प्रभाव पड़ता है। ऐसी दशा में प्रायः देखा गया है कि जब उन्हें अधिक निराशा घेरती है तो आत्म-हत्या तक कर डालते हैं—परन्तु यह उस समय तक नहीं होता जब तक वैसे ही अशुभ चिन्ह दूसरी रेखाओं पर न देख पड़ते हों।

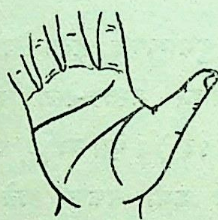
संक्षेप में हृदय-रेखा के सम्बन्ध में इतना कहा जा सकता है कि यदि यह रेखा शनि के स्थान (Mount of Saturn)

से चलती हो तो मनुष्य प्रेम के सम्बन्ध में स्वार्थी और कामासक्त होगा। इसके अतिरिक्त यदि रेखा मध्यमा अँगुली के नीचे से शुरु होती हो (चित्र नं० १)—तो उस स्त्री का प्रेम कोमल होगा।

यदि यह पहली अँगुली तर्जनी के नीचे से आरम्भ होती हो तो प्रेम उत्कृष्ट होता है। वह स्त्री हो या पुरुष, प्रेम के सम्बन्ध में अत्यन्त व्याकुल और असन्तुष्ट रहेगा। । प्रायः देखा गया है कि ऐसे दो प्रेमी कभी परस्पर एक दूसरे



चित्र नम्बर १



चित्र नम्बर २



चित्र नम्बर ३

को सन्तुष्ट करने में सफल नही हो सके हैं (चित्र नं० २)।

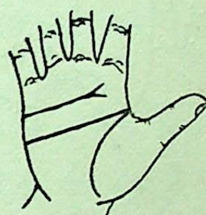
यदि रेखा स्पष्ट और अधिक बलवान हो और साथ में मस्तक-रेखा भी अच्छी पड़ी हो तो ऐसा प्रेम आदर्श प्रेम कहा जाता है। वह निःस्वार्थ होता है और स्वार्थ का लवलेश मात्र भी उसमें नहीं पाया जाता। ऐसे स्त्री या पुरुषों का प्रेम-भाव परोपकार की दृष्टि से बहुत ऊँचा और आदर्शमय समझा जाता है (चित्र नं० ३)।

यदि हृदय-रेखा मस्तक-रेखा से अधिक भारी और स्पष्ट हो तो हृदय मस्तक पर शासन करता है। ऐसे व्यक्ति प्रेम के आगे हानि या लाभ की तनिक भी परवाह नहीं करते। वह कर्तव्य पालन की श्रेष्ठता को समझते हैं। परन्तु जहाँ प्रेम का प्रश्न उपस्थित हो उनका वह कर्तव्य-ज्ञान प्रेम के प्रवाह में बह जाता है और वह स्वयं प्रेम के बन्धन में बँधे अपने कर्तव्य-मार्ग से एक ओर चले जाते हैं (चित्र नं० ४)।

इसके विपरीत यदि हृदय-रेखा मस्तक-रेखा की अपेक्षा



चित्र नम्बर ४



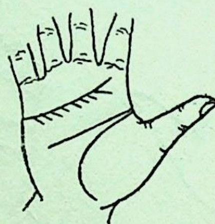
चित्र नम्बर ५

अधिक हलकी और कमज़ोर हो तो मनुष्य प्रेम के सम्बन्ध में बुद्धि से काम लेने वाला चतुर और दूरदर्शी होता है। वह प्रेम करता है परन्तु उसके लिये अपने जातीय कामों को एक ओर उठाकर नहीं रख देता। जहाँ तक अनुभव हुआ है ऐसे व्यक्ति प्रेम की ओर से उदासीन होते हैं और सदा एकान्त जीवन व्यतीत करना अधिक पसन्द करते हैं। विवाहित जीवन उन्हें विशेष प्रिय नहीं होता और यदि विवाहित भी हुए तो प्रेम उत्कृष्ट नहीं होता (चित्र नं० ५)।

यदि हृदय-रेखा को मस्तक-रेखा दबा रही हो, जैसा कि चित्र में दिखाया गया है, तो मनुष्य की बुद्धि उसके प्रेम को निर्बल कर देती है (चित्र नं० ६)। ऐसे व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, प्रेम के सम्बन्ध में स्वार्थी होते हैं। वह प्रेम करते हैं, परन्तु प्रेम के लिये नहीं—धन या अपनी स्वार्थ-सिद्ध करने के लिये।

यदि हृदय-रेखा, किसी ऐसे हाथ में जिसमें शुक्र का स्थान बहुत बड़ा और उभरा हुआ हो, ज़्यादा गहरी और स्पष्ट हो


चित्र नम्बर ६


चित्र नम्बर ७


चित्र नम्बर ८

और उसमें बहुत सी छोटी-छोटी रेखायें मिल रही हों तो ऐसे व्यक्ति जहाँ तक उनका प्रेम से सम्बन्ध है उत्तप्त और व्याकुल रहते हैं। श्रृङ्गार रस की कविता से प्रेम करने वाले कवि, पति के वियोग से व्याकुल स्त्री, और गान विद्या में निपुण गवैयों के हाथ में यह रेखा पाई जाती है (चित्र नं० ७)।

प्रायः बहुत से हाथों में दो हृदय-रेखा देखी गई हैं। ऐसी दशा में प्रेम प्रबल होता है और यदि मस्तक-रेखा लम्बी और झुकी हुई हो तो परोपकार और दूसरों के प्रति सहा-

नुभूति अधिक पाई जायगी। इस श्रेणी के मनुष्य सदा मनुष्य जाति की उन्नति और सुधार करने की चिन्ता में लगे रहते हैं। वह परोपकार के लिये अपना सर्वस्व तक दे डालने में पीछे नहीं रहते। उनका जीवन सदा धर्म और पराये हित के लिये व्यतीत होता देखा गया है (चित्र नं० ८)।

हृदय-रेखा के सम्बन्ध में कुछ विशेष बातें।

हृदय-रेखा देखने में स्पष्ट, चमकदार और पतली होनी चाहिये—न द्वीपयुक्त हो और न टूटी हुई।

यदि रेखा बृहस्पति और शनि के बीच से शुरू होती हो या दोनों अँगुलियों के बीच में जा रही हो तो यह, जहाँ तक प्रेम से सम्बन्ध है, सूचित करती है कि मनुष्य की हार्दिक इच्छायें पूरी होने से पहले उसको अपने जीवन में कठिन परिश्रम करना होगा।

पतली, चमकदार और गहरी हृदय-रेखा का प्रेम प्रबल और स्थायी होता है—यह शुभ लक्षण हैं (चित्र नं० ९)।

लम्बी हृदय-रेखा शुभ होती है, परन्तु आवश्यकता से अधिक लम्बी न होनी चाहिये। अधिक लम्बी रेखा स्वभाव में द्वेष और स्पर्द्धा उत्पन्न करती है—विशेषतः जब की शुक्र का स्थान भी अधिक उभरा हुआ हो।

छोटी हृदय-रेखा, बिना किसी सहायता के, प्रेम की ओर

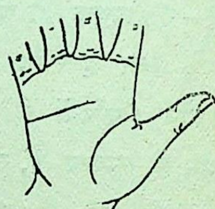
से उदासीनता का चिन्ह है। ऐसा व्यक्ति प्रेम के सम्बन्ध में रूखा होता है परन्तु हृदय-हीन नहीं होता (चित्र नं० १०)।

यदि जञ्जीर के समान हृदय-रेखा छोटी-छोटी बहुत सी रेखाओं से घिर रही हो तो प्रेम भाव से शून्य होती है। ऐसे मनुष्य का प्रेम क्षणिक होता है—कभी स्थिर नहीं रहता।

यदि रेखा हथेली के एक ओर पतली और सपाट हो तो स्वभाव में रूखापन और गम्भीरता की सूचना देती है और यदि आरम्भ से अन्त तक एक सी दशा में हो तो वह व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, प्रेम भाव से शून्य होता है।



चित्र नम्बर ९



चित्र नम्बर १०

शनि की अँगुली मध्यमा के नीचे से जञ्जीर जैसी हृदय-रेखा परस्पर विरोधी वर्ग में स्पर्द्धा का भाव उत्पन्न करती है। इसके प्रभाव से स्त्री के लिये पुरुष के हृदय में और पुरुष के लिये स्त्री के हृदय में घृणा उत्पन्न हो जाती है।

यदि हृदय-रेखा का रङ्ग लाल हो तो प्रेम अत्यन्त उग्र होता है। और यदि यह पीलापन लिये शुष्क और चौड़ी हो तो प्रेम की तरफ़ से उदासीनता होती है।

यदि हृदय-रेखा पहली अँगुली तर्जनी के नीचे सर्प-जिह्वाकार हो गई हो तो यह सच्चे प्रेम का अचूक लक्षण है। ऐसे व्यक्ति प्रेम के सम्बन्ध में निष्कपट और साहसी होते हैं।

यदि इसकी एक शाख पहली और दूसरी अँगुली के बीच में और दूसरी शनि की अँगुली मध्यमा के नीचे जा रही हो तो जहाँ तक प्रेम से सम्बन्ध है यह रेखा भाग्यवान होती है, परन्तु स्वभाव शान्त रहता है।



चित्र नम्बर ११

हृदय-रेखा का टूट जाना प्रेम के सम्बन्ध में निराशा-जनक और दुखदायी होता है। यदि यह रेखा शनि की अँगुली के नीचे टूट रही हो तो, भाग्यवश; तीसरी अँगुली के नीचे, अभिमान द्वारा; और चौथी अँगुली के नीचे, स्वयं अपनी मूर्खता से प्रेम के सम्बन्ध में निराशा और बाधायें उत्पन्न हुआ करती हैं।

टूटी हुई रेखा के सम्बन्ध में यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि वह जिस ग्रह-स्थान के नीचे टूट रही होगी क्रम से उसी ग्रह-देवता का प्रभाव प्रेम के मार्ग में उसकी निराशाओं

का कारण होगा। मैंने एक ही हाथ में यह रेखा दो जगह टूटी देखी है—मस्तक-रेखा की तरफ़ शनि की अँगुली के नीचे (१—१—चित्र नं० ११) जिसमें से एक शाख़ नीचे मस्तक-रेखा को पार करके जीवन-रेखा को जा रही है और दूसरी कुछ आगे जाकर सूर्य्य की अँगुली अनामिका के नीचे (२—२—चित्र नं० ११) अँगूठे की तरफ—यहाँ से भी एक स्पष्ट रेखा मस्तक-रेखा को जाती है और फिर जीवन-रेखा को पार करती हुई मङ्गल-रेखा पर पहुँचती है।

हृदय-रेखा का चित्र में दिखाये हुए दोनों स्थान पर टूटा रहना यह बतलाता है कि प्रेम के सम्बन्ध हुए हैं और टूट गये हैं। दूसरी रेखा (२—२) पहली की अपेक्षा अधिक लम्बी है और जीवन-रेखा की सहायक मङ्गल-रेखा तक पहूँचती है। यह रेखा एक दूसरा सम्ब्रन्ध है जो कि पहले की अपेक्षा अधिक दिन तक रह कर टूटा है और जिसका जीवन पर कुछ समय तक विशेष प्रभाव पड़ा है। पहली रेखा (१—१) थोड़ी दूर जाकर ही रह गई है इसलिये वह सम्बन्ध भी जो किसी स्त्री के साथ था अधिक दिन तक नहीं रहा। इसमें सन्देह नहीं कि यह पहली रेखा का सम्ब्रन्ध जीवन-रेखा से जुड़ा हुआ है और टूटने पर, जहाँ तक मनुष्य के जीवन से सम्बन्ध था, सम्भव था कोई बुरा असर डालता। परन्तु सौभाग्य से बृहस्पति के नीचे क्रूश के चिन्ह ने ऐसा न होने दिया और उस मनुष्य का

शीघ्र ही विवाह हो गया। बृहस्पति की अँगुली के नीचे क्रूश (× =क्रूश) का निशान शुभ और प्रिय सम्बन्ध कराता है (चित्र नं० ११)।

अब देखना है कि इन दोनों सम्बन्ध के टूटने का कारण क्या था। यहां यह कहने की आवश्यकता नहीं कि हृदय-रेखा का टूट जाना किसी भी दो प्रेमियों का प्रेम सम्बन्ध टूट कर उनका परस्पर विच्छेद हो जाने का लक्षण है। पीछे दिये गये चित्र में, जो एक नवयुवक के उतारे हुए हाथ का चित्र है, हृदय-रेखा दो जगह टूटी हुई है इस लिये यहाँ दो सम्बन्ध हुए हैं और टूट गये हैं—यह आसानी से कहा जा सकता है। पहला स्थान जहां हृदय-रेखा टूट रही है शनि की अँगुली के नीचे है और बतलाता है कि इस पहले सम्बन्ध में युवक का भाग्य उसका साथ नहीं दे रहा था। उस समय परस्थिति उसके अनुकूल न थी और वह हज़ार प्रयत्न करने पर भी अपने सम्बन्ध को स्थायी न कर सका। युवक और युवती दोनों अपना प्रेम सम्बन्ध बनाये रखना चाहते थे परन्तु उनके मार्ग में कुछ ऐसी बाधायें आ उपस्थित हुईं जिससे उन दोनों को एक दूसरे से इच्छा न होने पर भी अलग होना पड़ा। "बात ऐसी ही थी"—पूछने पर उस युवक ने कहा।

इस सम्बन्ध में बाधा डालने वाला उस युवक का एक रिश्तेदार ही था। वह जानता था कि वह लड़की एक सुन्दर

और अच्छे घर की लड़की है और इन दोनों का परस्पर विवाह हो जाना चाहिये। सम्बन्ध उचित था फिर भी कहने का ढँग ठीक न होने से लड़की के माँ बाप को यह बात बुरी लगी और वह दोनों एक दूसरे से अलग कर दिये गये। युवक को इस बात का पता उस समय हुआ जब कि उस लड़की का सम्बन्ध एक दूसरे युवक के साथ निश्चित कर दिया गया। यह शनि देवता का बुरा फल रहा।

हृदय-रेखा के टूटने का दूसरा स्थान लगभग तीसरी अँगुली के नीचे है और बतलाता है कि यह प्रेम पहले की तरह सच्चा प्रेम नहीं था। यह प्रेम अकस्मात ही हुआ और थोड़े दिन रह कर मर गया क्योंकि उस युवक के हाथ में शुक्र का स्थान अधिक ऊँचा होने के साथ सूर्य्य का स्थान भी उभरा हुआ था। अतः प्रेम लालसा के साथ ही साथ उसे अपनी इज़्ज़त का भी ध्यान रखना आवश्यक था।* वह इस सम्बन्ध को जहाँ तक उसके सम्मान की रक्षा होती कायम रख सकता था। परन्तु ऐसा न हुआ और वह स्त्री किसी दूसरे पुरुष को प्रेम करने लगी। उसका यह व्यवहार वह युवक न सह सका और विवश हो कर उसे अपना सम्बन्ध तोड़ना पड़ा—यहाँ सूर्य्य का प्रभाव समझना चाहिये।

---

*सूर्य्य देवता यश की प्राप्ति चाहता है। देखो सूर्य का स्थान पृष्ठ संख्या ९९—१००।

हृदय-रेखा से ऊपर की ओर जाने वाली छोटी-छोटी सुन्दर रेखायें वह प्रेम सम्बन्ध होते हैं जिनका प्रभाव जीवन पर पड़ता है और कभी-कभी उसमें एक युगान्तर उपस्थित कर देता है। यह प्रेम सुखमय होगा या दुखदायी यह हम उन्हीं रेखाओं से जान सकते हैं जिनमें से कुछ हृदय-रेखा को काटती हैं और कुछ नहीं काटतीं।

प्रायः बहुत से हाथों में हृदय-रेखा पर कुछ ऐसे बिन्दु पाये जाते हैं जो—हृदय-रोग नहीं—कमज़ोर हृदय होने के लक्षण हैं। मैंने यह चिन्ह देखे हैं, कई मनुष्यों के हाथ में जब कि वह ज्यादा गहरे न थे और उनको कह दिया है कि वह कोई ऐसा काम न करें जिसमें हृदय की धड़कन बढ़ जाने की सम्भावना हो—भागना, सीढ़ियों से जल्दी-जल्दी नीचे उतरना चढ़ना, या कोई नशा करना इत्यादि।

यह चिन्ह लाल होते हैं—ठीक वैसे ही जैसे कोई विन्दु (· = बिन्दु) या तिल होता है। यह गहराई में रेखा से कुछ अधिक गहरे देख पड़ते हैं—यही इनकी पहचान है। सामान्य रूप से रेखा का टूट जाना प्रेम के सम्बन्ध में निराशा के चिन्ह हैं और यदि कई जगह टूट रही हो तो निराशायें उतनी ही अधिक और हृदय कमज़ोर होगा।

यदि हृदय-रेखा का हाथ में बिल्कुल ही अभाव हो तो वह मनुष्य स्वार्थी और कृपण होगा। उसमें सच्ची सहानुभूति न होगी और हृदय प्रेम भाव से शून्य होगा

ऐसे मनुष्यों का चालचलन सभ्य पुरुषों जैसा नहीं होता। वह निर्दयी होते हैं और अपने लाभ के लिये अपने मित्र या दूसरों का सर्वनाश तक कर डालने को तैयार रहते हैं—विशेषतः ऐसी दशा में जब कि बाँयें हाथ में भी हृदय-रेखा छोटी हो और मध्यमा अँगुली के नीचे या उससे आगे शुरू होती हो।

सातवाँ अध्याय

स्वास्थ्य-रेखा

जीवन-रेखा को छोड़कर मस्तक और हृदय-रेखा के साथ ही साथ स्वास्थ्य-रेखा के सम्बन्ध में कुछ कह देना अधिक उपयोगी होगा। हमारे भविष्य जीवन और स्वास्थ्य का परस्पर कितना गहरा सम्बन्ध यह केवल एक बात कह देने ही से स्पष्ट हो जाता है। मनुष्य का भविष्य, जिसको भाग्य भी कहते हैं, उसके किये हुए कर्मों का फल है। कर्म करना धर्म है शरीर का। अतः जब तक मनुष्य का शरीर निरोग और स्वस्थ नहीं होता वह कोई भी ऐसा कार्य नहीं कर सकता जो उसका आगामी भविष्य बनाने में उसकी सहायता कर सके।

"स्वास्थ्य-रेखा हाथ में किस स्थान से आरम्भ होती है"—यह एक प्रश्न है जिसके सम्बन्ध में प्रायः बहुत से विद्यार्थियों में परस्पर मत-भेद पाया जाता है। मेरा अपना मत है कि भाग्य-रेखा की तरह (भाग्य-रेखा का वर्णन आगे किया गया है) स्वास्थ्य-रेखा भी हथेली के नीचे मणिबन्ध या उसके समीप से शुरू होकर ऊपर बुध की अँगुली कनिष्ठका की ओर जाती है (देखो मुख—पृष्ठ)। चौथे अध्याय में जीवन-रेखा के सम्बन्ध में यह कहा जा चुका है कि यह आयु-सम्बन्धी रेखा है और आयु का विस्तार बताती है। यहाँ यह बात कह देनी होगी कि लम्बी या छोटी जीवन-रेखा मनुष्य की आयु का केवल प्राकृतिक रूप है—उस आयु का जो कि पैतृक (Hereditary) कही जाती है। इसमें सन्देह नहीं कि निर्दोष और लम्बी जीवन-रेखा दीर्घायु होने का प्रारम्भिक लक्षण है, परन्तु प्रत्येक दशा में ऐसा नहीं हो सकता। जीवन रेखा चाहे कितनी ही लम्बी क्यों न हो जब तक शरीर स्वस्थ और निरोग न रहेगा अल्पायु होने का भय बना ही रहेगा। अतः ऐसी दशा में स्वास्थ्य-रेखा, जिसके द्वारा शारीरिक रोग और स्वास्थ्य-सम्बन्धी बहुत सी बातों का ज्ञान हो सकता हो कितने महत्व की रेखा हो सकती है—यह एक विचारणीय विषय है।

सामान्यरूप से हाथ में स्वास्थ्य-रेखा का होना अच्छा नहीं समझा जाता। यह जितनी ही कम होगी शरीर उतना

स्वास्थ्य-रेखा ोना खून में गरमी अथवा
ही अधिक स्वस्थ और निरोग होगा स्वभाव में भी चिड़-चिड़ापन
रेखा का बिलकुल ही अभाव हो नों का मत है कि यदि स्वास्थ्य-
चाहे जीवन-रेखा निर्बल ही क्यों न की ओर लाल हो तो हृदय
अधिक सम्भावना रहेगी। यह जितनी यह बात कई बार आ चुकी
दोषपूर्ण होगी स्नायविक शक्ति उतनी है कोई रोग नहीं पाया गया।
कमज़ोर होगा। जीवन-रेखा और स्वास्थ्य-रे और तनिक परिश्रम या
यह पहले ही कहा जा चुका है कि यह दोनों जाता है।
स्थान पर आपस में मिलेंगी वहां अवश्य ही किसी सिरे से शुरु हो
रूप में मनुष्य-जीवन में किसी विशेष अनर्थ का होना बतलायेंगी—जीवन-शक्ति का अभाव, मृत्यु का भय इत्यादि। इसके अतिरिक्त यदि यह दोनों रेखायें, स्वास्थ्य-रेखा और जीवन-रेखा, एक सी गहरी और बराबर हों तो इन दोनों के मिलने का स्थान ही उस मनुष्य की मृत्यु का समय होगा (स—स—चित्र नं० १०)।

स्वास्थ्य-रेखा, यदि हाथ में हो, तो आरम्भ से अन्त तक सीधी होनी चाहिये—परन्तु जीवन-रेखा को छूती हुई न जा रही हो। यदि यह रेखा बुध के स्थान (Mount of Mercury) तक न जाकर हृदय-रेखा पर ही समाप्त हो गई हो और नीचे उस स्थान पर जहाँ वह जीवन-रेखा से मिलती है चौड़ी हो गई हो तो ऐसी दशा में जब कि अंगुलियों के नाख़ूनों में अर्ध चन्द्र का निशान न हो हृदय की चाल मंद होगी और यदि इसके अतिरिक्त चन्द्र के चिन्ह

"स्वास्थ्य-रेखा हाथ में
यह एक प्रश्न है जिसके सम्बन्ध
में परस्पर मत-भेद पाया जाता
भाग्य-रेखा की तरह (भाग्य-रे
है) स्वास्थ्य-रेखा भी हथेली
समीप से शुरू होकर ऊ
ओर जाती है (देखो
रेखा के सम्बन्ध
रेखा है

ड़े हों तो यह हृदय की गति ो जाने का अचूक लक्षण है। ऐसा कार्य या व्यायाम न करें अधिक बढ़कर हृदय की चाल क्की बनी रहे—भाँग, चरस, शराब ओं का सेवन कभी न करना चाहिये। खा यदि बल खाई हुई टेढ़ी सीधी अनियमानुसार यकृत अर्थात् जिगर और गुर्दे के रोग सताते रहेंगे। ऐसी दशा में मनुष्य का स्वभाव चिड़-चिड़ा हो जाता है (घ—घ—चित्र नं० ११)। छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी हुई रेखा पाचन शक्ति को ख़राब करती है और यकृत सम्बन्धी रोगों को बढ़ाती है।

यदि रेखा में छोटे-छोटे द्वीप हों तो लम्बे नाख़ूनों के साथ फेफड़े और सीना कमज़ोर होगा और यदि नाख़ून चौड़े हों तो गले से सम्बन्ध रखने वाले रोग अधिक सतायेंगे। (नाख़ूनों के लिये देखो चित्र नं० ६—पृष्ठ संख्या ८३-८४)।

यदि यह रेखा मस्तक-रेखा और हृदय-रेखा के बीच में अधिक गहरी होकर पड़ी हो और रंग में लाल हो तो मस्तक सम्बन्धी रोगों की आशङ्का बनी रहेगी—मूर्छा रोग, मृगी, अर्द्धाङ्ग, पक्षाघात इत्यादि*।

---

*विशेष विवरण जानने के लिये देखो नाख़ून अध्याय पाचवाँ—पृष्ठ संख्या ८१।

स्वास्थ्य-रेखा का रंग लाल होना खून में गरमी अथवा ज्वर होने के लक्षण हैं। इसमें स्वभाव में भी चिड़-चिड़ापन आ जाता है। कुछ एक विद्वानों का मत है कि यदि स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा पर नीचे की ओर लाल हो तो हृदय कमज़ोर होगा। अनुभव में भी यह बात कई बार आ चुकी है; परन्तु ऐसी दशा में हृदय में कोई रोग नहीं पाया गया। हाँ वह कमज़ोर अवश्य होता है और तनिक परिश्रम या साधारण व्यायाम करने ही से धड़कने लग जाता है।

यदि स्वास्थ्य-रेखा नीचे जीवन-रेखा के सिरे से शुरु हो रही हो तो ऐसी दशा में फेफड़े कमज़ोर और हृदय की धड़कन बढ़ी हुई कही जा सकती है—विशेषतः जब कि स्वास्थ्य-रेखा उस स्थान पर जहाँ कि वह जीवन-रेखा से मिलती हो लाल रंग की हो। ऐसी दशा में, जहाँ तक मेरा अपना अनुभव है, हृदय में कोई विशेष रोग नहीं पाया जाता; परन्तु यदि स्वास्थ्य-रेखा टूटी हुई हो तो उस स्त्री या पुरुष की पाचन-शक्ति कमज़ोर होती है जिससे जिगर बढ़कर प्रायः ज्वर होने लगता है। हृदय भी कमज़ोर हो जाता है और उसमें धड़कन बढ़ जाती है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि युवा अवस्था के बाद हाथ में अच्छी स्वास्थ्य-रेखा प्रायः बहुत कम देखने को मिलती है। युवा अवस्था में टूटी-फूटी, बल खाई हुई या दोष पूर्ण स्वास्थ्य-रेखा का हाथ में अभाव हो तो स्वास्थ्य अच्छा रहेगा—

यह निश्चय है। हाथ में स्वास्थ्य-रेखा के न होने से स्वभाव में चञ्चलता अधिक पायी जाती है। वह स्त्री हो या पुरुष सदा प्रसन्न मुख रहेगा और अपना प्रत्येक कार्य फ़ुर्ती से करने वाला होगा।

स्पष्ट और निर्दोष स्वास्थ्य-रेखा हमारी स्मरण शक्ति और व्यापारिक योग्यता को बढ़ाती है, जब कि चौड़ी और बिन्दुदार रेखा भविष्य में शरीर का कमज़ोर होना बतलाती है—विशेषतः वृद्धावस्था में कमज़ोरी अवस्था से भी अधिक बढ़ जाती है। रेखा पर टूटे हुए स्थान और क्रूश के चिन्ह रोग होते हैं—यहाँ टूटे हुए स्थान पहले और क्रूश के चिन्ह भविष्य में होने वाले रोग समझने चाहियें। यदि यह रोग भयङ्कर या दुःसाध्य हुआ तो उसके चिन्ह हृदय, जीवन और मस्तक-रेखा पर अवश्य पाये जायेंगे। बहुत से रोग जो समय-समय पर शरीर में पैदा होते हैं स्वास्थ्य-रेखा पर लिखे रहते हैं। रेखा का लाल रंग सिर दर्द करने का लक्षण है। यहाँ ऐसे सिर दर्द से मतलब है जो बदहज़मी और पेट में गड़बड़ होने से पैदा होता है—ऐसी दशा में रेखा ऊपर के सिरे पर लाल होगी। सिर के स्नायु भाग में पीड़ा का होना, सिरमें सुइयाँ सी चुभना, न्यूरलजिया (Neuralgia) आदि मस्तक सम्बन्धी रोग जञ्जीर जैसी बनी हुई स्वास्थ्य-रेखा में जाने जाते हैं।

स्वाभाविक रूप में दोषपूर्ण स्वाध्य-रेखा बदहज़मी और स्वभाव में चिड़चिड़ापन होने का लक्षण है प्रायः बहुत से

हाथों में मैंने देखा है, कि यह रेखा छोटी होती है और अपने निश्चित स्थान से कुछ हटती हुई भाग्य-रेखा को नहीं काटती और ऊपर सिरे पर यह एक हृदय-रेखा की तरफ जाने वाली मुड़ी हुई रेखा से जुड़ जाती है और सूर्य्य के स्थान (Mount of Sun) पर एक तरह की दरार पड़ जाती है।

स्वास्थ्य-रेखा की यह चाल सिर दर्द होने का रोग बतलाती है। इसमें शरीर ज़्यादा बलिष्ट न होकर पतला दुबला होता है। यदि रेखा किसी जगह गहराई में कट रही हो तो रोग दुःसाध्य होना चाहिये। किसी हाथ में यह रेखा ऊपर की ओर बीच में ज़्यादा भारी होकर अपने में से एक शाख़ सूर्य्य की ओर भेजती है और स्वयं हथेली में ऊँची चली जाती है। यह नीचे की अपेक्षा ऊपर की तरफ ज़्यादा गहरी और लाल होती है।

ऐसी दशा में हम हाथ के दूसरे चिन्हों को देख कर कह सकते हैं कि युवा अवस्था में स्वास्थ्य कमज़ोर होगा, बीच में सुधर जायगा, बृद्ध अवस्था शुरू होते न होते सिर दर्द की शिकायत उत्पन्न होगी और सर्व प्रिय होने की लालसा के साथ ही साथ जनता में यश पाने की इच्छा भी बनी रहेगी। यह गुण उस कोण के समझने चाहियें जोकि स्वास्थ्य-रेखा से निकली हुई शाख़ और मस्तक-रेखा के मिलने से बनता है। यह दोनों बतलाती हैं कि शरीर पूर्णतया निरोग न रहते हुये भी उस स्त्री या पुरुष के हृदय में दुनियाँ में नाम पाने की

इच्छा बनी रहेगी। यश की इच्छा से वह अपनी उन्नति करने के लिये बड़े-बड़े प्रयत्न करेगा और समय के अनुसार कभी-कभी सफल भी होता रहेगा; परन्तु रोग उसके सिर पर सदा चक्कर लगाता रहेगा जिससे उसको अपने बहुत से कार्यों में सफलता पाने के लिये अधिक समय तक इन्तज़ार करना पड़ेगा और प्रायः अपनी जिन्दगी के अन्तिम दिनों में या उसके कुछ पहले ही अपने किये हुए परिश्रम का कुछ लाभ उठा सकेगा।

साथ ही हम देखते हैं कि स्वास्थ्य-रेखा भाग्य-रेखा और मस्तक-रेखा के साथ एक त्रिभुज (Triangle) बनाती है। इस के सम्बन्ध में बहुत से विद्वानों का मत है कि हाथ में त्रिभुज का चिन्ह मनुष्य के तान्त्रिक होने का लक्षण है। अनुभव में यह बात कहाँ तक आ चुकी है इसके विषय में यहाँ कुछ भी नहीं कहा जा सकता। ख़ैर कुछ भी हो मेरा इस सम्बन्ध में उनसे सहयोग नहीं है। मैं मानता हूँ कि त्रिभुज का चिन्ह जिस हाथ में पड़ा हो उस स्त्री या पुरुष की प्रकृति के साथ एक गहरा सम्बन्ध बतलाता है और यही कारण है कि ऐसे व्यक्ति पर हवा में रहने वाली बिजली का काफ़ी प्रभाव पड़ता देखा गया है। उनका यह भी कहना है कि उसको मृतक आत्मा अर्थात् भूत भी देखने में आया करते हैं, परन्तु अभी तक यह बात अनुभव में नहीं आई। हाँ ऐसा कई बार देखने में आया

है कि मस्तक और हृदय-रेखा के बीच में स्वास्थ्य रेखा लम्बी और गहरी होने से मृगी रोग का दौरा हुआ है और रोगी आकाश में किसी गुप्त छाया-शरीर की ओर इशारा करता हुआ भयभीत होकर बेहोश हो गया है। रोगी ने क्या देखा यह जानने के लिये एक दिन मैंने एक तेरह बरस की लड़की से पूछा। इस लड़की का हाल ही में विवाह होकर चुका था और पिछले दस महीने से इसे मृगी का दौरा पड़ने लगा था। जिस समय मैं उसे देखने गया वह बेहोश पड़ी थी।

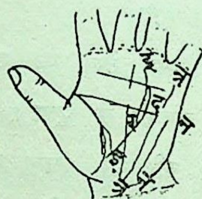
"सुशीला ! तुम क्या देख कर डर गईं थीं"—होश आने पर मैंने उस लड़की से पूछा।

"मैंने देखा कोई स्त्री जो लाल कपड़े पहने थी मेरे सामने आकर खड़ी हुई है। मैं डर गई, फिर न जाने क्या हुआ"—यह कहते न कहते वह लड़की फिर किसी की छाया देख कर भयभीत हुई और पहले की तरह ही बेहोश होकर बिस्तर पर जा पड़ी। अभी-अभी वह इसी बिस्तर पर बैठी मुझ से बात कर रही थी। यह स्त्री जो लाल कपड़े पहने थी कौन थी या क्या थी यह समझाने के लिये हमारे पास समय नहीं है। हमारा यहाँ का विषय स्वास्थ्य-रेखा है और इसी को लेकर हम आगे बढ़ते हैं।

स्वास्थ्य-रेखा का मस्तक-रेखा से मिल जाना एक सूचना है जो हमको अपनी शक्ति से बाहर कोई काम या अधिक

व्यायाम करने से रोकती है। जिस स्त्री या पुरुष के हाथ में ऊपर कही गई दोनों रेखायें मिल रही हों उसको शरीर में थकान होने से पहले ही अपना काम उस समय तक छोड़ देना चाहिये जब तक कि उसके शरीर की गई हुई शक्ति फिर वापिस न लौट आये।

यदि स्वास्थ-रेखा में कोई द्वीप का चिन्ह पड़ा हो तो यह भी जीवन-रेखा के साथ किसी समय तक स्वास्थ्य ख़राब होने का लक्षण समझना चाहिये। नीचे जो बायें



चित्र नम्बर १

हाथ का चित्र दिया गया है यह एक अत्यन्त परिश्रम, कालिज के विद्यार्थी का है और जिसकी रेखाओं को देख कर फल कहते समय मुझे अधिक सावधान रहने की आवश्यकता हुई थी। इसके दोनों हाथ में जीवन-रेखा समय से पहले ही निर्बल होकर अपना निश्चित मार्ग छोड़ बाहर की ओर जाने लगी थी; परन्तु एक कोण ने फिर इसको इसको स्वाभाविक दशा में लाकर रख दिया था। इस कोण से, जैसा कि ऊपर के चित्र में दिखाया गया

है स्वास्थ्य-रेखा शुरू होती है जिसमें बाँयें हाथ में एक द्वीप का चिन्ह उग आया है (र—द—चित्र नं० १)। सीधे हाथ की स्वास्थ्य-रेखा में कोई ऐसा चिन्ह नहीं था जो किसी रोग की सूचना दे रहा हो। हाँ, मस्तक-रेखा में अवश्य एक ऐसा चिन्ह पड़ा था जो कठिन परिश्रम या चिन्ता करने से रोक रहा था। मङ्गल-रेखा जो जीवन-रेखा के साथ जा रही है कोण के पास जाकर ही कमज़ोर पड़ जाती है। अतः यह रोग का यदि असाध्य नहीं तो कष्ट साध्य लक्षण है। इस में सन्देह नहीं कि उस विद्यार्थी की आर्थिक दशा अच्छी न थी और इसी लिये उसे अत्यन्त परिश्रम करना पड़ता था, फिर भी मैंने उसे आगे के लिये साव-धान रहने के लिये कहा।

स्वास्थ्य-रेखा यदि पूर्ण स्पष्ट और लम्बी हो तो वह व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, प्रसन्न चित्त और फ़ुर्तीला होगा। वह स्वार्थी नहीं होगा, उसकी स्मरण शक्ति अच्छी होगी और व्यापार में एक कुशल व्यापारी होगा। वह उन्नति करेगा परन्तु धार्मिक विचार और दया भाव उनमें सदा बना रहेगा। जहाँ तक शरीर से सम्बन्ध है वह निरोग रहेगा और आनन्द के साथ अपनी उन्नति का उपभोग करेगा। यदि स्वास्थ्य-रेखा लम्बी होगी तो जीवन-शक्ति भी बढ़ जायेगी और यदि वह कटी या टूटी हुई हो तो शरीर में कोई रोग होगा—इसमें सन्देह नहीं। समय जानने के

लिये देखना होगा कि जीवन-रेखा पर उसका चिन्ह कहाँ पड़ा है। यह जिस स्थान पर टूटी होगी या उसमें कोई द्वीप होगा उसी आयु में जाकर वह रोग होगा।

यदि किसी हाथ में "सहायक स्वास्थ्य-रेखा" भी हो तो यह लक्षण शुभ है। स्वास्थ्य-रेखा की सहायक-रेखा भाग्य और स्वास्थ्य को साथ लाती है और यदि यह सहायक-रेखा हलके गुलाबी रङ्ग की स्वास्थ्य-रेखा के साथ हो तो स्वास्थ्य के सम्बन्ध में उसके बुरे प्रभाव को मध्यम करने के लिये औषधि का काम करती है। परन्तु ऐसी दशा में दो स्वास्थ्य-रेखा हज़ारों हाथ में से किसी एक में मिलती है। कुछ भी हो, हाथ में स्वास्थ्य-रेखा का न होना सब से अच्छा होता है।

स्वास्थ्य-रेखा पर यद्यपि ऊपर पर्य्याप्त रूप से प्रकाश डाला जा चुका है, फिर भी यहाँ संक्षेप में इसका कुछ परिचय करा देना अधिक उपयोगी होगा।

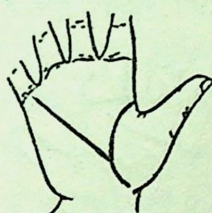
यह रेखा, "स्वास्थ्य-रेखा" हथेली के नीचे मणिबन्ध या उसके पास ही आरम्भ होकर ऊपर बुध की अँगुली की तरफ़ जाती है। यह लम्बाई में जितनी सीधी होगी उतनी ही अच्छी है। यह रेखा जीवन-रेखा को स्पर्श या उसको पार न कर जानी चाहिये।

यदि स्वास्थ्य-रेखा में से कोई शाख या रेखा स्वयं किसी "टूटी हुई जीवन-रेखा" को पार करके जा रही हो तो मृत्यु हो जाने का भय दिखलाती है (चित्र नं० २)।

दूसरी दशा में स्वास्थ्य-रेखा या उसकी शाख़ जीवन-रेखा को केवल स्पर्श ही कर रही हो तो किसी भयङ्कर या असाध्य रोग का होना बतलाती है—सम्भव है उस स्थान पर जहाँ वह जीवन-रेखा को छू रही हो मृत्यु होने की भी सम्भावना हो (चित्र नं० ३)।

स्वास्थ्य-रेखा यदि जीवन-रेखा को एक ओर बचाकर हथेली के दूसरी ओर मुड़ गई हो तो रोग चाहे असाध्य ही क्यों न जान पड़ता हो वह रोगी स्वास्थ्य-लाभ कर


चित्र नम्बर २


चित्र नम्बर ३


चित्र नम्बर ४

सकेगा, क्योंकि रेखा की यह चाल जीवन-शक्ति को बढ़ाकर उस पुरुष या स्त्री को दीर्घायु बना देती है (चित्र नं० ४)।

यदि स्वास्थ्य-रेखा मस्तक-रेखा के दोनों ओर कोई द्वीप बना रही हो तो यह फेफड़े और सीना कमज़ोर होने का लक्षण है और यदि अधिक सावधान न रहा जाय तो न्यूमोनिया या विषम ज्वर (Tu-ber-cu-lo-sis) दोनों का अधिक भय रहता है—विशेषतः जब कि अँगुलियों के नाख़ून लम्बे और "बादाम की शक्ल के हों" (चित्र नं० ५)।

यदि स्वास्थ्य-रेखा हृदय-रेखा के नीचे और मस्तक-रेखा के ऊपर कोई द्वीप या घेरा बना रही हो तो नाक और गले से सम्बन्ध रखने वाले रोग अधिक उत्पन्न होते हैं। यहाँ यह देखना चाहिये कि द्वीप का चिन्ह मस्तक-रेखा को छू रहा है (चित्र नं० ६)।

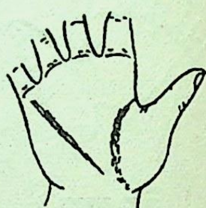
यदि किसी हाथ में स्वास्थ्य-रेखा चौड़ी और भारी हो और जीवन-रेखा छोटे-छोटे टुकड़ों से मिलकर बनी हुई रस्सदार या जञ्जीर के समान बनी हो तो जीवन के आरम्भ काल से अन्त तक शरीर रोगी रहेगा (चित्र नं० ७)।



चित्र नम्बर ५



चित्रनम्बर ६



चित्र नम्बर ७

स्वास्थ्य-रेखा के विषय में हम इतना और कह देना चाहते हैं कि इसके द्वारा हम हृदय और मस्तक-सम्बन्धी बहुत से रोग जान लेते हैं। यहाँ यह याद रखना होगा कि रेखा लम्बी होनी चाहिये—चौड़ी नहीं—परन्तु सीधी और स्पष्ट। लहरदार स्वास्थ्य-रेखा स्वभाव में चिड़चिड़ापन उत्पन्न करती है और यदि हृदय-रेखा और मस्तक-रेखा को छू रही हो तो हृदय या मस्तक सम्बन्धी रोग या कमज़ोरी बतायेगी।

स्वास्थ्य-रेखा को काटने वाली रेखायें सिर दर्द का होना बतलाती हैं, इसी तरह और भा रेखायें जाननी चाहियें।

विशेष-परिचय

निर्दोष लम्बी, और सीधी स्वास्थ्य-रेखा यदि जीवन-रेखा की ओर न जाकर चन्द्र-स्थान की ओर घूम गई हो तो निर्बल जीवन-रेखा को जीवनशक्ति देकर उसके दुष्ट प्रभावों का विरोध करती है। ऐसा व्यक्ति स्वास्थ्यपूर्ण और दीर्घायु होना चाहिये।

यदि रेखा लम्बाई में छोटी हो और हृदय-रेखा और मस्तक-रेखा को जोड़ रही हो तो मस्तक पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है। ज्वर की ओर से भी अधिक भय रहता है—विशेषतः जब कि मस्तक-रेखा पर द्वीप का चिह्न पड़ा हो।

यदि स्वास्थ्य-रेखा में मस्तक-रेखा के ऊपर कोई द्वीप पड़ा हो तो नाक और गले से सम्बन्ध रखने वाले रोग सताते हैं।

हृदय-रेखा और मस्तक-रेखा के बीच की स्वास्थ्य-रेखा में यदि कोई बड़ा सा द्वीप आया हो तो यह फेफड़े और वक्ष अर्थात् सीना कमज़ोर होने का लक्षण है।

यदि यह रेखा मस्तक-रेखा को पार करते समय अधिक गहरी और चौड़ी हो गई हो तो भारी सिर दर्द होने की शिकायत रहती है।

यदि रेखा गहरी और रङ्ग में अधिक लाल हो तो ज्वर का होना एक साधारण सी बात समझी जाती है।

लहरदार, मुड़ी हुई और टूटी हुई स्वास्थ्य-रेखा स्वभाव में चिड़चिड़ापन बतलाती है। ऐसी दशा में यकृत अर्थात् कलेजे की ओर से अधिक शिकायत रहती है और पाचनशक्ति भी मध्यम पड़ जाती है।

हृदय-रेखा और मस्तक-रेखा के साथ मिलकर यदि स्वास्थ्य रेखा हथेली में कोई त्रिभुज बना रही हो तो हृदय कमज़ोर होना चाहिये—विशेषकर ऐसो दशा में जब कि हृदय-रेखा में कोई द्वीप आ गया हो।

स्वास्थ्य-रेखा का जीवन-रेखा से मिलजाना अशुभ है। यह जिस स्थान पर जीवन-रेखा से मिलेगी वहीं पर बतलायेगी कि कोई व्याधि शरीर की प्राण-शक्ति को कम कर रही है। दूसरे शब्दों में यह स्थान जहाँ स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से मिलती है उसकी आयु की सीमा होती है।

स्वास्थ्य-रेखा को काटनेवाली 'अवरोध-रेखायें' या क्रूश के चिह्न भविष्य में उत्पन्न होनेवाले रोग होते हैं जब कि वह रोग जो पहले हो चुके हैं रेखा को तोड़ जाते हैं या उसको पतली कर जाते हैं।

स्वास्थ्य-रेखा यदि किसी स्थान पर बुरी तरह टूटी हो तो कोई ऐसा रोग होगा जो अधिक समय तक शरीर को लगा रहेगा।

कुछ एक विद्वानों का मत है कि स्वास्थ्य-रेखा के नीचे क्रूश या तारे का चिह्न स्त्री के हाथ में "निःसन्तान" होने

का लक्षण है। परन्तु मैंने आजतक यह चिह्न किसी हाथ में नहीं देखा। सम्भव है भविष्य में कोई देख पड़े—यहाँ विवाह-रेखा पर अवश्य एक निगाह डाल लेनी चाहिये।

स्वास्थ्य-रेखा के सम्बन्ध में ऊपर जो कुछ कहा जा चुका है उससे हस्त-सम्बन्धी कुछ आवश्यक सूचनायें हमको मिल जाती हैं। रोगोत्पादक या मृत्युसूचक किसी रेखा या चिह्न को देखकर रोग होगा या मृत्यु होगी इस सम्बन्ध में अपना अंतिम निर्णय कर लेने से पहले यह भी देख लेना चाहिये कि अधिकारी वर्ग, स्त्री या पुरुष, जिसका हाथ वह देख रहा है किसी ऐसी स्थिति में होकर गुज़र रहा है या नहीं जिसमें ऊपर कही गई कोई दुर्घटना हो जाने की सम्भावना हो। उदाहरण के लिये कोई भी चिह्न जो मस्तक सम्बन्धी किसी रोग की सूचना दे रहा हो उस समय तक अपना बुरा प्रभाव नहीं दिखा सकेगा जब तक कि मस्तक की ओर से असावधानी न की जाय या कोई ऐसा कठिन परिश्रम, न करना पड़े जिसका मस्तक पर अधिक दवाव पड़ता हो—पढ़ने लिखने में अत्यन्त परिश्रम, चिन्ता, इत्यादि। ऐसी दशा में हस्त-रेखा के विद्यार्थी का कर्तव्य है कि वह अपने सम्बन्ध में आये हुए उस स्त्री या पुरुष को आने वाली आपत्ति की सूचना देकर आगे के लिये साव धान कर दे।

———

आठवाँ अध्याय

भाग्य-रेखा

भाग्य-रेखा जिसको शनि-रेखा भी कहा जाता है वह पाँचवी रेखा है जिसके सम्बन्ध में हम कह सकते हैं कि यह हाथ की सभी मुख्य रेखाओं से अधिक रहस्य-मयी और महत्वपूर्ण है। हमारे भविष्य जीवन और भाग्यरेखा का परस्पर कितना गहरा सम्बन्ध है यह आगे चलकर मालुम होगा। परन्तु यहाँ इतना अवश्य कह देना है कि सांसारिक सभी सामयिक घटनायें, उन्नति और अवनति, जीवन मार्ग में आने वाली अड़चन और बाधायें, और वह आत्मायें, स्त्री या पुरुष, जो अनायास ही अपने प्रभाव से हमारे कार्य्य-क्षेत्र में एक उथल-पुथल मचाकर उसमें एक युगान्तर उपस्थित

कर देती हैं, इस भाग्य-रेखा पर लिखी होती हैं--या यों कहिये कि इसके द्वारा जानी जाती हैं ।

भाग्य-रेखा, यह याद रखना चाहिये, सदा अपनी एक ही दशा में नहीं रहती। यह हमारे भविष्य की ओर संकेत अवश्य करती है, परन्तु साथ ही बदलती भी रहती है । जब कभी कोई अशुभ सूचना हमको हाथ में मिलती है तो हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपनी सभी शक्तियों को इकट्ठा करके उसका सामना करें और इससे पहले कि कोई अशुभ चिन्ह अपना बुरा फल दिखाये उसे रोकने का पूरा-पूरा प्रयत्न करें । इस में सन्देह नहीं कि यदि हमारी इच्छा-शक्ति बलवान होगी तो हम अपने कार्य में सफल होंगे और किसी भी अशुभ चिन्ह या रेखा को अपना बुरा फल दिखाने से रोक सकेंगे। इसके सिवाय यदि विचार निर्बल और अस्थिर हुए तो सम्भव है कि हम अपने साहस में पूर्ण सफल न हो सकें और यदि अंगूठे के नीचे का भाग अर्थात् शुक्र का स्थान और चन्द्रमा का स्थान बहुत ज़्यादा उभरा हुआ होगा और हमारी इच्छायें बलवान होने की अपेक्षा उन में दुराग्रह का भाव अधिक होगा तो हम अपनी आदतों से मजबूर होकर नुक़सान उठायेंगे और "हमारे भाग्य में यही बदा था"—कह कर पश्चात्ताप करेंगे । याद रहे यदि हम भाग्य की परवा न करेंगे तो भाग्य भी हमारी परवा न करेगा ।

भाग्यरेखा हाथ में नीचे लिखे गये चार स्थानों से आरम्भ होती है।

१—मणिबन्ध से शुरू होती है।

२—जीवन-रेखा को स्पर्श करके जाती है।

३—चन्द्रमा के स्थान से चलती है।

४—भाग्य-रेखा के आरम्भ होने का चौथा स्थान हथेली का मध्यभाग अर्थात् मङ्गल का मैदान है।

इसके अतिरिक्त यह भी देखा गया है कि किसी हाथ में यह रेखा अर्थात् भाग्य-रेखा हृदय-रेखा से आरम्भ हुई है। पूर्व इसके कि भाग्य-रेखा पर कोई प्रकाश डाला जाय हाथ की बनावट कैसी है—इसका विचार कर लेना बहुत ज़रूरी। यह रेखा सु-सम्पन्न और भाग्यशाली होकर भी दार्शनिक, व्यवसायिक या विषय हाथ की अपेक्षा समकोण (Square) चमसाकार और निकृष्ट हाथ में उतनी गहरी या स्पष्ट नहीं होती। इस लिये दार्शनिक, व्यवसायिक और विषम हाथ में स्पष्ट और-सीधी रेखा उतना ही अच्छा फल नहीं दिखा सकेगी जितना कि वही रेखा समकोण, चमसाकार या दूसरे किसी उपयोगी हाथ में दिखा सकती है। प्रायः देखा गया है कि बहुत से विद्यार्थी समकोण या चमसाकार हाथ में कमज़ोर भाग्य-रेखा देखकर "भाग्य रेखा अच्छी नहीं है"—ऐसा कह

देते हैं जब कि विषम और व्यवसायिक हाथ में सीधी और गहरी रेखा देख कर उस स्त्री या पुरुष को, जिसके हाथ में यह रेखा हो अत्यन्त भाग्यशाली समझ लेते हैं।

१—पहली दशा में यदि भाग्य-रेखा मणिबन्ध या उसके समीप कुछ उपर चलकर स्पष्ट रूप में सीधी शनि के स्थान (Mount of Saturn) को जा रही हो तो हम कह सकते हैं कि वह व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, कोई भी हो भाग्यवान होगा। कोई आश्चर्य नहीं कि उसके जीवन-मार्ग में अनेक बाधायें भी आयें परन्तु वह उन सबको पार करता हुआ सदा अपने कामों में सफल होगा—इसमें सन्देह नहीं (ग—ग—चित्र नं० ११)। यह रेखा ग्रह-स्थान पर जितनी अधिक गहरी होगी इसका फल उतना ही शुभ होगा।

यदि यह रेखा अंगुली के अधो-भाग तक जा रही हो तो आवश्यकता से अधिक लम्बी होने से अशुभ समझी जाती है। प्रायः यह रेखा शनि के स्थान के पास सर्प-जिव्हाकार हो जाती—यह शुभ लक्षण हैं। परन्तु इसका असाधारण रूप से ऊँचा चला जाना अच्छा नहीं—क्योंकि चिन्ता लगाना और उदास बनाये रखना शनि देवता का साधारण गुण है। कमज़ोर हाथमें यदि यह रेखा अधिक ऊँची जा रही हो तो इसका फल और भी बुरा होता है। ऐसी दशा में मनुष्य आवेश में आकर बहुत से ऐसे काम कर डालता है जिनका बुरा फल वह समझता है और अन्त में बुरी तरह बदनाम होता है। यदि

अँगुली में क्रूश या तारे का चिन्ह पड़ा हो तो वह पकड़ा जाकर सजा पायगा। उस पर कौनसा अभियोग लगाया जायगा यह उसकी मस्तक-रेखा और हृदय-रेखा देख कर बताया जा सकता है, जैसे—यदि हृदय-रेखा मध्यमा अंगुली के बिल्कुल पास होगी और साथ ही शुक्र-स्थान अधिक ऊँचा होगा तो वह अत्यन्त कामी होगा और सम्भवतः उसी पाप के अभियोग में उसे दण्ड भोगना पड़ेगा।

प्रायः देखा गया है और यह अनेक विद्वानों का मत भी है, कि यदि हाथ श्रेष्ठ और उपयोगी होगा तो यह ऊँची भाग्य-रेखा सफलता के देने वाली होगी।

ऊपर कहे गये सभी नियम हाथ के नीचे के भाग में भी लागू होते हैं। यदि भाग्य-रेखा अधिक नीची जाकर मणिबन्ध-रेखाओं को काटकर निकल गई हो तो इसका फल भी ऊपर अंगुली में चली जाने वाली रेखा की तरह बुरा ही होता है।

२—यदि भाग्य-रेखा जीवन-रेखा से आरम्भ होती हो तो यह लक्षण शुभ हैं। यह रेखा, स्पष्ट और सीधी हो तो अधिक उपयोगी होगी। क्योंकि ऐसा मनुष्य स्वयं अपनी योग्यता और परिश्रम द्वारा अपने भाग्य को बनाता है। दूसरे शब्दों में उसके भाग्य और जीवन का परस्पर सहयोग होता है। इसलिये भाग्य के विरुद्ध कोई ऐसी दुःसाध्य घटना नहीं घटती जिसका उसके जीवन पर कोई भयंकर प्रभाव पड़े या उसकी उन्नति के मार्ग में किसी तरह की बाधा आ उपस्थित हो। यदि भाग्य-

रेखा आरम्भ से अन्त तक टूटी हुई हो और कोई अवरोध-रेखा उसको काटकर न जा रही हो तो उन्नति का मार्ग निष्कण्टक रहेगा—इसमें सन्देह नहीं। इसके अतिरिक्त यदि भाग्य-रेखा हथेली के मणिबन्ध या उसके पास से शुरू होकर जीवन-रेखा को स्पर्श करती हो या उससे मिल गई हो तो यह बतलाती है कि उस मनुष्य ने अपने जीवन का पहला भाग गृह-सम्बन्धी झगड़ों में, गृहस्थ के बन्धन में या ऐसे मित्रों (स्त्री या पुरुष) के चक्कर में व्यतीत किया है जिन्होंने उसके जीवन के आरम्भ काल में होने वाली उन्नति को रोक दिया है। ऐसी दशा में भाग्य-रेखा जिस स्थान से जीवन-रेखा को छोड़कर ऊपर शनि की ओर उठने लगेगी वहीं से उन्नति होना शुरू होगी—यह निश्चय है। इसमें यदि व्यापार और दस्तकारी की रेखायें अपना सहयोग दे रही हों तो यह लक्षण और भी अच्छा है। व्यापार और दस्तकारी में सफलता मिलेगी। परन्तु कहाँ तक—यह शनि के गुणों पर निर्भर है।

३—यदि भाग्य-रेखा स्पष्ट और अपने स्वाभाविक रूप में चन्द्रमा के स्थान से शुरू होती हो तो उन्नति होगी अवश्य, परन्तु स्थायी नहीं हो सकती। क्योंकि इस श्रेणी के मनुष्य प्रायः लुढ़कते हुए पत्थर के समान शीघ्र ही दूसरों के कहने में आकर अपने निश्चित विचारों को बदल देने वाले होते हैं। वह उन्नति की ओर बढ़ते हैं—परन्तु स्वतन्त्र होकर नहीं। उनका भाग्य चञ्चल प्रकृति और कामासक्त चन्द्रमा के आधीन

रहता है और प्रायः स्त्रियों का उन पर अधिक प्रभाव या आकर्षण होता है। जो मनुष्य किसी कारण वश लोकप्रिय बन गये हों—प्रायः यह रेखा उनके हाथ में अधिक पाई जाती है। यदि यह रेखा बृहस्पति के स्थान पर समाप्त होती हो और उसके ऊपर क्रूश या तारे का चिन्ह पड़ा हो तो यह एक सुखमय विवाह सम्बन्ध होने का लक्षण है। यह सम्बन्ध सौभाग्य पूर्ण समझा जा सकता है—यदि दूसरे शुभ चिन्ह भी साथ में शुभ फल के देने वाले पड़े हों। एक अविवाहित युवक के हाथ में चन्द्रमा के स्थान से बृहस्पति के स्थान को आने वाली भाग्य-रेखा के उपर क्रूश का चिन्ह देखकर "इस युवक का विवाह किसी योग्य कन्या के साथ होना चाहिये"—यह शब्द कहे थे। साथ ही यह भी कह दिया था कि यह सम्बन्ध सुखमय होगा। परन्तु ऐसा न हो सका। क्योंकि एक 'अवरोध-रेखा' जिस पर मैंने उस समय कुछ ध्यान न दिया था विवाह सूचक उस क्रूश को काट कर जा रही थी। विवाह हुआ अवश्य और वह भी एक योग्य और धनाढ्य युवती के साथ—परन्तु विवाह होने के ठीक दस महीने बाद उस युवती की मृत्यु हो गई। यह एक अनिष्ट था जो ऊपर कही गई अवरोध-रेखा ने क्रूश को काट कर किया यद्यपि स्त्री का वियोग उस नव विवाहित युवक के कोमल हृदय पर एक गहरी चोट थी फिर भी उसकी हृदय-रेखा पर उसका कोई चिह्न न देख पड़ता था। सम्भव था इस असामयिक मृत्यु का इस युवक के हृदय पर कोई ठोस प्रभाव न पड़ा

हो। क्योंकि यह भी एक ऊँचे घराने का लड़का था और उस युवती की मृत्यु के पहले ही उसे शीघ्र ही दूसरा विवाह करने की आशा दिलाई जा चुकी थी। लगातार सात महीने बीमार रहने के बाद उस युवती की मृत्यु जीर्णज्वर (Tu-ber-culo-sis) से हुई थी।

यदि सीधी शनि के स्थान पर जाने वाली किसी भाग्य-रेखा में वैसी ही कोई दूसरी रेखा चन्द्रमा के स्थान से आकर मिलती हो तो यह किसी ऐसे व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, की ओर संकेत करती है जिस का उस स्त्री या पुरुष की,—जिस के हाथ में वह रेखा है—उन्नति के मार्ग में आना कोई विशेषता रखता हो। यहाँ इतना कह देना है कि चन्द्रमा के स्थान से आने वाली सभी प्राभाविक-रेखायें वह प्रभावकारी व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, होते हैं जो हमारे जीवन पर अपना प्रभाव डालते हैं और कभी-कभी उसमें एक उथल-पुथल मचा देते हैं (ठ—ठ— चित्र नं० ११)।

यह रेखायें पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के हाथ में अधिक गहरी और स्पष्ट रूप में पायी जाती हैं।

यदि कोई प्राभाविक-रेखा भाग्य-रेखा की अपेक्षा देखने में अधिक स्पष्ट और गहरी होकर उसी के समानान्तर ऊपर की ओर जा रही हो तो यह किसी धनवान से मित्रता या विवाह सम्बन्ध बतलाती है—संयोग कैसा होगा, मित्रलाभ या विवाह सम्बन्ध, यह जानने के लिये विवाह-रेखा देखनी चाहियें। यदि

भाग्य के उदय और विवाह होने का समय एक ही आ पड़ा हो तो यह चन्द्रमा के स्थान से आने वाली प्राभाविक-रेखा पुरुष के हाथ में किसी धनवान स्त्री के साथ विवाह या प्रेम सम्बन्ध का होना बतलाती है। विवाह और भाग्योदय का समय जानने के लिये आगे दिये हुए "सप्त वर्षीय नियम" का प्रयोग करना चाहिये।

यदि भाग्य-रेखा शनि के स्थान को न जाकर किसी और ग्रह-स्थान की ओर जा रही हो तो यह उसी ग्रह-देवता के गुणों के आधार पर, जिसके नीचे वह जा रही है, किसी असाधारण उन्नति या सफलता का होना बतलाती है, जैसे— यदि यह 'भाग्य-रेखा' या इसकी कोई शाख़ बृहस्पति की ओर जाती हो (म—म—चित्र नं० ११) तो वह कोई उच्च पदवी दिला कर सम्मान और यश की वृद्धि करती है—जनता को अपनी आज्ञानुसार चलाने की शक्ति या उसका मार्गदर्शक बनकर अपने आदेशानुसार कार्य कराने की योग्यता इत्यादि। यह व्यक्ति उच्च पद पाने की इच्छा करने वाले रजोगुणी, साहसी और अपनी योजनाओं को सफल बनाने में दृढ़-सङ्कल्प और विचारशील होते हैं। यह जनता पर शासन करना ख़ूब जानते हैं और कोई भी ज़िम्मेवरी अपने ऊपर लेकर एक योग्य अधिकारी बन सकते हैं।

प्रायः देखने में आया है कि बहुत से हाथों में भाग्य-रेखा शनि के स्थान पर पहुँच कर फिर अपना मार्ग बदलती है और

वहाँ से बृहस्पति के स्थान पर चली जाती है। ऐसी दशा में जीवन-काल के दोपहर में अर्थात् बृद्धावस्था की ओर चौथेपन में इतनी अधिक उन्नति होगी कि वह व्यक्ति पूर्णरूप से सन्तुष्ट हो सकेगा—यह कहा जा सकता है।

साधारण रूप में भाग्य-रेखा का, चाहे वह किसी स्थान से आरम्भ होती हो मस्तक और हृदय-रेखा को पार कर शनि के स्थान पर पहुँचना शुभदायक है। ऐसी दशा में उन्नति होगी—इसमें सन्देह नहीं; परन्तु प्रायः बहुत सी बातें अपने अधिकार से बाहर निकली भी पाई जाती हैं।

विस्तार में अत्यन्त छोटी भाग्य-रेखा जहाँ तक भाग्य से सम्बन्ध है अधिक उपयोगी नहीं होती। यह लम्बाई में अधिक होगी तो भाग्य का विस्तार भी उतना ही विस्तृत और बड़ा होगा। परन्तु यह रेखा किसी भी अवस्था में आवश्यकता से अधिक लम्बी होकर नीचे मणिबन्ध-रेखा को पारकर या ऊपर मध्यमा अँगुली के अधो-भाग में न पहुँच जानी चाहिये।

यदि हृदय-रेखा भाग्य-रेखा को ऊपर उठने से रोक रही हो है तो बतलाती है कि उन्नति के मार्ग में प्रेम बाधक हुआ है और वह व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, प्रेम के आकर्षण में आकर्षित उन्नति की ओर बढ़ने से रुक गया है।

इसके अतिरिक्त यदि भाग्य-रेखा सहसा मस्तक-रेखा के नीचे रुक गई हो तो उस व्यक्ति की उन्नति का मार्ग रोक-देना दोष मस्तक का है अथवा वह स्वयं अदूरदर्शिता या मूर्खता

के कारण अपनी अवनति का कारण हुआ है या भविष्य में होगा—ऐसा समझना चाहिये। ऐसी दशा में यदि रेखा मस्तक-रेखा के ऊपर न निकली हो तो वह अवनति या नुकसान असाध्य होगा और उसका कोई प्रतिकार न हो सकेगा—अतः सावधान रहना चाहिये।

४—भाग्य-रेखा के आरम्भ होने का चौथा स्थान मङ्गल-क्षेत्र या मङ्गल का मैदान रह जाता है। ऐसी दशा में भाग्य-रेखा का हथेली के मध्यभाग मङ्गल के मैदान से आरम्भ होना सूचित करता है कि जीवन के पहले भाग में कोई विशेष घटना नहीं घटी। सम्भवतः पिछला जीवन आपत्तियों से भरा हुआ चिन्तित और क्लेश-पूर्ण रहा है और भविष्य में उन्नति देर से हुई है। परन्तु यदि यह रेखा मङ्गल के मैदान से ऊपर अपनी स्वाभाविक चाल में निर्दोष होकर शनि की ओर जा रही हो तो वह मनुष्य अपने जीवन के मार्ग में आई हुई कठिनाइयों को पार करता हुआ अपना भविष्य सुखमय बना सकेगा—ऐसा समझना चाहिये।

रेखा का मस्तक या हृदय-रेखा से रुक जाना क्या सूचित करता है यह पहले बताया जा चुका है। अब दूसरी ओर चलिये। यदि भाग्य-रेखा मस्तक-रेखा से ऊपर उसको स्पर्श करके चलती हो तो यहाँ बतलाती है कि उस मनुष्य या स्त्री की उन्नति उसकी बुद्धि और मस्तिष्क शक्ति के द्वारा होगी--यहाँ आयु ३५ बरस की समझनी चाहिये। (देखो–'सप्त वर्षीय नियम')।

यदि भाग्य-रेखा हृदय-रेखा को स्पर्श करके उठ रही हो तो यह उन्नति जीवन काल के दोपहर में होगी (आयु ५६ बरस —देखो "सप्त वर्षीय नियम) । ऐसी दशा में छप्पन बरस पहले का जीवन केवल साधारण या अन्धकार मय होने के अतिरिक्त और कैसा हो सकता है ?

भाग्य-रेखा यदि किसी स्थान पर टूट गई हो तो यह, उस स्थान पर जहाँ टूटी है, दुर्भाग्य या किसी प्रकार की हानि का लक्षण है—व्यापार में नुकसान धन की ओर से आपत्ति का आना इत्यादि । परन्तु यदि किसी टूटी हुई भाग्य-रेखा का एक भाग समाप्त होने से पहिले ही दूसरा भाग आरम्भ हो गया हो तो यह मनुष्य-जीवन में अचानक कोई परिवर्तन होने का चिन्ह है और यदि रेखा शुभ फल के देने वाली हो तो यह परिवर्तन उस व्यक्ति को, जिसके हाथ में यह रेखा होगी, उन्नति की ओर ले जाकर उसकी इच्छा और अभिलाषाओं को पूरा करने वाला होगा (च—च—चित्र नं० १३) ।

वह सभी रेखायें जो भाग्य-रेखा को काट कर जाती हैं वह स्त्री या पुरुष होते हैं जो अपना प्रभाव लेकर समया-नुसार जीवन-मार्ग में बाधायें डालते हैं या अन्य किसी प्रकार से उसको प्रभावित करके कभी-कभी उसमें एक युगा-न्तर डाल देते हैं और उस स्त्री या पुरुष को जिसके हाथ में यह रेखायें होती हैं कहीं से कहीं ले जाते हैं । भाग्य-रेखा को काट कर जाने वाली यह रेखायें "अवरोध-रेखा" कह

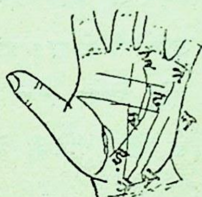
लाती हैं (त—त—चित्र नं० १३)। यह जिस स्थान पर भाग्य-रेखा को काटेंगी या पार कर जायेंगी वही उनके द्वारा उत्पन्न की हुई घटनाओं का समय होगा।

यदि हाथ में भाग्य-रेखा का बिल्कुल ही अभाव हो तो इस से यह न समझ लेना चाहिये कि ऐसा जीवन नैराश्यपूर्ण या अन्धकारमय ही होगा। हाथ में भाग्य-रेखा का न होना एक साधारण सी बात है। ऐसा जीवन प्रायः अकर्मण्यता से भरा हुआ सन्तुष्ट और घटना रहित होता है। ऐसे स्त्री या पुरुष "जो भाग्य में होगा वह अवश्य सामने आयेगा"—इस सिद्धान्त को मान कर अपना भविष्य जीवन सुधारने के लिये अपने मस्तिष्क को कष्ट देना आवश्यक नहीं समझते।

चित्रमय भाग्य-रेखा

प्रायः बहुत से हाथों में भाग्य-रेखा में द्वीप का चिन्ह होता है। कुछ विद्वानों का मत है कि यह द्वीप का चिन्ह "अपमान सूचक" है और अपने समय पर मनुष्य या उस स्त्री का जिसकी रेखा में यह चिन्ह हो अपमान कराता है। मेरा अपना अनुभव है कि यह केवल अपमान ही नहीं करता बल्कि समयानुसार जीवन में कुछ ऐसी आपत्तियाँ ला उपस्थित करता है जो प्रायः असह्य हो जाती हैं। इन आपत्तियों का कारण, प्रायः देखा गया है, उस व्यक्ति की मूर्खता या अदूरदर्शिता ही होती है। यद्यपि भाग्यरेखा

में द्वीप का चिह्न आ जाना इतना अशुभ नहीं समझा जाता जितना रेखा का स्वयं टूट जाना फिर भी यह द्वीप जब तक रेखा पर बना रहता है अपना अशुभ ही फल दिखाता है (र—द—चित्र नं० १)। यदि शुक्र और चन्द्रमा का स्थान असाधारण रूप से बड़ा हो और हृदय-रेखा भी मस्तक-रेखा की अपेक्षा अधिक बलवान होकर पड़ी हो तो यह द्वीप का चिन्ह कुछ ऐसे प्रेम सम्बन्धों का परिचय देता है जो उस स्त्री या पुरुष के कलङ्क का कारण होते हैं। कभी-



चित्र नम्बर १



चित्र नम्बर २

कभी इन प्रेम सम्बन्धों में विश्वासघात और निराशा भी साथ जाती है। यश में कमी करना, अधिकारों में अभाव और अपमान इस द्वीप का साधारण गुण है।

अन्य शुभ चिन्हों से अँकित उपयोगी हाथ में यह द्वीप पहले की अपेक्षा निर्बल हो जाता है। यदि किसी के साथ प्रेम सम्बन्ध भी हुआ तो इच्छा शक्ति निर्बल होकर भी हृदय और सिद्धान्त दृढ होते हैं। इसलिये कोई भारी

अनिष्ट हो जाने की सम्भावना कम रह जाती है। प्रेम होता है सही—परन्तु छिपा हुआ।

भाग्य-रेखा में द्वीप का चिन्ह प्रत्येक दशा में अपमान या मूर्खता का लक्षण है—यह कभी न समझना चाहिये। यदि यह किसी अविवाहित स्त्री के हाथ में पड़ा हो तो वहाँ किसी दृढ़ सम्बन्ध का होना बतलाता है। परन्तु ऐसा सम्बन्ध कभी स्थायी हुआ हो—यह आज तक नहीं देखा गया। यदि इसके साथ क्रूस का चिन्ह भी पड़ा हो तो यह दुर्भाग्य का लक्षण है—यहाँ हृदय-रेखा और मस्तक-रेखा पर भी विचार कर लेना अधिक उपयोगी होगा। हां, इतना अवश्य ध्यान में रखना चाहिये कि किसी हाथ में द्वीप का चिन्ह प्रेम सम्बन्ध कराता है और किसी में अनिष्ट या अपमान कराता है।

प्रायः बहुत से हाथों में भाग्य-रेखा नीचे की ओर सर्प-जिव्हाकार होती देखी गई है (त्र—चित्र नं० २)। ऐसी दशा में अधिकारी अपनी युवा अवस्था में अस्थिर, डाँवाडोल या अनिश्चित रह कर भी जहाँ तक शरीर से सम्बन्ध है अस्वस्थ और निर्बल रहा है—यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है। यदि इसके साथ क्रूस का चिन्ह भी पड़ा हो (र—चित्र नं २) तो यह माता पिता को धन की ओर से हानि पहुँचने का लक्षण है—ऐसा अनेक विद्वानों का मत है। कमज़ोरी और मानसिक दुर्बलता, इस

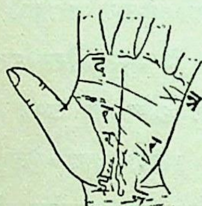
में सन्देह नहीं, कि जीवन-रेखा को प्रमाण मान कर ही बताई जा सकती है—क्योंकि ऐसी दशा में जीवन-रेखा बहुत सी छोटी-छोटी रेखाओं से कटी हुई लहरदार और विशेष कठिन स्थिति में आरम्भ काल में विन्दुपूर्ण होती है (इ— चित्र नं० २)।

यदि भाग्य-रेखा हाथ में आगे बढ़ने से रुक गई हो तो भविष्य या अजीविका में बाधा पड़ने का लक्षण है। यह बाधा क्योंकर आयेगी यह जानने के लिये हृदय-रेखा, मस्तक-रेखा या अन्य रेखाओं को देखना चाहिये। प्रायः देखा गया है कि यह बाँये हाथ में मस्तक-रेखा पर समाप्त हो जाती है और फिर टूटी-फूटी दशा में ऊपर की ओर उठती है। ऐसी दशा में हमको सीधा हाथ देख कर यह मालूम करना चाहिये कि भाग्य-रेखा का अचानक ही मस्तक रेखा के नीचे रुक जाने का कारण क्या है। कारण जानने के लिये अधिक दूर जाने की आवश्यकता नहीं। भाग्य-रेखा मस्तक-रेखा से रुक रही है, इसलिये यहां मस्तक ही उस बाधा का कारण होना चाहिये—मूर्खता, आवेश, अपरिणाम दर्शिता इत्यादि।

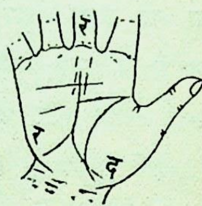
चन्द्रमा के स्थान से आकर भाग्य-रेखा से मिलने वाली रेखायें जिनको "प्राभाविक-रेखा" कहना चाहिये वह प्रभाव या प्रेम सम्बन्ध होते हैं जो प्रायः स्त्री के हाथ में पुरुष के साथ और पुरुष के हाथ में स्त्री के साथ उत्पन्न होते हैं।

नीचे दिया हुआ चित्र (चित्र नम्बर ३) एक नव विवाहित युवक का हाथ है जिसकी रेखायें देख कर, अधिक समय नहीं हुआ, मैंने निम्न लिखित फल कहा थाः—

"तुम्हारा बाल जीवन सुख से व्यतीत नहीं हुआ—यह मैं कह सकता हूँ। इसके उपरान्त लगभग अट्ठारह बरस होते न होते तुम्हारा किसी लड़की के साथ प्रेम सम्बन्ध होगया था जो कुछ समय रहकर टूट गया। तुम्हारा विवाह पच्चीस बरस की अवस्था होना चाहिये, परन्तु सबसे अधिक आश्चर्य



चित्र नम्बर ३



चित्र नम्बर ४

पूर्ण बात जो सम्बन्ध में कही जा सकती है यह है कि तुम्हारा विवाह किसी ऐसी लड़की के साथ होना चाहिये, जिसके साथ पहले भी तुम्हारा कोई सम्बन्ध रह चुका हो"।

"बात ऐसी ही थी—उस युवक ने मेरा समर्थन करते हुए कहा—बचपन में ही मेरे पिता मुझे निःसहाय छोड़ कर परलोक चले गये थे। लगभग सोलह बरस की अवस्था तक मैं इसी निःसहाय दशा में अपनी माता के पास किसी न किसी तरह अपने दिन व्यतीत करने लगा। कुछ समय तक

और ऐसी ही दशा रही । इसके बाद मैं बनारस पढ़ने चला गया और वहां अपने एक निकट सम्बन्धी की देख रेख में स्कूल में भर्ती हो गया । यहीं पर मेरा एक चौदह बरस की लड़की से प्रेम सम्बन्ध हो गया था । लड़की और कोई नहीं उन्हीं महाशय की एक मात्र कन्या थी जो मेरे एक निकट सम्बन्धी थे और जिनके पास रहकर मैं विद्या अध्ययन कर रहा था । इस समय मेरी अवस्था सत्रह साल और आठ महीने की थी । परीक्षा फल पाते ही मैं अपनी मां के पास लौट आया और अपनी जीविका साधन जुटाने में लग गया । इस समय मेरी अवस्था छब्बीस साल की है । आज मेरा विवाह हुए एक साल और एक महीना पूरा होजाता है ।

"यह विवाह सम्बन्ध किसके साथ हुआ ?"

"उसी लड़की के साथ जिससे सात बरस पहले मेरा प्रेम सम्बन्ध हुआ था । आपका कहना सही निकला !"—यह कह कर उस युवक ने आश्चर्य भरी दृष्टि मेरी ओर डाली ।

ऊपर कही गई सभी सूचनायें प्रायः भाग्य-रेखा ही को प्रमाण मानकर मिली थी जो नीचे लिखे अनुसार हैं:—

पहली दशा में भाग्य-रेखा आरम्भ काल में निर्बल और दोष पूर्ण थी—यह बचपन का जीवन था जो अशान्त और सुख से वंचित रहा (चित्र नं० ३)।

इसके उपरान्त दो "प्राभाविक-रेखायें" हैं जो चन्द्रमा

के स्थान पर एक ही स्थान से चल कर भाग्य-रेखा पर अपना प्रभाव डाल रही हैं। ऊपर कहा जा चुका है कि चन्द्रमा के स्थान से आने वाली 'प्राभाविक-रेखायें' अपने विरोधी वर्ग के साथ प्रेम व्यवहार या विवाह सम्बन्ध का होना बतलाती हैं। अतः यह दोनों रेखायें भी प्रेम सम्बन्ध ही थे जिनमें से पहला लगभग अठारह बरस की अवस्था में हुआ और दूसरा पहले से ऊपर पचीस बरस की अवस्था में। अब हृदय-रेखा पर दृष्टि डाली जाय तो मालूम होगा कि वह टूटी हुई है (द—चित्र नं० ३) और साथ ही विवाह-रेखा को भी एक अवरोध रेखा काट रही है (त्र—चित्र नं० ३)—यह प्रेम या विवाह सम्बन्ध असफल होने का लक्षण है। दूसरा सम्बन्ध जो विवाह के रूप में था पहले से सात बरस बाद हुआ जिसका समर्थन भाग्य-रेखा को ऊपर की ओर पार कर जाने वाली 'प्राभाविक-रेखा' और विवाह-रेखा ने किया (चित्र नं० ३)।

अब देखना है कि यह दोनों सम्बन्ध सूचक या 'प्राभाविक-रेखायें' (र—र—र—चित्र नं० ३) चन्द्रमा के स्थान पर एक ही स्थान से आरम्भ होती हैं और आपस में जुड़ी हुई हैं। अतः यहाँ स्पष्ट हो जाता है कि सम्बन्ध एक ही था जो पहली बार असफल होकर फिर सात बरस बाद सफल हुआ।

यदि भाग्य-रेखा नीचे की ओर दो शाखाओं में बट

गई हो और उन में से एक शाख शुक्र के स्थान और दूसरी चन्द्रमा के स्थान को चली गई हो (र—र और र—द चित्र नं० ४) तो देशाटन या समुद्रयात्रा करने की अधिक सम्भावना रहती है। ऐसी दशा में दोनों हाथ की रेखायें देखनी चाहियें। क्योंकि सीधे हाथ के चिन्ह या रेखायें बायें हाथ के शुभ या अशुभ लक्षणों का समर्थन अर्थात् पुष्टि करती हैं।

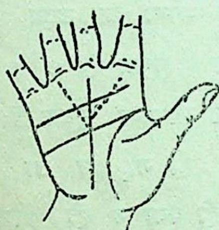
सीधी भाग्य-रेखा में से यदि कुछ छोटी-छोटी शाखायें शनि के स्थान को जा रही हों तो भाग्य का उदय होकर दुर्भाग्य का नाश होगा—यह निश्चय है (चित्र नं० ४)। इसी प्रकार यह ऊपर की ओर जाने वाली सौभाग्य सूचक हैं और यदि भाग्य-रेखा ऊपर सिरे पर स्पष्ट हो गई हो तो चाहे जीवन-रेखा अन्त में दुर्भाग्य सूचक ही क्यों न हो भाग्य के उदय होने की अधिक सम्भावना रहती है।

भाग्य-रेखा को काटने वाली "अवरोध-रेखायें" दुर्भाग्य सूचक होती हैं और उन्नति के मार्ग में बाधायें डालती हैं। इन बाधाओं का कारण जानने के लिये यह देखना होगा कि कौनसी "अवरोध-रेखा" किस स्थान से आरम्भ होती है और क्या इसका प्रभाव होगा।

यदि भाग्य-रेखा स्वयं या उसकी कोई शाख (देखो बिन्दु रेखा) तीसरी अंगुली सूर्य्य की ओर आ रही हो तो यश और कीर्ति को बढ़ाती है। ऐसे व्यक्ति प्रायः प्रजा सेवक

देखे गये हैं—कवि, व्याख्यान दाता, या वह जो प्रजा की दृष्टि में ऊंचे समझे जाते हों । दूसरी दशा में यदि भाग्य-रेखा या उसकी कोई शाख पहली अंगुली बृहस्पति की ओर जा रही हो (देखो बिन्दु-रेखा) तो यह बतलाती है कि ऐसा व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, कोई उच्च पदवी प्राप्त करके दूसरों पर शासन करेगा (चित्र नं० ५) ।

बृहस्पति की ओर जाने वाली भाग्य-रेखा या इसकी शाख शासन करने की योग्यता प्रदान करके किसी योग्य पदवी या



चित्र नम्बर ५



चित्र नम्बर ६

शासन अधिकार की ओर संकेत करती है—सम्भव है वह कोई राजा, राज-मन्त्री, सेनापति या इससे कम अधिकार में कोई उच्च कर्मचारी या बड़ा व्यापारी हो (चित्र नं० ५) ।

भाग्य-रेखा पर द्वीप का चिन्ह अशुभ सूचक है । यह जिस समय तक रेखा पर अङ्कित रहेगा अनेक आपत्तियां आयेंगी—अधिकार या नौकरी का छूटना, अपमान होना इत्यादि (चित्र नम्बर ६) ।

यदि रेखा हथेली के मध्य में टूट रही हो तो यह सूचित

करती है कि लगभग पैंतीस बरस की अवस्था में जाकर कोई आपत्ति आयेगी (देखो चित्र नम्बर ७) । इसके अतिरिक्त भाग्य-रेखा जिस स्थान पर टूट रही हो वही उस दैविक कष्ट का समय होगा—कारण जानने के लिये हाथ की दूसरी रेखायें देखनी चाहियें ।

प्राय: देखा गया है कि भाग्य-रेखा अपने आरम्भकाल में जीवन-रेखा को स्पर्श करती हुई ऊपर उठती है। ऐसी दशा में उस स्त्री या पुरुष के जीवन का आरम्भकाल दूसरों



चित्र नम्बर ७



चित्र नम्बर ८

के हित में व्यतीत हुआ है—ऐसा समझना चाहिये । यह रेखा ऐसी स्त्री या पुरुषों के हाथ में अधिक पाई जायेगी जिन्होंने अपने माता-पिता या अन्य सम्बन्धियों के उपकार में अपने सुख को भुला दिया हो । दूसरी दशा में प्रायः यह ऐसे हाथों में भी पाई जाती है जो थोड़ी अवस्था में ही विवाहित होकर गृहस्थ-जीवन की चिन्ता में पड़ गये हैं (चित्र नं० ८) ।

यदि भाग्य-रेखा हथेली के दूसरी ओर चन्द्रमा के स्थान से आरम्भ होती हो तो यह सूचित करती है कि अधिकारी-

वर्ग अपने जीवन के आरम्भकाल से ही स्वतन्त्र और बे-फिकर रहा है और किसी तरह की—घर की अथवा बाहर की कोई चिन्ता या बन्धन उसके लिए नहीं रहा (चित्र नं० ९)। यहां भाग्य-रेखा हथेली के नीचे जितनी ही अधिक बाहर की ओर आरम्भ होगी उस स्त्री या पुरुष पर घर का बन्धन या दूसरों का प्रभाव उतना ही कम होगा।

भाग्य-रेखा यदि किसी हाथ में जीवन-रेखा के भीतर शुक्र-स्थान के किसी भाग से आरम्भ होती हो तो ऐसी दशा में

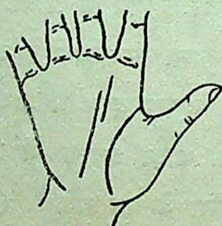


चित्र नम्बर ९



चित्र नम्बर १०

उस स्त्री या पुरुष पर प्रेम का शासन होता है और यदि मस्तक-रेखा निर्बल हो तो वह प्रेम और भी अधिक प्रबल



चित्र नम्बर ११

होकर उसको कामासक्त बनाकर उसकी उन्नति के मार्ग में बाधा

डालता है। यदि साथ ही शुक्र का स्थान भी अधिक उभरा हुआ हो तो यह रेखा पहले की अपेक्षा और भी अधिक प्रेमासक्त हो जाती है (चित्र नंम्बर १०)।

यदि भाग्य-रेखा दो भागों में अलग-अलग हो रही हो और उनमें से दूसरा भाग पहले भाग के समाप्त होने से पहले ही आरम्भ हो गया हो तो यह रेखा "टूटी हुई भाग्य-रेखा" नहीं समझी जायगी, बल्कि जीवन में किसी विशेष परिवर्तन का होना बतलायगी (चित्र नम्बर ११)। ऐसी दशा में यदि भाग्य-रेखा का ऊपर का भाग निर्बल और अस्पष्ट हुआ तो जीवन में यह परिवर्तन हानिदायक होगा और यदि यह भाग गहरा या स्पष्ट हुआ तो लाभदायक होगा—इसमें सन्देह नहीं।

अतः यहाँ भाग्य-रेखा के सम्बन्ध में जो कुछ कहा जा चुका है उससे हम अपने भविष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली अशुभ घटनाओं का समय बरसों पहले जान सकते हैं और यदि हम चाहें तो समयानुसार अपनी प्रबल इच्छाशक्ति की सहायता से उनमें बहुत कुछ सुधार कर सकते हैं।

भाग्य-रेखा के सम्बन्ध में हम कह सकते हैं कि यह हमारे भाग्य का वह मार्ग है जो आदि से अन्त तक अज्ञात खाई घाटियाँ, ऊँचे-नीचे पहाड़ आदि अनेक बाधाओं से घिरा हुआ कण्टकमय है। यदि कोई इस अज्ञात मार्ग में चलने वाला पथिक इन संकेतों की परवा नहीं करता तो वह अपने मार्ग में आनेवाली बाधाओं को समय से पहिले दूर न कर सकने के

कारण अकर्मण्यता का दोष अपने सिर पर लेता हुआ भविष्य में अपनी दुर्दशा का कारण बनता है ।

विशेष विवरण

भाग्य-रेखा या शनि-रेखा का सम्बन्ध हमारी सांसारिक उन्नति, सफलता और सम्मान से होता है। यह रेखा मुख्य चार स्थान, मणिबन्ध, चन्द्रमा का स्थान, जीवन-रेखा या मङ्गल के मैदान से आरम्भ होकर शनि की अँगुली मध्यमा की ओर जाती है ।

यदि यह रेखा मणिबन्ध के पास आरम्भ होकर सीधी शनि के ऊपर जा रही हो तो यह सौभाग्य सूचक है और उन्नति के मार्ग में सफलता प्राप्त होने का सर्व श्रेष्ठ लक्षण है ।

जीवन-रेखा से आरम्भ होनेवाली भाग्य-रेखा सूचित करती है कि वह व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, अपनी जातीय योग्यता या परिश्रम द्वारा उन्नति की ओर अग्रसर हुआ है या होगा। परन्तु यदि रेखा आरम्भकाल में भाग्य-रेखा से जुड़ी हुई हो तो ऐसी दशा में उस व्यक्ति के जीवन का आरम्भकाल उसके माता पिता और सगे सम्बन्धियों की इच्छाओं पर या गृहस्थ के बन्धनों में व्यतीत हुआ है । यहाँ रेखा जिस स्थान से जीवन-रेखा को छोड़कर ऊपर उठ रही होगी उसी समय से उसके जीवन में अन्तर आ उपस्थित हुआ है या भविष्य में होगा—ऐसा समझना चाहिये ।

चन्द्रमा के स्थान से आरम्भ होकर जाने वाली भाग्य-रेखा देशाटन या परदेश भ्रमण करने का लक्षण है—कम से कम देशाटन या परदेश भ्रमण करने की इच्छा तो अवश्य ही बनी रहती है। देशाटन की रेखायें मणिबन्ध या उसके कुछ ऊपर से आरम्भ होकर चन्द्रमा के स्थान पर चढ़ती हैं।

हथेली के बाहर की ओर आरम्भ होने वाली रेखा सूचित करती है कि वह व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, अत्यन्त स्वतंत्र विचार वाला है—परन्तु मङ्गल के मैदान में अर्थात् हथेली के मध्य भाग से आरम्भ होने वाली भाग्य-रेखा की अपेक्षा उसमें देशाटन या इधर उधर घूमते रहने की इच्छा अधिक प्रबल पाई जायेगी। यदि हाथ में कुछ दुष्ट चिन्ह भी आ पड़े हों तो यह सम्भव है कि वह आवारा घूमने वाला व्यर्थ सैलानी हो। यदि यह रेखा ऊपर हृदय-रेखा से मिली हुई बृहस्पति की अँगुली तक जा रही हो तो ऐसी दशा में प्रेम ही उसके भविष्य जीवन को चमकाता है—सम्भव है उसका प्रेम किसी ऐसे व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, से हो जो भविष्य में उसके सुख का कारण हो।

यदि भाग्य-रेखा सीधी हो और उसमें कोई रेखा हथेली के बाहर की ओर चन्द्रमा के स्थान पर से आकर मिलती हो तो यह बाहर की ओर से आने वाली रेखा जिसको 'प्राभाविक-रेखा' कहना चाहिये सूचित करती है कि कोई व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, अपने प्रभाव से उसके जीवन के मार्ग

में कोई विशेष परिवर्तन आ उपस्थित करेगा—यह परिवर्तन उन्नति की ओर ले जायगा या अवनति की ओर यह अनुभव से स्वयं जाना जा सकता है।

भाग्य-रेखा को काटने वाली 'अवरोध-रेखायें' वह आपत्ति या बाधायें होती हैं जो समय-समय पर हमारे जीवन मार्ग में आ उपस्थित होती हैं। कारण जानने के लिये यह अवरोध-रेखायें कहां से आरम्भ होती हैं और कहाँ पर समाप्त होती हैं इस पर अवश्य विचार कर लेना चाहिये। टूटी-फूटी भाग्य-रेखा आपत्ति और चिन्ताओं से भरी होती है। परन्तु यदि हृदय-रेखा, मस्तक-रेखा और ग्रह-स्थान अपना फल शुभ दिखा रहे हों तो निर्बल भाग्य-रेखा का बुरा प्रभाव मध्यम हो जाता है।

यदि भाग्य-रेखा मङ्गल के मैदान या हथेली के मध्य भाग में जाकर आरम्भ हुई हो तो ऐसा जीवन बड़े परिश्रम से व्यतीत होता है। परन्तु यदि रेखा स्पष्ट रूप में सीधी शनि के स्थान पर पहुँचती हो तो इससे भविष्य सुधर जाने की अधिक सम्भावना रहती है। जीवन में यह सुधार उस स्त्री या पुरुष के जातीय परिश्रम द्वारा होना चाहिये।

भाग्य-रेखा यदि ऊपर मस्तक-रेखा से रुक गई हो तो इस दुर्भाग्य का कारण उस स्त्री या पुरुष की मूर्खता या अदूर-दर्शिता होगी।

यदि भाग्य-रेखा को हृदय-रेखा ऊपर उठने से रोकती हो

तो ऐसी दशा में प्रेम उन्नति के मार्ग में बाधा डालता है। यदि दूसरी दशा में यह रेखा हृदय-रेखा से जाकर मिल गई हो और वह दोनों बृहस्पति की ओर चली गई हों तो रेखाओं की यह चाल सौभाग्य सूचक है। वह व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, प्रेम के द्वारा किसी उच्च पदवी पर पहुँचेगा और अपना भविष्य सुखमय बना सकेगा—इसमें सन्देह नहीं।

दूसरी दशा में यदि भाग्य-रेखा मस्तक-रेखा के ऊपर से आरम्भ हो कर स्पष्ट रूप से ऊपर शनि की ओर जा रही हो तो वह व्यक्ति अपनी बुद्धि और दूरदर्शिता से अपने भविष्य को सुधार सकेगा। यही बात हृदय-रेखा से आरम्भ होने वाली भाग्य-रेखा के सम्बन्ध में भी जाननी चाहिये।

यदि भाग्य-रेखा स्वयं शनि की ओर जा रही हो और अपनी शाखायें बृहस्पति, सूर्य्य और बुध की ओर भेजती हो तो उक्त ग्रह देवताओं के गुणों के अनुसार हो क्रमसे व्यापार, दस्तकारी, या विज्ञान द्वारा उस व्यक्ति की भावी उन्नति होनी चाहिये।

सूर्य्य की ओर जाने वाली शाखा—साहित्य, कविता, नाट्य-कला, दस्तकारी या सार्वजनिक कार्य में ख्याति को बढ़ाती है।

बुध की ओर जाने वाली शाखा—व्यापार, विज्ञान या व्याख्यान देने की शक्ति को बढ़ाती है। सम्भव है ऐसा व्यक्ति कोई अनुभवी व्यापारी, कुशल वैज्ञानिक या कोई प्रतिभाशाली व्याख्यानदाता हो।

नाट्य-कला—यदि सूर्य्य की अँगुली का ऊर्ध्व-भाग या नाख़ून वाला सिरा चमसाकार हो ।

दस्तकारी—यदि सूर्य्य की अँगुली सुन्दर और नोक-दार हो ।

साहित्य या कविता—यदि सूर्य्य की अँगुली समकोण या वर्गाकार हो ।

यदि भाग्य-रेखा स्वयं बृहस्पति की अँगुली की ओर जा रही हो तो कोई उच्च पदवी या दूसरों पर शासन करने की योग्यता प्रदान करती है ।

यदि भाग्य-रेखा असाधारण रूप से लम्बी होकर नीचे मणिबन्ध-रेखा या शनि की अँगुली के अधो-भाग में चली गई हो तो यह अधिक लम्बी होने के कारण ही अशुभ समझी जाती है ।

यदि कोई रेखा भाग्य-रेखा में आकर मिलती हो या उसके समानान्तर जा रही हो तो यह विवाह-सम्बन्ध या कोई अन्य ऐसा व्यक्ति, स्त्री या पुरुष होता है, जो किसी के जीवन पर अपना कोई विशेष प्रभाव डालता है ।

भाग्य-रेखा की सहायक-रेखा दूसरी सहायक-रेखाओं के समान ही शुभ फल के देने वाली होती है—विशेषतः जब कि दोनों रेखायें, भाग्य-रेखा और उसकी सहायक-रेखा, भिन्न-भिन्न ग्रह-स्थानों पर जा रही हो ।

यदि भाग्य-रेखा का हाथ में बिल्कुल ही अभाव हो तो ऐसा

जीवन एक साधारण जीवन होता है। ऐसे मनुष्य का खाना, पीना और आराम कर लेना ही अपने जीवन का एकमात्र ध्येय होता है। मैं यह तो नहीं कहता कि वह अपने जीवन में सुखी रहते हैं या दुख का अनुभव करते हैं। परन्तु वह "दुख या सुख जो कुछ हमारे भाग्य में लिखा है वह अवश्य भोगना पड़ेगा"—ऐसा सोच कर अपने भविष्य की चिन्ता में कभी अपना दिमाग़ नहीं खपाते।

अन्त में यहां इतना कह देना है कि मस्तक, हृदय, इच्छा-शक्ति, विचार-शक्ति और चन्द्रमा की दी हुई सन्तोष-वृत्ति यह सब निर्बल भाग्य-रेखा की सहायता करके मनुष्य को उसके जीवन के संग्राम में सहायता देती हैं। ऐसी स्थिति में भाग्य-रेखा बदल जाती है और यदि भविष्य में आने वाले दुर्भाग्य का पूर्ण साहस से विरोध किया जाय तो इसमें सन्देह नहीं कि उसका अनिष्ट फल दूर होकर फिर एक बार भाग्य उदय हो जायगा।

नवाँ अध्याय

सूर्य्य-रेखा

सूर्य्य-रेखा को सूर्य्य-रेखा या तेजस्वी-रेखा इसलिये कहा जाता है कि यह भाग्य-रेखा द्वारा स्वीकृत किये गये उज्ज्वल भविष्य या भाग्य को ठीक उसी प्रकार चमका देती है जिस तरह सूर्य्य अपनी प्रखर प्रभा से रात्रि के प्रगाढ़ अन्धकार में चमकती हुई हिमाच्छादित शिखर शृंखलाओं को चमका कर उनमें एक विशेष चमत्कार उत्पन्न कर देता है। इससे यह न समझना चाहिये कि सूर्य्य-रेखा के अभाव में हाथ में पड़ी हुई शुभ भाग्य-रेखा का कोई मूल्य ही नहीं होता अथवा उसका प्रभाव ही मध्यम हो जाता है। समझने के लिये ऊपर कही गई शिखर शृंखलाओं को ही ले लीजिये। वह बरफ़ से ढकी रहती हैं।

बरफ़ का गुण है चमकना। चाहे रात्रि हो या दिन उसके स्वाभाविक गुण में कोई अन्तर नहीं आता—वह सदा एक सा चमकता ही रहता है। अन्तर केवल इतना ही है कि सूर्य्य की किरणें अपने सहयोग से उसमें एक विशेष प्रकार का चमत्कार उत्पन्न कर देती हैं और वह पहले की अपेक्षा और भी अधिक चमकने लग जाता है। यही बात रेखाओं के सम्बन्ध में भी है। यदि भाग्य-रेखा के साथ सूर्य्य-रेखा भी अधिक बलवान पड़ी हो तो वह सोने में सुगन्ध का काम करती है।

यदि हाथ में भाग्य-रेखा निर्बल हो या उसका बिल्कुल ही अभाव हो तो सुन्दर सूर्य्य-रेखा के प्रभाव से वह व्यक्ति स्त्री या पुरुष, यदि प्रभावशाली न भी हो तो रजोगुणी अवश्य होगा। "मैं धनवान बन जाऊँ, मेरा जनता में सम्मान हो"—इस तरह की अभिलाषायें प्रायः सदा ही उसे बनी रहती हैं। वह दस्तकार न होकर भी दस्तकारी से प्रेम करता है परन्तु किसी विषय में पूर्ण ज्ञान रखते हुए भी अपनी योग्यता दूसरों पर प्रगट नहीं कर सकता। साधारण शुभ भाग्य-रेखा के साथ भी सूर्य्य-रेखा अधिक उपयोगी समझी जाती है और इसमें सन्देह नहीं कि जिस समय यह रेखा, सूर्य्य-रेखा, हाथ में आरम्भ होती है उसी समय से भाग्य में कुछ विशेष सुधार होने लग जाता है। यह रेखा अगले पृष्ठ पर लिखे अनुसार हाथ में सात स्थानों से आरम्भ होती है।

१—मणिबन्ध या उसके समीप से शुरू होती है।

२—चन्द्रमा के स्थान से आरम्भ होकर सूर्य्य की अँगुली अनामिका की ओर जाती है।

३—जीवन-रेखा से आरम्भ होती है।

४—भाग्य-रेखा से शुरू होती है।

५—मङ्गल-क्षेत्र या हथेली के मध्य-भाग से चलती है।

६—मस्तक-रेखा को स्पर्श करके जाती है।

७—हृदय-रेखा को स्पर्श करती हुई सूर्य्य के स्थान पर जाती है।

१—यदि सूर्य्य-रेखा मणिबन्ध या उसके समीप से आरम्भ होकर भाग्य-रेखा के निकट समानान्तर अपने स्थान को जा रही हो तो इसका यह लक्षण सबसे अच्छा है। ऐसी दशा मे प्रतिभा और भाग्य का मेल होने से अधिकारी, स्त्री या पुरुष, जिस काम को हाथ लगाता है उसी में सफल होता है।

दूसरी दशा में यदि सूर्य्य-रेखा चन्द्रमा के स्थान से आरम्भ होती हो तो इसमें सन्देह नहीं कि भाग्य चमकेगा परन्तु उसकी यह उन्नति जातीय परिश्रम द्वारा प्राप्त होने की अपेक्षा दूसरों की इच्छा या सहायता पर निर्भर होगी। सम्भव है मित्र सहायता करें, या इस सम्बन्ध में अपनी कोई शुभ-सम्मति दें।

२—चन्द्रमा के स्थान से आरम्भ होकर तीसरी अंगुली तक पहुँचने वाली गहरी सूर्य्य-रेखा के सम्बन्ध में यह बात

अवश्य ध्यान में रखनी चाहिये कि ऐसा जीवन अनेक घटनाओं से भरा हुआ संदेह-पूर्ण होता है। उसमें बहुत से परिवर्तन भी होते हैं। परन्तु यदि रेखा चन्द्रमा के स्थान से निकलकर भाग्य-रेखा के समानान्तर जा रही हो तो भविष्य सुखमय हो सकता है—यदि प्रेम बाधक न हो और विचारों में दृढ़ता होने के साथ ही साथ मस्तक-रेखा भी अपना फल शुभ दे रही हो।

एक दोष भी है जो ऊपर कही गई चन्द्रमा के स्थान से आनेवाली सूर्य-रेखा में पाया जाता है। इसमें सन्देह नहीं कि इसके प्रभाव से अधिकारी, स्त्री या पुरुष, तेजस्वी और प्रसन्न चित्त होना चाहिये। फिर भी उनमें एक बड़ा भारी दोष यह होता है कि उनके विचार कभी स्थिर नहीं रहते। सर्व साधारण स्त्री या पुरुषों का उन पर अधिक प्रभाव पड़ता है और अनायास ही वह अपने निश्चित विचारों को बदल देते हैं। वह यश पाने की इच्छा करते हैं परन्तु अपने सङ्कल्प पर दृढ़ न रह सकने के कारण अपने प्रयत्नों में अधिक सफल नहीं होते (अ—अ—चित्र नं० १३ पृष्ठ १८३)।

३—जीवन-रेखा से आरम्भ होने वाली स्पष्ट सूर्य्य-रेखा भविष्य में उन्नति और यश को बढ़ाने वाली है। परन्तु यह उन्नति हमारे जातीय परिश्रम और योग्यता द्वारा होनी चाहिये। एक व्यवसायिक (Artistic) हाथ को छोड़ कर शेष सभी हाथों में इसके प्रभाव से मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी कला में पूरी उन्नति कर सकता है। यह

रेखा ऊपर कही दशा में स्त्री या पुरुष के शीघ्रग्राही होने का भी एक अचूक लक्षण है। ऐसे व्यक्ति सुन्दरता के पुजारी होते हैं और अपने जीवन का एक बड़ा भाग सुन्दरता की उपासना में ही व्यतीत कर देते हैं। यही कारण है कि वह उन स्त्री या पुरुषों की अपेक्षा, जिनकी सूर्य्य-रेखा स्वयं भाग्य-रेखा से शुरू हो रही हो अपने जीवन का अधिक उपयोग नहीं कर पाते।

४—यदि यह रेखा भाग्य-रेखा से आरम्भ होती हो तो यह भाग्य-रेखा के गुणों में वृद्धि करके उसकी शक्ति को दूना कर देती है (त—त—चित्र न० ११ पृष्ठ १३७)। प्रायः देखा गया है कि रेखा जिस स्थान से भाग्य-रेखा से ऊपर उठती है वहीं से यह किसी विशेष उत्कर्ष या उन्नति का आरम्भ होना बतलाती है। रेखा जितनी ही अधिक स्पष्ट और सुन्दर होगी उन्नति का क्षेत्र उतना ही विस्तृत और उन्नति भी अधिक होगी।

सूर्य्य-रेखा प्रायः ऐसे हाथों में भी देख पड़ती है जो दस्तकार होना तो बहुत दूर रहा एक सीधी रेखा भी नहीं बना सकते। अनुभवी भी यह इतने होते हैं कि पीले और गुलाबी रङ्ग का अन्तर जान लेना भी उनकी शक्ति से बाहर होता है। ऐसी दशा में वह कोई कुशल कलाकार या दस्तकार नहीं हो सकते। हाँ, वह सुन्दरता के पुजारी अवश्य होते हैं और सुन्दरता को प्रेम करना ही उनका एक स्वभाविक गुण हो जाता है।

५—मङ्गल के मैदान या हथेली के मध्य-भाग से शुरू होने वाली सूर्य्य-रेखा (ड—ड—चित्र नं० १०-पृष्ठ १३१) अनेक आपत्ति और बाधाओं के बाद उन्नति का होना बतलाती है। इसका सहायक मङ्गल देवता है+।

६—यदि यह रेखा 'सूर्य्य-रेखा' मस्तक-रेखा से शुरू होती हो और स्पष्ट हो तो जीवन के मध्यकाल में जा कर (अवस्था ३५ बरस) उन्नति का होना आरम्भ होगा। परन्तु यह उन्नति जातीय योग्यता और मस्तिष्क शक्ति द्वारा होनी चाहिये।

७—हृदय-रेखा से आरम्भ होने वाली सूर्य्य-रेखा इस बात का एक प्रारम्भिक लक्षण है कि उन्नति का समय जीवन का मध्यानकाल होना चाहिये—यहाँ अवस्था लगभग ४६ बरस के होगी (देखो "सप्त वर्षीय नियम")। परन्तु यहाँ हृदय-रेखा से ऊपर सूर्य्य-रेखा स्पष्ट होनी चाहिये। ऐसी दशा में उस स्त्री या पुरुष का चौथापन सुखमय या कम से कम निर्विघ्न समाप्त होना चाहिये। इसके अतिरिक्त यदि हृदय-रेखा से ऊपर सूर्य्य-रेखा का बिल्कुल ही अभाव हो या वह छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी हुई अथवा टूटी-फूटी हो तो जीवन का चौथा काल चिन्ताओं से भरा हुआ अन्धकार मय होगा—विशेषतः जब कि भाग्य-रेखा निराशा जनक हो।

यदि सूर्य्य-रेखा और भाग्य-रेखा दोनों ही शुभ फल के देने वाली होकर एक दूसरी के समानान्तर जा रही हो और

+देखो मङ्गल का स्थान। पृष्ठ सख्या—१०१।

साथ ही मस्तक-रेखा भी स्पष्ट और सीधी हो तो यह धनवान और ऐश्वर्य पूर्ण होने का सब से बड़ा लक्षण है। ऐसी दशा में वह व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, बुद्धिमान और दूरदर्शी होने के कारण जिस काम को हाथ लगता है उसीमें सफल होता है।

यदि हाथ में सूर्य्य की अंगुली अनामिका पहली अंगुली से अधिक लम्बी और बीच की अंगुली के बराबर हो और सूर्य्य-रेखा भाग्य-रेखा से अधिक बलवान् हो तो मनुष्य की प्रवृति जूआ खेलने की ओर अधिक पाई जाती है—परन्तु यहाँ धन या गुणों का अभाव नहीं होता। हाँ, कभी-कभी आपत्ति का सामाना अवश्य करना होता है। इसके अतिरिक्त यदि मस्तक-रेखा नीचे की ओर झुकी हो तो इसका और भी अधिक बुरा प्रभाव पड़ता है—सट्टा लगाना, जूआ खेलना, शर्त बाँधना, इत्यादि।

यदि सूर्य्य-रेखा सूर्य के स्थान को न जाकर शनि की अंगुली की ओर जा रही हो तो ऐसी उन्नति या सफलता शोक और मुसीबतों से मिली रहती है। अतः ऐसे व्यक्ति धनवान् और उन्नतिशील होकर भी प्रायः सुखी नहीं रह सकते।

यदि रेखा शनि को काट रही हो या अपनी कोई शाख बृहस्पति की ओर भेज रही हो तो यह उन्नति या सफलता कोई शासन अधिकार या उच्च पदवी पाने के रूप में होगी (थ—थ—चित्र नं० ११—पृष्ठ सख्या १३७)। परन्तु रेखा के यह लक्षण किसी दशा में भी इतने प्रभाव पूर्ण नहीं हो सकते

जितने भाग्य-रेखा के बृहस्पति की अंगुली की ओर जाने के सम्बन्ध में कहे जा चुके हैं।

प्रायः देखा गया है कि छोटी-छोटी एक या एक से अधिक रेखायें एक दूसरी के समानान्तर सूर्य्य के स्थान पर दौड़ती पाई जाती हैं। ऐसी दशा में विचार बिखरे हुए रहते हैं। वह कभी कुछ करना चाहता है कभी कुछ—अतः किसी एक व्यापार, दस्तकारी या किसी विशेष कला में उन्नति करना उसके लिये एक असम्भव सी बात हो जाती है।

सूर्य्य-रेखा के साथ कुछ ऐसे चिन्ह भी हैं जो भाग्य की उन्नति में बाधा डालते हैं। उदाहरण के लिये हथेली यदि अधिक गहरी हो तो यह अशुभ लक्षण है। हथेली के सम्बन्ध में यह पहले भी कहा जा चुका है कि यह अधिक गहरी न होनी चाहिये क्योंकि अधिक गहरी हथेली दुर्भाग्य का स्थान होता है।

ऐसी स्थिति में यदि कनिष्ठका अंगुली कुब्जाकर या टेढ़ी-सीधी हो तो ऐसा व्यक्ति अपनी योग्यता का दुरुपयोग करता है—पक्का चोर, मशहूर डाकू, सुधूर्त पाखण्डी इत्यादि।

चित्रमय सूर्य्य-रेखा

यदि सूर्य्य-रेखा के साथ ग्रह-स्थान पर कुछ और भी रेखायें आ रही हों (र—र—चित्र नं० १) तो एक से अधिक साधन उन्नति या कीर्ति लाभ करने के हो सकते हैं जो ग्रहों

के स्थान, हथेली में पड़े हुए चिन्ह, या अँगुलियों पर अवलम्बित हैं। परन्तु यदि ऊपर कही गई रेखाओं को बहुत सी अवरोध-रेखायें काट रहीं हों तो ऐसी दशा में उस मनुष्य का झुकाव कई ओर पाया जाता है। परन्तु यहाँ निर्धनता, घृणा, स्पर्धाभाव, उदासीनता, अनुदारता और अत्यन्त कृपणता उसमें बाधा डालती है। वह कोई उद्योग करने का साहस करता है परन्तु अपनी आदत से लाचार अपने उद्योग में सफल नहीं हो पाता। ऐसी दशा में उस स्त्री या पुरुष को चाहिये कि



चित्र नम्बर १



चित्र नम्बर २

अपनी शक्ति को किसी एक ओर लगा कर अपना काम करें।

प्रायः देखा गया है कि कभी-कभी सूर्य्य-रेखा ग्रह-स्थान पर जाकर सर्प-जिव्हाकार या त्रशूल हो जाती है (इ—चित्र नं० २)। यहां प्रसिद्धि तो अवश्य होगी परन्तु लाभदायक नहीं। क्योंकि रेखा के त्रशूल या सर्प-जिव्हाकार होने से ही वह व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, एकाग्र चित्त नहीं होते—यही उनकी उन्नति के मार्ग में बाधायें आने का कारण है। यहां भी, ऐसी दशा में, मनुष्य को एकाग्रचित्त होना चाहिये।

मणि-बन्ध के समीप से आरम्भ होने वाली सूर्य्य-रेखा सर्व श्रेष्ठ और शुभ फल के देने वाली होती है इसमें भाग्य और प्रतिभा का मेल होता है और प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है (चित्र नं० ३)।

यदि रेखा हथेली के ठीक बाहर की ओर चन्द्रमा के स्थान से आरम्भ हो तो यह उन्नति दूसरों की सहायता पर अवलम्बित रहती है । अतः यह प्रतिष्ठा या उन्नति स्थायी नहीं हो सकती। प्रायः गवैयों, नाट्यकला में निपुण अभिनेत्री



चित्र नम्बर ३ चित्र नम्बर ४ चित्र नम्बर ५

और अभिनेताओं या वैसे ही दूसरे कलाकारों के हाथ में यह रेखा अधिक पाई जाती है (चित्र नं० ४)।

जीवन-रेखा के भीतर शुक्र के स्थान से आरम्भ होने वाली सूर्य्य-रेखा सूचित करती है कि यह धन या उन्नति प्रेम का आधार पाकर होगी—सम्भव है कोई प्रेम सम्बन्ध ऐसा हो या किसी धनवान व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, से विवाह सम्बन्ध हो (चित्र नं० ५) ।

यदि सूर्य्य-रेखा भाग्य-रेखा से चलती हो तो यह

निश्चय है कि भाग्य चमकेगा (चित्र नं० ६)। यदि रेखा आरम्भ से अन्त तक जुड़ी हुई द्वीप रहित और निर्दोष हो तो उन्नति के मार्ग में कभी किसी प्रकार की बाधा नहीं आयेगी। यह रेखा जिस स्थान से भाग्य-रेखा से अलग होगी उस समय से वह व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, अपने कामों में सफल होने लगेगा।

मस्तक-रेखा से आरम्भ होने वाली सूर्य्य-रेखा पैंतीस साल के बाद उन्नति का होना बतलाती है। परन्तु यह



चित्र नम्बर ६ चित्र नम्बर ७ चित्र नम्बर ८

उन्नति मस्तिष्क शक्ति के द्वारा होनी चाहिये—साहित्य मर्मज्ञ, प्रतिभाशाली कवि, ओजस्वी लेखक इत्यादि (चित्र नं० ७)।

यदि सूर्य्य-रेखा में से कोई शाख किसी दूसरे ग्रह-स्थान को जाती हो तो यह उन्नति उसी देवता के गुणों के अनुसार होनी चाहिये जिसके स्थान पर कि शाख जा रही हो। जैसे—(देखो चित्र नं० ८)।

बुध की ओर जाने वाली—व्यापार, विज्ञान, साहित्य या दूसरे व्यवहारिक कामों में उन्नति करती है।

सूर्य्य की ओर जाने वाली—यश और कीर्ति को बढ़ा कर प्रसन्नता और सार्वजनिक जीवन में सफलता देती है।

शनि की ओर जाने वाली—भाग्य-रेखा की शक्ति को बढ़ा कर उसके प्रभाव को दूना कर देती है। यदि हाथ में भाग्य-रेखा का बिल्कुल ही अभाव हो या वह छोटी होकर अपने स्थान तक न पहुँच सकती हो तो यह उसकी कमी को पूरा करने में सहायता देती है। ऐसा व्यक्ति, स्त्री या पुरुष भाग्य का विशेष कृपा पात्र होता है—विशेषकर जब कि भाग्य-रेखा भी हाथ में पड़ी हो।



चित्र नम्बर ९



चित्र नम्बर १०

बृहस्पति की ओर जाने वाली—दूसरों पर अधिकार और शासन करने में उन्नति और यश को बढ़ाती है।

हथेली के मध्य भाग से आरम्भ होकर सूर्य्य के स्थान पर जाने वाली बहुत सी छोटी-छोटी रेखायें भी सौभाग्य सूचक होती हैं। परन्तु इतनी उपयोगी नहीं होतीं जितनी कि एक स्पष्ट और आदि से अन्त तक एक सार भाग्य-रेखा अपने स्थान पर पहुँच कर हो सकती है (चित्र नं० ९)।

यदि सूर्य्य-रेखा में कोई द्वीप आ गया हो तो यह इतना हानिदायक नहीं समझा जाता जितनी कि स्वयं रेखा टूटी हुई हो सकती है। परन्तु द्वीप का चिन्ह रेखा पर जिस स्थान पर होता है वहां अपकीर्ति या बदनामी कराने वाला होता है—यह अनुभव सिद्ध बात है। इसके अतिरिक्त सूर्य्य-रेखा का टूट जाना उस समय पर अचानक उन्नति में बाधा आना और उसके रुक जाने के लक्षण हैं (चित्र नं० १०)।

सूर्य्य-रेखा के सम्बन्ध में कुछ विशेष अनुभव

सूर्य्य-रेखा यदि हाथ में मङ्गल के स्थान से या उसके कुछ पहले आरम्भ हो कर कुछ दूर आगे धुंधली हो गई हो या बिल्कुल ही छिप गई हो और फिर आगे चल कर उभर आई हो तो ऐसी दशा में वह व्यक्ति, स्त्री वा पुरुष, शोक, चिन्ता, आदि आपत्तियों में होकर गुज़रेगा—इसमें सन्देह नहीं। हाँ, यदि यही रेखा आगे चल कर सुधर गई हो तो भविष्य अवश्य सुधर जायगा—यह निश्चय है।

सूर्य्य के स्थान पर छोटी-छोटी बहुत सी रेखायें उस व्यक्ति के एकाग्र चित्त न रहने के लक्षण है। वह कभी कुछ करता है और कभी कुछ—यही कारण है कि वह किसी एक काम में कोई विशेष निपुणता प्राप्त नहीं कर पाता।

सूर्य्य-रेखा यदि टूटी हो तो वह जिस स्थान पर टूटी होगी वहाँ अवश्य किसी आपत्ति का आना बतलायेगी। इस आपत्ति

का कारण क्या होगा यह जानने के लिए हाथ की दूसरी रेखायें या चिह्न देखने चाहियें।

सूर्य्य रेखा पर द्वीप का चिह्न यश को कम करके अपकीर्ति बढ़ाने का लक्षण है। परन्तु यदि इसके साथ कोई वर्ग भी पड़ा हो तो यह द्वीप के अशुभ फल को नष्ट कर देता है। वर्ग के सम्बन्ध में यह बात सदा ध्यान में रखनी चाहिये कि यह हाथ में जिस स्थान पर पड़ता है अपने निकटवर्ती किसी भी अशुभ चिह्न के दुष्ट फल को नष्ट करके आपत्ति के समय मनुष्य की रक्षा करता है।

प्रायः दस्तकार और व्यवसायिक हाथ में सूर्य्य-रेखा का अभाव देखा जाता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि सूर्य्य-रेखा के न होने से वह कोई उन्नति नहीं कर सकते। वह उन्नति करते हैं सही परन्तु उनकी यह उन्नति लोक प्रसिद्ध नहीं हो सकती। ऐसे व्यक्ति मरने के उपरान्त भले ही प्रतिष्ठा के पात्र समझे जांय या समझे जाते हैं परन्तु जीवन में कठिनता से ही अपना पेट-भर पाते हैं या इसके लए उन्हें कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता होती है।

सूर्य्य-रेखा पर क्रूश या तारे का चिह्न सम्भवतः प्रतिष्ठा, उन्नति और सफलता का देने वाला होता है और रेखा के साथ सोने में सुहागे का काम करता है।

यदि हाथ में सूर्य्य-रेखा शुभ पड़ी हो और शुक्र के साथ चन्द्रमा का स्थान भी ऊँचा पड़ा हो तो "साहित्यक" उन्नति

होती है। इसके अतिरिक्त यदि चन्द्रमा का स्थान उभरा हुआ और शुक्र का स्थान नीचा हो तो साहित्यक अलोचना करने की योग्यता पाई जायेगी—विशेषतः जब कि नाख़ून छोटे हों।

यदि रेखा हृदय-रेखा से ही आरम्भ होती हो तो ऐसा व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, उदार, सरल स्वभाव और सर्व-प्रिय होना चाहिये। सर्वप्रिय और सरल स्वभाव होना ही भविष्य में उसकी उन्नति का कारण होता है।

अन्त में सूर्य्य-रेखा के सम्बन्ध में इतना और कह देना है कि अन्य रेखाओं की तरह इस का फल कहते समय भी हाथ की बनावट पर अवश्य एक दृष्टि डाल लेनी चाहिये क्योंकि उसका हमारे स्वभाव पर एक गहरा प्रभाव पड़ता है।

दसवाँ अध्याय

शुक्र-मुद्रिका

शुक्र-मुद्रिका वह धनुषाकार रेखा है जो पहली और दूसरी अंगुली के मध्य से आरम्भ होकर तीसरी और चौथी अंगुली के बीच में समाप्त होती है। इसके सम्बन्ध में बहुत से विद्वानों का मत है कि यह जिस हाथ में होती है उस स्त्री या पुरुष को कामासक्त बनाये रखती है। परन्तु ऐसा कभी नहीं देखा गया जब तक कि वैसे ही चिह्न हाथ में न देख पड़े हों—हाथ का छोटा और मोटा होना, शुक्र के स्थान का आवश्यकता से अधिक उभरा होना, हृदय-रेखा का शनि की अंगुली के पास चला जाना, इत्यादि। यह रेखा दार्शनिक, विषम या सूच्याकार हाथ में अधिक पाई जाती है।

प्रायः देखा गया है कि इसके प्रभाव से उन बुद्धिमान व्यक्तियों के स्वभाव में भी जो चतुर और दूरदर्शी समझे जाते हैं अस्थिरता पाई जाती है। यह रेखा शनि और सूर्य्य की ओर आनेवाली भाग्य और सूर्य्य-रेखा को भी काटती जाती है—अतः उपयोगी नहीं हो सकती (चित्र नं० १)।

शुक्र-रेखा के प्रभाव से विचारों में चञ्चलता आ जाने के साथ ही साथ प्रायः देखा गया है कि स्वभाव भी चिड़चिड़ा हो जाता है और वह व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, तनिक बात पर ही आवेश में भर जाते हैं। क्षणिक स्वभाव



चित्र नम्बर १

होने से वह कभी अत्यन्त जोश में आ जाते हैं और कभी निरुत्साह और निराश देख पड़ते हैं।

यदि शुक्र-मुद्रिका हथेली के बाहर की ओर विवाह-रेखा तक जा रही हो या उसको छू रही हो तो विवाह-जीवन को अशान्त और दुखमय बना देती है। क्योंकि ऐसा मनुष्य अपनी स्त्री में प्रायः सभी गुण पाने की आशा करता है—इतने गुण जितने कि आकाश में तारे हैं। ऐसी दशा में

जब कि स्वभाव में निराशा का भाव होने के साथ ही साथ स्नायविक शक्ति भी निर्बल हो तो यह रेखा कभी-कभी मूर्छारोग उत्पन्न कर देती है।

शुष्क या पीलापन लिये हुए शुक्र मुद्रिका में दुष्टाचरण या गुंडापन की मात्रा अवश्य पाई जाती है। परन्तु यदि इसका बाहर की ओर जाने वाला सिरा नीचे उतर कर मङ्गल के सिरे पर जा पहुँचा हो तो इसमें सुधार होने की अधिक सम्भावना रहती है और वह व्यक्ति भोग विलास में



चित्र नम्बर २

लिप्त रहने की अपेक्षा उचित और अनुचित का ध्यान करने लगता है (त्र—इ—चित्र नं० २)। इसके अतिरिक्त यदि रेखा बुध के स्थान पर ऊँची उठ गई हो तो झूठ बोलने और धोका देने में सहायता करती है (त्र—र—चित्र नं० २)। अन्त में इतना कह देना है कि शुक्र-मुद्रिका इतनी अशुभ-कारक नहीं होती जितना कि किसी समय समझी जाती थी फिर भी इसके लक्षणों पर एक गहरी निगाह अवश्य रखनी चाहिये—सम्भव है भविष्य में कोई नई बात मालूम हो।

शनि-मुद्रिका

शुक्र-मुद्रिका के साथ शनि-मुद्रिका के सम्बन्ध में भी कुछ कह देना अधिक उपयोगी होगा। शनि-मुद्रिका अत्यन्त ही अशुभ और दुर्भाग्य पूर्ण रेखा है। यह भाग्य के स्थान अर्थात् शनि के स्थान को काटती है इसलिये मनुष्य जीवन में जहाँ तक उसकी, स्त्री अथवा पुरुष की, उन्नति और सफलता से सम्बन्ध है, बाधा डालती है। ऐसे व्यक्ति एकाग्र चित्त न हो सकने के कारण अपना कोई काम पूरा नहीं उतार पाते—यही उनकी अवनति या असफलता का कारण है। उनको चाहिये कि अपने कार्य-क्षेत्र में एकाग्र-चित्र, उत्साही और आत्म-विश्वासी होकर उतरें और अपनी अविचल इच्छाशक्ति को लेकर इस अशुभ शनि-मुद्रिका का विरोध करें—यही इस पुस्तक से अपना उद्देश्य है।



सुविख्यात भारतीय सर्जन डाक्टर एन. सी. जोषी

[देखो चक्र युक्त सूर्य्य-रेखा]

ग्यारहवां अध्याय

विवाह-रेखा

विवाह-रेखा या रेखाओं की गणना यद्यपि सात छोटी-छोटी रेखाओं में की गई है फिर भी महत्व में वह किसी तरह भी बड़ी रेखाओं से कम नहीं हैं। "क्या मेरा विवाह होगा?"—यह एक साधारण सा प्रश्न है जो प्रति दिन हमारे सामने आता है। हाथ को एक ओर सीधा करो और देखो की बुध की अँगुली कनिष्ठका और हृदय-रेखा के बीच में कुछ छोटी-छोटी परन्तु स्पष्ट और गहरी रेखायें बाहर की ओर बुध के स्थान पर आ रही हैं—यही विवाह-रेखा या बुध-रेखा हैं।

ऊपर कही गई विवाह-रेखाओं को छोड़कर कुछ और भी रेखायें हैं जिनको यहाँ 'प्राभाविक-रेखा' कहना चाहिये। यह 'प्राभाविक रेखायें' क्या हैं—यह आगे चलकर मालूम होगा। परन्तु यहाँ इतना अवश्य कह देना है कि जहाँ तक हमारे जीवन और भाग्य से सम्बन्ध है यह रेखायें भी विवाह-रेखा की तरह अपना एक विशेष महत्व रखती हैं। अत: बुध के स्थान पर आने वाली विवाह-रेखाओं के साथ इन 'प्राभाविक रेखाओं' का उल्लेख कर देना भी यहां अधिक आवश्यक है।

विवाह सम्बन्धी किसी प्रश्न का उत्तर देते समय तीन नियम प्रयोग में लाने चाहियें। कहने का अर्थ यह नहीं है कि बिना इन तीनों नियमों का प्रयोग किये 'विवाह होगा या नहीं'—इस विषय का ठीक-ठीक ज्ञान हो ही नहीं सकता। हाँ, यदि विवाह करने से सब का उद्देश्य एक ही होता तो इसमें सन्देह नहीं कि केवल एक ही नियम सफल हो सकता था। परन्तु इसके सिवाय हम देखते हैं कि मनुष्य के जीवन पर विवाह जैसे सम्बन्ध का सदा एकसा ही प्रभाव नहीं पड़ता। कुछ तो विवाह ऐसे होते हैं जिनका सम्बन्ध हमारे जीवन से होता है और कुछ ऐसे होते हैं जो केवल प्रेम ही को अपना लक्ष्य बनाते हैं। यही कारण है कि उनमें से कुछ भाग्य-रेखा पर और कुछ शुक्र के स्थान पर देख पड़ते हैं।

सम्भव है कि कुछ व्यक्ति—विशेष कर आर्य्य सभ्यता के अनुयायी—इस ऊपर कहे गये मत का विरोध करें। परन्तु नहीं—उनको यह बात भूल जानी चाहिये कि वह समय अब दूर गया जब कि विवाह का उद्देश्य केवल गृहस्थ-धर्म का पालन करना ही समझा जाता था। आज कितने व्यक्ति स्त्री या पुरुष, ऐसे हैं जो विवाह के इस वास्तविक अर्थ को समझते हैं? उत्तर मिलेगा बहुत कम। कुछ धन पाने की इच्छा से विवाह करते हैं, कुछ सम्मान या कोई ऊँची पदवी पाने के लिये करते हैं, कुछ इसलिये कि उनसे पहले उनके माता पिता भी विवाह कर चुके हैं और कुछ ऐसे भी हैं—अधिक नहीं—जो विवाह का आदर्श समझ कर ही किसी के सम्बन्ध में आते हैं। यही कारण है कि विवाह सूचक चिन्ह या रेखायें प्रत्येक हाथ में एकसी दशा में नहीं देख पड़तीं। व्यवसायिक या सूच्याकार हाथ में यह प्रायः शुक्र के स्थान पर देख पड़ती हैं जब कि समकोण या वर्गाकार (Square) हाथ में केवल बुध के स्थान पर ही होती हैं।

यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को अधिक प्रेम करता है, यदि उस स्त्री का विवाह उस पुरुष के जीवन में कोई विशेष परिवर्तन करके उसके भविष्य या भाग्य पर कोई गहरा प्रभाव डालता है तो ऐसी दशा में विवाह का चिन्ह उस मनुष्य की भाग्य-रेखा पर देख पड़ेगा—यह निश्चय

है । कई बार ऐसा देखने में भी आया है कि बुध के स्थान पर कोई विवाह-रेखा न होने पर भी विवाह सम्बन्ध हुआ है—यह सम्बन्ध भाग्य-रेखा या शुक्र के स्थान पर जीवन-रेखा के पास उसके समान्तर जाने वाली 'प्राभाविक-रेखायें' थीं। यहाँ सब से पहले हम भाग्य-रेखा के सम्बन्ध में आने वाली प्राभाविक-रेखाओं को लेते हैं ।

वह सभी रेखायें जो ऊपर उठकर भाग्य-रेखा से मिलती हैं वह व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, होते हैं जो किसी व्यक्ति—विशेषकर अपने विरोधी वर्ग—के सम्बन्ध में आकर उसके भविष्य जीवन पर कोई गहरा प्रभाव डालते हैं । समझने के लिये एक स्त्री को ले लीजिये। अपनी सुन्दरता या और और किसी गुण के प्रभाव से किसी पुरुष को अपने आकर्षण में लाकर विवाह या प्रेम सम्बन्ध द्वारा उसके जीवन का एक मुख्य अङ्ग बन जाती है या उसके भाग्य में कोई विशेष परिवर्तन कर देती है—यही 'प्राभाविक-रेखा' या रेखायें' हैं।

यदि इन 'प्राभाविक-रेखाओं' में कोई एक रेखा शेष सभी रेखाओं से अधिक स्पष्ट या गहरी हो तो यह जिस स्थान पर भाग्य-रेखा के साथ मिलेगी उस स्थान पर विवाह सम्बन्ध का होना बतलायेगी—यह अधिक संख्या में देखा गया है (स—स—चित्र नं० १२ पृष्ठ १८३)। यदि भाग्य-रेखा किसी 'प्राभाविक-रेखा' के मिलने के स्थान से आगे ऊपर की

ओर अधिक सुन्दर और स्पष्ट हो गई हो तो यह प्रभाव कोई शुभ विवाह होगा और यदि इसकी अपेक्षा भाग्य-रेखा टूटी-फूटी, द्वीप युक्त या दोष पूर्ण निर्बल हो तो इसका प्रभाव उल्टा होगा—यह निश्चय है।

यदि 'प्राभाविक-रेखा' और भाग्य-रेखा के मिलने के स्थान से सूर्य-रेखा आरम्भ होती हो तो ऐसी दशा में विवाह सुखमय, सम्मान सूचक और धन की प्राप्ति कराने वाला होगा। इसी तरह कोई भी स्पष्ट और प्रभावपूर्ण रेखा जो भाग्य-रेखा से आकर मिलती है धनवान या प्रभाव पूर्ण सम्बन्ध होता है—विशेषतः जब कि प्रभाविक-रेखा स्पष्ट होकर भाग्य-रेखा के बराबर जारही हो (ल—ल—चित्र नं० १३ पृष्ठ १८३)।

भाग्य-रेखा पर सब से अधिक श्रेष्ठ और सुखमय विवाह का चिन्ह वह होता है जब कि 'प्रभाविक-रेखा' भाग्य-रेखा के पास होकर सीधी ऊपर की ओर उठती है (ल—ल—चित्र नं० १३ पृष्ठ १८३)।

यदि विवाह-रेखा आधीन भाग्य-रेखा से अधिक गहरी और प्रभावपूर्ण देख पड़ती हो तो इस विवाह सम्बन्ध में वह व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, (जिसकी ओर कि विवाह-रेखा या 'प्राभाविक-रेखा' का संकेत है) उस स्त्री या पुरुष की अपेक्षा जिसके हाथ में उपरोक्त 'प्राभाविक-रेखा' पड़ी हो अपने जीवन में अधिक प्रभावशाली होने के साथ ही साथ व्यक्ति-

गत रूप से भी पहले से ज्यादा शक्ति पूर्ण होगा और उस पर (अधिकारी पर) शासन करेगा।

यदि 'प्राभाविक-रेखा' चन्द्रमा के स्थान पर पहले सीधी जाकर फिर अचानक घूमकर भाग्य-रेखा से जाकर मिलती हो तो इस सम्बन्ध या विवाह का मुख्य उद्देश्य प्रेम पालन की अपेक्षा प्रायः काम वासना का तृप्त करना ही होगा (न—न—चित्र नं० ११ पृष्ठ १३७)।

प्रायः देखा गया है कि भाग्य-रेखा किसी 'प्राभाविक-रेखा' से मिलने के बाद मध्यम हो जाती है या किसी किसी हाथ में अपना मार्ग ही बदल देती है। इसका क्या अर्थ है यह जानने के लिये अधिक दूर जाने की आवश्यकता नहीं। 'प्राभाविक-रेखा' के प्रभाव से निर्बल या मध्यम हुई भाग्य-रेखा जिस स्थान पर निर्बल या मध्यम होगी वहाँ प्रभाविक-रेखा का उस पर शासन होगा। 'प्राभाविक-रेखा' जिस स्थान पर भाग्य-रेखा से मिलेगी उसी समय पर कोई व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, अधिकारी (स्त्री या पुरुष जिसके हाथ की परीक्षा की जाय) पर अपना प्रभाव डालकर उसको अपने वश करने में समर्थ होगा।

यदि भाग्य-रेखा किसी 'प्राभाविक-रेखा' से मिलने के उपरान्त हलकी, दोषपूर्ण, द्वीप युक्त या टूट गई हो तो यह सम्बन्ध या विवाह अवनति और दुर्भाग्य का कारण होगा। परन्तु यदि भाग्य-रेखा 'प्रभाविक-रेखा' से ऊपर शक्ति

पूर्ण देख पड़ती हो तो यह सम्बन्ध या विवाह उन्नति कराने वाला होना चाहिये (चित्र नं० १)।

सम्बन्ध या विवाह का समय जानने के लिये 'प्राभाविक-रेखा' का स्थान देखना चाहिये। यह रेखा जिस स्थान पर भाग्य-रेखा से जाकर मिलेगी वही उस सम्बन्ध या विवाह का समय होगा (चित्र नं० २)। दिये हुए चित्र में प्रत्येक 'प्रभाविक-रेखा' भाग्य-रेखा से किसी नियत समय पर मिलती है—यही उस सम्बन्ध या विवाह का समय



चित्र नम्बर १



चित्र नम्बर २

है। इसके अतिरिक्त रेखा के स्थान का निश्चय करके उसका समय घटा बढ़ा कर कहना चाहिये (देखो चित्र नं० २)।

१—आयु १५ से लेकर २० बरस तक।

२—आयु २५ से लेकर ३० बरस तक।

३—आयु ३५ से लेकर ४० बरस तक।

४—आयु ४५ से लेकर ५० बरस तक।

५—आयु ५५ से लेकर ६० बरस तक।

यदि 'प्राभाविक-रेखा' दोनों हाथ में एक सी स्पष्ट पड़ी

हो तो दोनों ओर प्रेम समान होता है और विवाह होने की सम्भावना अधिक रहती है। परन्तु दूसरी दशा में यदि 'प्राभाविक-रेखा' केवल बांयें हाथ में अधिक गहरी होकर सीधे हाथ में निर्बल या कुछ मध्यम पड़ गई हो तो प्रभाव डालने वाली किसी स्त्री या पुरुष की अपेक्षा उस अधिकारी की ओर, जिसके हाथ में यह रेखा पड़ी हो, प्रेम अधिक पाया जायगा।

यदि 'प्राभाविक-रेखा' भाग्य-रेखा के पास पहुँच कर रुक गई हो—उससे मिली न हो तो यह विवाह सम्बन्ध के टूट जाने का लक्षण है (च—च—चित्र नं० ११ पृष्ठ—१३७)

जीवन-रेखा के सम्बन्ध में आने वाली प्राभाविक रेखायें

यह रेखायें शुक्र के स्थान पर जीवन-रेखा के समानान्तर चलती हैं। इन रेखाओं के सम्बन्ध में नीचे लिखे गये नियम ध्यान में रखने चाहियें।

वह 'प्राभाविक-रेखा' जो शेष सभी रेखाओं से अधिक गहरी होकर जीवन-रेखा के समानान्तर जा रही हो किसी ऐसे स्त्री या पुरुष की ओर संकेत करती है जो उस स्त्री या पुरुष पर—जिसके हाथ में यह 'प्राभाविक-रेखा' पड़ी हो—अपना कोई विशेष प्रभाव डालता है (ल—ल—चित्र नं० १०—पृष्ठ १३१)। स्पष्ट या गहरी 'प्राभाविक-रेखा यदि जीवन-रेखा से अधिक दूर होगी तो विवाह सम्बन्ध में

आने वाले स्त्री पुरुषों में परस्पर उतना ही अधिक मतभेद और स्वभाव में अन्तर पाया जायगा—इससे भी अधिक यदि 'प्राभाविक रेखा' जीवन-रेखा से दूर चली गई हो और अन्त में सर्प-जिह्वाकार हो गई हो तो पति-पत्नी का वियोग और कभी-कभी त्याग तक करा देती है—विशेषतः जब कि सर्प-जिव्हाकार रेखा अधिक स्पष्ट या गहरी हो और कुछ दूर चलकर ही समाप्त हो गई हो। यदि रेखा जीवन-रेखा से घूम गई हो—परन्तु रुकी न हो—तो भले ही उस समय पर जहाँ कि 'प्राभाविक-रेखा' भीतर की ओर मुड़ती हो पति और पत्नी में परस्पर विरोध भाव या कोई झगड़ा उत्पन्न हो—वियोग या त्याग होने की सम्भावना जाती रहती है (र—र—चित्र नं० १३ पृष्ठ १८३)। इसके अतिरिक्त यदि 'प्राभाविक-रेखा' जीवन-रेखा के पास में पड़ती हो तो यह शुभ फल दिखाती है। इसमें परस्पर पति-पत्नी का व्यवहार सम और स्वभाव एकसा होता है—यही सच्चे सुख का कारण है।

यदि किसी हाथ में 'प्राभाविक-रेखा' टूटकर दो भाग हो गई हो तो यह अचानक मृत्यु होने का अशुभ लक्षण समझना चाहिये (घ—घ—चित्र नं० १३ पृष्ठ १८३)। परन्तु यदि रेखा जीवन-रेखा से अलग न जाकर उसी की ओर झुकी जा रही हो तो यह परस्पर प्रेम और अनुराग बढ़ाती है।

यदि रेखा भीतर की ओर जा रही हो या उसमें कोई द्वीप का चिह्न हो तो इस 'प्राभाविक-रेखा' के द्वारा निश्चित किया गया व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, किसी आपत्ति में फँसेगा और सम्भवतः अपमानित भी होगा (क—क—चित्र नं १० पृष्ठ १२१)।

प्रायः देखा गया है कि शुक्र के स्थान पर जीवन-रेखा के समानान्तर कई रेखायें होती हैं। इनमें वह रेखा जो सब से अधिक भारी और जीवन-रेखा के पास होगी 'प्राभाविक-रेखा' होगी। शेष रेखायें भी वह व्यक्ति विशेष होते हैं जिनके लिये—रेखाओं की गहराई और उनके अन्तर के अनुसार ही—अधिकारी के हृदय में कम या अधिक प्रेम पाया जाता है।

बुध के स्थान पर जाने वाली रेखायें

यह रेखायें विवाह-रेखा कहलाती हैं। इन में गहरी और भारी रेखायें ही विवाह के सम्बन्ध में प्रमाण के रूप में मानी जाती हैं। छोटी और कमज़ोर रेखाओं का सिवाय इसके कि कभी-कभी विवाह का प्रस्ताव उपस्थित हो दूसरा कोई अर्थ नहीं होता।

विवाह-रेखा स्पष्ट, सीधी, बिना टूटी हुई, द्वीप रहित और निर्दोष होनी चाहिये। यदि ऊपर की ओर मुड़ी हो (इ—इ—चित्र नं० ११—पृष्ठ संख्या—१२७) उस व्यक्ति स्त्री या पुरुष, का कभी विवाह न होगा।

यदि विवाह-रेखा नीचे की ओर झुक रही हो या हृदय-रेखा को स्पर्श करती हो तो अधिकारी जिसके साथ विवाह करेगा उसकी मृत्यु होगी—इसमें सन्देह नहीं। यदि रेखा एक साथ हृदय-रेखा की ओर मुड़ती हो या उसके साथ न्यून (Acute) होकर मिलती हो तो यह मृत्यु अकस्मात् होगी और यदि इस विवाह-रेखा का झुकाव विषम (Obtuse) हो तो शरीर अधिक समय तक रोगी रह कर मृत्यु होगी—ऐसा समझना चाहिये।

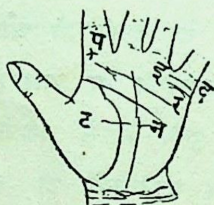
यदि रेखा स्पष्ट या गहरी हो और उसमें छोटी-छोटी बारीक रेखायें नीचे हृदय-रेखा पर आरही हों तो इस विवाह सम्बन्ध में स्त्री या पुरुष में से किसी का स्वास्थ्य ठीक न रहने से कष्ट और आपत्तियों का सामना करना होगा-यह अनुभव से सिद्ध हो चुका है।

विवाह-रेखा पर द्वीप का चिन्ह भी अपना अशुभ फल लाये बिना नहीं रहता और पति-पत्नि का परस्पर वियोग करा देता है (स–स चित्र नं० १३ पृष्ठ १८३)।

यदि विवाह-रेखा हथेली के मध्य-भाग को जाती हुई द्वि-जिन्ह या सर्प-जिन्हाकार होगई हो तो यह न्यायालय में जाकर परस्पर वियोग या हाथ में दूर तक जाकर (न—चित्र नं० १० पृष्ठ- १२१) विवाहोच्छेद (Divorce) होने का अशुभ लक्षण है—विशेषतः जब कि उसमें से कोई एक रेखा (म—म—चित्र नं० १०-- पृष्ठ १२१) मङ्गल-क्षेत्र अर्थात्

मङ्गल के मैदान को पार करती हो या मङ्गल के स्थान पर जा रही हो।

प्रायः बहुत से हाथों में विवाह-रेखा टूटी हुई होकर भी छोटे-छोटे द्वीपों से भरी मिलती है। यह विवाहित-जीवन दुःख पूर्ण होने का लक्षण है—परस्पर मत भेद, विरोध भाव इत्यादि। कभी-कभी आपस का यह मतभेद यहाँ तक बढ़ता देखा गया है कि पति-पत्नि यदि व्यवहारिक रूप में नहीं तो हृदय से एक दूसरे से अलग हो गये हैं।



चित्र नम्बर ३

यदि रेखा द्वीप युक्त और सर्प-जिव्हाकार हो तो यह भी विवाहित-जीवन को आनन्द पूर्वक व्यतीत नहीं होने देती। ऐसी दशा में कोई गृहस्थ अपना जीवन सुखसे व्यतीत कर सके हों—यह सफलता पूर्वक नहीं कहा जा सकता।

ऊपर कहा गया है कि बहुत से हाथों में एक से अधिक विवाह-रेखायें भी देख पड़ती हैं। ऊपर दिये गये चित्र में दो विवाह-रेखायें हैं–एक बड़ी और दूसरी छोटी। छोटी विवाह रेखा को एक तीसरी छोटी रेखा—जिसको यहाँ अवरोध रेखा कहना चाहिये--काट रही हैं (र—र—चित्र नं०३)। ऐसी

दशा में अधिकारी, पुरुष या स्त्री, का विवाह सम्बन्ध निश्चित हुआ है परन्तु पूरा नहीं हो सका या नहीं हो सकेगा—यह निःसन्देह होकर कहा जा सकता है।

केवल इतना ही नहीं यदि विवाह-रेखा ऊपर लिखे अनुसार कटी हो तो उसका समर्थन हृदय-रेखा और जीवन-रेखा भी करती हैं—परन्तु ऐसी दशा में जब कि इस विवाह के निश्चित सम्बन्ध का टूट जाना अधिकारी, पुरुष या स्त्री, के हृदय पर कोई गहरी चोट हो या और किसी प्रकार जीवन पर उसका कोई विशेष प्रभाव पड़ता हो। हृदय-रेखा से नीचे की ओर जाने वाली रेखा ही इसका प्रमाण होगी। यदि तीनों विवाह-रेखाओं में सबसे नीचे रेखा अधिक लम्बी और स्पष्ट हो तो पहले दो प्रेम सम्बन्ध असफल हुए हैं—यह कहा जा सकता है।

पहले भाग्य-रेखा और हृदय-रेखा को लीजिये। प्रायः शुक्र के स्थान से देखा गया है कि कोई एक रेखा भाग्य-रेखा में आकर मिलती है—(ट—न—चित्र नं० ३) और संगम होने के कुछ ऊपर भाग्य-रेखा दो भाग में बट रही है। अतः यह कोई ऐसा व्यक्ति है जो अधिकारी पर अपना विशेष प्रभाव डालेगा या पीछे डाल चुका है और भाग्य-रेखा का दो भाग होना और हृदय-रेखा का अलग हो जाना इसका प्रमाण है कि हृदय पर प्रेम का आकर्षण हुआ है और जीवन में नवीनता का सञ्चार हुआ है।

अब विवाह-रेखा को देखिये। विवाह-रेखा के साथ ही बृहस्पति के स्थान पर क्रूश का चिन्ह भी है (प—चित्र नं० ३)। यह सभी सूचनायें हैं और भाग्य-रेखा में से हृदय-रेखा में जाने वाली शाखायें इसका प्रमाण हैं कि प्रेम हुआ है। यहाँ शुक्र के स्थान से आने वाली 'प्राभाविक-रेखा' जिस समय भाग्य-रेखा को आकर छुएगी वही विवाह का समय होगा।

बृहस्पति के स्थान पर क्रूश का चिन्ह बृहस्पति की अँगुली के जितने ही अधिक पास होगा विवाह उतना ही शीघ्र होगा। बृहस्पति के स्थान का मध्य भाग २९-३० बरस की आयु समझनी चाहिये।

हृदय-रेखा से उठकर स्पष्ट गहरी विवाह-रेखा पर जाने वाली रेखायें "प्रेम-सूचक" होती हैं जिसका समर्थन हृदय-रेखा, भाग्य-रेखा और शुक्र के स्थान से आने वाली रेखायें करती हैं।

मणिबन्ध से आरम्भ होकर ऊपर को आने वाली रेखा (भाग्य-रेखा को छोड़कर) सफलता या उन्नति के देने वाली होती है। यदि यह रेखा मणिबन्ध या चन्द्रमा के स्थान से आरम्भ होकर शुक्र के स्थान पर होती हुई बृहस्पति की ओर जाती हो तो यह धनवान सम्बन्ध होने का शुभ लक्षण है। किसी भी विवाहित हाथ में बृहस्पति पर क्रूश का होना आवश्यक नहीं है जब तक कि वह विवाह सम्बन्ध धन प्राप्त करने वाला न हो।

यदि यह रेखा सूर्य के स्थान पर जाती हो तो यह विवाह किसी ऐसे व्यक्ति के साथ होना चाहिये जो दस्तकार या सूर्य देवता की बताई हुई कलाओं से प्रेम रखता हो—साहित्य, कविता, चित्रकारी, संगतराशी इत्यादि।

यदि रेखा शनि के स्थान को जाती हो तो यह विवाह किसी अधिक अवस्था वाले व्यक्ति के साथ होना चाहिये।

यदि बुध के स्थान पर जाती हो तो किसी व्यापारी या इसी श्रेणी के किसी दूसरे व्यक्ति के साथ विवाह सम्बन्ध का होना निश्चित करती है।

चित्रमय विवाह-रेखा

विवाह-रेखा या बुध-रेखा कनिष्ठका अँगुली के नीचे और हृदय-रेखा के ऊपर बुध के स्थान पर सीधी और स्पष्ट हो तो सम्बन्ध या विवाह शुभ और सुखमय होगा—इसमें सन्देह नहीं (ब—चित्र नं० ४),

यदि विवाह-रेखा छोटी और सिर पर ऊपर की ओर मुड़ गई हो तो यह आजन्म अविवाहित रहने का लक्षण है। जहाँ तक अनुभव हुआ है रेखा का ऊपर की ओर मुड़ जाना विवाह का विरोध ही करता है। हाँ, विवाह के प्रस्ताव अवश्य होते देखे गये हैं; परन्तु विवाह हुआ हो यह आज तक नहीं देखा गया (चित्र नं० ५)।

विवाह-रेखा का नीचे की ओर झुक जाना पति के हाथ में पत्नी और पत्नी के हाथ में पति की मृत्यु हो जाने की

पहली सूचना है। यदि रेखा एक साथ ही नीचे को मुड़ गई हो तो यह मृत्यु अकस्मात होनी चाहिये और यदि धीरे-धीरे अर्थात् विषम होकर मुड़ी हो तो अधिक समय तक स्वास्थ्य-ख़राब रहकर मृत्यु होगी—यह बात अनुभव में भी आ चुकी है (चित्र नं ६)।

यदि विवाह-रेखा में कोई द्वीप पड़ा हो और रेखा स्वयं नीचे की ओर मुड़ रही हो तो यह लक्षण भी अशुभ होता है। ऐसी दशा में किसी शोक या दुःख से पुरुष के हाथ में



चित्र नम्बर ४ चित्र नम्बर ५ चित्र नम्बर ६

स्त्री या स्त्री के हाथ में पुरुष की मृत्यु होगी— अधिक समय तक अस्वस्थ या रोगी रहना हो ऊपर कही गई रेखा का लक्षण या मृत्यु का कारण समझना चाहिये (चित्र नं० ७)

विवाह-रेखा, यदि भीतर की ओर सर्प-जिह्वाकर हो गई हो तो यह केवल परस्पर वियोग हो जाने का लक्षण है। परन्तु इसमें कभी स्त्री ने पुरुष का और पुरुष ने स्त्री का परित्याग किया हो—यह कभी नहीं देखा गया (चित्र नं० ८)। दूसरी दशा में यदि विवाह-रेखा बाहर की ओर सर्प-जिह्वाकार हो



डाक्टर डी. डी. शर्म्मा राजवैद्य प्रिन्सिपल ए. ऐच. मैडिकल कौलिज

[देखो द्वि-जिव्ह मस्तक-रेखा]

तो विवाह होने से पहले बहुत अड़चन और बाधायें आयेंगी। "विवाह होने में देर होगी"—यह बाहर की ओर सर्प-जिव्हाकार रेखा को देखकर कहा जा सकता है।

यदि विवाह-रेखा सर्प-जिव्हाकार हो और उसमें से कोई



चित्र नम्बर ७



चित्र नम्बर ८

एक रेखा हृदय-रेखा पर जा रही हो और हृदय-रेखा नीचे की ओर झुक कर मस्तक-रेखा के साथ जीवन-रेखा पर जा रही हो तो यह अत्यन्त ही दुःख पूर्ण विवाह सम्बन्ध होने



चित्र नम्बर ९



चित्र नम्बर १०

का लक्षण है—परन्तु इसका कारण उस व्यक्ति की जिसके हाथ में यह रेखा पड़ी हो स्पष्टता और विचारों की निश्पक्षता होनी चाहिये। ऐसी दशा में वियोग या सम्बन्ध-विच्छेद (Divorce) तो नहीं होता परन्तु आवेश पूर्ण

मृत्यु या आत्म-हत्या होकर विवाह का अन्त कर देने की सम्भावना प्रायः अधिक रहती है—आग में जल कर मरना, विष खा लेना, जल में डूबकर प्राणों का विसर्जन करना, इत्यादि (चित्र नं० ६)।



चित्र नम्बर ११



चित्र नम्बर १२

यदि सर्प-जिव्हाकार रेखा में से कोई रेखा मस्तक-रेखा में जाकर मिलती हो तो किसी भी ऐसे दो पति-पत्नी के परस्पर विचारों में मतभेद रहने के कारण विवाहित जीवन



चित्र नम्बर १३



चित्र नम्बर १४

अशान्त और दुःखपूर्ण बना रहेगा। परस्पर मतभेद ही इस में नित्य के झगड़ों का कारण होता है (चित्र नं० १०)।

सर्प-जिव्हाकार विवाह-रेखा में से यदि कोई रेखा सूर्य-रेखा पर द्वीप का चिन्ह बनाती हो तो यह विवाह उस

व्यक्ति के अपमान, अयश और अपवाद का कारण होगा। विवाहोच्छेद हो जाना भी उपरोक्त रेखा का साधारण लक्षण है (चित्र नं० ११)।

यदि सर्प-जिव्हाकार रेखा किसी अन्य रेखा द्वारा भाग्य-रेखा के ऊपर किसी क्रूश पर समाप्त हो रही हो तो यह लक्षण सब से अधिक दुर्भाग्य पूर्ण होता है। इस विवाह का अन्त फांसी या सूली पाकर होता है—ऐसा अनेक विद्वानों का मत है (चित्र नं० १२)।



चित्र नम्बर १५



चित्र नम्बर १६

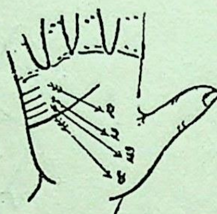
विवाह-रेखा में से यदि कोई सुन्दर या स्पष्ट रेखा सूर्य-रेखा पर जा रही हो तो यह सौभाग्य-पूर्ण सम्बन्ध होने का शुभ लक्षण है। ऐसा विवाह धन, सम्मान और सफलता का देने वाला होता है (चित्र नं० १३)।

यदि विवाह-रेखा नीचे की ओर सूर्य्य-रेखा को काट कर जा रही हो तो यह विवाह सम्बन्ध धन और सम्मान का नाश कराता है (चित्र नं० १४)

यदि विवाह-रेखा नीचे की ओर सर्प-जिव्हाकार हो और उसमें से कोई रेखा शुक्र के स्थान को जाकर काटती हो तो

यह उस स्त्री या पुरुष का जिसके हाथ में यह चिह्न पड़ा हो विवाहोच्छेद हो जाने का लक्षण है। (चित्र नं० १५)।

यदि विवाह-रेखा किसी द्वीप को लेकर चलती हो तो विवाह से पहले अड़चन या बाधाओं का आना बतलाती है। इन बाधाओं का कारण प्रलोभन, आकर्षण, मोह या चरित्र हीनता होनी चाहिये। यदि रेखा आगे चलकर सीधी और स्पष्ट हो गई हो तो वहीं से दशा सुधर जायगी—इस में सन्देह नहीं (चित्र नं० १६)।



चित्र नम्बर १७

विवाह का समय जानने के लिये विवाह-रेखा का स्थान देखना चाहिये। विवाह-रेखा जितनी ही हृदय-रेखा के समीप होगी विवाह भी उतना ही शीघ्र होगा—यह अनेक विद्वानों का मत है। परन्तु समय निकालते समय विद्यार्थियों को हाथ की बनावट पर अवश्य ध्यान रखना चाहिये। क्योंकि, उदाहरण के लिए, समकोण (Square) और सूच्याकार हाथ की विवाह-रेखाओं में बहुत कुछ अन्तर पड़ जाता है। अतः यहां हाथ की बनावट देखकर विवाह-रेखाओं का समय

घटा बढ़ा कर कहना चाहिये। हृदय-रेखा और कनिष्ठका अंगुली के बीच का भाग नीचे लिखे अनुसार छोटे-छोटे भागों में विभक्त करो और देखो कि उन में विवाह-रेखा का स्थान कौनसा है—वही विवाह या आयु का समय होगा।

प्राय: देखा गया है कि प्रत्येक हाथ में केवल ऊपर कहा गया नियम ही लागू नहीं होता। लगभग पांच प्रति शत यह नियम बिलकुल ही उल्टा सिद्ध हुआ है—अर्थात् विवाह-रेखा जितनी ही अधिक कनिष्टका अंगुली के पास और हृदय-रेखा से दूर रही है विवाह उतना ही शीघ्र और कम आयु में हुआ है। अतः विद्यार्थियों की सुविधा के लिए यहां दोनों ही नियम दिये जाते हैं (देखो चित्र नं० १७)।

पहला नियम	समय-विभाग या आयु
हृदय-रेखा से ऊपर कनिष्ठका की ओर	१५ से २० वर्ष तक ………४
	२५ से ३५ वर्ष तक ………३
	४० से ५० वर्ष तक ………२
	५५ से ७० वर्ष तक ………१

दूसरा नियम	समय-विभाग या आयु
कनिष्टका से नीचे हृदय-रेखा की ओर	१५ से २० वर्ष तक ………१
	२५ से ३५ वर्ष तक ………२
	४० से ५० वर्ष तक ………३
	५५ से ७० वर्ष तक ………४

विवाह का समय जानने के लिये जो ऊपर दो नियम दिये जा चुके हैं केवल उन्हीं को लेकर विवाह का ठीक-ठीक समय निकाल लेने में कोई विद्यार्थी पूर्णतया सफल हो सके—यह सफलता पूर्वक नहीं कहा जाता। यद्यपि बहुत से हाथों में ऊपर लिखे दोनों ही नियम सफल हुए हैं, फिर भी वह अधिक विश्वासनीय नहीं कहे जा सकते। उपरोक्त दोनों नियमों को सफल बनाने के लिये विद्यार्थियों के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि जीवन-रेखा से भाग्य-रेखा पर आने वाली रेखाओं को प्रमाण मान कर विवाह का समय निकाला जाय। यह जीवन-रेखा से आरम्भ हो कर भाग्य-रेखा पर आने वाली रेखायें या रेखा जिस स्थान पर भाग्य-रेखा को स्पर्श करेगी वही विवाह होने की आयु या समय होगा—विवाह का समय निकालने के लिये यह नियम सर्वश्रेष्ठ और सर्वोपयोगी है।

विशेष विवरण

विवाह-रेखा कनिष्टका अँगुली के नीचे बाहर की ओर से आती है या केवल बुध के स्थान पर ही देख पड़ती है। यह रेखा सीधी, नीचे की ओर झुकी हुई या ऊपर को ओर मुड़ी हुई हो सकती है।

लम्बी विवाह-रेखा 'विवाह सूचक' रेखा होती है। परन्तु छोटी या अस्पष्ट रेखा का अर्थ कोई गहरा प्रेम या विवाह की चिन्ता को छोड़ कर दूसरा नहीं होता।

यदि किसी स्पष्ट विवाह-रेखा में से कुछ बारीक-बारीक रेखायें नीचे गिर रही हों तो स्त्री के हाथ में पुरुष और पुरुष के हाथ में स्त्री के लिये रोग सूचक हैं।

यदि रेखा स्वयं हृदय-रेखा पर गिर रही हो या नीचे की ओर झुक रही हो तो जिस स्त्री या पुरुष के साथ विवाह सम्बन्ध होगा उसकी मृत्यु पहले होगी—यह निश्चय है।

यदि विवाह-रेखा ऊपर की ओर सिरे पर मुड़ गई हो तो उस स्त्री या पुरुष का कभी विवाह होगा—यह सफलता पूर्वक नहीं कहा जा सकता।

हृदय-रेखा पर झुकी हुई सर्प-जिह्वाकार विवाह-रेखा विवाहोच्छेद करा देती है। विवाहोच्छेद का होना और भी अधिक निश्चित है यदि रेखा की दोनों शाखों के बीच से कोई रेखा हथेली को पार करती जा रही हो।

यदि विवाह-रेखा के मध्य में, या और किसी जगह द्वीप हो तो यह विवाहित जीवन में कोई भारी आपत्ति आने की सूचना देता है—वियोग या हृदय से परित्याग।

यदि रेखा टूटी हुई दो भाग हो कर नीचे की ओर झुक रही हो तो ऐसी दशा में स्त्री के हाथ में उसके पति और पुरुष के हाथ में उसकी स्त्री की मृत्यु अकस्मात होनी चाहिये।

चन्द्रमा के स्थान से आरम्भ होकर भाग्य-रेखा पर आने वाली 'प्राभाविक-रेखा' कोई शुभ सम्बन्ध या विवाह होने का लक्षण है—विशेषतः जब कि उक्त प्राभाविक-रेखा के मिलने

के पश्चात भाग्य-रेखा ऊपर की ओर बलवान हो या वहाँ से सूर्य्य-रेखा आरम्भ हो रही हो।

यदि प्रभाविक-रेखा के मिलने से भाग्य-रेखा में अचानक कोई परिवर्तन हुआ हो तो स्वयं भाग्य-रेखा के अनुसार ही जीवन में किसी विशेष परिवर्तन का हो जाना निश्चय है।

इसके अतिरिक्त यदि रेखा नीचे की ओर सूर्य्य-रेखा को काट रही हो तो यह सम्बन्ध उस व्यक्ति के सम्मान को घटा कर अपमान का कारण होगा—यह कहा जा सकता है।

यदि बुध के स्थान पर आने वाली विवाह-रेखा अपनी कोई शाख सूर्य्य-रेखा के स्थान पर भेज रही हो तो यह सूचित करती है कि अधिकारी वर्ग—स्त्री या पुरुष—किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह सम्बन्ध करेगा जो सु-सम्पन्न या जनता में सम्मान का पात्र हो।

यदि विवाह-रेखा के समानान्तर और लगभग उसको स्पर्श करती हुई दूसरी रेखा भी जा रही हो तो यह विवाह के पश्चात अधिकारी वर्ग की ओर से किसी गहरे प्रेम का होना बतलाती है

पिछले दिये गये चित्र के अनुसार बुध के स्थान पर विवाह-रेखा का स्थान देख कर विवाह का समय या आयु का अनुमान किया जा सकता है। परन्तु समय का ठीक ठीक ज्ञान प्राप्त करने के लिये भाग्य-रेखा पर एक गहरी दृष्टि अवश्य डाल लेनी चाहिये—क्योंकि ऐसी दशा में प्रायः उस स्थान पर

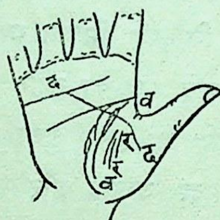
भाग्य-रेखा में कोई विशेष परिवर्तन होगा या कोई अन्य प्राभाविक-रेखा उसके समानान्तर जा रही होगी।

शुक्र-रेखायें

जीवन-रेखा के सम्बन्ध में आने वाली प्राभाविक-रेखाओं के सम्बन्ध में पिछले पृष्ठों पर पर्याप्त रूप से प्रकाश डाला जा चुका है। अतः यहां इस सम्बन्ध में हम अधिक न कहते हुए उन छोटी-छोटी बहुत सी रेखाओं को लेते हैं जो शुक्र के स्थान पर देख पड़ती हैं। इन रेखाओं के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि यह मित्रता या प्रेम सूचक रेखायें होती हैं। साथ ही यदि शुक्र का स्थान अधिक उभरा हुआ हो तो अधिकारी यदि वह पुरुष हुआ तो स्त्रियों के सम्बन्ध में आने के लिए सदा उत्सुक और ललायित रहता है— यह सम्बन्ध उचित होगा या अनुचित यह हाथ की बनावट और उसमें आये हुए अन्य चिन्हों को देख कर बताया जा सकता है। क्योंकि समकोण हाथ में शुभ मस्तक-रेखा के साथ यह रेखायें स्वभाव में उदारता और सहानुभूति के बढ़ाने वाली होती हैं। जब कि मुलायम, लम्बे और भारी व्यवसायिक हाथ में यही रेखा अधिक उभरे हुए शुक्र के स्थान के साथ मनुष्य को इन्द्रिय लोलुप और कामी बना देती है।

मङ्गल-रेखा अर्थात् जीवन-रेखा की सहायक रेखा के पीछे शुक्र के स्थान पर यह रेखायें जिनको मित्रता या प्रेम सम्बन्धी रेखा कहा गया है वह मित्र और प्रभावपूर्ण व्यक्ति, स्त्री

या पुरुष, होते हैं जो अधिकारी पर अपना कोई विशेष प्रभाव लेकर आते हैं (र—र—चित्र नं० १८)। सम्भव है किसी भाग्यवान पुरुष के ऐसे बहुत से मित्र हों—परन्तु यह मित्रता कैसी होगी यह ग्रह-स्थानों का उभार और हृदय-रेखा के गुणों पर निर्भर है। कभी-कभी यह रेखायें शुक्र के स्थान पर जीवन-रेखा की ओर जाने वाली छोटी-छोटी रेखाओं को काट कर एक जाल सा बना देती हैं। रेखाओं का यह जाल उभरे हुए शुक्र के स्थान पर प्रबल प्रेम या प्रेम



चित्र नम्बर १८

रहित कामुकता का लक्षण है। प्रायः ऐसे व्यक्ति आरम्भ में अत्यन्त प्रेम दिखलाते हैं और अपनी विषय वासना को तृप्त कर लेने के बाद उत्साह हीन या बनावटी देख पड़ते हैं।

विवाह-रेखाओं के सम्बन्ध में कहे गये उपरोक्त तीनों नियम यदि एक साथ प्रयोग में लाये जांय तो केवल विवाह ही नहीं विवाह और जीवन सम्बन्धी अनेक रहस्यों का पता भी—कुछ अभ्यास करलेने के बाद—हमको मिलता है। अतः विद्यार्थियों को चाहिये कि वह इस सम्बन्ध में अधिक सतर्क और सावधान रह कर ही अपना प्रयोग करें।

बारहवां अध्याय

सन्तान-रेखा

सन्तान-रेखा या रेखायें वह छोटी-छोटी सुन्दर, पतली परन्तु स्पष्ट रेखायें होती हैं जो विवाह-रेखा से आरम्भ होकर ऊपर बुध की अँगुली कनिष्टका की ओर जाती हैं (चित्र नं० १) यह-रेखायें विवाह-रेखा के बीच में या सिरे पर देख पड़ती हैं। सन्तान-रेखा कहां से आरम्भ होती है और किस स्थान पर किस दशा में समाप्त होती है—यह देख कर ही सन्तान स्वास्थ्यपूर्ण या माता पिता के लिये शुभ होगी या नहीं यह बताया जा सकता है।

सन्तान-रेखा के सम्बन्ध में अगले पृष्ठ पर दिये गये नियम ध्यान में रखने चाहियें।

विवाह-रेखा पर सीधी, सुन्दर और गहरी रेखा या रेखायें पुत्र और कम गहरी और कुछ-कुछ झुकी हुई टेढ़ी रेखा कन्यायें होती हैं (चित्र नं० १२ पृष्ठ १५१)। सुन्दर स्पष्ट रेखायें स्वास्थ्य पूर्ण और टेढ़ी सीधी या लहरदार रेखायें सन्तान के रोगी होने का लक्षण हैं।

सन्तान-रेखा पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के हाथ में अधिक देख पड़ती हैं। परन्तु प्रायः देखा गया है कि कन्या-रेखा पुरुष के हाथ में और पुत्र-रेखा स्त्री के हाथ में अधिक देखने में आती हैं। कभी कभी यह रेखायें स्त्रियों की तरह पुरुषों के हाथ में भी पूर्ण स्पष्ट देख पड़ती हैं। परन्तु यह उस समय तक नहीं होता जब तक कि पिता के हृदय में सन्तान के लिये कोई विशेष प्रेम या उसके पाने की अधिक लालसा न हो।

यदि सन्तान-रेखा ऊपर सिरे पर द्वीपयुक्त हो तो यह मृत्यु सूचक है (अ—चित्र नं० १३ पृष्ठ १८३)।

इसके अतिरिक्त यदि द्वीप रेखा के आरम्भ में हो तो सन्तान रोगी रहेगी परन्तु यदि यही रेखा आगे चलकर सुधर गई है तो उस बालक का स्वास्थ्य भी सुधर जायगा—यह निश्चय है।

यदि कोई सन्तान-रेखा शेष सभी रेखाओं से अधिक स्पष्ट और बलवान हो तो वह सन्तान अपने माता पिता के लिये शुभ फल के देने वाली होगी।

प्रायः बहुत से हाथों में यह सन्तान-रेखायें हृदय-रेखा से ऊपर विवाह रेखा पर जाती हुई देखी गई हैं। ऐसी दशा में सन्तान के लिये अधिक उत्कण्ठा और हृदय में विशेष प्रेम होता है।

सन्तान कितनी होंगी यह जानने के लिये सन्तान-रेखाओं को विवाह-रेखा पर बाहर की ओर से भीतर की ओर गिनना चाहिये। कभी-कभी सन्तान-रेखाओं से अधिक सन्तान भी



चित्र नम्बर १

होती देखी गई हैं। ऐसी दशा में यह अधिक सम्भव है कि वह सन्तान-रेखा जो अधिक स्पष्ट हो बढ़ रही हो या सुदूर भविष्य में माता पर कोई विशेष प्रभाव डाल रही हो।

विद्यार्थियों को यहाँ इतना अवश्य कह देना है कि सन्तान सम्बन्धी विषय कोई साधारण विषय नहीं—एक सूक्ष्म विषय है। अतः उनको सन्तान के सम्बन्ध में कोई निर्णय करते समय पूर्णतया सावधान रहना चाहिये।

तेरहवाँ अध्याय

मणिबन्ध-रेखायें

मणिबन्ध-रेखायें वह स्पष्ट या अस्पष्ट रेखायें हैं जो मणिबन्ध के स्थान पर समानान्तर रूप से जाती हुई देख पड़ती हैं (मुख-पृष्ठ)। सामान्यरूप से यह रेखायें यदि सुन्दर और सपाट हों तो शरीर सुदृढ़ और स्वास्थ्य अच्छा होता है और यदि यह अधिक टूटी-फूटी हों तो जहां तक शरीर और स्वास्थ्य से सम्बन्ध है इनका प्रभाव अच्छा नहीं होता। यदि यह रेखायें ऊपर की ओर उठी हुई देख पड़ती हों तो ऐसी दशा में वह स्त्री या पुरुष ऊंचे-ऊंचे विचार रखने वाला होता है—विशेषतः जब

कि रेखायें चन्द्रमा के स्थान पर उठ रही हों (देखो चन्द्रमा के गुण—पृष्ठ—१०१) । इस के अतिरिक्त यदि यह शुक्र के स्थान पर उठ रही हों तो स्वभाव में शुक्र के गुण पाये जायेंगे ।

यदि यह रेखा श्रृङ्खला अर्थात् जञ्जीर के समान हों और मणिबन्ध के स्थान पर मिली हुई हों तो ऐसा जीवन कठिन परिश्रम से व्यतीत होगा—यह कहा जा सकता है। परन्तु इस में कोई उचित या धार्मिक उन्नति होनी चाहिये।

मणिबन्ध-रेखा से आरम्भ हो कर चन्द्रमा के स्थान पर जाने वाली रेखायें देशाटन या समुद्रयात्रा सम्बन्धी रेखायें होती हैं । यह रेखायें अपनी शक्ति के अनुसार ही अपना प्रभाव दिखाती हैं । निर्बल या अस्पष्ट रेखायें यदि यात्रा नहीं तो यात्रा से प्रेम और यात्रा सम्बन्धी पुस्तकों को पढ़ने की रुचि अवश्य उत्पन्न करती हैं।

दोषपूर्ण या टूटी हुई रेखायें जीवन में अनेक चिन्ता, क्लेश, पराजय और हानि के करने वाली होती हैं। रेखाओं पर क्रूश का चिन्ह कठिन परिश्रम और उन्नति के बाद अनावश्यक धन व्यय कराता है—ऐसा कुछ विद्वानों का मत है।

मणिबन्ध-रेखाओं से चन्द्रमा के स्थान पर जाने वाली रेखाओं के सम्बन्ध में ऊपर कहा जा चुका है । इन यात्रा सम्बन्धी रेखाओं के अतिरिक्त कुछ और भी रेखायें होती हैं जो मणिबन्ध से आरम्भ होकर चन्द्रमा के स्थान

पर नीचे की ओर काटती हैं। यह रेखायें पशु सम्बन्धी या अन्य दुर्घटनाओं की ओर संकेत करती हैं। अनुभव में यह बात कहाँ तक आ चुकी है इस सम्बन्ध में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि यह रेखा स्वयं मेरे हाथ में अपना बुरा प्रभाव दिखा चुकी है जब कि मैं—अधिक समय नहीं हुआ—भागते हुए घोड़े से गिर गया था। यदि इस रेखा के पास वर्ग का चिन्ह न होता तो अधिक सम्भव था कि यह दुर्घटना मेरी मृत्यु का कारण होती। फिर भी सीधी बाँह में इतनी अधिक चोट आई थी जो किसी तरह भी साधारण नहीं कही जा सकती थी। ऐसी दशा में घोड़ा, गाड़ी या अन्य किसी सवारी में चलते समय अधिक सावधान रहना चाहिये।

मणिबन्ध-रेखाओं के सम्बन्ध में एक बात और भी है जो यहाँ कह देनी आवश्यक है। यदि इन रेखाओं में ऊपर की रेखा वृताकार हथेली में जा रही हो (ज—चित्र नं० १० पृष्ठ १२१) तो यह अन्तरगत प्रकृति दुर्बलता का लक्षण है और स्त्री के हाथ में गर्भ धारण करने की शक्ति को कम करके उसकी ओर से भय उत्पन्न करती है—गर्भ का समय से पहले खण्डन हो जाना इत्यादि।

चौदहवाँ अध्याय

चन्द्र-रेखा, निकृष्ट-रेखा बृहस्पति-मुद्रा

चन्द्र-रेखा वह धनुषाकार रेखा है जो कनिष्टका अँगुली के नीचे बुध के स्थान से आरम्भ होकर चन्द्रमा के स्थान पर जाती है (देखो मुख-पृष्ठ)। कभी कभी यह रेखा स्वास्थ्य-रेखा से होकर या उससे मिली हुई चलती है। परन्तु प्रत्येक शुभ और सु-सम्पन्न हाथ में यह पूर्णरूप से स्पष्ट देख पड़ती है। इसके प्रभाव से मनुष्य के स्वभाव में अस्थिरता का भाव अधिक पाया जाता है। वह शीघ्रग्राही, सचेत और मृदु प्रकृति होता है और शीघ्र ही दूसरों के कहने में आ जाता है। अशुभ हाथ में इसी रेखा के प्रभाव से अविकारी, स्त्री या पुरुष, शीघ्र ही आवेश में आ जाने वाला देखा गया है। अतः इसका फल कहते समय हाथ की बनावट पर अवश्य ध्यान रखना चाहिये।

निकृष्ट-रेखा

यह रेखा भी स्वास्थ्य रेखा से मिली हुई पाई जाती है। इसका स्थान हथेली में नीचे की ओर होता है जहाँ यह चन्द्रमा के स्थान से आरम्भ होकर घूमती हुई शुक्र के स्थान पर जाती हुई देख पड़ती है (देखो मुख-पृष्ठ)। आकार में यह निकृष्ट-रेखा आरम्भ में अर्ध धनुषाकार कुछ चौड़ी होकर सीधी आगे की ओर बढ़ती है। प्रायः इसका रंग भी गहरा लाल होता है। यह रेखा 'यथा नाम तथा गुण' वाली कहावत चरितार्थ करती है और प्रायः ऐसे मनुष्यों ही के हाथ में अधिक देखी गई है जो शराब, अफ़ीम आदि मादक वस्तुओं का अधिक सेवन करते हैं। इसके प्रभाव से मनुष्य या स्त्री लम्पट और कामासक्त होता देखा जाता है जिससे उसकी जीवन शक्ति का प्रति दिन ह्रास होकर आयु कम हो जाती है। यदि यह रेखा मणिबन्ध की ओर चली गई हो तो पहले की अपेक्षा इसमें कुछ सुधार हो जाता है—विशेषतः जब कि हाथ में मस्तक-रेखा भी अपना शुभ फल दे रही हो।

बृहस्पति-मुद्रा

बृहस्पति-मुद्रा बृहस्पति की अंगुली तर्जनी के नीचे एक ओर से दूसरी ओर अर्ध-चन्द्राकार होकर चलती है—(देखो मुख-पृष्ठ)। यह रेखा ऊपर कही गई चन्द्र-रेखा और निकृष्ठ-रेखा की तरह हाथ में बहुत कम देखी जाती

है। परन्तु जहां तक गुणों से सम्बन्ध है यह रेखा उपरोक्त दोनों रेखाओं की अपेक्षा शुभ फल के देने वाली होती है। इसके प्रभाव से मनुष्य परलोक की चिन्ता में मग्न रहने वाला अथवा गुप्त विद्या का प्रेमी होता है। परन्तु यदि यह रेखा बृहस्पति के स्थान पर अधिक नीचे उतर कर तर्जनी की ओर जाने वाली भाग्य-रेखा, सूर्य्य-रेखा या उनकी किसी शाख का विरोध करती हो तो उतनी शुभ नहीं समझी जाती।

पन्द्रहवां अध्याय

विशाल त्रिभुज और चतुष्कोंण

प्रायः प्रत्येक हाथ में कुछ रेखायें अपनी निकटवर्ती किसी दूसरी रेखा अथवा रेखाओं के साथ मिल कर कुछ ऐसे स्थान बनाती हैं जिन को यहां 'रेखा-मण्डल' कहना चाहिये। यह मण्डल त्रिभुज और चतुष्कोण के रूप में देखे जाते हैं। यहां हम सब से पहले त्रिभुज ही को लेते हैं।

त्रिभुज वह मण्डल है जो मस्तक-रेखा, जीवन-रेखा, और स्वास्थ्य-रेखा के परस्पर मिल जाने से बनता है (र—चित्र नं०—१)। कभी-कभी स्वास्थ्य-रेखा हाथ में

हो ती ही नहीं । ऐसी दशा में भाग्य-रेखा अथवा सूर्य्य-रेखा त्रिभुज की तीसरी भुजा या आधार (Base) होती हैं । परन्तु वास्तविक त्रिभुज चित्र में दिखायी गई रेखाओं ही के मिलने से बनता है (देखो चित्र नं० १)।

उपरोक्त त्रिभुज का फल कहते समय हम को उस के कोण पर ध्यान रखना चाहिये । परन्तु इन कोण (Angles) का जान लेना इतना कठिन नहीं है जितना कि रेखा गणित हो सकती है। आगे चल कर हम इस त्रिभुज का वर्णन करेंगे जिसको 'विशाल त्रिभुज' कहते हैं ।



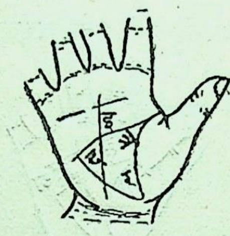
चित्र नम्बर १

दूसरा मण्डल मस्तक-रेखा और हृदय-रेखा के बीच में 'चतुष्कोण' कहलाता है । यदि पूर्ण रूप से नहीं तो यह किसी न किसी रूप में चतुष्कोण के, आकार 'जैसा अवश्य होता है (देखो हृदय-रेखा और मस्तक-रेखा के बीच का भाग)।

चतुष्कोंण, जहाँ तक मनुष्य के स्वभाव और उसकी मस्तिष्क शक्ति से सम्बन्ध है, एक महत्व पूर्ण-रेखा मण्डल समझा जाता है क्यों कि इस मण्डल की बनावट और चौड़ाई

को देख कर किसी मनुष्य या स्त्री के स्वभाव और उसके मस्तक पर पर्य्याप्त प्रकाश डाला जा सकता है ।

मस्तक-रेखा और हृदय-रेखा का वर्णन करते समय यह स्पष्ट रूप से कहा जा चुका है कि उनका परस्पर एक दूसरी की ओर झुक जाना अशुभ समझा जाता है । (देखो हृदय-रेखा पृष्ठ १८९) । क्योंकि हृदय रेखा का मस्तक-रेखा पर या मस्तक-रेखा का हृदय-रेखा पर अधिक झुक जाना मनुष्य के स्वभाव में एक विलक्षणता उत्पन्न कर देता है ।



चिन्ह नम्बर २

यदि चतुष्कोण नियमानुसार बीच में चौड़ा, बृहस्पति की ओर फैला हुआ और फिर हथेली के दूसरी ओर विस्तृत होगया हो तो ऐसा व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, निष्कपट, ईमानदार, स्पष्ट कहने वाला कहा जा सकता है । किसी कर्मचारी या दूसरे किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में अपना मत प्रगट करते समय चतुष्कोण के यह गुण अवश्य ध्यान में रखने चाहियें । क्योंकि जहाँ तक अनुभव हुआ है इसके गुणों में कोई अन्तर नहीं पाया गया । ध्यान रहे, कहने का अर्थ

यह नहीं है कि यह चिन्ह यदि हाथ में उपरोक्त दशा में न हो तो वह स्त्री या पुरुष बे-ईमान अथवा कपटी ही होते हैं। बल्कि ऐसी दशा में मानसिक कमज़ोरियाँ उनमें अधिक पाई जायेंगी—कायरता, आयोजन और कल्पना-शक्ति का अभाव, उत्तर दायित्व या अपने ऊपर कोई और जिम्मेवरी लेने में भय, समय का सदुपयोग करने की अयोग्यता, लजीलापन इत्यादि। अतः ऐसे व्यक्ति अच्छे व्यापारी नहीं हो सकते। उदारता उनके हृदय में अधिक पाई जाती है—यहाँ तक कि दूसरों के हित के लिये अपने समय की भी परवा अधिक नहीं करते। यही कारण है कि वह विश्वास पात्र होकर भी कोई गम्भीर कार्य करने के अयोग्य समझ लिये जाते हैं। उन पर विश्वास भी अधिक नहीं किया जाता। कुछ इस लिये नहीं कि वह कपटी अथवा बे-ईमान होते हैं। बल्कि इसलिये कि शीघ्र ही किसी निश्चय पर पहुँच जाना उनकी शक्ति से बाहर होता है और अनायास ही वह अपने विचार बदल देते हैं।

इस अभाव का कारण केवल उस मनुष्य की मस्तक-रेखा और हृदय-रेखा का अपने निश्चित स्थान से हट जाना या उन दोनों का परस्पर एक दूसरी की ओर झुक जाना ही होता है। यहाँ यह याद रखना चाहिये कि हृदय-रेखा और मस्तक-रेखा के पास-पास होने से जो सङ्कीर्णता चतुष्कोण में आ जाती है उसका मस्तक पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता।

बल्कि उन दोनों के गुण आपस में मिल जाने से स्वभाव में अवश्य अन्तर आ जाता है जो भविष्य जीवन में मनुष्य की अयोग्यता का चिन्ह है (व्यवहारिक गुण जानने के लिये—देखो हृदय-रेखा और मस्तक-रेखा पृष्ठ १६०)।

यदि चतुष्कोण बीच में अधिक सङ्कीर्ण या कम चौड़ा हो तो लोभ या कृपणता और धोके बाज़ी मनुष्य के साथ जाती हैं। यदि यह चौड़ाई अधिक हो तो ऐसी दशा में व्यर्थ धन का व्यय करना या फ़ज़ूल ख़र्ची का व्यसन पाया जाता है। परन्तु यदि बुध के स्थान के नीचे चोड़ाई में कुछ अन्तर पड़ गया हो तो वह व्यक्ति बृद्धावस्था की ओर जाकर मितव्यता का अर्थ समझने लग जाता है।

अतः चतुष्कोण स्पष्ट और नियमानुसार चौड़ा होना चाहिये। क्योंकि यदि यह अस्तव्यस्त या अस्पष्ट हुआ तो हृदय-रेखा में से छोटी-छोटी बारीक रेखायें मस्तक-रेखा पर आकर स्वभाव में निर्बलता उत्पन्न कर देती हैं। विद्यार्थियों को चतुष्कोण का नियमित और उपयोगी रूप निश्चय करने में अपने और अपने इष्ट मित्रों के हाथ देखने से अधिक सहायता मिल सकती है।

यदि हृदय-रेखा और मस्तक-रेखा दोनों सूर्य्य के स्थान के नीचे अधिक चौड़ी हो गई हों तो ऐसा व्यक्ति कुछ सम्भव है शुद्ध विचारों वाला न हो परन्तु निश्कपट और ईमान्दार अवश्य होना चाहिये। वह बच्चों में प्रेम रखने

वाला, दयावान परन्तु दूसरों के कहने में आकर अपने निश्चित विचारों को बदल डालने वाला होगा।

मस्तक-रेखा का ऊपर की ओर उठ जाना उस स्त्री या पुरुष के लज्जाशील होने का लक्षण है (इ—चित्र नं २)। वह मनुष्य दूसरों का उपकार करने में अधिक प्रसन्न रहता है। यहाँ तक कि अपनी बुराई करने वाले अपने अपकारी के साथ भी उपकार करने में आगा पीछा नहीं करता। वह कोई काम करने का वायदा करता है परन्तु उसे पूरा करने की उसे याद नहीं रहती या उसका समय निकाल देता है और लम्पट या पाखण्डी कहलाता है। यद्यपि वह अपने वायदे को पूरा करना चाहता है और उसके लिये प्रयत्न भी करता है, परन्तु उसका अनिश्चित स्वभाव उसको इस इच्छा को पूरा नहीं करने देता।

शुक्र के स्थान से आकर चतुष्कोण को काटने वाली रेखायें स्त्री के हाथ में वह पुरुष और पुरुष के हाथ में वह स्त्रियाँ होती हैं जो समयानुसार हृदय और मस्तक (व्यापार) पर अपना प्रभाव डालकर हमको अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

प्रायः बहुत से हाथों में देखा जाता है कि हृदय-रेखा और मस्तक-रेखा के बीच में एक क्रूश का चिन्ह होता है जिसको 'गुप्त क्रूश' कहते हैं। यह चिन्ह ज्योतिष, प्रेत विद्या (Spritualism) आदि गुप्त विद्या और उनके रहस्यों में अनुराग या विश्वास उत्पन्न करता है।

विशाल त्रिभुज, कोण, छोटा त्रिभुज

त्रिभुज के सम्बन्ध में पहले कहा जा चुका है कि यह मस्तक-रेखा, जीवन-रेखा और स्वास्थ्य-रेखा से मिलकर बनता है। विद्यार्थी अनुभव करेंगे कि यदि यह त्रिभुज स्पष्ट और चोड़ाई में अधिक होगा, तो ऐसा भाग्यवान व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, शारीरिक और मानसिक आनन्द का अनुभव कर रहा होगा। क्योंकि त्रिभुज की चौड़ाई मनुष्य को सदाचारी, उदार और उत्साही बनाये रखती है—यदि मङ्गल-क्षेत्र उभरा हुआ हो।

इस के अतिरिक्त यदि त्रिभुज कम चौड़ा हो तो इस के गुण उल्टे देख पड़ते हैं—मानसिक दुर्बलता, चरित्र हीनता, अनुदारता इत्यादि। साथ ही यदि हथेली में गढ़ा हो तो यह मनुष्य के दुर्भाग्य का कारण बन कर उसे निरुत्साह बनाये रखता है। परन्तु यदि हथेली उभरी हुई हो तो यह निर्णय शक्ति, दूरदर्शिता और समय का सुन्दर उपयोग करने की योग्यता को बढ़ाता है।

यद्यपि इस सम्बन्ध में पहले बहुत कुछ कहा जा चुका है फिर भी इसको प्रमाण के रूप में यहाँ ले आना अधिक उपयोगी हो सकता है। जिन कोण के सम्बन्ध में हमें कुछ कहना है वह क्रम से 'त्र, द, र,' हैं। (देखो त्र—द—र चित्र नम्बर २)।

१—पहला कोंण (त्र) मस्तक-रेखा और जीवन-रेखा के मिलने से बनता है। यदि यह कोंण स्पष्ट 'निर्दोष' और

न्यून (Acute) हो तो यह श्रेष्ठ स्वभाव और शुद्ध चरित्र होने का लक्षण है। परन्तु यदि यह कोण विषम अर्थात् अधिक चौड़ा (Obtuse) हो तो यह आलस्यपूर्ण बनाये रखता है—विशेषत: जब कि यह शनि की अगुली के नीचे पड़ा हो तो इसमें कपट, और धोकेबाज़ी पायी जाती है और यदि यह यहाँ और भी अधिक कम चौड़ा हो गया हो तो मनुष्य अत्यन्त कार्य्यकुशल परन्तु दूसरों के प्रति स्पर्द्धा का भाव रखने वाला होता है।

यदि कोण मङ्गल-क्षेत्र अर्थात् मङ्गल के मैदान में पड़ा हो तो यह अशुभ लक्षण है और मनुष्य को सदा कृपण बनाये रखता है। कोण का अपने वास्तविक रूप में न होना आत्म-विश्वासी होने का पहला लक्षण है—यहाँ मस्तक-रेखा जीवन-रेखा से ऊपर आरम्भ हो रही होगी (देखो मस्तक-रेखा पृष्ठ १७८)।

२—बाहर का कोण (द) मस्तक-रेखा और स्वास्थ्य-रेखा से मिल कर बनता है। कोण यदि स्पष्ट और निर्दोष हो तो इसके प्रभाव से मनुष्य बुद्धिमान, चतुर और स्वास्थ्य-पूर्ण होना चाहिये। इसके अतिरिक्त यदि यह कोण न्यून या कम चौड़ा हुआ तो उसका स्नायविक शरीर दुर्बल और स्वास्थ्य की ओर से चिन्ता रहती है। प्राय: देखा गया है कि ऐसे मनुष्यों की आत्मा शुद्ध नहीं होती।

यदि यह कोण अधिक चौड़ा हो तो आलस्य-पूर्ण

और यदि अस्पष्ट हुआ तो परस्पर विरोध रखने की मात्रा अधिक पाई जाती है।

३—तीसरा कोंण उपरोक्त दोनों कोण के नीचे स्वास्थ्य और जीवन-रेखा के मिलने से बनता है (र—चित्र नं० २)। यह कोंण यदि कम चौड़ा हो तो ऐसा व्यक्ति शील-स्वभाव और स्वास्थ्य-पूर्ण होना चाहिये। यदि यह अधिक पास हो तो शरीर कमज़ोर और धन इकट्ठा करने की इच्छा अधिक प्रबल पाई जाती है।

यदि कोंण अधिक चौड़ा और अस्पष्ट हो तो इसके गुण ऊपर कहे गये मस्तक और स्वास्थ्य-रेखा से मिल कर बने हुये न्यून कोंण के समान ही होते हैं—आलस्य, अशुद्ध विचार, निर्बलता आदि।

विद्यार्थियों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि मस्तक-रेखा और स्वास्थ्य-रेखा की चाल पर ही किसी कोण का कम या अधिक चौड़ा होना निर्भर है। इसलिये इन रेखाओं के गुण जान लेने ही से किसी बिषम या न्यून कोण के लक्षण समझ में आ जाते हैं। इसके अतिरिक्त जहाँ तक शरीर के स्वास्थ्य से सम्बन्ध है हाथ की बनावट के साथ ही साथ उसकी गर्मी पर भी अवश्य ध्यान रखना चाहिये। क्योंकि शरीर में रुधिर का जितना ही अधिक प्रवाह होगा उतना ही अधिक शुक्र का स्थान उभरा हुआ होगा और स्वास्थ्य अच्छा होगा। यह साधारण नियम

हथेली के प्रत्येक भाग में लागू हो सकता है। अतः यहाँ रेखाओं की नियमित चाल, हाथ की बनावट, स्वच्छता और उसका सुन्दर रंग ही उसके शुभ लक्षण समझने चाहियें।

ऊपर कहे गये त्रिभुज के अतिरिक्त एक और भी त्रिभुज होता है। यह त्रिभुज 'विशाल त्रिभुज' के भाग्य-रेखा द्वारा काटे जाने से बनता है जिसका एक कोण 'द' है (देखो चित्र नं० २)। यह छोटा त्रिभुज प्रत्येक हाथ में नहीं पाया जाता, क्योंकि यह स्वास्थ्य-रेखा मस्तक-रेखा और जीवन-रेखा से मिल कर बनता है। यदि किसी हाथ में यह दोनों ही त्रिभुज पड़े हों तो ऐसा व्यक्ति विद्या में उन्नति करता है और कीर्ति लाभ करके सम्मान का पात्र बनने की योग्यता रखने वाला होता है। यदि किसी शुभ 'विशाल त्रिभुज' को कोई स्पष्ट भाग्य-रेखा काटती है तो यह किसी लाभदायक व्यवसाय का आयोजन करता है। दूसरी दशा में यदि किसी हाथ में ऊपर कहे गये चिन्ह न देख पड़ते हों तो विचारों की अस्थिरता या निर्णयशक्ति का अभाव होने से उन्नति में बाधा आती है।

यदि स्वास्थ्य-रेखा पूर्ण रूप से जीवन-रेखा में जाकर न मिलती हो तो जहाँ तक पढ़ने-लिखने से सम्बन्ध है अधिकारी अधिक परिश्रमी नहीं होता—यह लक्षण विशेषतः बच्चों में अधिक पाया जाता है।

हस्त-सामुद्रिक में सफलता पाने की इच्छा रखने वाले प्रत्येक विद्यार्थी को त्रिभुज और उनके हर एक कोण पर पूर्ण ध्यान रखना चाहिये क्योंकि उनके द्वारा हमको रेखाओं का फल कहने में अधिक सफलता मिलती है।

सोलहवां अध्याय

चिन्ह परिचय

हाथ की रेखाओं के सम्बन्ध में अब तक जो कुछ प्रकाश डाला जा चुका है उस में हमारे हाथ के चिन्हों का भी एक विशेष स्थान है। यद्यपि एक या दो चिन्हों को छोड़ कर शेष सभी का किसी न किसी रूप में परिचय करा दिया गया है परन्तु फिर भी उनके विषय में कुछ कह देना शेष रह जाता है । विद्यार्थियों को नीचे दिये गये सभी चिन्हों का ज्ञान लेना अधिक आवश्यक है। क्योंकि उनका प्रभाव भी कभी-कभी हमारे जीवन में कोई विशेष घटना उत्पन्न कर दिखाता है । यहां सब से पहले

हम द्वीप को लेते हैं। यह द्वीप का चिन्ह प्रत्येक दशा में अशुभ है और हाथ में जिस रेखा पर पड़ता है वहीं अपना अशुभ फल दिखाता है।

जीवन-रेखा पर द्वीप का चिन्ह अपने समय पर वंश-परम्परागत किसी रोग या अधिक समय तक शरीर में किसी कमज़ोरी का होना बतलाता है। यहां यह द्वीप जीवन-रेखा को जितनी दूर तक घेरता होगा वहीं तक शारीरिक शक्ति का अभाव या रोग का होना बतलायगा। यदि यह द्वीप एक ही समय पर दोनों ही हाथ में आ रहा हो तो ऐसी दशा में अवश्य ही कोई रोग उत्पन्न होगा—यह सफलता पूर्वक कहा जा सकता है।

यदि यह द्वीप मस्तक-रेखा पर पड़ा हो तो मस्तक सम्बन्धी रोग उत्पन्न करता है—सिर दर्द, आधा सीसी (Neuralgia), स्मरण शक्ति का अभाव, सिर में चोट का लगना इत्यादि। यदि द्वीप दोनों हाथ की मस्तक-रेखा में दूर तक चला गया हो तो स्मरण शक्ति का अभाव और पागल पन का होना अधिक सम्भव है—विशेषतः जब कि मस्तक-रेखा कमज़ोर हो।

दूसरी दशा में मस्तक-रेखा पर द्वीप को चिन्ह यदि ठीक जीवन-रेखा के द्वीप के साथ पड़ा हो तो ऐसी दशा में मनुष्य मस्तक से अधिक काम करने के अयोग्य रहता है। वह उत्साह हीन रहता है और तनिक परिश्रम करने

से ही थक जाता है। ऐसी दशा में उस मनुष्य को जिसकी मस्तक और जीवन-रेखा में ठीक एक ही समय पर दो द्वीप पड़े हों मस्तक से अधिक काम न लेना चाहिये। उसको मनोरञ्जन के लिये खेल-तमाशों में अपना समय अधिक व्यतीत करना उपयोगी होगा।

यदि मस्तक-रेखा के साथ ही साथ हृदय-रेखा पर भी द्वीप का चिन्ह हो या रेखा स्वयं दोष पूर्ण हो—उस स्थान पर जहाँ मस्तक-रेखा पर द्वीप का चिन्ह है—तो ऐसी दशा में बुरे-बुरे विचार मन में उठा करते हैं। ऐसा होना और भी अधिक सम्भव है यदि रेखा में यह दोष अधिक उभरे हुए चन्द्रमा के स्थान के पास आया हो और साथ ही शुक्र का स्थान भी अधिक उभरा हुआ हो। कुछ एक विद्वानों का यह भी मत है कि मस्तक-रेखा पर मङ्गल के क्षेत्र में आया हुआ द्वीप का चिन्ह 'घातक चिन्ह' होता है और अचानक ही अपने समय पर उस स्त्री या पुरुष को किसी की हत्या कर डालने को तैयार कर देता है। परन्तु मैं उनके इस मत से सहमत नहीं हूँ। मैंने यह चिह्न कई हाथों में देखा है। परन्तु अब तक किसी ने हत्या की हो यह सुनने में नहीं आया। हां, मैं यह अवश्य कह सकता हूँ कि यदि किसी क्रोधी मनुष्य के हाथ में मस्तक-रेखा पर द्वीप का चिह्न हो तो वह क्रोध आने पर अपने प्रतिपक्षी को नुक़सान पहुँचाने में पीछे नहीं हटता। मैं समझता

हूँ कि वह क्रोध में आकर किसी को मार सकता है—यदि उसको ऐसा करने का अवसर और साधन दोनों ही प्राप्त हों। परन्तु यह उस समय तक नहीं होता जब तक कि उसका किसी के साथ कोई विशेष झगड़ा न हो। फिर भी चाहे वह क्रोध में हत्या ही क्यों न कर डाले पीछे अवश्य ही उस पर पछतावा करेगा।

ऐसा व्यक्ति कोई योग्य सिपाही नहीं हो सकता। हां वह लड़ाकू अवश्य होता है और जब किसी का पक्ष लेता है तो अपने मित्रों की सहायता करने में कोई बात उठा नहीं रखता।

हृदय-रेखा में द्वीप का चिन्ह कोई दुर्भाग्य पूर्ण प्रेम सम्बन्ध कराता है। दुर्भाग्य-पूर्ण प्रेम सम्बन्ध का अर्थ उस सम्बन्ध से है जो स्थायी नहीं होता, बल्कि थोड़े दिन रहकर ही टूट जाता है और मनुष्य या उस स्त्री को उस प्रेम की ओर से निराश होना पड़ता है।

यदि यह द्वीप भाग्य-रेखा पर शुक्र के स्थान के पास हो तो यह कोई आपत्ति आने की सूचना है। परन्तु यदि यह कुछ ऊंच मङ्गल के मैदान में पड़ता हो तो धन का नाश करके चिन्ता को बढ़ाता है।

सूर्य्य-रेखा पर द्वीप का चिन्ह जिस समय तक बना रहेगा उस स्त्री या पुरुष के सम्मान को घटा कर अपने समय पर उसके अयश का कारण होगा।

चक्र

चक्र का चिन्ह (ह–चित्र नं० १२· पृष्ठ १५१) प्रायः बहुत कम देखने में आता है। यदि यह मस्तक-रेखा के सिरे पर चन्द्रमा के स्थान पर गया हो तो मस्तक सम्बन्धी रोग उत्पन्न करता है और यदि जल में डुबाकर आत्महत्या भी करादे तो यह भी कोई आश्चर्य की बात नहीं—अतः सावधान रहना चाहिये।

यह चक्र केवल एक सूर्य्य के स्थान को छोड़कर जहां भी पड़ेगा अपना अशुभ ही फल दिखायेगा। परन्तु सूर्य्य के स्थान पर, इसमें संदेह नहीं, यह यश को बढ़ाने वाला है—इसलिये शुभ है। हृदय-रेखा पर हृदय को कमज़ोर करता है और यदि जीवन-रेखा पर पड़ा हो तो आंखों की ओर से भय उत्पन्न करता है—नेत्र भंग अर्थात् अन्धा होना।

क्रूश

क्रूश का चिन्ह भी केवल बृहस्पति को छोड़ कर किसी स्थान पर अपना शुभ फल दिखाता हो यह नहीं कहा जा सकता है। बृहस्पति के स्थान पर यह चिन्ह अशुभ होता हुआ भी किसी शुभ विवाह सम्बन्ध का होना बतलाता है और शुभ विवाह-रेखा के साथ मनुष्य की हार्दिक इच्छाओं को पूरा करता है—यहाँ देखना चाहिए कि कोई 'अवरोध-रेखा' तो उसे काटकर नहीं जा रही

है। क्योंकि यह 'अवरोध-रेखा' क्रूश के शुभ फल को नष्ट कर देती है (फ—चित्र नं० १३ पृष्ठ १८३)।

शनि के स्थान पर क्रूश का चिन्ह दुर्भाग्यपूर्ण है और मनुष्य के भाग्य का विरोध करता है।

सूर्य्य के स्थान पर क्रूश का चिन्ह व्यापार और दस्तकारी के लिये हानिकारक है। परन्तु यदि भाग्य-रेखा बलवान होकर अपना शुभ फल दिखा रही हो तो ऐसी दशा में क्रूश का अशुभ फल बहुत कुछ नष्ट हो जाता है।

बुध के स्थान पर क्रूश का चिन्ह मनुष्य में धोका देने, झूठी कसम खाने और कभी-कभी आवश्यकता पड़ने पर चोरी करने का अवगुण उत्पन्न कर देता है।

मङ्गल के स्थान पर क्रूश का चिन्ह दूसरों के साथ लड़ाई-झगड़ा कराने वाला होता है और कभी-कभी ऐसा मनुष्य आवेश में आकर हत्या तक कर डालने को तैयार रहता है—अतः ऐसे मनुष्य से सदा बचते रहना चाहिये।

चन्द्रमा के स्थान पर क्रूश के प्रभाव से भले ही अधिकारी स्वयं झूठ न बोलना चाहता हो परन्तु दूसरों से झूठ बुलवाने में वह कभी कोई दोष नहीं समझता।

शुक्र के स्थान पर क्रूश का चिन्ह केवल एक प्रेम होने का लक्षण है—यह प्रेम सच्चा होकर भी प्रायः असफल और निराशा के देने वाला ही होगा जब तक कि बृहस्पति के स्थान पर क्रूश का चिन्ह अपना शुभ फल न दे रहा हो।

मङ्गल के क्षेत्र अर्थात् हथेली के मध्य भाग में यह क्रूश का चिन्ह भाग्य-रेखा के सम्बन्ध में आकर उसकी उन्नति में बाधा डालता है या उसके शुभ फल का अपनी शक्ति के अनुसार नाश करता है। यही बात रेखाओं के सम्बन्ध में भी समझनी चाहिये।

नक्षत्र

नक्षत्र के सम्बन्ध में जहाँतक अनुभव किया गया है यह कुछ ऐसी स्थिति या घटनाओं की ओर संकेत करता है जिन पर हमारा कोई अधिकार नहीं होता (ज्ञ—चित्र नं० १० पृष्ठ १३१)। अतः यह नक्षत्र का चिन्ह हमारी उन्नति भी कर सकता है, अवनति की ओर भी लेजा सकता है और हमारी मृत्यु का कारण भी हो सकता है। नक्षत्र का फल कहते समय इसके स्थान पर अवश्य ध्यान रखना चाहिये। क्योंकि प्रत्येक स्थान पर इसका एकसा ही प्रभाव नहीं पड़ता।

शुक्र के स्थान पर यदि नक्षत्र पड़ा हो तो विवाह या प्रेम सम्बन्ध के विषय में अपने प्रेमी—विशेषतः विरोधी वर्ग—की ओर से आपत्ति या निराशा के देने वाला होता है। यह भी कहा जाता है कि जीवन-रेखा के पास नक्षत्र का चिन्ह राजदर्बार में अभियोग लगने का चिन्ह है—इस का प्रमाण हृदय-रेखा, और अधिक उभरे हुए शुक्र के स्थान पर देखना चाहिये।

बृहस्पति के स्थान पर नक्षत्र का चिन्ह धन और सम्मान को बढ़ाने वाला है।

शनि के स्थान पर नक्षत्र का चिन्ह अपना शुभ फल दिखाता है—इसमें तनिक भी सन्देह नहीं। यदि इसके साथ वर्ग का चिन्ह न पड़ा हो तो शनि के स्थान पर यह नक्षत्र आवेशपूर्ण मृत्यु होने का भय देता है।

यदि सूर्य्य के स्थान पर नक्षत्र पड़ा हो तो धन और यश को बढ़ाता है सही परन्तु शोक और चिन्ता प्रायः लगी ही रहती है—जब तक कि सूर्य्य-रेखा हाथ में अपना प्रभाव अच्छा न दिखा रही हो।

बुध के स्थान पर नक्षत्र का चिन्ह अचानक 'साहित्यक-उन्नति' करता है। परन्तु यदि यह किसी अशुभ हाथ में हो तो चोरी करने का अवगुण उत्पन्न करके उस स्त्री या पुरुष की बे-इज्जती का कारण बनता है। अतः यहाँ इसका फल कहते समय हाथ की बनावट पर अवश्य ध्यान रखना चाहिये।

मङ्गल के मैदान में पड़ा हुआ नक्षत्र युद्ध में विजय लाभ करता है। परन्तु यदि यह मङ्गल के स्थान में पड़ा हो तो इसका प्रभाव उल्टा होता है और युद्ध के मैदान में या किसी अन्य जगह मृत्यु का भय रहता है ऐसा कुछ विद्वान कहते हैं।

जीवन-रेखा पर आया हुआ नक्षत्र सूचित करता है कि उस मनुष्य कोई मस्तक सम्बन्धी रोग होगा। सम्भव है यह

रोग वंश परम्परागत (Here-di-tary) हो और उसके विनाश का कारण हो।

मङ्गल के पास मस्तक-रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह नेत्र भङ्ग या अन्धा होने का अशुभ चिन्ह है—ऐसा कहा जाता है।

भाग्य-रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह कभी-कभी महा अनर्थ कर डालता है। अतः इसके द्वारा उत्पन्न की जाने वाली आपत्ति से बचने के लिये पूरा प्रयत्न करना चाहिये—यह आपत्ति क्यों कर आयेगी यह हाथ में देखना होगा। यदि यह नक्ष मध्यमा अंगुली के नीचे शनि के स्थान और भाग्य-रेखा को जोड़ता हो तो यह आवेश में आकर मृत्यु, या बे-इज्जती और मृत्यु का भय देता है।

यदि किसी हाथ में नक्षत्र का चिन्ह पड़ा हो और अशुभ हो तो उस पर रोज ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि यह कभी एक साथ हाथ में नहीं आता, बल्कि धीरे-धीरे बढ़ता है। यह किस रेखा या ग्रह-स्थान पर आया है यह भी देखना चाहिये। यदि यह कोई बुरा फल दिखाना चाहता हो तो हमको अपनी सारी शक्तियाँ इकट्ठी करके उसका विरोध करना चाहिये। सम्भव है हम उसके फल को मिटाने में सफल नहीं परन्तु उसको मध्यम अवश्य कर सकते हैं।

वर्ग

वर्ग को रक्षा करने वाला अर्थात् 'रक्षक चिन्ह' कह देने ही से उसका स्वाभाविक गुण समझ में आजाता है। यह

वर्ग हाथ में जहां भी होगा वहां अपने समय पर किसी भी आने वाली आपत्ति से रक्षा करेगा—इसमें संदेह नहीं (उ-चित्र नं० ११ पृष्ठ १३७)। वर्ग के लिये यह आवश्यक नहीं है कि वह ठीक वर्ग के ही आकार का हो या उसके चारों कोण आपस में बराबर ही हों। आकार कैसा ही क्यों न हो यदि वह चार रेखाओं से मिलकर बनता है तो वर्ग ही समझा जायगा—यही बात दूसरे चिन्हों के सम्बन्ध में भी जाननी चाहिये। यह वर्ग मेरे हाथ में भी चन्द्रमा के स्थान पर मेरी रक्षा कर चुका है जिसके लियें मैं उसे धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता। क्योंकि यदि यह न होता तो मणि-बन्ध से चंद्रमा के स्थान पर आने वाली 'पशु दुर्घटना सम्बन्धी रेखा'—जो कि मेरे हाथ में पड़ी थी—सम्भव था कि मेरी मृत्यु का कारण होती। परन्तु ऐसा न हो सका। मैं दौड़ते हुए घोड़े से गिरा सही और चोट भी ऐसी थी जो किसी तरह भी साधारण न थी फिर भी मेरी रक्षा हुई और मैं थोड़े दिन में ही उसके बुरे फल से मुक्त होगया। ऐसी ही एक दूसरी दुर्घटना मेरे एक मित्र के साथ घट चुकी है जब कि वह मोटर साइकिल पर कलकत्ते से लौट रहे थे।

यदि किसी टूटी हुई जीवन-रेखा को यह वर्ग जोड़ रहा हो तो मनुष्य की टूटी हुई जीवन-शक्ति को जोड़ कर उसको रोग से बचाता है (उ-चित्र नं० ११ पृष्ठ १३७)। यही दूसरी रेखाओं के सम्बन्ध में भी कहा जा सकता है।

यदि वर्ग हलके लाल रंग का हो तो अग्नि से रक्षा करता है और यदि यह किसी नक्षत्र को घेर रहा हो तो उस स्त्री या पुरुष को शत्रुओं द्वारा धोके में मारे जाने से बचाता है—ऐसा कहा गया है ।

अन्त में इतना कह देना है कि वर्ग का चिन्ह हमको दुर्घटना, किसी भयंकर रोग, या मृत्यु से बचाता है और आपत्ति के समय हमको संतोष और बुद्धि देता है ।

रेखा जाल या व्यूह ।

प्रायः देखा गया है कि बहुत सी छोटी-छोटी रेखायें परस्पर एक दूसरी को काट कर हाथ में—विशेष कर ग्रह-स्थानों पर एक जाल सा बना देती हैं । रेखाओं का यह जाल हाथ में जिस ग्रह-स्थान पर होता है उसी के गुणों का विरोध कर के उसके स्वभाव में एक विलक्षणता उत्पन्न कर देता है ।

बृहस्पति के स्थान पर आया हुआ रेखाओं का यह जाल मनुष्य को स्वार्थी, उपद्रवी, निर्दयी और मिथ्याभिमानी बना देता है और यदि ग्रह-स्थान नीचा हो तो ऐसा मनुष्य अन्ध विश्वासी होता है ।

शनि के स्थान पर यह जाल दुर्भाग्य का लक्षण है ।

सूर्य्य के स्थान पर स्वभाव में ओछापन, दिखावट, बक-झक करना और मूर्खता का भाव उत्पन्न करता है ।

बुध के स्थान पर लम्पटता और प्रायः चोरी करने की सनक मनुष्य के स्वभाव में पाई जाती है ।

मङ्गल के स्थान पर यह जाल और भी अधिक अशुभ फल दिखाता है और इसके प्रभाव से आवेश पूर्ण मृत्यु होने की सम्भावना बनी रहती है।

चन्द्रमा के स्थान पर चिन्ता, असन्तोष, उदासी और कभी-कभी कविता मनुष्य के साथ जाती है।

शुक्र के स्थान पर यह रेखा-जाल अत्यन्त प्रेम और कामुकता का बढ़ाने वाला है। अतः इसके प्रभाव से अधिकारी, स्त्री या पुरुष, प्रेमी भी हुआ तो उसका यह प्रेम विषय वासना से लिप्त होना चाहिये।

रेखाओं के जाल के सम्बन्ध में आये हुए ग्रह-स्थानों के जो लक्षण ऊपर कहे गये हैं उनका विरोध किया जा सक्ता है यदि हमारी इच्छा शक्ति प्रबल हो और हम उस का समय पर प्रयोग करें।

द्वि-जिव्ह

रेखाओं का द्वि-जिव्ह या सर्प-जिव्हाकार होना निर्थक नहीं समझा जाता। उदाहरण के लिये जीवन-रेखा यदि अन्त में सर्प-जिव्हाकार हो तो यह कमज़ोरी का लक्षण है और प्रायः वृद्ध अवस्था में जाकर धन का अभाव होता है।

यदि मस्तक-रेखा बृहस्पति के नीचे द्वि-जिव्ह या सर्प-जिव्हाकार हो तो इस के प्रभाव से प्रेम में दृढ़ता पाई जायेगी। परन्तु दुर्भाग्यवश इस प्रेम में सुख नहीं मिलता। कहने का अर्थ यह नहीं है कि वह व्यक्ति प्रेम करने के

अयोग्य है बल्कि यों कहना चाहिये कि वह प्रेम करने में भूल करता है या पात्र-कुपात्र का विचार नहीं करता। यदि वहाँ सर्प-जिव्हाकार रेखा पर कोई क्रूश पड़ा हो या कोई 'अवरोध' रेखा उसको काट रही हो तो यह प्रेम सम्बन्ध टूट जाता है—इस लिये अशुभ है।

रेखा से ऊपर की ओर जाने वाली शाखायें रेखा की शक्ति को बढ़ा देती हैं। परन्तु यदि यहां यह रेखायें नीचे जीवन-रेखा की ओर जाती हों तो इनका प्रभाव उल्टा होता है। मस्तक-रेखा से नीचे की ओर जाने वाली छोटी-छोटी बहुत सी रेखायें स्वास्थ्य के लिये नुकसानदायक हैं। हृदय-रेखा के नीचे की शाखायें मित्रता या प्रेम के सम्बन्ध में निराशा जनक होती हैं जब कि ऊपर की ओर जाने वाली शुभ और प्रसन्नता के देने वाली हैं। हृदय-रेखा यदि बिना किसी शाख के सपाट हो तो ऐसा जीवन शुष्क या प्रेम से रहित होता है।

सूर्य्य के स्थान पर द्वि-जिव्ह का चिन्ह इच्छा के अनुसार पसन्द किये गये काम में उन्नति के देने वाला होता है। यदि यह द्वि-जिव्ह ग्रह-स्थान पर दो भाग हो गया हो या इस की शाखायें दो से अधिक भाग में हो गई हों तो यह सूचित करती हैं कि ऐसा व्यक्ति एक से अधिक काम करेगा। ऐसी दशा में मनुष्य का कोई एक निश्चय न होने से या तो उन्नति होगी ही नहीं और यदि हुई

भी तो अधिक सफलता नहीं मिलेगी—ऐसा समझना चाहिये। क्योंकि एक ही समय में दो काम करना या एक काम को अधूरा छोड़ कर दूसरा शुरू कर देना ही मनुष्य की अवनति या असफलता का कारण होता है।

मस्तक-रेखा पर सर्प-जिव्हाकार या द्वि-जिव्ह का होना विचार शक्ति और बुद्धि का बढ़ाने वाला होता है—यदि यह द्वि-जिव्ह न अधिक छोटा और न बड़ा बीच के आकार का हो। रेखा पर यदि यह द्वि-जिव्ह बहुत बड़ा होगा तो धोका देना, चालाकी, मक्कारी या धूर्तता उस स्त्री या पुरुष में पाई जायेगी।

त्रिभुज

त्रिभुज का चिन्ह (इ—चित्र नं० १२ पृष्ठ १५१) छोटे चिन्हों में सब से अधिक शुभ और भाग्यवान चिन्ह है। यदि यह स्पष्ट हो और छोटी-छोटी रेखाओं से मिलकर बना हो—बड़ी-बड़ी या मुख्य रेखाओं से मिलकर नहीं—तो यह हाथ में जिस ग्रह-स्थान पर आयेगा उसी के गुणों को बढ़ा देगा—यह निश्चय है। त्रिभुज का चिन्ह हाथ में कार्य्य करने की योग्यता, और दूर दर्शिता को साथ लाता है—इस लिये हमारी उन्नति और सफलता का साधन बनता है। यह सफलता या उन्नति किस ओर होगी यह उन ग्रह-स्थानों के गुणों पर जिन पर कि यह त्रिभुज पड़ा होगा निर्भर होगी। जैसे—शनि के स्थान पर 'काले रंग की दस्तकारी', सूर्य्य के स्थान पर कला-विज्ञान

या कोई दूसरी दस्तकारी, बुध के स्थान पर राजनैतिक विषय को समझने की योग्यता आदि ।

शृङ्खला युक्त और लहरदार रेखा

रेखाओं के सम्बन्ध में यह बात सदा ध्यान में रखनी चाहिये कि वह सीधी, स्पष्ट और एकसार होनी चाहियें । शृङ्खला या जञ्जीर के समान बनी हुई या लहरदार रेखा निर्बल और दोषपूर्ण समझी जाती है ।

सफ़ेद और काले बिन्दु

बिन्दुओं के सम्बन्ध में पिछले पृष्ठों पर भी बहुत कुछ प्रकाश डाला जा चुका है । अतः इनके विषय में यहां अधिक न कह कर केवल इतना कह देना है कि सफेद बिन्दु शुभ और काले अशुभ समझे जाते हैं—यहां अर्थ तिलों से नहीं है ।

रेखाओं से भरा हुआ हाथ

प्रायः बहुत से हाथों में छोटी-छोटी बहुत सी रेखायें एक दूसरी को काट कर हाथ में एक जाल सा बना देती हैं। ऐसी दशा में मनुष्य का स्नायविक भाग या शरीर कमज़ोर होता है। अतः ऐसे व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, तनिक परिश्रम करने ही से थक जाते हैं । रेखाओं का यह जाल चिन्ता में मग्न रहने वाले या मस्तक सम्बन्धी कठिन

परिश्रम करने वाले मनुष्यों के हाथ में अधिक पाया जाता है।

यदि हाथ में रेखायें अधिक न हों और हाथ चिकना हो तो ऐसे मनुष्य को थकान अधिक नहीं सताती—ऐसा समझना चाहिए। परन्तु यदि हाथ में केवल मुख्य रेखाओं को छोड़कर और रेखायें ही न हों तो यह मनुष्य के आलस्य पूर्ण होने का लक्षण है।

अँगुलियों के भीतर की रेखायें यदि नीचे से ऊपर तक जा रही हों तो यह अंगुलियों के सम्बन्ध से कहे गये उनके गुणों को मिला देती हैं। इसलिये इन रेखाओं का फल कहते समय अंगुलियों के तीनों भाग—अधो-भाग, मध्य-भाग और ऊर्ध्व-भाग और उनके गुणों पर ध्यान रखना चाहिये।

विद्यार्थियों के जानने योग्य अब तक सभी रेखाओं पर पूर्ण प्रकाश डाला जा चुका है। अतः उनको चाहिये कि वह उनकी परीक्षा करें। ऐसा करने से वह अपने अभ्यास के थोड़े ही दिन बाद हाथ की सभी रेखाओं और दूसरे चिन्हों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे—यह निश्चय है। विद्यार्थियों को यह अभ्यास सबसे पहले अपने हाथ की रेखाओं को देख कर और उनके गुण अपने में मिलाकर करना चाहिये। इसके बाद उनको अपने मित्र और सम्बन्धियों के हाथ की परीक्षा करके अपना अनुभव बढ़ाना चाहिये। ऐसा करने में यदि कभी वह अपने प्रयोग

में असफल भी हों तो यह उनके लिये कोई आश्चर्य की बात नहीं है। आरम्भ में ऐसा ही होता है। उनको उसी समय अपनी भूल सुधारनी चाहिये और भविष्य में सतर्क रहना चाहिये। सावधानी के साथ हाथ की परीक्षा और लगातार अभ्यास करने से हमारे विद्यार्थी कुछ ही वर्ष में सामुद्रिक विद्या में कुशल हो सकते हैं।

सत्तरहवां अध्याय

सप्तवर्षीय नियम

सप्तवर्षीय नियम के अतिरिक्त यद्यपि कुछ और भी नियम ऐसे हैं जिन से मनुष्य की आयु और उसके जीवन की घटनाओं का समय निकाला जाता है। परन्तु सर्वश्रेष्ठ और सब से अधिक सरल नियम जिस का सफलता पूर्वक प्रयोग किया जा सकता है "सप्त वर्षीय नियम" है।

उक्त नियम के अनुसार हाथ की सभी मुख्य रेखाओं को समयानुसार कुछ भागों में विभक्त करो। इन में से वह रेखायें जिन की समय निकालने में अधिक आवश्यकता पड़ती है

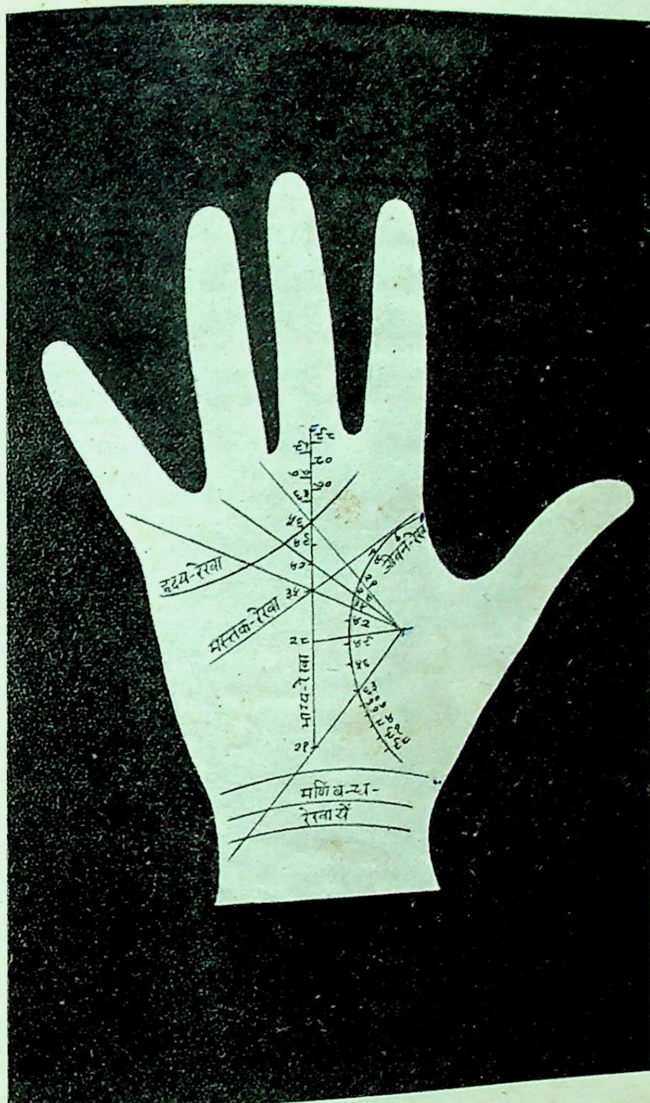
भाग्य-रेखा और जीवन-रेखा हैं। परन्तु साथ ही यहाँ यह भी कह देना है कि समय निकालते समय हाथ की बनावट पर अवश्य ध्यान रखना चाहिये। क्योंकि समकोण और सूच्याकार हाथ के बताये हुए समय में परस्पर एक गहरा अन्तर होता है। अतः एक बार इसका ज्ञान हो जाने से अनुभवी विद्यार्थी इन दोनों हाथ के बताये हुए समय का घटा बढ़ा कर कह सकते हैं। दूसरी बात–हाथ की बनावट चाहे कैसी भी क्यों न हो उपरोक्त नियम प्रत्येक हाथ में सफल हो सकता है यदि शुक्र के स्थान के बीच से एक सीधी रेखा बुध की अंगुली के आधार (Base) पर खींची जाय। याद रहे यह रेखा भाग्य-रेखा को लगभग ३९ वर्ष की आयु पर काटती है और भुज की एक भुजा बनाती है। दूसरी रेखा जिस को त्रिभुज की दूसरी भुजा कहनी चाहिये हथेली के नीचे की ओर भाग्य-रेखा को, जैसा कि चित्र में दिखाया गया है, इक्कीस वर्ष की आयु पर काटती है। उक्त दोनों भुजाओं के अतिरिक्त यदि त्रिभुज के सिरे से एक सीधी रेखा बाहर की ओर खींची जाय तो यह भाग्य-रेखा पर अट्ठाईस वर्ष की आयु में जाकर समाप्त होती है। एक बार यह तीनों समय ठीक ठीक निश्चय कर लेने से किसी घटना का समय निकालना कितना आसान हो सकता है—यह विद्यार्थी स्वयं अनुभव कर सकते हैं।

त्रिभुज की इन दोनों भुजाओं के बीच का स्थान मङ्गल क्षेत्र या मङ्गल का वह मैदान है जिसको कि मनुष्य जीवन का कार्य्य-क्षेत्र कहना चाहिये। यहां यह बात माननी होगी कि लगभग इक्कीस वर्ष से लेकर पैंतीस वर्ष तक का समय मनुष्य जीवन में हमारे लिये एक अमूल्य समय है। इस में हम जो कुछ कर लेते हैं वही भविष्य जीवन में हमारे सौभाग्य या दुर्भाग्य का कारण होता है। या यों कहिये कि यह हमारे जीवन की वह नींव है जिस पर हम अपने जीवन में खड़े होते हैं या गिर जाते हैं—यही हमारी उन्नति या अवनति है।

दिये गये चित्र में जीवन-रेखा और भाग्य-रेखा को सात सात वर्ष के भागों में बाँटा गया है। ऐसा क्यों किया गया अर्थात् इन रेखाओं को सात सात वर्ष के भागों में ही क्यों बाँटा गया यह एक प्रश्न है जिसके उत्तर में यहां इतना अवश्य कह देना है कि यह नियम, "सप्तवर्षीय नियम," प्राकृतिक नियम को प्रमाण लेकर ही निश्चित किया गया है—उस प्राकृतिक नियम को लेकर जिस के अनुसार हमारे शरीर में प्रत्येक सात वर्ष के बाद एक विशेष परिवर्तन होता देखा जाता है।

जहां तक शरीर विज्ञान से सम्बन्ध है यह सिद्ध हो चुका है कि जन्म से पहले गर्भ में अलग-अलग क्रम से सात परिवर्तन होते हैं। साथ ही यह भी सिद्ध किया गया है

[पृष्ठ ३३७—३३८]



सप्तवर्षीय नियम ।

कि मस्तिष्क (Brain) भी अपने वास्तविक रूप में आने से पहले सात रूप बदलता है।

यह तो रही जन्म से पहले गर्भ की बात। अब दूसरी ओर चलिये। प्रायः यह देखा गया है कि गर्भ से बाहर निकलने के बाद जहाँ तक हमारे स्वास्थ्य से सम्बन्ध है सात वर्ष तक उसमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता और स्वास्थ्य इन सात वर्षों में आरम्भ से अन्त तक लगभग एक सा चला जाता है। उदाहरण के लिये एक बालक जो अपनी आयु के पहले सात वर्ष में निर्बल या कमज़ोर रहा है उनके बाद में आने वाले दूसरे सात वर्षों में भी उसी निर्बलता या कमज़ोरी का अनुभव करेगा— इस तरह लगभग बीस अथवा इक्कीस वर्ष का समय होता है।

उक्त नियम को लेकर ही यहाँ "सप्त वर्षीय नियम" की रचना की गई है। क्योंकि ठीक उसी तरह जैसा कि ऊपर मस्तिष्क और स्वास्थ्य के सम्बन्ध में कहा गया है हमारे भाग्य में भी प्रत्येक सात वर्ष बाद एक परिवर्तन होता है। जीवन के सात वर्ष अशान्त और दुःखमय व्यतीत कर लेने के बाद प्रायः देखा गया है कि मनुष्य अगले सात वर्षों में सुखमय जीवन व्यतीत करता है। इनके बाद फिर तीसरे सात वर्ष आते हैं जो इन बीते हुए सात वर्षों की अपेक्षा कुछ कठिन होते हैं या ज्योतिष

के शब्दों में "सात वर्ष को शनिश्चर को ग्रह आई है"—ऐसा कहना चाहिये ।

शनि के स्थान के नीचे मस्तक-रेखा के बीच में भी आयु का समय ३५ वर्ष होता है । अत यदि मस्तक-रेखा में इस स्थान पर या उससे कुछ पहले कोई द्वीप का चिन्ह पड़ा हो तो पेंतीस या उससे कुछ पहले मस्तक संबन्धी कोई रोग उत्पन्न होगा यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है—यहाँ द्वीप पेंतीस वर्ष की आयु से कितना पहले रेखा में आया है इसका अनुमान करके ही आयु का समय घटा देना चाहिये । ऐसा कुछ दिन अभ्यास कर लेने के बाद हाथ की सभी रेखाओं का कल्पित चित्र हमारे सामने रहने लगेगा और हम किसी भी रेखा का समय ठीक-ठीक जान सकेंगे—इसमें सन्देह नहीं । यहां विद्यार्थीयों की सुविधा के लिये उदाहरण के रूप में हम हृदय-रेखा का समय निश्चित कर देंना अधिक उपयोगी समझते हैं । दूसरी अंगुली मध्यमा के नीचे अट्ठाईस से लेकर पेंतीस वर्ष तक तीसरी अंगुली अनामिका के नीचे ब्यालीस से उनन्चास वर्ष तक, और चोथी अँगुली कनिष्टका के नीचे छप्पन वर्ष से ऊपर आयु का समय कहना चाहिये—तो भी जीवन और भाग्य-रेखा का दिया हुआ समय ही अधिकतर आयु का ठीक समय समझा जाता है ।

अठारहवाँ अध्याय

कुछ आवश्यक नियम

हस्त-सामुद्रिक के विद्यार्थी को अधिकारी स्त्री अथवा पुरुष के हाथ की परीक्षा करते समय किसी तीसरे व्यक्ति को अपने पास न रहने देना चाहिये। क्योंकि चाहे वह कितना ही शान्त क्यों न रहता हो परीक्षक और अधिकारी की एकाग्रता में बाधा लायेगा। इसके अतिरिक्त यह हमारा अनुभव है कि किसी तीसरे व्यक्ति की उपस्थित में अधिकारी जहाँ तक उसके स्वभाव या किसी दुराचरण से सम्बन्ध है नहीं चाहता कि उसके दोष किसी तीसरे व्यक्ति पर प्रगट हों। अतः वह अपना दोष पूर्ण सत्य भी अस्वीकार करने लगता है। यहाँ विद्यार्थी को चाहिये

कि परीक्षा करते समय अधिकारी के सामने इस प्रकार बैठे कि उसके हाथ पर प्रकाश पड़ने में कोई बाधा न आये।

यद्यपि हाथ की परीक्षा के लिये कोई विशेष समय निश्चित नहीं हैं फिर भी दिन का समय सब से अच्छा समय है। क्योंकि रात के समय शरीर में रुधिर का प्रवाह अधिक होने से हाथ का रंग कुछ लाल होता है और बारीक-बारीक रेखायें दिखाई नहीं देतीं। परीक्षा दोनों हाथों की एक साथ करनी चाहिये और विवाह, रोग, मृत्यु या दूसरी घटनाओं के सम्बन्ध में किसी निश्चय पर पहुँचने से पहले दोनों हाथों के चिन्ह और रेखायें सतर्क और पूर्ण सावधान होकर देखनी चाहियें। छोटी-छोटी अस्पष्ट रेखाओं के देखने के लिये यह अधिक उपयोगी होगा कि दूरवीक्षण यन्त्र (Looking Glass) का प्रयोग किया जाय क्योंकि उसके द्वारा बारीक-बारीक अस्पष्ट रेखायें भी बड़ी-बड़ी और स्पष्ट देख पड़ती हैं।

अधिकारी का हाथ अपने सामने किसी मेज़ या बिछौने पर रक्खो और देखो कि वह अपनी स्वाभाविक दशा में रक्खा हुआ है। ऐसा करने से आप जान सकेंगे कि हाथ का वास्तविक आकार क्या है और अँगुलियों का उसमें कौनसा स्थान है या अँगूठा हथेली के साथ कैसा कोण बनाता है।

रेखाओं के सम्बन्ध में अपना निर्णय करने से पहले हाथ को मज़बूती से पकड़ो और रेखा को जिसका फल

तुम को कहना है इस प्रकार दबाओ कि उसमें रक्त का प्रवाह होने लगे । ऐसा करने से तुम इस का अनुमान कर सकोगे कि रेखा किस ओर को बढ़ना चाहती है । इसके अतिरिक्त वह बारीक और अस्पष्ट रेखायें जो उस मुख्य रेखा से नकल रही होंगी या उसमें आकर मिलती होगी देख पड़ने लगेंगी ।

पूर्व इसके कि इन रेखाओं के सम्बन्ध में अपना कोई मत प्रगट किया जाय हाथ की बनावट पर अवश्य ध्यान रखना चाहिये । यहाँ यह याद रखना होगा कि समकोण या वर्गाकार (Square) हाथ की अँगुलियाँ दार्शनिक सूच्याकार या चमसाकार भी हो सकती हैं ।

हाथ और अँगुलियों की बनावट के साथ ही साथ हथेली सख़्त है या कोमल, अँगूठे का इच्छा शक्ति वाला ऊर्ध्व-भाग सीधा है अथवा मुड़ा हुआ, लम्बा है या छोटा, ऊपर से नोकदार है या गोल, अँगुलियाँ किस ओर झुक रही हैं—इन सब बातों पर अवश्य ध्यान रखना चाहिये । इसके अतिरिक्त अँगुलियाँ अधिक लम्बी हैं या छोटी, हथेली के परिमाण के अनुकूल है या नहीं—इस पर भी विचार करना चाहिये ।

अन्त में—अधिकारी की रेखाओं की पूर्ण परीक्षा करके विद्यार्थी को स्पष्ट और निर्भय होकर उनका फल कहना चाहिये । परन्तु साथ ही अधिकारी से नम्रता का व्यवहार

करना चाहिये । कहने का अर्थ यह नहीं है कि अप्रिय सत्य को छिपा लिया जाय। बल्कि चाहे वह सत्य कितना ही भयंकर क्यों न हो इस तरह कहना चाहिये कि अधिकारी उसको सुनकर चिंतित न हो उठे या घबरा न जाये।

अधिकारी वर्ग, स्त्री या पुरुष, की स्थित पर विचार करो और देखो कि वह किस वातावरण में होकर गुज़र रहा है, सामयिक शिक्षा का उस पर कैसा प्रभाव है, और उसमें ऐसे कौन से गुण देख पड़ते हैं जो पैतृक या वंश परम्परा से चले आने वाले कहे जा सकते हैं ।

हाथ दिखाने वाले अधिकारी के प्रति भलाई और उसकी सहायता करना ही तुम्हारा हर समय का मुख्य उद्देष्य होना चाहिये । उसको संतुष्ट करने के लिये तुम हृदय से अपनी विचार शक्ति का प्रयोग करो और देखो कि वह तुम्हारे किसी व्यवहार से असन्तुष्ट तो नहीं है । अधिक सम्भव है कि अधिकारी अपने हाथ में आई हुई अशुभ रेखा या किसी दूसरे दुष्ट चिन्ह की चिन्ता में कुछ निराश होने लगे । अतः यहां तुम को चाहिये कि उस के हृदय में साहस और प्रबल इच्छा शक्ति जगाने की चेष्टा करो और उसे भविष्य के लिये सावधान कर दो । क्योंकि यदि समय से पहले हम को कोई अशुभ सूचना मिल जाती है तो हम अपने साहस और प्रबल इच्छा शक्ति को लेकर उन अशुभ चिन्हों का दुष्ट फल मध्यम कर सकते हैं और कभी-कभी उन के भयंकर प्रभाव से

अपनी रक्षा करके उनके अशुभ कारक फल को पूर्णतया नष्ट कर देते हैं ।

यदि थोड़े समय में इस विद्या पर कोई विद्यार्थी पूर्ण अधिकार नहीं पा सकता तो यह उस के लिये कुछ निराश होने की बात नहीं है । कोई भी विद्या एक ही दिन में नहीं सीखी जा सकती । फिर ऐसी विद्या जिस को कि जीवन की भाषा कहना चाहिये, यह कैसे सम्भव है, कि केवल एक बार पुस्तक पढ़ कर या दो चार दिन में सीखो जा सके । धीरे धीरे इस का अभ्यास करो और देखो कि अभ्यास के साथ ही साथ तुम्हारा अनुभव भी बढ़ता जा रहा है । हाँ, इतना ध्यान अवश्य रक्खो कि तुम्हारा यह अभ्यास निरन्तर होना चाहिये । यदि ऐसा हुआ तो तुम शीघ्र ही एक अनुभवी विद्वान बन सकते हो ।



उन्नीसवाँ अध्याय

हाथ का चित्र उतारने की क्रिया

प्रायः प्रत्येक दशा में यह सम्भव नहीं होता कि अधिकारी स्त्री या पुरुष को सामने बैठा कर उस के हाथ की परीक्षा की जाय। ऐसी दशा में हाथ की रेखाओं का चित्र उतारने की ही आवश्यकता होती है। यह चित्र क्यों कर उतारा जा सकता है यह कह कर ही हम इस विषय को समाप्त करते हैं। हाथ का चित्र लेने की कई क्रिया हैं। परन्तु इन सबका प्रयोग किया जासके यह सुविधा जनक नहीं हो सकता। अतः हम उनमें से कुछ आवश्यक क्रिया बता देना चाहते हैं।

चित्र उतारने की सबसे अच्छी क्रिया लिथोग्राफ़ी की रोशनाई द्वारा की जाती है । इसमें एक टुकड़ा सफ़ेद कागज़, एक रबर का सख़्त रूलर जो कि बीच में अधिक मोटा और सिरे पर दोनों ओर कम हो, और एक शीसे के टुकड़े की आवश्यकता होती है । पहले रोशनाई को गाढ़ी-गाढ़ी शीसे पर लगाकर रूलर को चलाओ यहां तक कि उसमें रोशनाई पूरी तरह चिपट जाये । अब रूलर को हाथ पर हलके हाथ से फेर कर हथेली और अंगुलियों पर रोशनाई चढ़ाओ । यह सब कुछ करने के पश्चात् कागज़ का टुकड़ा जो पहले से तैयार रहना चाहिये किसी एक शीशा या पट्टे के टुकड़े पर रखकर हाथ को इस तरह जमाओ कि अंगुलियां, हथेली और अंगूठा उसको छू जाये । धीरे से हाथ उठालो—यही तुम्हारे हाथ और रेखाओं का चित्र है । यदि हाथ धोने में लिथोग्राफ़ी की रोशनाई न छुटती हो तो साबुन का प्रयोग करना चाहिये ।

कपूर के धुंए से लिया गया चित्र

कपूर के धुएं से चित्र उतारने की प्रथा बहुत पुरानी है । पिछले पृष्ठों पर जो चित्र दिये गये हैं वह कपूर के धुंए से ही उतारे गये हैं । यह क्रिया पहली से अधिक आसान होते हुए भी इसमें अधिक समय नष्ट करने की आवश्यकता नहीं पड़ती और थोड़े ही खर्च में एक अच्छा चित्र

तैयार हो जाता है। इस में एक सफ़ेद काग़ज या एक शीसे के टुकड़े की जिस पर कि हाथ पूरा उतारा जा सके आवश्यकता पड़ती है। पहले एक डली कपूर की लेकर जलाओ और उसका धूंआ कागज़ या शीसे पर इस तरह लो कि कागज़ पर अधिक गरमी न पहुंचे। यदि ऐसा हुआ तो कागज जल जायगा या शीसा चटक जायगा। जब कागज या शीसे पर धूंआ फैल जाये तो उसे ठंडा होने तक छोड़ दो। इसके बाद जिस हाथ का चित्र लेना हो कागज या शीसे पर इस तरह जमाओ कि अंगुलियां और हथेली शीसे से मिली रहें। अब हाथ उठा लो—बस चित्र उतर आयगा। इस चित्र को सावधानी से रखना चाहिये क्योंकि यह कच्चा होने से धूआँ छुट सकता है। यदि इसे पक्का करना हो तो रंग पक्का करने का रोगन जो प्रायः चित्रकारों पर मिलता है इस पर चढ़ा देना चाहिये।

सम्भव है विद्यार्थियों को हाथ का चित्र लेने में कोई असुविधा हो या कोई बात उनकी समझ में न आये। इसके लिये उन्हें प्रकाशक द्वारा हमको लिखना चाहिये जिसका उत्तर प्रसन्नतापूर्वक समय पर दिया जायगा।

"ग्रन्थकार"

समाप्त

शब्दकोष

पहला अध्याय

विभिन्न = अनेक

मानवी = मनुष्य सम्बन्धी ।

मनोवृति = मन की गति

महत्व = मान

दूसरा अध्याय

प्रारम्भिक = पहला

समीपवर्ती = निकटस्थ

तर्कना = वाद विवाद

विप्लवकारी = उपद्रवी

निकृष्ट = असभ्य

कलाकर = कारीगर

चमसाकार = चम्मच सा आकार

कार्य्यपटु = कार्य्य कुशल

मनःसृष्टि = कल्पित राज्य

परस्थिति = दशा

मिश्रित = मिला हुआ (हाथ) जिसकी हथेली, समकोण, अँगुलियाँ सूच्याकार या दूसरी तरह की हों ।

अस्थिर = डाँवाडोल

स्पष्ट = साफ़

आकार = बनावट

तीसरा अध्याय

मानसिक = मन सम्बन्धी

कम्पन = कम्प वायु, एक तरह का रोग ।

स्वेच्छाचारी = अपनी इच्छा पर चलने वाला ।

निःचेष्ट = सुस्त, आलसी

प्रदर्षित = दिखाना

धनुषाकार = झुका हुआ

उग्र = क्रोधी, आवेश-पूर्ण

सतर्क = सावधान

उन्नत = ऊँचा

विस्तृत = फैला हुआ

चौथा अध्याय

त्वचा = चर्म, खाल

अन्तर = फरक

सम्पर्क = सम्बन्ध

तीव्र (अशु०) = तीव्र (शु०) तेज़।

भीरु = डरपोक

पांचवां अध्याय

अनुसन्धान = खोज

स्नायविक = नाड़ियों का

छटा अध्याय

परिमाण = नाप

अनुकूल = मुआफ़िक

शुष्क = सूखा, खुश्क

लोलुप = लोभी

सातवां अध्याय

शुक्र = शुक्र देवता (गुण) प्रेम, उदारता, कामासक्त।

बृहस्पति = देवता (गुण) धर्म, अन्धविश्वास, उच्च अभिलाषायें, स्वाभिमान, रजोगुण।

बुध = देवता (गुण) विद्या से प्रेम, उद्योग और व्यापार की ओर प्रवृति, वाकशक्ति (अस्वाभाविक) धन इकट्ठा करने की इच्छा, लोभ, बे-ईमानी, आलस्य

शनि = शनि देवता (गुण) बुद्धिमत्ता, सौभाग्य, सावधानी, दूरदर्शिता, (अस्वाभाविक) अविवेकी, दुर्भाग्य, अवनति ।

सूर्य्य = देवता (गुण) उन्नति, यश ज्ञान, साहस, (छोटा) अप्रसिद्ध, नीचता ।

लालसा = अभिलाषा

मङ्गल = देवता (गुण) साहस, धैर्य्य, (अस्वाभाविक) असभ्यता, कायरता, डरपोकपन ।

चन्द्रमा = देवता (गुण) सतर्कता, शुद्ध चरित्र, विवेकी, (अस्वाभाविक) अविवेक, असह्य स्वभाव, स्वेच्छाचारिता ।

आठवां अध्याय

उपस्थिति = उभार ।

अनुपस्थिति = अभाव

श्लेष्मा = कफ़

बलवान = ऊंचा

निर्भीकता = निडरता

समागम = मेल

दूसरा अध्याय

उत्तेजना = दबाव

बलवान = प्रभावपूर्ण

भारी = स्पष्ट, बलवान

उत्तप्त = व्याकुल

हृदयहीन = कठोर

क्षणिक = डांवाडोल

सपाट = एकसार, शाखाओं से रहित

शून्य = रहित, खाली

प्रवृति = गति

सतवां अध्याय

आगामी = आने वाला

भविष्य = भाग्य

दुःसाध्य = कठिन साध्य

मध्यम = कम

आठवां अध्याय

अजीविका = आजीविका (शु०)
अभाव = कमी
अवरोध = बाधा, रुकावट
अधिकारी वर्ग = स्त्री या पुरुष जिसका हाथ देखा जाय।

नवां अध्याय

जातीय = अपने
उत्कर्ष = उन्नति
अवलम्बित = निर्भर
प्रतिभा = तेज, ओज
मर्मज्ञ = विद्वान, आलोचक
ओजस्वी = प्रतिभा शाली

ग्यारवां अध्याय

और (अशु०) = (शु०) और
विसर्जन = त्याग
विवाहोच्छेद = पति-पत्नी का त्याग
प्राभाविक = प्रभाव पूर्ण

इति

सम्मतियाँ

I feel extreme pleasure in recommending this thought-stirring work on "Palmistry" written by an Indian scholar of reputation in Hindi. Pandit Ram Chandra Bhardwaj belongs to a long and distinguished line of palmists of whom our country is justly proud. His work thus reflects not only his great literary acumen and scholarship, but embodies in itself a historical and scientific spirit regarding the science which like various other treasures of Oriental knowledge and erudition, has become a sealed one for us.

When we glance over the pages however, of this brilliant publication of the Pandit ji, we are thoroughly convinced of the authenticity of this science, both in India and in the countries of

the West, where after the dawn of the era of scientific introgation it has become more potently and palpably in demand by the people- espeeially the educated and cultured people in general.

My colleague and friend Mahamahopadhyaya Pandit Harnarain Shastri Vidyasagar etc. has introduced this work to the Hindi knowing public of India by his illuminating Foreword; and as for myself, I earnestly wish that before long this very work will reach still wider reading public through its translations in various languages of our land.

Prof:—M. J. Dave.
M. A., Ph. D, D. Litt, etc. etc
Hindu College, Delhi.

हस्त-सामुद्रिक पुस्तक मंगा कर पढ़ी। लेखक ने जिस वैज्ञानिक ढंग से इस विषय को लिया है उसको पढ़कर रेखाओं की साइन्स (Palm-is-try) पर अविश्वास करने का कोई कारण शेष नहीं रह जाता। रेखायें हमारी शारीरिक और मानसिक गुप्त क्रियाओं का आलोक चित्र हैं—यह इस पुस्तक में सिद्ध किया गया है। इसमें नाखूनों को देख कर जिन रोगों के लक्षण कहे गये हैं उनकी सत्यता का प्रमाण आज संसार के सर्वश्रेष्ठ अमेरिकन डाक्टर ओसलर (Osler) जैसे विद्वान द्वारा लिखी गई पुस्तकों में मिलता है। शरीर-विज्ञान के साथ ही साथ मनोविज्ञान का पुस्तक से पूरा पूरा सम्बन्ध है। पुस्तक अपने ढंग की पहली है। विद्यार्थियों के बड़े काम की है।

लेफ़्टिनेन्ट ऐस. सी. नन्द,
एम. बी. बी. एस., आई. एम. एस., (रिटायर्ड)
ऐडिटर मेडिकल कौमरेड।